पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' : व्यक्तित्व और कृतित्व

सम्पादक

नन्द चतुर्वेदी



राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

प्रथम संस्करण : 1985 ई

मूल्य : चवालीस रुपये

मुद्रक : मुद्रायन,
सुन्दरवास, उदयपुर–313001

प्रकाशक : राजस्थान साहित्य अकादमी,
हिरन मगरी, सेक्टर 4,
उदयपुर–313001

Pt Giridhar Sharma Navratna , 'Vyaktitva Aur Kratitva'
Edited by,—Nand Chaturvedi   Rs 44/- only

हमारे पुरोधा

प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का द्विवेदीयुगीन साहित्यकारो मे बडे ग्रादर के साथ स्मरण किया जाता है वे राजस्थान के झालरापाटन के निवासी थे ग्राचार्य रामचद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मे उनकी चर्चा करते हुए उनके हि दी-प्रचार-प्रयत्नो की मुक्तकठ से प्रशसा की है उनके हिन्दीप्रेम ने ही स्व मदनमोहन मालवीय जी के सामने निर्भीक भाव से यह कहने का बल दिया था कि मैं तो ग्रापका सम्मान तभी करू गा जबकि हिन्दू विश्वविद्यालय, हि दी विश्वविद्यालय मे परिवर्तित हो जायगा हि दी, सस्कृत, उदू, फारसी, प्राकृत, बगला, ग्रग्रेजी ग्रादि भाषाग्रो का उ हे ग्रच्छा ज्ञान था अन्य भाषाग्रो मे निष्णात होते हुए भी वे हि दी के प्रबल समथक थे भाषा-महिमा का उल्लेख उन्होंने इस प्रकार किया है—

ग्रग्रेजी, जमन, फ च, ग्रीक, लैटिन त्यों
रशियन, जापानी, चीनी, प्राकृत प्रमानी हों
तामिल, तेलगी, तूलू, द्राविडी, माराठी, ग्राह्मी
उडिया, बगाली, पाली, गुजराती छानी हो
जितनी ग्राय, ग्रनाय भाषा जग जाहिर हैं
फारसी, ग्ररबी, तुर्की सब मनु ग्रानी हो
जनम वृथा है तो भी मेरे जान मानवो का
हि दी मे जनम पाके हि दी जो न जानी हो

नवरत्न जी ने हि दी, सस्कृत मे मौलिक सृजन के साथ साथ ग्रग्रेजी, बगला, संस्कृत, गुजराती, फारसी ग्रादि की श्रेष्ठ कृतियो का हि दी मे ग्रनुवाद कर हि दी व ग्रन्य भाषाग्रो को समीप लाने का श्रम साध्य काय किया वे द्विवेदी-युग के उन समर्थ रचनाकारो मे से हैं जि होने सकीणता की हर सीमा को तोड कर उदार दृष्टि का विस्तार किया ग्रौर हि दी को व्यापक सीमान्तो तक फैलाया 'सरस्वती', 'माधुरी', 'सौरभ', 'सुधा' ग्रादि पत्रिकाग्रो मे प्रकाशित उनकी रचनाग्रो ग्रौर सम्पादकीय टिप्पणियो से ज्ञात होता है कि वे ग्रपने परिवेश ग्रौर समय की समस्याग्रो के प्रति कितने जागरूक थे ग्रौर ग्रग्रेजो के ग्रौपनिवेशिक ग्रातक का लेखनी के शस्त्र के माध्यम से मुकाबला करते हुए राष्ट्रीयता को सैद्धातिक एव चितन के स्तर पर विस्तार दे रहे थे उ होंने ग्रपने लेखन से हि दी ग्रौर राष्ट्रीयता का प्रचार किया ग्रौर ग्रनेक नगरो मे हिन्दी समितियाँ स्थापित कर ग्रपने सोच को निरतर प्रसारित प्रचारित करने के माध्यम

भी स्थापित किये देश, जाति, भाषा और समाज को प्रगतिपथ पर लाने और उन्नतिपथ पर निरंतर अग्रसरित होते रहने की आकांक्षा को द्विवेदीयुगीन साहित्यकर्मियो ने जो स्वर दिया, नवरत्न जी का स्वर उसे और प्रखर, प्रभावशाली और धारदार बनाता है साहित्य-सृजना उनके लिये एक मिशन' थी और द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय चेतना और सुधारवादी दृष्टि उनके साहित्य का 'काम्य' थी

राजस्थान की आधुनिक पीढी को 'नवरत्न' जी के साहित्यिक योगदान का ज्ञान या तो बिल्कुल नहीं है अथवा बहुत अल्प है वे हमारी साहित्यिक परंपरा के ज्योति-स्तंभ और मार्गदर्शक पुरोधा थे राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपना पुनीत कर्तव्य मानते हुए 'मधुमती' का विशेषांक इसी अभिप्राय से प्रकाशित किया ताकि स्व नवरत्न जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का सम्यक आकलन प्रस्तुत किया जा सके वही विशेषांक अब पुस्तकाकार रूप मे प्रस्तुत है इसके पूर्व 'मधुमती' का गुलेरी अंक तथा सेठिया अंक भी पुस्तकाकार रूप मे प्रस्तुत किया जा चुका है अकादमी ने नवरत्न जी की स्मृति मे एक फलोशिप भी स्थापित की है जो उस महान पूर्वज की स्मृति को जीवंत बनाये रखने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है

'मधुमती के इस विशेषांक की सामग्री जुटाने मे नवरत्न जी की विदुषी पुत्री श्रीमती शकुंतला 'रेणु', पं युगलकिशोर चतुर्वेदी तथा उनके पौत्र प्रो योगेश शर्मा ने जो सहयोग दिया, उसके लिये अकादमी उनके प्रति कृतज्ञ है नवरत्न जी के विपुल साहित्य मे से कुछ अंश मात्र ही हम प्रस्तुत कर पाये है, उनके समूचे सृजन को तो अनेक भागो मे ग्रंथावलि का प्रकाशन कर ही प्रस्तुत किया जा सकता है

इस विशेषांक का संपादन बंधुवर प्रो नंद चतुर्वेदी ने कर हमारे बोझ को हल्का किया है वस्तुत वे ही नवरत्न जी पर आधिकारिक रूप से कुछ कहने लिखने मे सक्षम हैं वे उन्ही के नगर के निवासी हैं और उन्होने नवरत्न जी को बहुत समीप से देखा-परखा भी है उन्होने इस अंक के संपादन का अनुरोध स्वीकार किया, इसके लिये अकादमी उनके प्रति आभारी है

मुझे विश्वास है, राजस्थान के इस महान साहित्यकार-पुरोधा पर प्रकाशित इस कृति का सुधिजन स्वागत करेंगे

डॉ प्रकाश आतुर
(अध्यक्ष)

क्रम

श्रद्धा-स्मरण

विवेचना

पुरखों के साहित्य की प्रासगिकता

प० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का जन्म एक सौ चार वर्ष पहले हुआ था वे विद्वानो की श्रेष्ठ परम्परा का प्रतिनिधित्व करते थे उनका सृजन द्विवेदीकालीन जीवन मूल्यो की पहचान कराता है और हिंदी हिन्दुस्तान के लिए अनोखे, मर मिटने जैसे भावो का जन्म देता है वे बहुत सी भाषायें जानते हैं – सस्कृत, हिन्दी तो जानते ही हैं– गुजराती, बगला, फारसी, अग्रेजी, उर्दू भी अच्छी तरह जानने का विश्वास दिलाते हैं रचना और अनुवाद की इच्छा उनमे एक साथ बलवती रहती है वे दूसरी भाषाओ के रचनाकारो को जानते हैं और उनकी रचना तथा पुस्तको का हिन्दी मे भाषान्तर करते हैं अग्रेजी के बहुत से कवियो, बगाली, गुजराती के नाट्यकारो, जन साधुओ, सस्कृत के प्रसिद्ध कवि माघ, रविबाबू की गीताजली, फिट्जराल्ड की रुबाइयो और सूफी कवियो की रचनाओ का हिन्दी मे अनुवाद करके उन्होंने न केवल अनुवाद क्षमता का परिचय दिया है बल्कि हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओ को समीप लाने की कोशिश की है नवरत्न जी ने सस्कृत मे अनेक ग्रथ लिखे हैं और दूसरी भाषाओ की रचनायें सस्कृत मे अनुवादित की हैं ऐसा करते समय 'सस्कृत मे सब कुछ है और नया कुछ नही चाहिए' इस जिद को तोड़ने की पहल की है

आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व के हिन्दी कृतिकारो और साहित्यिक-पत्रकारिता करने वाले सम्पादको मे भाषा-समृद्धि के लिए जो इच्छा रही वह नवरत्न जी मे भी थी और उसे पूरी करने के लिये उन्होंने अनुवादादि की व्यावहारिक योजनायें बनायीं यहाँ उनका मन अग्रेजी द्वेष से सतप्त नही रहा बल्कि एक गुण ग्राहक और विद्वान जैसी दृष्टि भाषायी सकीर्णताओ को लाघती गयी और वे हिन्दी को आधुनिक सोच की बड़ी भाषा बनाने के प्रयत्न मे लगे रहे यहा यह तथ्य रेखाकित किया जाना चाहिए कि द्विवेदी जी और उनके मित्र उस अग्रेजी से लड रहे थे जो विदेशी हुकूमत और उपनिवेशवादी आतक की भाषा थी लेकिन उस भाषा मे बहुत सा ज्ञान विज्ञान था

और जो हिंदू सोच की जड़ता को तोड़ रहा था, उससे किसी की दुश्मनी नहीं थी उस ज्ञान को उन्होने हिंदी तक आने दिया इस अधुनातन इतिहास बोध, वैज्ञानिक सोच और समाज शास्त्रीय ज्ञान को हिंदी तक लाने की उत्कट इच्छा को उस समय की 'सरस्वती' पत्रिका या समकालीन दूसरी पत्रिकाओ मे जसे 'सौरभ जो झालावाड से प्रकाशित हो रही थी, उनकी सम्पादकीय टिप्पणिया मे देखा जा सकता है आधुनिक ज्ञान से लैस होने की इस इच्छा को प गिरिधर शर्मा मे भी देखा जा सकता है जो राजस्थान मे द्विवेदी जी का काम कर रहे थे और राष्ट्रीय सोच से जुडे थे

प गिरिधर शर्मा विद्वानो की उस परम्परा मे नही थे जो सैद्धांतिक चिंतन मे सब से आगे किंतु अकमण्य होते हैं दरअसल किसी बड़े सघप सिद्धात या परिवतन का पक्ष लेते हुए यह सम्भव नही होता कि उसे सोच और कम मे बाट दिया जाये इसके लिए पूरे और साहसिक सघष की आवश्यकता होती है और तब सोच और तदनुरूप कम एक दूसरे के परिपूरक होते है नवरत्न जी ने भी ऐसा ही समझा था इसलिए उन्हे यह समझाते हुए भी देर नहीं लगी कि हिंदी के लिए भावावेशपूर्ण कवितायें ही नही लिखनी हैं बल्कि ऐसे मच और सस्थाओ की स्थापना करनी है जहा से हिन्दी प्रचार का काम निरतर और नियमित रूप से हो सके अपनी योजना के अनुसार उन्होने इदौर, भरतपुर और कोटा मे हिंदी समितिया प्रारभ की कि जिससे हिंदी के काय मे किसी की इच्छा-अनिच्छा का महत्व न रह जाये इस तरह हिंदी के लिए वयक्तिक स्तर पर कविता करना किंतु निरतरता देने के लिए सस्थायें बनाना तत्काल और दीघकाल की जरूरतो को मिलाना था एक और दृष्टि से देखें तो इन सस्थाओ की स्थापना उस वैचारिकी का हिस्सा भी था कि जिसमे लम्बे सघष की कल्पना की गयी थी और आवश्यकता पडने पर इन्ह कलो की तरह काम लेने की रणनीति भी शामिल थी दुख है कि ये हिंदी सस्थान जो स्वतन्त्रता-सग्राम के अविच्छिन्न हिस्से थे अकमण्य हो गये हैं और हिन्दी का सवाल स्वाधीनता सग्राम का हिस्सा न रह कर ठस और शातिराना राजनीति का हिस्सा बन कर रह गया है

हिंदी के सिलसिले मे मैं यह याद कर पाता हू कि 1937 के लगभग झालावाड के कवि ब्रजभाषा मे कवितायें लिख रहे थे और नवरत्नजी के परिवार वालो को छोड कर कोई दूसरा नही था जो खडी बोली मे कविता लिख रहा हो ब्रजभाषा मे कवितायें लिखने वाले माधुय और छद लय पर रीझे हुए थे और कवि सम्मेलनो मे समस्यापूर्ति का बोलबाला था इस माहौल में ईश्वर दादा, पडित जी के पुत्र, हिंदी मे कवितायें पढते तो सभा मे अपमानजनक सन्नाटा होता और ब्रजभाषा के रसिक श्रोता उनके काव्य-पाठ से जल्दी ही उकता जाते लेकिन पडितजी या ईश्वर दादा इससे न तो

विचलित होते न हार मानते अद्भुत आत्म विश्वास से वे लम्बी-लम्बी कवितायें पढते वे दरअसल हिन्दी की ऊर्जा और रचना शक्ति को जानते थे और उन्हें यह विश्वास था कि वे नयी कविता के अग्रदूत हैं उस समय मैं यह नही जानता था कि इस छोटे से राज्य मे भाषा को लेकर कैसा विग्रह चला था पुरानी साहित्य शैलियां कितने आग्रह से जमे रहने का प्रयत्न कर रही थी लेकिन पंडित जी ईश्वर दादा, शकुन्तला जीजी जानती थी कि बडी कविता का चलन होने वाला है उसके लिए व्रजभाषा उपयुक्त नही है, हिन्दी ही उपयुक्त है वे हिन्दी को मजबूत बना रहे थे वे हिन्दी के बिना स्वतन्त्रता की कल्पना ही नही करते थे और ऐसे मोर्चे पर डटे थे जहां से एक जनान्दोलन शुरू होता था जिसकी जडें जमीन मे बहुत गहरी उतर रही थी मुझे आज यह प्रतीत होता है कि हमने भारतीय भाषाओं की चिन्ता छोड कर स्वतन्त्रता की बुनियादी लडाई को शिथिल कर दिया है उसका परिणाम यह हुआ है कि हमारे कस्बो शहरो मे संस्कार-हीन अंग्रेजी स्कूलो की संख्या सैकड़ो तक पहुच गयी है और हिन्दी के स्कूल गरीब और अनाथ बच्चो के स्कूल हो कर रह गये हैं

पंडित जी ने कवितायें ही नही गद्य भी लिखा दरअसल वे गद्य-भाषा को दो प्रयोजनो के लिए परिष्कृत कर रहे थे एक प्रयोजन तो यह था कि गद्य-भाषा सृजनात्मक कला-शैलियों और समीक्षा के लिए पुख्ता हो जाये और दूसरा यह कि वह राज-काज, लोक-व्यवहार, शिक्षा-संस्कृति, बोल-चाल की प्रामाणिक और संस्कारशील भाषा की तरह पहचानी जा सके उन्होने आज से 85 वर्ष पहले 'विद्याभास्कर' नामक पत्र निकाला और तरह-तरह का गद्य लिखा लेकिन द्विवेदी लेखक मंडली गद्य भाषा को एक रूप देने मे इतनी लगी रही कि पहला प्रयोजन सिद्ध नही हो सका यहा तक कि पद्य भी 'इतिवृत्तात्मकता' मे सिमिट गया पंडित जी ने हजारो पद्य पंक्तियां इस शैली मे लिखी —

बजने लगा भड़ाभड़ बाजा, चढे ब्याह करने पर राजा
चार जनो ने इन्हे उठाया, गली-गली मे खूब घुमाया
देख-देख पुर के नर-नारी, खूब हसे दे दे कर तारी
वर राजा तोरन पर आये, बेटी ने टोडरमल गाय
जब देखा वर को कन्या ने, लगी रक्त के आसू पीने
बोली "मैं न विवाह करूंगी, यो ही अपना जीवन दूंगी
मात पिता भाई मतिमान, किस को देना कन्या दान ?
इसका करिये नेक विचार, मत करिये यो अत्याचार।"

(वृद्ध विवाह)

या

जो हाथ पैर अपने, नहिं हैं हिलाते
खाना, बिना श्रम किये, डट कर उडाते
आलस्य मे समय त्यो, अपना बिताते
वे मूढ कूच जग से, कर क्यो न जाते ?
है काम एक जिन का, सब को सताना
विद्या विहीन रहना, बस माग खाना
बोझा समाज पर भी, अपना बढाना
अच्छा न जन्म उनका, जग बीच पाना ।

लेकिन साथ ही उन्होने एक दूसरी रचनात्मक दिशा मे काम किया यह काम अनुवाद का था गद्य और पद्य दोनो मे उन्होने ऐसे कवियो की कृतियों का हिंदी रूपान्तरण करना निश्चय किया जो अपनी रचनात्मकता के कारण विश्व विश्रुत थे जसे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सूफी कवि बाबा ताहिर, अग्रेजी कवि फिटजराल्ड, गुजराती कवि न्हानालाल दलपतराम गद्य मे उन्होंने रविबाबू की चित्राङ्गदा' और कवि न्हानालाल के 'प्रेमकुज' का अनुवाद किया "चित्राङ्गदा' सजनात्मक गद्य का अद्वितीय उदाहरण है और 'प्रेमकुज' के सम्बन्ध मे स्वय न्हानालाल ने लिखा है – कोई विचारक या कोई उपहासशील फिर प्रश्न करेंगे कि हेर-फेर कर फिर वह-की-वह प्रेमोन्मत्तता का कथायें ? कवियो को कुछ धदा भी है दूसरा ? कुछ गाभीय कुछ ससार के महाप्रश्न कुछ महत्वपूर्ण सत्वनय मोज्य यह तो कुछ भी नहीं और लौट फिर कर पीछे की पीछे वह की वह उन्मत्त बातें" इस तरह गिरिधर जी उस तथात्मक और उपदेशात्मक शैलियो से पदा हुई अकुलाहट और ऊब कम करते हैं और गद्य के रचनात्मक प्रवाह को बगला गुजराती से लाकर हिन्दी मे मिला देते हैं पडितजी ने जाज ग्रेग की अग्रेजी पुस्तक का भी अनुवाद किया जिसे उन्होंने 'कठिनाइयो मे विद्याभ्यास नाम देकर प्रकाशित किया वास्तव मे नवरत्नजी आस्वाद के नये से नये धरातल तलाश करते रहे खुद की तृप्ति के लिए और हिन्दी के उन पाठको की तृप्ति के लिए भी जिनका द्विवेदी काल की इतिवृत्तात्मक और उपदेशपरक साहित्य शैलियों से थक जाना सम्भव था

साहित्य के प्रयोजनो और उनकी मानवीय हिस्सेदारी से सम्बन्धित एक तथ्य को मैं द्विवेदी कालीन साहित्य से जोडना और रेखाङ्कित करना चाहता हू मैं यह मानता हू कि हमारे साहित्य इतिहास म यह पहली बार हुआ है कि कविता और साहित्य एक दम बाहर छिट कर समकालीनता और राजनीति के साथ जुड गया हो उस समय के साहित्यकार कुछ भी लिख रहे हों, कह रहे हो उन्ह यह स्वीकार था कि वे देश की

स्वाधीनता के लिए लिख रहे हैं और यदि यह राजनीति है तो वे राजनीति कर रहे हैं उन्हें कोई भ्रम नही था कि वे शाश्वत रचनायें लिख रहे हैं और इनकी सिद्धि 'धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष' इनमे से कोई एक या एकाधिक है वे राजनीतिक स्वाधीनता के लिए दीवाने थे और उसे पाने के लिए कविता, जेल, मृत्यु या जो भी कुछ हो करने या होने देने के लिए तैयार थे इस लोक के लिए लिखने का उन्होंने सकल्प लिया था और जनाकाक्षाओ को रचना-रूपों मे बाँध कर वे सतुष्ट थे ऐसा करते समय उन्हे कुछ दिखाना पाना, सद्धान्तिक दावे करना नापसद था स्वाधीनता की रचना लिखते हुए वे किसी पार्टी के साहित्यकर्मी नही थे और न किसी 'पार्टी मेनिफेस्टो' की दलीलो को साहित्य वृत्त मे बाँध रहे थे उन्होने शाश्वत और सामयिक कविता के तक को व्यर्थ कर दिया था उन रचनाकारो की सामर्थ्य यह थी कि वे बडी और मानवीय राजनीति की कविता कर रहे थे या साहित्य लिख रहे थे लेकिन उसके लिए व्याख्यान देने की उन्हे आवश्यकता नही थी द्विवेदी-काल के साहित्य से मेरी यह समझ बढी है कि यदि हमारी राजनीति बडे सकल्पो से जुडी है और हमारे सामाजिक सरोकार निष्करुणा, अन्याय तथा चालाकियो के नाना रूपो को पहचानते हैं तो हम महत्वपूर्ण और विश्वसनीय साहित्य लिख सकते हैं

पिछले दिनो 'साहित्य राजनीति और पार्टी रिश्तों' को लेकर जितनी हलचल हुई है उससे साहित्य रचना मे कोई खास पनापन आया नही लगता क्योकि वह 'हलचल' एक खास किस्म के लोगो द्वारा चलाई जाती है जिन्हे यह घमड होता है कि वे 'दृष्टि' देते हैं साहित्यकार के लिये आज का समय मामूली नही है और दूसरा कोई कारण भी नहीं है कि वह दुनिया से निश्चित और बेखबर हो जाये लेकिन दुःख यह है कि हमारी सारी चिन्तायें विभाजित और हमारे हित की चितायें हैं इन चिताओ के चलते हम विपन्न लोगो के साथ कम और सम्पन्न लोगो के साथ प्राय होते हैं हमारी यह पहचान भी धुधली होती जा रही है कि साहित्य-लेखन की धुरी एक व्यापक संवेदनशीलता है

द्विवेदी युग मे इसी सवेदनशीलता की धुरी पर राष्ट्रीयता की सहस्रधारा वाली जाह्नवी नहीं है वह बहुत बडे विशाल भूखण्ड को सीचती रही है इसी क्रम मे कभी सुधारवादी (जैसे नवरत्न जी ने पत्नी के लिये लिखी है बडे ही सवेरे उठ निमल होकर नित्य, पति को हिलाऊ, न्हाऊं, कु कुम लगाऊ मैं पढ़े लिखे लोक-काय करें पति तब तक, बलारोग्यादायी स्वाद भोजन बनाऊ मैं भोजन सुरुचि करें पति के उपाय करू, सुनाऊ मधुर बातें हिय हुलसाऊ मैं 'नवरत्न' प्राण प्यारे पति को एकान्त में, दे, रम्य कला कौशल की परीक्षा रिझाऊ मैं) कभी पुराने वर्णाश्रम की वापसी पर

आधारित, कभी उथल पुथल मचा देने वाली, कभी राम और कभी कृष्ण के जीवन चरितो पर केन्द्रित, कभी जासूसी और कभी सपनो मे डुलती रमती कथा कवितायें लिखी गयी हैं तब हमारे लिए इस युग का यह अनुभव सार्थक है कि एक बार रचनात्मक ऊर्जा के विकीर्ण होने के साथ साथ नाना-रूपो म लेखन विकसित होता है जिन्हे एक बहुत बडा जीवनानुभव ही जोडे रख सकता है क्या इस समय द्विवेदी काल जैसा बडा जीवनानुभव हमारे पास है ? हा, है 'भूख और पराधीनता से मुक्ति' आज वह सहस्रो रचनाओ मे व्यक्त है, वह किसी पार्टी का नही है, वह उन सब मनुष्यो का है जो बराबरी के पक्ष मे है और सम्पत्ति के सामाजीकरण को चाहते हैं

द्विवेदी-युग और नवरत्न जी के साहित्य मे हम यह देखते हैं कि सवेदनशीलता के बडे पक्ष पर आधारित होते हुए भी 'निजता रहित दीक्षागम्य' है और कुछ विषयो के आस पास चक्कर काटता है यह दरअसल साहित्य का सार्वकालिक सवाल है जिसका कुछ सम्बन्ध तत्काल से होता है, उस तत्काल से ज्यादा ही जो एक बडे मानवीय दुख से निवृत्त होना चाहता है और कुछ परम्परा से भी जिसके अतगत साहित्यकार जीवनानुभव चुनता है और कलाभ्यास से जुड जाता है लेकिन यह अस्वीकार करने जसी बात नहीं है कि 'निजता' के अभाव मे बहुत सा श्रेष्ठ जीवनानुभव निरर्थक हो जाता है और कलाकृतियां वाछित प्रभाव से रहित होती नजर आती हैं

नवरत्न जी और उनके साथ राजस्थान की साहित्य यात्रा का एक युग समाप्त हो गया है लेकिन यह मुहावरा ही है क्योकि उनका युग हिन्दी के उस बडे और विशाल साहित्यिक प्रयत्नों से जुडा है जिसमे राष्ट्र की स्वाधीनता के लिये मनुष्य बेझिझक प्राणोत्सर्ग के लिये खडा था और जिसके बदले मे उसने कभी कुछ नही चाहा

प गिरिधर शर्मा और दूसरे पुरोधाओ का जिन्होने देश और साहित्य के लिए साहस, तत्परता और निरन्तरतापूर्वक लिखा है हमने धीरे धीरे विस्मृत होने दिया है लेकिन उनकी प्रासगिकता और पुनर्मूल्याङ्कन का काम छोड कर हम अपनी लोक-परक साहित्यिक परम्पराओ को नही जान पायेंगे

हमे यह आशा करना चाहिए कि देश की जागरूक साहित्यिक सस्थायें विश्व विद्यालय और अकादमिया उन पुरखो के साहित्य पर शोध खोज कराने मे समर्थ होंगी क्योकि उन्हें काल के अंधेरे मे विलुप्त होने देना हानिकर होगा, खास तौर पर उस समय जबकि हमारी साहित्यिक-यात्रायें 'लोभ-लाभ' से जुड रही हो और हम 'साहित्य और सामाजिक रिश्तेदारी की तलाश में गभीरता से लगे हो

नद चतुर्वेदी

३ कवि की स्तोत्रलिपि

जहां जहां देखो वहीं वहीं झील ताल भरे
किसी को न दुख पानी हेत तरसन को
देख पड़े चारो ओर हरी भरी खेतीबाड़ी
लोकन को ताप गयो बड़े अरसन को
सुन पड़े मीठी मीठी नीकी केका मोरन की
हर्ष छाय रह्यो घनश्याम दरसन को
हिये उमगाय रह्यो आनंद समावे नहीं
अद्भुत प्रभाव है ये तेरे बरसन को

४

जीवन में सर्वोत्तम काम करने को है तू
मान ले यही तू सज्जन कर्यो पुरुषन को
मधुर मधुर ~~अच्छी अच्छी~~ बाते सुनने को पावे कान
ध्यान देके काव्य सुन कवी सरसन को
आनंद में अंग लगा प्रियमुख देख्यो चाह
जाग्यो करावैन प्रियचित्त परसन को
नैन में मिले हैं प्रिय दर्शन को प्यारे रत
नीर पे मिली है रसबैन बरसन को

वही है हमारो रंग वही है हमारो ढंग
वही है हमारो सारो हाल - अरसन को
ज्ञान विज्ञान कला कौशल से मतलब हमें
हरे हाथवारो है हमारे परसन को
बड़े बूढ़े चले वैसे चलें क्यों न हिन्दी हैं
काम क्या है हमें नये यंत्र परसन को
चलेगो हमारो गाड़ी आदम के वक्त को ही
रहेगो हमारो हल वही - बरसन को

निहारा करे

अपनी यह इज्जत आप करे अपना सब काम सम्हारा करे
बस आलस में न पड़े । छोड़ ज्ञान साहस से जो निहारा करे
वह काम करे पुरुषार्थ के जैसे सतत जर्मनी हारा करे
इमि भारत भारत होके रहे इसको मुख विश्व निहारा करे

३?

زاں پیش کہ نام تو ز عالم برود + مے خور کہ چو مے بدل رسد غم برود
(۲۳) بگشائے سر زلف بتے بند ز بند + زاں پیش کہ بند بندت از ہم برود

जा पेश कि नामे तो ज आलम बरखद
मै खोर कि चूँ मी रसद बदिल गम बखद
बकुशाये सरे जुल्फ बुते बन्द ज बन्द
जाँ पेश के बन्द बन्दत अज हम बरखद

उससे पहले नाम तेरा जगसे उठ जावे
मै पी जिससे दुःख दरद सब दिल से जावे
गाठ गाठ दे खोल प्रिया के अलकों की (
उससे पहले जोड जोड तेरे खुल जावे

३५

بادہ نشیں کہ ملک محمود این است ۞ وز چنگ شنو کہ لحن داؤد این است

از آمدہ و رفتہ دگر یاد مکن ۞ حالی خوش باش زانکہ مقصود این است (३८

बा बादह नशी के मुल्के महमूद ईस्त
व अज चंग शनो के लहन दाऊद ईस्त
अज आमदा व रफ्ता दिगर याद मकुन
हाली खुश बाश आके मकसूद ईस्त

मदिरा को ले बैठ यही महमूद राज है
सुन सुन बजाते चंग यही दाऊद गाना है ३
अगली पिछली ~~बातें आई गई बात [illegible]~~
~~बिता खुशी से [illegible]~~
वर्तमान को बिता खुशी से यही ध्येय है

मदिरा को ले बैठ राज महमूद यही है
सुन सुन बजते चंग वचन दाऊद यही है
अगली पिछली बातों को तू सोच न कुछ २०६
वर्तमान को बिता खुशी से ध्येय यही है



जन्म **6 जून 1881 ई** मृत्यु **1 जुलाई 1961 ई**

समाधि-लेख

अनुचित सत्ता वशीभूत हो शीश झुकाना
कायरता का काम सदा जिसने था जाना
रहा सदा स्वाधीन किया निज मन का चाहा
दिया सत्य उपदेश उच्चतर चरित निबाहा
दुःखो से न डिगा न फूला सुख मे आ कर
सोता है इस ठौर वही कवि गिरधर नागर

प्रस्तावना

बहुत सा अगडम बगडम लिखने वाले बहुत से होते हैं लेकिन जिन्दगी की बुलंदगियो के लिये लिखने वाले बहुत नही होते वे कृतिकार कुछ ही होते हैं जो जीवन के महान् लक्ष्यो को पहचानते हैं और इसलिए निरन्तर लिखते हैं कि उनकी पहचान धुंधलके मे कही खो न जाये वह संकल्पो के साथ जुडकर लिखते हुए वे बड़े होते हैं

द्विवेदी जी के समय मे बहुत सी बातें हुई हैं उनमे से बहुत सी भारतेन्दु के समय मे हुई और उन्हे द्विवेदी जी ने विशद रूप दिया और कुछ द्विवेदी जी के समय मे ही हुई भाषा के साथ एक बडी समस्या जिसे युग और मनुष्य का 'अन्त सम्बन्ध' भी कह सकते हैं द्विवेदी जी के समय का सबसे बडा साहित्य सरोकार है

समय की जरूरतो के साथ द्विवेदीकाल का घनिष्ठ सम्बन्ध है लेकिन एक विशद विचार धारा के साथ जिसमे राष्ट्रीयता की सब से बडी लहर उठती और मिल जाती है, उसकी विशिष्ट पहचान बनती है उस काल के बडे और छोटे कवि हर धडकन के साथ राष्ट्रीय स्वधीनता का आह्वान करते हैं किसी प्रकार का रचनाकार हो, कवि गद्य-लेखक, कथा-गाथाकार, उपन्यास लेखक, इतिहास, संस्कृति-परम्परा का व्याख्याकार या चन्द्रकान्ता सन्तति का लेखक, कही का रचनाकार हो मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बंग, बिहार भारत के ओर-छोर मिलाता कही का, एक निराकार इच्छा का सगुण साहित्य लिख रहा था राष्ट्रीय धारा का ओजस्वी इतिहास इस तरह एक दो नही सहस्रो रचनाकारो द्वारा लिखा जा रहा था उसमे एक थे गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

गिरिधर जी ने मुठ्ठी भर साहित्य नही लिखा है और न मुठ्ठी भर लोगो के लिये लिखा है हजारो के लिये लिखे इस साहित्य मे हजारो की इच्छायें अंकित थी, हजारो सपने और कथ्य थे कविता, गद्य, अनुवाद संस्कृत, उर्दू, हिन्दी सभी मे स्वाधीन मनुष्य का संवाद था

वह मनुष्य कैसा था ? उसकी कविता कैसी थी—व्यक्तित्व और कृतित्व—दोनो दृष्टि से कुछ जानकारी आवश्यक है

व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे उनकी आत्मजाओ के प्रामाणिक लेख हैं—कुमारी शकुन्तला 'रेणु' और शान्तिदेवी 'साधिका' के 'कृतित्व' उनका है, कुछ अंश नाना ग्रंथो की रचना करने वाले को इसी तरह दिखाया जा सकता है

व्यक्तित्व-कृतित्व

शकुंतला 'रेणु'

परिचय स्मृति-यात्रा

श्री गिरिधर शर्मा का जन्म पिता श्री ब्रजेश्वरजी शर्मा के घर, माता सौ पद्मा देवी की कुक्षि से, ज्येष्ठ शु 8 स 2038 वि तदनुसार दि 6 जून 1881 ई रविवार को सिंह लग्न म, झालरापाटन मे हुआ

विद्वान् पिता ने बालक गिरिधर की शिक्षा का प्रबन्ध घर पर ही अनेक शिक्षा गुरुओ को नियुक्त करके किया ये गुरुजन उनको हिन्दी, अंग्रेजी, सस्कृत, प्राकृत, फारसी आदि विभिन्न भाषाओ की शिक्षा प्रदान करते थे प्रारम्भिक नीव दृढ हो जाने के पश्चात् उनको पढने के लिये जयपुर भेज दिया जहा उन्होने प्रश्नवर श्री कान्हजी व्यास तथा परम वेदन द्रविड श्री वीरेश्वरजी शास्त्री के पास विशेष रूप से सस्कृत पञ्च-काव्य तथा सस्कृत व्याकरण (महाभाष्य) का अध्ययन किया इसके पश्चात् वे काशी (बनारस) चले गये जहा उन्होने म म प गगाधरजी शास्त्री से सस्कृत साहित्य एव दर्शन का विशिष्ट अध्ययन किया काशी से शिक्षा समाप्त कर व 19 वर्ष की अवस्था मे झालरापाटन लौट आये

जन्म से प्रश्नोरा नागर गुजराती होने पर भी बचपन से ही पण्डितजी का हिन्दी पर स्वाभाविक अनुराग था इस अनुराग को उनके देशप्रेम ने अधिक परिपुष्ट किया

वे एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व एव प्रतिभा लेकर जन्मे थे परतन्त्र भारत की तत्कालीन अधोदशा को देख कर उनका अन्तर द्रवित हो गया उन्होने भारती के द्वारा भारत की सेवा का बीडा उठाया उन्होने देखा कि प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा है और उसी भाषा के माध्यम से बच्चे का परिपूर्ण शिक्षण होता है भारत ही एक ऐसा अभागा देश है जिसकी अपनी कोई एक राष्ट्रभाषा नही है और हिन्दी भाषा मे बालको के,—देश की भावी पीढी के चरित्र निर्माण सम्बन्धी कोई सामग्री भी नही है उनका स्वाधीन मन इस ओर सलग्न हो गया उन्होने भारत राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा "हिन्दी" के प्रचार प्रसार एव साहित्य सवर्द्धन का सकल्प लिया उन्होने जिस भी साहित्य मे सुन्दर कृतिया देखी उनका रूपान्तर हिन्दी मे किया और दूसरो को प्रेरणा देकर करवाया द्विवेदी मण्डल के वे एक प्रतिष्ठित साहित्यकार थे

सन् 1912 ई मे उन्होने झालरापाटन मे श्री राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा की स्थापना की जिनके सरक्षक झालावाड नरेश श्री भवानी सिंह जी बने इस सभा का उद्देश्य "हिन्दी भाषा की हर तरह से उन्नति करना और हिन्दी भाषा मे व्यापार वाणिज्य, कलाकौशल, इतिहास, विज्ञान, वैधक, अर्थशास्त्र, समाजनीति, राजनीति पुरातत्त्व, साहित्य, उपन्यास आदि विविध विषयो पर अच्छे अच्छे ग्रन्थ प्रकाशित कर सस्ते मूल्य पर बेचना था इस सभा के मानद सदस्य बम्बई के सुप्रसिद्ध जन साहित्यकार श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह थे खेद है कि इस सभा का सारा सचित धन स्व सेठ लाल चन्द जी सेठी की फर्म मे डूब गया और उनके पौत्र सेठ भूपेन्द्र कुमार जी व तेज कुमार जी सेठी इस सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमाये बैठे हैं यह सभा अब मृत घोषित हो गई और इसके द्वारा प्रकाशित साहित्य—जिसमे प गिरिधर शर्मा जी नवरत्न की अलभ्य कृतियाँ भी हैं—अब स्व सेठ लाल चन्द जी व नेमी चन्द जी सेठी के झालरापाटन स्थित पुस्तकालय में दीमको की ग्रास बनी हुई है

सन् 1912 मे ही आपने भरतपुर मे हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना करके वहाँ के कार्यकर्ताओ को हिन्दीभाषा की श्रीवृद्धि प्रचार, प्रसार एव साहित्य सवर्द्धन का काय सौंपा इस सभा की स्थापना मे सबसे पहले चन्दा देने वालो मे सबसे प्रथम महानुभाव श्री नवरत्न जी थे पितृव्यस्वरूप श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी महाभाग ने यह सुखद जानकारी अपनी बातचीत के दौरान दी थी इस प्रकार वे हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के प्रेरक सस्थापको मे रहे

अपने बरसो के निरन्तर प्रयास व परिश्रम से आपने प्रबल मराठा विरोध को

युक्ति एव धैर्यपूवक अनुकूल बना कर इन्दौर जैसे कट्टर मराठा राज्य मे मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना सन् 1914 ई मे की जिसका उद्देश्य हिन्दी विश्व-विद्यालय की स्थापना रहा था

सन् 1935 मे वे श्री भारतेन्दु समिति कोटा के अध्यक्ष बने और इस सस्था को आपने पुनर्जीवन एव स्थायित्व प्रदान किया

राजपूताना से सवप्रथम आपने विद्याभास्कर नामक मासिक पत्र सन् 1906 ई मे निकाला जिस समय आपकी आयु मात्र 26 वष की थी इन्दौर मे सन् 1914 ई मे श्री म भा हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना कर चुकने के पश्चात् आप बम्बई गये जहा काग्रेस का अधिवेशन लॉर्ड सिनहा के सभापतित्व मे हो रहा था 'कर्मवीर' गाधी भी उसमे सम्मिलित हुए थे वही गाधी जी से आप मारवाडी विद्यालय मे मिले उनके साथ रहे एव उनको भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिन्दी का दीक्षामन्त्र दिया और सुखद आश्चय कि अगले ही वष लखनऊ के काग्रेस अधिवेशन मे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी घोषित कर दी गई

उन्ही दिनो बम्बई मे हिन्दू महासभा का अधिवेशन महामना मालवीय के सभापतित्व मे हो रहा था सभा मे अपने भाषण मे नवरत्नजी ने कहा—"मालवीयजी हिन्दू यूनीवर्सिटी के द्वारा देश का मान पा सकते हैं किन्तु गिरिधर शर्मा से सम्मान तो वे तभी पा सकेंगे जब वे हिन्दू यूनीवर्सिटी को हिन्दी यूनीवर्सिटी बना देंगे पर भाषा का शिक्षण मातृभाषा के माध्यम से दिया जाय इतना सामथ्य हिन्दी मे आना ही चाहिय जब तक देश अपनी भाषा नही सीखेगा तब तक उसकी स्वाधीनता कैसी? जब तक देश का चरित्र विकास न होगा तब तक उसकी आत्मोन्नति कैसी ? और चरित्र विकास का पाठ प्रारम्भ होता है नन्हे-नन्हे शिशुओ से उन्होने ईश्वर प्राथना लिखी जिसे महात्मा गाधी ने बहुत ही सराहा और उसे राष्ट्र के चरित्र को घडने वाली एक सुघड कृति उद्घोषित किया उनके ' राष्ट्रीय गान" एव "मातृभूमि वन्दना" मे स्वदेशप्रेम छलका पडता है 'बच्चा' शीषक उनकी कविता स्वर्णिम भारत के बालक का चित्र प्रस्तुत करती है "नवरत्न वर्णमाला" एव 'सर्वोदय अक्षर बोध" मे बालको एव प्रौढो की बडी परिपुष्ट निर्माण-सामग्री है

नवरत्न जी ने सवप्रथम विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की प्रतिभा को पहचाना जबकि उन्हे 'नोबल पुरस्कार' भी नहीं मिला था गीताञ्जलि के सवप्रथम पद्यानुवाद की स्वय मूल कवि ने सराहना की, इससे बढ कर अनुवाद की क्या सफलता हो सकती है ? नवरत्न जी से स्वय रवि बाबू ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 27वें अधिवेशन

मे भरतपुर मे अनुरोध किया कि वे गीताजलि को देववाणी संस्कृत म भी अनुवादित करें कवि का स्वप्न साकार हुआ संस्कृत म गीताजलि तयार हो गई इतना ही नहीं उन्होने रवि बाबू की अन्य कृतियो को भी मूल बगला भाषा से हिन्दी मे रूपान्तरित किया है जिनमे "गाडनर," द क्रीसेंट मून, फ्रूटगेदरिंग चित्रा (बागवान बालचन्द्र, फल सचय, चित्राङ्गदा) प्रमुख है "बागवान" तो ब्लैंकवस मे हिन्दी की पहली काव्यकृति है महाकवि निराला ने 'परिमल' के प्रथम सस्करण की भूमिका म सादर इसका उल्लेख किया है

संस्कृत के अतुकान्त छन्दो मे उनका "सावित्री" खण्ड काव्य हिन्द "प्रिय प्रवास" से भी पूव की रचना है जो साहित्य इतिहास के प्रकाश मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है स्व डा सुधीन्द्र ने अपने गवेषणापूर्ण ग्रन्थ 'हिन्दी कविता मे युगान्तर" मे इसका विवरण प्रस्तुत किया है

सौराष्ट्र गुजरात के कवि सम्राट श्री नान्हालाल दलपतराम कवि की काव्य प्रतिभा को उन्होने हिन्दी भारती को भेंट किया है इसके साथ ही संस्कृत के माघ काव्य तथा भर्तृहरि के नीतिशतक को भी उन्होने क्रमश हिंदी तथा गुजराती काव्य मे अनूदित किया

अंग्रेजी काव्य की सुन्दर पुष्पावलियो का भी उन्होने चयन किया और उन्हे हिंदीभारती का कण्ठहार बनाया शली कीट्स वड स वथ, बायरन शेक्सपीयर मिल्टन, टनीसन आदि कवियो की कविताओ के अतिरिक्त उन्होने गाल्डस्मिथ के प्रसिद्ध काव्य 'हरमिट" को संस्कृत व हिंदी मे रूपान्तरित किया तथा महाकवि ग्रे' के सुप्रसिद्ध काव्य "एलिजी" का संस्कृत भाषान्तर 'करुणप्रशस्ति' के नाम से किया यथाथ मे "एलिजी' (शोक-काव्य) नाम को साथक करने वाली हिंदी मे किसी कृति का प्रणयन अभी तक नही हुआ (गुजराती मे ऐसी कृति 'स्मरण सहिता' है खबरदार कवि की दशनिका भी ऐसा ही शोक काव्य है) अपने परम प्रिय पुत्रवत भक्त शिष्य झालावाड नरेश्वर स्व श्री राजेन्द्रसिंह देव 'सुधाकर' के अवसान पर उन्होने शोक-काव्य लिखा जो अंग्रेजी मे प्रचलित शोक काव्य (Eligy) के नियमो पर आधारित हिंदी की पहली कृति है

आपन ही अंग्रेजी की "सॉनेट" को हिंदी लक्षणो मे गूथ दिया और इस प्रकार के काव्यो को "सोन्नत" नाम दिया वे प्रत्यक्ष वस्तु के अभिनव प्रयोगकर्ता रहे

पण्डित गिरिधर शर्मा आय-भारत के महान् स्वप्न द्रष्टा रहे देश मे अपने "हिंदी विश्वविद्यालय" बने, यह उनकी प्रबल महत्वाकांक्षा रही उन्होने म भा हिंदी

साहित्य समिति की स्थापना इसी दृष्टि से की थी कि उसका विकास "हिंदी विश्व-विद्यालय" मे हो सके इसके लिए उन्होने अपनी एक परिपूर्ण योजना बनाई, सैनिक शिक्षा भी जिसके पाठयक्रम का एक अनिवार्य अग थी उन्होने अपनी इस योजना को इन्दौर के तत्कालीन शिक्षाप्रेमी नरेश श्री तुकोजी राव होल्कर तथा बडौदा के विद्याव्यसनी नरेश सर सयाजी राव गायकवाड के सम्मुख प्रस्तुत की यह योजना सम्मत्यर्थ महामना मालवीयजी के पास भेजी गई उन्होंने इसकी भूरि-भूरि प्रशसा की किन्तु साथ ही यह कडी भी जोड दी कि नवरत्न जी मेरे हिंदू विश्वविद्यालय मे सहयोगी बनें तो अत्युत्तम हो" योजना वही खटाई मे पड गई और, होल्कर सरकार का सरक्षण न पा सकी फलत म भा हिंदी साहित्य समिति हिंदी विश्वविद्यालय के रूप म विकसित न हो सकी ये सब प्रयत्न उस समय के हैं जबकि इस ओर देश के उद्धारकों का ध्यान स्वप्न म भी न था जिस दिन स्वाधीन भारत दो खण्डो मे विभाजित हुआ और आगामी 15 वर्षों के लिए देश की राजभाषा अग्रेजी घोषित हुई उस दिन उनकी वेदना का पार न रहा और देश के दुर्भाग्य पर वे बहुत पछताये देशवासी स्वाधीन किन्तु खण्डित भारत की अभिवन्दना कर रहे थे तब भारत और भारती का यह प्रज्ञाचक्षु सपूत उत्तप्त अन्तर से, शोक विगलित हो, लिखवा रहा था —

"कैसा हिन्दुस्तान, पाकिस्तान क्या ?

आह, मुझको हो रही है वेदना" × × —

मा की खण्डित प्रतिमा से उनके शोकाश्रु छलछला आये

देशीराज्य मे रह कर भी नवरत्नजी ने भारत की स्वतत्रता के गान गाये बगभग के समय उन्होने लार्ड कर्जन को सम्बोधित करके 'कलकी को" शीर्षक कविता लिखी हिन्दी प्रेमियों को उन्होने हिंदी की श्रीवृद्धि की ओर प्रेरित करते हुए अच्छी फटकार बताई है —'हिंदियो ! तुमने भी अपनी हिंदी सुधारी है ?' राजाओ को भी उन्होने दोषो पर फटकारा—"कहाते हो अवतार, आते ना उतर नीचे कलि के महीपो ! चढे जाते हो सिंहासन प ' वे गुणग्राही थे गुणो के आगे विनम्र हो जाते

सस्कृत के प्रति उनकी निष्ठा एव भक्ति अतुल थी उनके मतानुसार सस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमे गागर मे सागर भर लेने की शक्ति है सस्कृत को मृतभाषा कहने वालो के प्रति उनका रोष अपार था सस्कृत को युग से पिछडी एव नवीन उद्भावनाओ से शून्य बताने वालो को उन्होने चुनौती दी उन्होने डिगल पिंगल शास्त्रीय छन्दो की रचना (वयण सगाई, साणोर गीतो की रचना) सस्कृत भाषा म की और सस्कृत को

शक्तिमत्ता को सिद्ध कर दिखाया युगभावना की बोधक अपनी नीति लिखी— "नवरत्न नीति " नागरिक शास्त्र लिखा—"नागरतन्त्रम् " युग बोधिनी "प्रश्नोत्तर-रत्नमाला ' लिखी और सस्कृत एव प्राकृत साहित्य मे आर्या एव गाथा सप्तशती की कडी को आधुनिक युग से जोडने वाली कृति की रचना "गिरिधर सप्तशती " के नाम से की इनके अतिरिक्त भी उनकी अन्य सस्कृत रचनायें हैं (1) सद्वृत्तपुष्पगुच्छ, कारकरत्नम, अभदेरस आदि अमरसूक्तिसुधाकर (उमर खयाम की रुबाइयो का सस्कृत भाषा तर इतनी ख्याति पाया कि उसे पढकर बर्जिन यूनीवर्सिटी के सस्कृत के प्राफेसर जमन विद्वान नवरत्नजी से मिलने नवरत्न सरस्वती भवन मे पधारे तथा प्रेम पूवक गुड-मू गफली का आतिथ्य ग्रहण कर गये —

ऐसी एक जीवन्त प्रतिभा थे प गिरिधर शर्मा नवरत्न साहित्य के वे परम वचस्वी वाचस्पति ही थे सन् 1938 ई मे वे निता त प्रज्ञाचक्षु हो गये कि तु उस अवस्था मे भी उनका स्वाध्याय, लेखन, मनन, चि तन कभी न छूटा अपनी प्रज्ञाचक्षु-अवस्था मे ही उ होने शोख सादी की अमर कृत्ति करीभा का हि दी, गुजराती एव सस्कृत भाषा मे रूपा तर किया वे भावात्मक ऐक्य एव सस्कृति के आदान-प्रदान मे साहित्यिक सुविचारो के योगदान को स्वीकार करने वाले सच्चे अर्थों मे मानवतावादी महामानव थे

जून सन् 1944 ई मे अपने ज्येष्ठ पुत्र सुयोग्यतम वाणी वरदायिनी के अन य उपासक प ईश्वरलाल शर्मा रत्नाकर की रुग्णावस्था मे उपचार हेतु उज्जैन पधार, वहा भी उनका अनुसधान काय जारी हो गया उ होने चाणक्यसूत्र की बहुमूल्य कृति खोज निकाली और सूत्रो को कारिकाबद्ध कर दिया इस प्रकार उ होने विपुल साहित्यसजना की, जिसका सरक्षण एव प्रसरण आपभारत का गौरव है

आषाढ़ कृ 3 स 2018 वि (तदनुसार 1 जुलाई 1961 ई) के दिन ब्राह्ममुहूत म ये महर्षि इहलीला समाप्त कर यशोदेह मे अमर हो गये

झालरापाटन

शांति 'साधिका'

अंतिम दिन

प्रात के 3 बज चुके थे पिता श्री की नित्य साधना का समय होने को आया कि सर्वोदय के प्रतिष्ठापक संत श्री विनोबा तथा अन्य नेता गोकुल भाई भट्ट, श्री जवाहरलाल जैन आदि मेरे पिता श्री से मिलने के लिये आ पहुंचे

यहाँ पर आपके मेल-मिलाप, वार्तालाप, आपसी विचारों के आदान-प्रदान को लेकर विशुद्ध-स्नेह की पावन गंगा लहरा उठी सम्पूर्ण वातावरण नसर्गिक सुख से भर गया संत विनोबा और मेरे पिता आलिंगन-बद्ध हो गये मानो युगों-युगों के बिछुड़े बान्धवों का पुन मिलन हुआ हो

सन् 47 से पहले की बात है जब संत श्री विनोबा द्वारा चलाये गये भू-दान आन्दोलन को लेकर राजस्थान के सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराज ढढढा अपनी पार्टी सहित हमारे घर—नवरत्न सरस्वती भवन, झालरापाटन—पधारे तो सब प्रथम मेरे पिता श्री ने सम्मान सहित (अपने लिए एक इन्च भूमि भी नही रखते हुए) अपने चारो गाँव इस पुनीत यज्ञ के लिए सहर्ष समर्पित कर दिये, यह कहते हुए कि मेरे गाँव के किसान सदैव सुखी रहे

अब अर्थाभाव के कारण हमारे घर की व्यवस्था गड़बड़ा गयी तो मेरी मातु-श्री कुछ चिंतित सी हो चली किन्तु मेरी छोटी बहिन शकुंतला एव सब भाई-बहिनों न आश्वासन दिया—माँ ! आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें ! दुनिया के सभी लोग क्या जागीरदार है ? पिता श्री ने अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है

तदुपरान्त सन् 47 मे मेरे छोटे भाई परमेश्वर लाल शर्मा ने नगर परिषद झालरापाटन मे सचिव पद पर काम करना शुरू कर दिया और बड़े भैया ईश्वरलाल रत्नाकर ने जयपुर आकर चाचाजी श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा स्थापित 'ज्ञान मंदिर' के अध्यक्ष पद का काय-भार सभाल लिया मेरी छोटी बहिन शकुंतला अध्यापिका हो गयी

मेरे पिता श्री की अद्वितीय राष्ट्रीय साहित्यिक सेवाओ को लेकर तत्कालीन अकादमी-अध्यक्ष श्री जनादन राय नागर ने आपको विद्वद्वृत्ति से सम्मानित किया जो आपको आजीवन प्राप्त होती रही इस वृत्ति को आपने नये-नये साहित्यिक प्रकाशनों को मगवाने तथा अन्य साहित्यिक अभिरुचियो के सवद्धन मे व्यय किया

मेरे पिता महाराज राणा झालवाड नरेश श्री भवानीसिंह देव के परम प्रिय एव माननीय गुरुदेव थे उनका पिताजी पर दृढ विश्वास था अत आप जो कोई काय करते मेरे पिता श्री की राय से ही करते ऐसे अपने परम विश्वस्त गुरुदेव को महाराज राणा ने विज्ञजनो के बीच सम्मान सहित ताजीम दी महाराज राणा ने स्वय अपन हाथो से श्रद्धेय गुरुश्री बहुमूल्य पोशाक धारण करवाई और स्वर्ण कडा पाव मे पहना कर विनम्रतापूवक प्रणाम किया यहाँ पिता श्री का स्नेहपूरित वरद-हस्त उठा और अपने परम प्रिय शिष्य के मस्तक पर फिरने लगा इस प्रकार गुरु शिष्य के अलौकिक स्नेहमय व्यवहार से उपस्थित सज्जन वृन्द आनंदित हो गये

पिता श्री के विषय मे श्री माणिक्यलाल वर्मा ने प्रशसा भरे शब्दो मे कहा था कि नवरत्नजी वास्तव म राजस्थान की राजनीति के आधार स्तम्भ थे पिता श्री ने जीवन भर नतिक मूल्या राष्ट्रीयता और हिन्दी राष्ट्रभाषा के लिये सघष किया यही उनकी राजनीति थी उसी के वे स्तम्भ रहे

मेरे पिता श्री पर झालावाड नरेश महाराज भवानीसिंह का अनन्य विश्वास था, यह मैं एकाधिक बार लिख चुकी हू, अत जब वे अपने रोग निदान के लिए विदेश यात्रा पर जाने लगे तो जहाज मे बठने से पूव बम्बई बन्दरगाह पर अपने परम विश्वस्त गुरुदेव से विनयपूवक बोले—देवा ! मैं तो जा रहा हू, सो अब लौटूगा नही और यह

राजेन्द्र (बाद में महाराज राणा राजेन्द्रसिंह जी 'सुधाकर') आपकी शरण में है, इसे भी आप अपने दोनों बच्चों के समान ही समझना

ऐसा कहने के साथ उन्होंने युवराज से कहा—बेटे ! मैं तो आपका पाप का बाप हूं ये गुरुदेव तुम्हारे धर्म पिता हैं सो जो कोई राज्य-काम या अन्य काम आरम्भ करो तो गुरुदेव की सम्मति लेकर करना

फिर पिता से कहा—गुरुदेव सभालो अपना बच्चा ! नमस्कार गुरुदेव अलविदा भारत ! गुरुदेव अलविदा

पिता श्री ने राजकुमार को हृदय से लगा लिया महाराज श्री की दीर्घायुकामना की और हृदय मजबूत रखने का आग्रह किया कहा—राजेन्द्र ईश्वर और शान्ति की तरह हैं अपने प्राण रहते इन्हें कष्ट नहीं होने दूंगा और न कुमार्गगामी बनने दूंगा

महाराज श्री अपनी आकुल व्याकुल स्थिति में ही जहाज पर चढे और कभी अपने प्रिय गुरुदेव को और कभी अपने एकमात्र प्रिय पुत्र राजेन्द्र को देखते देखते दृष्टि से ओझल हो गये महाराज श्री को गले का कैंसर हो गया था अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच भी नहीं पाये कि यात्रा के तीसरे दिन ही स्वर्गवासी हो गये उनका दाह-संस्कार ससम्मान अदन में कर दिया गया

इस अशुभ समाचार से झालावाड में हाहाकार मच गया पिता श्री ने बिलखते राजकुमार को अपनी छाती से लगा लिया आवागमन की रहस्य-लीला को समझाते हुए धैर्य दिया वे कई महीनों तक उनके साथ रहे मैं भी पिता के साथ कोठी पर रहने लगी

महाराज राजेन्द्रसिंह अपने पिता श्री के समान विद्याप्रेमी प्रगतिशील दृष्टिवाले सुकवि थे ये कवियों का आदर करते थे और कवि सम्मेलन तथा मुशायरों में सक्रिय हिस्सा लेते हिन्दी में 'सुधाकर' तथा उर्दू में 'मखमूर' उपनाम से लिखने वाले महाराज राजेन्द्रसिंह ने हिन्दी, ब्रजभाषा तथा उर्दू में सहस्रों रचनायें लिखकर ख्याति अर्जित की कवि सुधाकर भगवान् कृष्ण के अनन्य उपासक थे वे भगवान् कृष्ण की सेवा स्वयं अपने हाथों से करते थे

सन् '43 की बात है हरतालिका तीज के दिन पाटन तथा छावनी में घर-घर में जागरण हो रहा था मेरे पिता श्री कोठी पर ही थे महाराज ने एक नयी कविता बनाकर पिता जी को सुनायी पिता श्री ने सराहना करते हुए कहा—खूब, बहुत

सुंदर भाव पूर्ण रचना है महाराज ! कोई विशेष कमी नही इसमे ! एसा कहने के साथ ही पिता जी ने रचना म आवश्यक सुधार करवा दिया बाद मे गुरु शिष्य मिलकर इस भजन की पक्तियो को देर तक गाते रहे कुछ समय बाद सुधाकर देव नित्य कम से निवृत्त होने के लिए चले गये

मुश्किल से पन्द्रह मिनिट हुए होगे कि वह हादसा हो गया जिससे सारा राज्य और हाडौती का साहित्य जगत् स्तब्ध रह गया 42 वप की अल्पायु मे ही महाराज राजेन्द्रसिह 'सुधाकर' की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गयी युवराज हरिश्चन्द्रसिह इस जगत् मे पितृहीन अकेले रह गये पिता श्री ने तरुण महाराज हरिश्चन्द्रसिह को धय दिया लेकिन स्वय इस शोक से छीजन लगे उनकी दुनिया भी निरवलम्भ हो गयी

सन् 58 मे राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपका सम्मान करना चाहा और बडे आदर के साथ आमत्रित किया किन्तु आपने अस्वीकार कर दिया सन् '56 मे मेरे अग्रज प ईश्वरलाल शर्मा 'रत्नाकार' का अकाल निधन हो गया था इस शोक ने बाबूजी को जजर कर दिया उनके पास अब कही आने जाने के लिए उत्साह नही रहा था पुत्र की मृत्यु ने उन्ह स्थित प्रज्ञ बना दिया था अब वे अपना अधिकाश समय भगवद्-चिन्तन, लेखन, मनन मे ही व्यतीत करने लगे

पुत्र शोक कितना दाहक, कितना हृदय-विदारक, कितना असह्य होता है यह भुक्त भोगी ही जानता है लेकिन ऐसी अवसाद की घडियो मे भी पिता श्री ने अपने आपको पूर्ण सयत रखा जिस समय मेरे अग्रज की अर्थी उठाई जाने लगी तो बाबूजी ने दोनो हाथ जोडकर प्रणाम किया और गम्भीरतापूवक केवल इतना ही कहा 'बेट ! ईश्वर ! तुम भी मुझे छोडकर जा रहे हो ! ठीक है ! जाओ ! परमात्मा तुम्हारी आत्मा को शान्ति दे परम शान्ति, और फिर मौन हो गये

अपने समाधि स्थल पर अकित करने के लिए उन्होने निम्न कविता लिखी —

अनुचित-सत्ता वशीभूत हो शीश झुकाना ।
कायरता का काम सदा जिसने था माना ॥
रहा सदा स्वाधीन, किया निज मन का चाहा ।
दिया सत्य उपदेश, उच्चतर चरित निबाहा ॥
दुखो से नही डिगा न फूला सुख मे आकर ।
सोता है इस ठौर वही कवि गिरिधर नागर ॥

लेकिन मेरे लिए बाबूजी 'दुख-सुख समाचरेत्' रहने वालो मे थे मैंने उन्हे श्रद्धा अर्पित करते हुए लिखा

पायाँ सूँ हरख नही, खोयाँ ना अकुलाय।
पायाँ, खोयाँ इक समां, सो नर सिद्ध-सुभाय।

पुनश्च—

अपनी 81 वर्ष की जन्म तिथि पर बाबूजी ने अपनी कुलदेवी का अर्चन किया और हाथ जोडकर नमन करते हुए कुछ समय प्रार्थना की थोडे समय बाद आपकी तबियत खराब हो गई आपको भी कैंसर की बीमारी ने आ घेरा था

वृद्धावस्था, पुत्र-शोक की असह्य वेदना, क्षीण काया और कैंसर जैसे रोग के भयकर कष्ट ने एक साथ ही आपको विचलित कर देना चाहा किन्तु आप हर परिस्थिति में अविचलित रहे

जून का महीना बाबूजी के लिये बडा दुखदाई रहा पिता श्री की रुग्णता का समाचार पा कर दा साहब श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने आपका सही उपचार और चौबीसो घटे देख भाल करने के लिये प्रख्यात वैद्य श्री किशनलालजी को नियुक्त किया

30 जून को जब मैं अपने स्कूल के सत्रारम्भ पर उपस्थिति देने के लिये जयपुर रवाना होने लगी तो पिता श्री से अनुमति लेने के लिये गई मैंने कहा—बापूजी ! मैं जयपुर जा रही हू कल ही लौट आऊगी इस पर उन्होने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा और अस्फुट वाणी मे बोले जिसे मैं समझ न सकी

चलते समय मेरी मातु श्री ने मुझ से कहा—शान्ता ! क्या राधागोपाल जी (मेरे पति) उपाध्याय जी से कह कर किसी योग्य डाक्टर को अपने साथ नही ला सकेंगे ?

मैंने उत्तर दिया—मा ! आप चिन्ता न करें हम कल ही डाक्टर सा को लेकर आपकी सेवा मे पहुच रहे हैं

दूसरे दिन प्रात 1 जुलाई को 6 बजे मैं जयपुर पहुची मेरे पति मेरी मातु श्री की इच्छानुसार उत्तम डाक्टर के प्रबन्ध के लिये दा सा श्री उपाध्याय जी के पास गये, किन्तु, आपके कुछ कहने के पूर्व ही श्री उपाध्याय जी ने व्याकुल वाणी मे कहा—पाडे साहब ! परम हस नवरत्न जी हम सब को छोड कर चले गये रेडियो पर समाचार प्रसारित हो गये

9 बजे सूचना केन्द्र मे शोक सभा मनाई गई पिता श्री का एक बडा भव्य चित्र लगा हुआ था मैं उसी चित्र के सामने जा खडी हुई इस पर दा साहब ने आकर मुझे कलेजे से लगा लिया और मेरे सिर पर स्नेह से हाथ रखते हुए धैय दिया बोले–बेटी ! तुम इस बात को न भूलो कि तुम इन्हीं परम धीरधर तपस्वी की सुपुत्री हो और मेरे ढलकते हुए आसुओ को पोछ डाला

उसी दिन मैं सपरिवार अपनी शोक–सतप्ता मातु श्री के पास पहुचने के लिए जयपुर से रवाना हो गई

यहाँ इस तपोवन मे शोक–प्रकट करने वाला का ताता बँधा हुआ था सम्पूर्ण वातावरण रूदनमय था

ऐसी अवसाद की घडियो मे झालावाड की राजमाता अपनी गुरुमाता को धय बधाने के लिये आई किन्तु दोनो पति–बिछोह से सतप्त महिलायें नि शब्द एक दूसर को देखती हुई आसुओ से तर-बतर हो गई

1 जुलाई 1961 को प्रात 4 बजे मेरे परम तपस्वी पिता समाधिस्थ हो गये

ऐसे पुण्यवान सिद्ध कवियो के लिये भतृहरि ने ठीक ही कहा है—नास्ति येशा यश काय, जराभरणज भयम्

ब्रज-भाषा

ज्ञान को भान उग्यो जग मडल
 भारत के जन काहे जगो ना
काहे विलब करो शुचि काल में,
 काह अकम ने दूर भगो ना
काहे तजो नहिं आलस को पुनि,
 कम के मारग काहे पगो ना
काहे करो नहिं कारज नूतन
 काहे स्वदेश के नेह लगो ना

सीरी सिरी पीरी पीरी जोति की सी फीकी नारी,
 मान सुकुमारी ताहि अगना बनावेंगे
रहेंगे विलास मे रचे ही दिन रात सदा,
 बल के विनाश की न बात मन लावेंगे
अचपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन,
 अपाहिज मद मूढ सतति बढावेंगे

८

बहावेंगे बालपिता पालेंगे पुरानी रीति,
छोडेंगे न बाँकी चाल ग्रान को निभावेंगे

काहू के चलत बाए काहू के कृपाए चलें,
काहू के सुभाला तेग, वल्लम कटारी है
काहू के तमचा चलें, चलें बन्दूकें काहू की
तोपें चलि के काहू की करें गोलाबारी है
ग्रस्त्र चलें, शस्त्र चलें, चालें चलें नाना देश
भारत है पराधीन वीरता पै धारी है
बातन की बातन मे दुश्मन उडा देंगे
लम्बी चौडी तीखी जीभ चलती हमारी है

दिखावैं जगत् रूप दवें ज्ञान तत्वन को
जा सौं नरनाह ! कौन जन सुख पावे ना ?
उक्तियाँ कविन्दन की मधुर-मधुर भाखैं
सो सो बार पूछे हू बतावें, उकतावें ना
विश्व के महान् मतिमान् विद्वानन की
बानिया सुनावें सरसावें गरवावें ना
ऐसे शात ऐसे साधु ऐसे गुरु पुस्तक है
बन्द हू किये तें जो न ऊन मन लावें ना

कीज सदा श्रम के शुभ काज,
मनोहर ज्ञान सुधा रस पीजै
पीज महावचनामृत, देश की
उन्नति मे अपनो चित दीजै
दीजै सब कर दूर स्वदोपन,
निबलता हि विसजन कीजै
कीजै महापुरुषारथ रत्न जू,
भारत को न कलकित कीजै

—

जय किसान

जय किसान जय जय किसान
शीलवान
सद्गुण निधान
कहे कुछ भी मूढ लोग
तू साधे पर कर्म योग
शीत ग्रीष्म वर्षा महान्
सहता सब तन पर महान्
जय किसान जय जय किसान

संन्यास कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते

है गीता का गूढ ज्ञान
तू इस पर चलता सुजान
गिरिधर जो जन हैं महान्
करते तेरा कीर्तिगान
जय किसान जय जय किसान

(सरस्वती सितम्बर 1914)

अन्योक्ति

स्मारक छप्पै
नसर्गिक उद्यान लगाने में चतुराई
माली ने तरु रोप रोप परिपूर्ण बताई
माल बकुल पर किन्तु दया इसने न दिखाई
एक ओर धर दिया कोण में की न सिंचाई
नवरत्न किसे था भान यह हो महान् लहरायगा
कर सौरभमय उद्यान सब सुमन छटा दरसायगा

आततताइयो के प्रति

इलगिन गिन गिन दे गया हरामी दु ख,
दुरजन कजन ने क्रूरता पसार ली।
एमसन लगा गया सभा तोडने का ताँता
फूलर ने फूलशाही अपनी बघार ली।
एवट्न पाजी ने लाजपत दूर किये
फ्रेजर औ हेयर ने घूम-धाम धार ली।
कहे काल कवि दुष्ट मिंटो ने तो घोटा दम
भारत की जान, जानमार्ले ने मार ली।

कौमी एकता

जाना नही अच्छा कभी जैनियो के मंदिर मे,
किसी भांति अच्छी नही कृष्ण की उपासना ?
शम्भू का स्मरण किये होना जाना क्या है,
राम नाम लिये से क्या सिद्ध होगा कमना ?
है म्लेच्छ मुसलमान हिंदू बडे काफिर हैं
ऐसी हो परस्पर मे बुरी जहाँ भावना ?
प्रेम न हो आपस का एका फिर क्यो कर हो,
क्यो न भोगे हिंद माता नई-नई यातना ?

जरा सी सीख लो मौला ! ये अच्छी है ज़ुबा हिन्दी

सुनो ए हिंद के बच्चो तुम्हारी है ज़ुबा हिंदी
तुम्हारा हो यही नारा हमारी है ज़ुबाँ हिंदी
पढ़ो हिंदी लिखो हिंदी करो सब काम हिंदी में
अजब दिलकश तुम्हारा हो अया तर्जे बयाँ हिंदी
मिली है फारसी अरबी मिली है प्राकृतो देशी
भरी आला खयालो से तुम्हारी मेहरबाँ हिंदी

जुबानें शोक से सीखो जहाँ भर की बढे जाओ
मगर है शत यह प-ले बनो तुम राज दाँ हिन्दी
इधर गिरिधर उधर गांधी इधर टंडन उधर काका
लगाते चार सू मिलजुल यही धुन जैंनै माँ हिंदी
हजारो लफ्ज आयेंगे भले आ जायें क्या डर है
पचा लेगी उन्हें हिन्दी कि है जिन्दा जुबाँ हिन्दीं
यहाँ ही क्या वहाँ भी जा खुदा तक से कहा मैंने
जरा सी सीख लो मौला ! ये अच्छी है जुबाँ हिंदी
सुना-सुनकर, उठा-उठकर, हसा-हस कर, बढा बढकर
गले मिल यो कहा हक ने ये अच्छी है जुबाँ हिंदी
ये तेरा हक है कहने का तू हक पर है हकीकत मे
कलन्दर दोस्त ! तेरी ये बडी प्यारी जुबाँ हिन्दी
कलन्दर मुर्शिदे कामिल बडे ही साफगो हो तुम
जुबाँ है हिन्द की हिन्दी पढेगा सब जहा हिन्दी

स्वदेश महिमा

मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीवन प्राण,
मेरा सनमान मेरे देश की बडाई मे ।।
जियू गा स्वदेश हित, मरूगा स्वदेश काज,
देश के लिए न कभी करूगा बुराई मैं ।।
भीषण भयकर प्रसग मे भी भूल के भी,
भूलू गा न देश हित राम की दुहाई मैं ।।
जब लो रहेगी सास, सवस भी लुटा दू गा,
ईश को भी भुका लू गा देश की भलाई मे ।।
चर्चा जहा देश की हो मेरी जीभ वही खुले,
और नही खुले कही खुदा की खुदाई म ।।
मेरे कान गान सुनै साचे देश भक्तन के
और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई मे ।।
मेरे अग रग चढे एक देश प्रेम को ही,
और रग मग हो के बूडे जा तराई मे ।।
मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन, मेरो जीवन,
मेरो सब लगें प्रभो ! देश की भलाई मे ।।

बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु पर

अहह वज्र गिरा   गिर ही पड़ा
हृदय आज फटा   फट ही चला।
वह गया द्विजराज   गया   गया

तिलक आज गया   उठ ही गया
भरत भू जननी अब क्या कहे ?
किस प्रकार महा दुःख को सहें ?
हृदय का नरनाथ गया   गया
तिलक आज गया   उठ ही गया

मदन मोहन शोक मना रहे
नयन मोहनदास झुका रहे
सुमति पंडित बाल गया   गया
तिलक आज गया   उठ ही गया

वह स्वराज्य महा पथ दर्शक
प्रभु परायण, नीति पयोनिधि
वह महा मति कृष्ण सखा, महान
तिलक आज गया   उठ ही गया

वह रहस्य प्रकाशक, बुद्धिमान
वह महासुत भारत मात का
वह शिरोमणि मानव जाति का
तिलक आज गया   उठ ही गया

कलम के बल से लड़ता रहा
प्रबल गर्जन भी करता रहा
सुभट केसरि जो न हटा कभी
तिलक आज गया   उठ ही गया

सकल को श्रुति तत्त्व सुझा गया
करम के रण बीच जुझा गया
कठिन भारत के इस काल में
तिलक हाय गया   उठ ही गया

लोरी

सोजा बेबी सोजा, सोजा चन्दा सोजा
सोजा भया सोजा, सोजा, सोजा सोजा
जल्दी सोना जल्दी जगना, यह सिद्धान्त बनाना अपना
बुद्धिमान, निरोग, गुणाकर, हों तू श्रीयुत विद्या सागर
तेरा मधुर-मधुर मुसकाना, है मेरा अनमोल खजाना
तेरे मुख की सुन्दरता पर, करूं हजारों चाद निछावर
तू मेरी आंखों का तारा, तू मेरे प्राणों का प्यारा
ईश्वर करे चिरायुष तुझ को सुदृढ, धर्मी, विज्ञानी तुम को
देख सके न तुझे कायरता, निशिदिन तुझ में बहे वीरता
तेरे साथ के जो बच्चे हों, सभी एक से एक भले हों
तेरे पूर्वज सुज्ञ हुए हैं, वेद विज्ञ नीतिज्ञ हुई हैं
राजाओं के सुगुरु हुए हैं, जन-मण्डल के पूज्य हुए हैं
तू उनसे भी आगे बढना, विद्या भी पढना
आविष्कार सैकडों करना, जन्मभूमि मा के दुख हरना
करना ऐसे काम मनोहर, गर्व करें भारतवासी नर
जन्मभूमि फूली न समावे, नई नई सुख सम्पति पावे
सोजा बेबी सोजा सोजा चदा सोजा
सोजा भया सोजा, सोजा, सोजा सोजा

(सरस्वती 1913 में प्रकाशित)

सुख का सिद्ध मन्त्र

सुख के लिए हुआ घर बाहर
गया वृक्ष-बेलो के पास
बन उपवन, गिरि, खेत विहङ्गम
कोई पूर सका नहिं आस

मैं हारा, झुंझलाया मैंने
दी सब सुख की आशा छोड़
गंगाजी के तट जा बैठा
लिया जगत से मुख को मोड़

इतने में कुछ मानव आये
बोला पहला उनमे से
'भूखा हू मैं' — भोज्य दिया तब
जो कुछ वहा बना मुझ से

कहा दूसरे ने—हे भाई
बडी जरूरत पैसे की
पाकिट से देकर कुछ पैसे
शान्ति हो सकी वैसे की

हमदर्दी के लिए तीसरा
दुख का मारा मेरे पास
खूब तपाया खूब सताया
आया, हो अत्यंत उदास

उसकी बातें सुन दिल पिघला
आखो मे जल भर आया
उसे प्रेम के पावन जल से
मैं कुछ शीतल कर पाया

खोज शान्ति की करता करता
चौथा जन आया सुध भूल
तन मन धन से उसके सारे
किये काम मैंने अनुकूल

ज्योंही शांति इन्होंने पाई
त्योंही मेरे सम्मुख भी
दिव्य, मनोहर, रम्य रूप धर
आकर खड़ा हुआ सुख भी

बोला मेरे कानो मे यो
हुआ आज से मैं तेरा
तूने अपने शुभ कामो से
बना लिया मुझको चेरा

गिरधर सुख का सिद्ध मंत्र यह
पाकर मैं हो गया महान
वन, उपवन, तरु लता विहग क्या
सुखदायक हो गया जहान

C

बच्चा

अणु अणु मे सत, विक्रम विलसित
रेणु-रेणु मे जस, प्रताप, जय
कण कण मे प्रस्फुटित चेतना
अमानन्द-रस, जीवन-नतन
जिस महि मे, मैं उसका जन्मा
भारत माता का हू बच्चा ॥ 1 ॥

एक चक्र का रखने वाला
सुछबि केसरिया श्वेत श्यामला
दिव्य तिरङ्गा मेरा झण्डा
हितकारी मानव-मानव का
इसे भाव से मैं हू झुकता
भारत माता का हू बच्चा ॥ 2 ॥

मेरे देश का है यह मान
इसका मुझको है अभिमान

इसके हित हैं मेरे गान
तन, मन, धन सबका जी-जान,
मेरा वचन नहीं है कच्चा
भारत माता का हूं बच्चा ॥ 3 ॥

अतुल करूंगा नव-नव खोजें
जग उछालेगा जिनसे मौजें
व्यथ रहेंगी कहीं न फौजें
स्नेह मिलन होगा जग भर का
होगा मेरा सोचा सच्चा
भारत माता का हूं बच्चा ॥ 4 ॥

सब मेरे हैं, मैं हूं सब का
मान करूंगा शुचि जनमत का
प्रजातन्त्र का प्रमुख बनूंगा
प्रेम-राज्य स्थापित कर दूंगा
मैं अपनी धुन का हूं पक्का
भारत माता का हूं बच्चा ॥ 5 ॥

श्री समय गुरुदेव ज्ञानि वर
दिया जिन्होंने बोध युक्तवर
जिसके अनुसार हैं सत्कर्मा
'नवरत्न' श्री गिरिधर शर्मा
मैं भी हूं अनुगामी इनका
भारत माता का हूं बच्चा ॥ 6 ॥

विनय

हृदय द्वार यह बंद मिले तो
    खोल इसे भीतर आना
द्वार तोड़ कर भी प्राणों मे
    आ बसना लौट न जाना

करे न यदि तन्त्री तारो पर
    तेरा मधुर नाम झंकार
तो भी दया दिखा कर रहना
    सखे ! कहीं लौट न जाना

यदि तेरा स्वागत करने को
    मुझ को नींद न जगने दे
छेड़ छाड़ से मुझे जगाना
    प्यारे पर लौट न जाना

यदि तेरे अमरासन पर
    कोई कभी मिले जन और
मेरे सदा-सदा के जीवन
    त्याग मुझे लौट न जाना

(रवीन्द्रनाथ के 'नैवेद्य' से)

मुक्ति ? मुक्ति तू कहा पायगा ?

पूजा पाठ भजन आराधा साधन सारे दूर हटा
द्वार बन्द कर देवालय के कोने म क्या है बैठा
अन्धकार मे छुप मन ही मन किसे पूजता है चुप चाप
आंख खोल घर देख, यहां पर यहा देव बैठा है आप
वह तो जा पहुचा उस थल पर भूमि सुधारे जहा किसान
माग ठीक करने को त्योंही पत्थर फोडे श्रमी महान
गर्मी सर्दी मे उनके सग मिट्टी में करता है काम
तू भी वसन छोड शुचि सारे आजा तज कर निज आराम
मुक्ति ? मुक्ति तू कहा पायेगा ? मुक्ति बता तो है किस ठौर
स्वय सृष्टि बन्धन मे आया सब के सग जब प्रभु सिर मौर
ध्यान छोड दे, तज कुसमो को, त्याग वसन लगने दे धूल
उससे एक, कम योगी बन, हो जा, बहा स्वेद सुख मूल

'गीतांजलि से अनुवादित

प्रार्थना -

है प्राथना तुझ से यही
मुझ को प्रभो बल वीय दे।
उड जाय निबलता सकल,
हियसे, मुझे वह वीय दे ॥

आनन्द से सुख म रहू,
आनन्द से दुख मैं सहू।

सुख दुःख मे इक सा रहू
मेरे प्रभो वह वीय दे ।।

निष्काम हो ससार की,
सेवा करू सेवा करू ।
यो प्रेम मेरा हो सफल,
स्वामी मुझे बल वीय दे ।।

मैं दीन हीन दरिद्र को,
मानू कभी नहिं तुच्छ से ।
उनकी उपेक्षा नहिं करू,
ऐसा हरे ! बल वीय दे ।।

जो गर्व से उद्धत बने,
सत्ताधिकारी मद सने ।
उनको झुकाऊ मैं न शिर,
मुझ को वही बल वीर्य दे ।।

जो नित्य की बातें विभो,
हैं सब साधारण सुलभ ।
उनसे रहू मेरा हृदय,
ऊचा, प्रभो बल वीय दे ।

तेरे चरण पर शिर धरे,
निशिदिन हरे ! मैं थिर रहू ।
तव प्रेम के पथ पर चलू,
ऐसा मुझे बल वीय दे ।

(सौरभ 1920 से साभार)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' से

हृदय नृत्य

उछलता करता बहुत नृत्य है
हृदय, होकर मग्न प्रमोद मे
विविध रग भरे सुर चाल को
गगन मडल मे जब मैं लखू
मम शुरू जब जीवन था हुआ
यह मुझे लगता अतिरम्य था
लग रहा अब भी सुषमा भरा
तरुण मानव मैं जब हो गया
शिथिल देह बनू जब वृद्ध हो
यह मुझे लगियो इस भाति ही
परम सुदर चित्त लुभावना
निधिनता मिलियो अथवा मुझे
जनक है शिशु मानव का लसे
मम सदा यह मानव भावना
सकल वासिर जीवन के करो
निरखते विविध प्रकृतिच्छटा

(1) वर्डसवर्थ की कविता का हिन्दी रूपान्तर.

श्री भक्तामर से –

"हूँ बुद्धिहीन, फिर भी, बुधपूज्यपाद !
तैयार हूँ स्तवन को, निर्लज्ज हो के,
है और कौन जग में तज बालकों को
लेना चहे सलिल संस्थित चन्द्रबिम्ब ॥ 3 ॥
तेरी किये स्तुति, विभो ! बहु जन्म के भी
होते विनाश सब पाप मनुष्य के हैं
भौंरे समान अलिश्यामल ज्यों घनेरा
होता विनाश रवि के कर से निशा का ॥ 7 ॥

श्री कल्याण मन्दिर से –

"हूँ नाथ दूर नभ के उड़ते हुए ये
मानो यही कह रहे सुर चामरौघ
जो हैं प्रणाम करते इस नाथ को हैं
वे शुद्धभाव बनके गति ऊर्ध्व पाते ॥ 22 ॥

अन्तरलालसा से –

"मेरी इन आँखों में प्रभुजी
ऐसी निर्मलता आवे
जिस पर दृष्टि करूँ उसको ही
निर्विकार यह कर पावे
शुद्ध मार्ग पर चलने वाला
मानव-कुल यह बन जावे
निर्मल होकर शुद्ध भाव से
आत्मभावनायें भावे ॥ 9 ॥

एक वस्तु की अनेक विधि से
परख सुगुरु ने बतलाई
[illegible]
भिन्न भिन्न कर समझाई
सारा सत्य समझ न [illegible]
[illegible] मोह करे
[illegible]
[illegible] ॥ 10 ॥

जग मे स्वच्छ धर्मशासन हो
सब स्वतन्त्र हों नर-नारी
शुभदर्शन हो, गुणग्राहक हों
होय परस्पर उपकारी
सुज्ञानी हों सच्चरित्र हों
धारें हिये दया भारी
तन से, मन से और वचन से
रहें, अहिंसा-व्रत-धारी

श्री जैनस्तवरत्न माला से –

(श्री शान्तिनाथस्तव)

हे शान्तिनाथ भगवान तुझे नमूँ मैं
देवाधिदेव जगदीश तुझे नमूँ मैं
त्रलोक्य शान्तिकर देव तुझे नमूँ मैं
स्वामिन् नमूँ, जिन नमूँ, भगवन् नमूँ मैं ॥ 7 ॥

तू बुद्ध, तू जिन, मुनीन्द्र, विभू स्वयभू
तू राम, कृष्ण जगदीश, दयालु, दाता,
अल्ला, रहीम रहमान खुदा, करीम
तू गाड, तू अहुरमज्द, महेश, मौला ॥ 8 ॥

है ज्ञानदर्पण महोज्ज्वल नाथ तेरा
आश्चर्यकारक महा जिसमे पडे हैं—
त्रलोक्य के सकल भाव, त्रिकाल के भी
होवे भविष्य उसमे अति उच्च मेरा ॥ 9 ॥

रत्नकरण्ड श्रावकाचार से –

पूर्ण रीति से पच पाप का
परित्याग करना सज्ञान
मर्यादा के भीतर बाहर
अमुक समय धर समता ध्यान
है यह सामायिक शिक्षाव्रत
अणुव्रतो का उपकारक
विधि से अनलस सावधान हो
बनो सदा इसके धारक ॥ 76 ॥

सामायिक के समय गही
    आरभ परिग्रह तजते हैं ।
पहनाये हो वसन जिसे
    ऐसे मुनि-से वे दिखते हैं ।
साम्यभाव स्थिर रख, मौनी रह
    सब उपसग उठात है ।
गर्मी सरदी मशक डास के
    परिषह सब सह जाते हैं ॥ 79 ॥

"बारह भावना" से –

अस्थिर भावना

देह गेह सजने मे लगे क्या हो गिरिधर
    देह गेह जोवन अनित्य सब मानिये
पीपल के पात सम कुजर के कान सम
    बादल की छाँह सम इ हे चल जानिये
बिजली की चमक सी पानी के बुद्बुद सी
    इन्द्र के धनुष सी ये सम्पति प्रमानिये
दया, दान, धम मे लगा के इसे भली भाति
    कीजिये परोपकार, सुख मन आनिये ॥

सवर भावना

तोड डाल भ्रमजाल मोह से विरत हो जा
    धर न प्रमाद कभी छोड़ दे [illegible]
दूर हो विचार वात करन से [illegible]
    माथे पडी सारी [illegible]
मन रोक, वाणी रोक, [illegible]
    [illegible] सत्य मान, [illegible]
बँधेंगे न कम नये, [illegible]
    [illegible] [illegible]

"श्री भक्तामर समस्या [illegible]

"यास्यामि [illegible]
    [illegible]

पूर्वेऽप्यनन्यशरणा बहवो हि तीर्णा
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादौ ।। (1-3)

'सूक्ति मुक्तावली' से –

परिग्रह प्रक्रम

41 अमित परिग्रह नदी–पूर जब है चढ आता
मूर्छा आती, उखड धर्म तक भी बह जाता
तज जाता संतोष, लोभ छा जाता गिरिधर
मुक्तिनगर का मार्ग डूब जडता मे जाता ।।] ।। 50 ।।

सत्य प्रक्रम

29 देवाराधन विपद्दलन विश्वास आयतन
मुक्तिमार्ग पाथेय उपद्रवराशि विनाशन
त्या समृद्धि का जनन, श्रेयसम्पादन गिरिधर
कीर्ति केलिवन सत्यवचन त्रिभुवन जन पावन ।। ।। 34 ।।

"तीर्थङ्करस्तवन" से –

श्री मन्तमादिभगवन्तमहं नमेयम्
भावेन वीरभगवन्तमहं स्मरेयम्
भूयाद्विभो मम मनोरथ सिद्धि रेषा
चन्द्रप्रभ प्रभुमहं सतत स्मरेयम् ।। 1 ।।
देवाधिदेवमजित सतत भजेयम्
श्री शभव जिनवरं हृदि भावयेयम् ।। भूयाद् विभो ।। 2 ।।

आश्रया देवदेवा मे चतुर्विंशतिसख्यका
चन्द्र प्रभो हरत्वाशु मम मानसग तम ।। 11 ।।
जिननाममय स्तोत्र झालरापत्तने पुरे
रचित नवरत्नेन विदध्यात्पठता शिवम् ।। 12 ।।

खैयाम की रुबाइयां

छो अपूर्व रस काव्य लता तरु की छाया हो
सुधापूर्ण हो कुम्भ, रोट-टुकडा हो, तू हो
गाती सुमधुर गान विजन मे बठ पास मम
आह, वही तो निर्जन वन है मुझे स्वर्ग सम

कुछ इस जग के भोग भोगने के उत्सुक हैं
और दूसरे स्वग सौख्य को लालायित हैं
नगद ग्रहण कर तू उधार ध्यान लगा मत
हैं सुहावने ढोल दूर के कभी भुला मत

निकट हमारे गुलाब उग, लो मुस्काता है
स्वापग मय है जन्म, मनो यह बतलाता है
"दिव्याम्बर की भेंट बाग को करता हू मैं"
कहता है "सब की सब निज श्री देता हू मैं"

लौकिक धन पर जिन लोगो के चित्त रमे हैं
होते हैं वे धनी शीघ्र निधन होते हैं
रेती पर गिर हिम टुकडे हीरे से चमकें
घडी एक, फिर मिलें धूल मे पिघल पिघल के

जीएा शीर्ण है सोच मुसाफिरखाना जग यह
रात-दिवस के दो दरवाजे रखता है यह
गाजे-बाजे साथ शाह पर शाह यहाँ पर
आये, ठहरे, समय बिता सब चले गये फिर

कितने कितने मनुज श्रेष्ठतर सुन्दर प्यारे
काल चक्र ने घूम घूम कर पीसे मारे
पिये एक दो, दौर बीच, मदिरा के प्याले
और शयन को एक-एक कर मौन सिधारे

उनके छोड़े हुए सदन मे मौज करें हम
उसे सजाता कुसुमचयो से वसंत हर दम
लो, हम भी ये चले, यहां से सब कुछ तज कर
किसके सुख के लिए, नही कुछ मालुम, प्रियवर !

हमे योग्य है जब तक जीवें सुख से जीवें
राग रंग म अर्पना सारा समय वितावें
मिट्टी, मिट्टी बीच मिलेगी मरना होगा
गान तान बिन, सुरा प्रिया बिन, विनाश होगा

आया हू मैं यहा कहा से और किस लिए
जल सा कल कल करता-करता किस रस्ते से
और चला फिर किधर और क्यो पवन वेग से
इसका पाया भेद नहीं कुछ भी अन्तर से

बिन पूछे ही यहा कहा से आया हू मैं
बिन पूछे ही कहां यहा से जाता हू मैं,
ला, ला प्याला सुरा, सुरा ला। भूलू पी ज्यों
अविनयपन के उदय हुए स्मृति के दुखड़ा को

(फिट्जरल्ड के अंग्रेजी अनुवाद के
आधार पर भाषान्तरित)

बाबा ताहिर की रुबाइयां

आत्मन तेरा पथ लाख कांटो वाला है,
तेरा नभ की ऊंचाई पर स्थान बड़ा है।।
अगर हो सके दूर फेंक दे तन का बोझा,
ज्यो हल्का हो जाय कहें सब खूब हुआ है।

आसमान यह दुष्ट उपद्रव खूब मचाता
मेरे जख्मो की आखो पर नमक छिड़कता
पहुंचा नभ पर धुआ दम-बदम मम आहो का
है नाला दिल, लाल हुआ, परनाल अश्रु का

बेहद नाजुक यह दिल मेरा है शीशे-सा
आह करू तो टूट जायेगा है अन्देशा
कुछ अचरज ना लहू अगर मम आंसू हैं ये
वह दरख्त हूं जिसकी जड मे लहू सिचा था

दरद एक ही मुझ को होता तो क्या होता ?
गम मेरा यह जो कम होता तो क्या होता ?
पीतम और तबीब उभय मे से कोई भी,
मम सिरहाने बैठा होता तो क्या होता ?

नाले करता है मेरा दिल यह बसी सा
तब वियोग के दरद कर रहे मेरा पीछा
मुझे कयामत तक जलना है और पिघलना
सो होगी किस रोज इसे है खुदा जानता

विद्याभास्कर का सम्पादकीय

विद्याभास्कर द्वितीय वष में पदापण करते हुए अपने कृपालु पाठको का अभिन दन करता है कई एक कारणो से विद्याभास्कर ब द हो जाता परन्तु ईश्वर की कृपा से इसकी बाधायें टल सी गई और फिर इसका प्रकाश हुआ

हम अपने सहयोगियों को बिना ध यवाद दिये नही रह सकत जि होंने हमारे पत्र की प्रशसा कर हमारे उत्साह को बढाया जिसमें हम सरस्वती, जैनगजट, श्री वेङ्कटेश्वर, भारत जीवन, परोपकारी, राघवे द्र, अनाथ रक्षक के सम्पादक महोदयो के विशेष कृतज्ञ हैं

विद्याभास्कर इस बात का हृष प्रकट करता है कि श्रीमान् झालावाड नरेश ने विद्याभास्कर के दूसरे वष में पदापण करने के पहले ही अपने राज्य मे नागरी का प्रचार करने की आज्ञा दे दी

11 अप्रेल को जयपुर दर्बार को L L D की पदवी मिली है विद्याभास्कर आशा करता है कि अब जयपुर नरेश और भी अधिक प्रचार की ओर ध्यान देंगे जयपुर दर्बार चाहे तो विद्या सम्ब ध मे राजपुताने मे और राजपुताने मे ही क्यो भारत भर मे युगा तर मे उपस्थित कर सकते हैं जहा तक हम जानते हैं जयपुर दर्बार हि दी को प्रेम की दष्टि से देखते हैं आशा है महाराज हिन्दी की ओर अपनी उदार सहायता का श्रोत बहायगे और तमाम हि दी सेवको के स्नेह भाजन बनेंगे क्योकि जयपुर महाराज के उदार दान की धूम है हि दी भी महाराज के उदार दान की प्रतीक्षा करती है एल एल डी का अथ हि दी मे व्यवहार नीति विशारद होता है सो महाराज की व्यवहार नीतिज्ञता जगत्प्रसिद्ध है इसी पर एडिनबरा युनिवर्सिटी ने यह पदवी आपको दी है जयपुर भवन मे A G G महोदय ने बडी प्रशसा कर महाराज को उक्त पदवी से विभूषित किया है महाराज को बधाई है

(सन् 1908, भाग 2, सख्या 1-2-?-4
फरवरी, माच, अप्रेल, मई)

प्राचीन भारत मे राज्याभिषेक।

(1) प्रस्तावना

इस समय दिल्ली मे आनन्द छाया हुआ है बडे बडे राजे महाराजे इकट्ठे हुए हैं देश देशान्तर तक के मनुष्य आये हुए हैं जिधर देखो उधर ही आनन्द की बधाइया बज रही हैं अनेक भद्र पुरुष सरकार से निमन्त्रित हुए हैं अनेक स्वय उत्सव देखने गये हैं क्योकि 12 दिसम्बर को स्वर्गीया राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया के पौत्र और स्वर्गीय सम्राट सप्तम एडवर्ड के पुत्र श्रीमान् पचम जाज का भारत साम्राज्य-सबधी अभिषेक है एतएव, प्राचीन भारत मे किस तरह राज्याभिषेक होता था, यह मैं इस शुभावसर पर बतलाना चाहता हू

(2) चुनाव

प्राचीन नरेश जब राज्य करते करते वृद्ध हो जाते थे और अपने पुत्र को राजकाय अच्छी तरह चला सकने योग्य देखते थे तब उसे युवराज बना देते थे और उस पर राज्य का भार देकर स्वय एकान्त सेवन करते हुए प्रभु भजन में अपना समय व्यतीत किया करते थे युवराज केवल उन्हीं की इच्छा से नहीं चुना जाता था इसके लिए ब्राह्मणो से, अधीन मण्डलेश्वरों से, तथा प्रजा से भी सम्मति ली जाती थी इस विषय

में लोकमत का बड़ा आदर किया जाता था यदि पुत्र राजा बनने योग्य न होता था तो उसका परित्याग कर दिया जाता था, चाहे फिर वह औरस ही क्यों न हो

औरसानपि पुत्रान्हि त्यजन्त्यहितकारिण
समर्थान् सम्प्रगृह्णन्ति जनानपि नराधिपा ॥
(वाल्मीकि)

जब दशरथ जराजीर्ण हो गये और उन्होंने राम को युवराज करना चाहा तब उन्हें लोकमत लेना पड़ा था उन्होंने अनेक नरपालों को बुलवाया, उनका यथेष्ट सत्कार किया उनके पास बहुमूल्य वस्तु और अलकार आदि भेजे उनका यथायोग्य सम्मान कर के उनसे वे मिले —

नानानगरवास्तव्यान् पृथग्जानपदानपि ।
समानिनाय मदिन्य प्रधाना पृथिवीपतीन् ॥
तान् वेश्मनानाभरणैर्यथार्ह प्रतिपूजितान् ।
ददर्शालङ्कृतो राजा ॥
(वाल्मीकि)

इसके बाद दरबार किया गया भांति भांति के आसनो पर सब राजा और रईस इस तरतीब से बिठाये गये कि सबके मुख दशरथ की ओर रहे वहा पर वही महिपाल थे जो लोकसम्मत थे और जो वहा आने योग्य थे —

तत प्रविविशु सर्वे राजानो लोकसम्मता ।

अथ राजवितीर्णेषु विविधेष्वासनेषु च ।
राजानमेवाभिमुखा निषदुर्नियता नृप ॥
(वाल्मीकि)

दरबार में नगर के मुख्य निवासी और प्रजाजन भी थे सबके सामने दशरथ ने प्रस्ताव किया कि मैं अब वृद्ध हू राम सुयोग्य है मैं इसे युवराज किया चाहता हू यदि मेरी यह सम्मति ठीक हो तो आप सब अनुमति दीजिए और जो ठीक न हो तो कहिए मैं क्या करू ? यह काम मैं पुत्र प्रीति के वशीभूत होकर कर रहा हू, पर यदि यह ठीक न हो तो और कोई राज्य के हित की बात सोचिए —

यदीय मेऽनुरूपार्थं मया साधु सुमन्त्रितम् ।
भवन्तो मेऽनुमन्यन्ता कथ वा करवाण्यहम् ।
यद्यप्येषा मम प्रीतिर्हितमन्यद्विचिन्त्यताम् ॥
(वाल्मीकि)

उपस्थित दरबारियो ने राजा के भाव को समझ लिया उन्होने आपस मे सलाह की यह कहा गया कि दशरथ अब वृद्ध हो गये हैं इन्हे शान्ति मिलनी चाहिए राम वास्तव मे योग्य है अच्छी तरह विधिपूर्वक उसने विद्या पढी है सारा वेद जानता है सज्जन है मधुरभाषी है प्रजा के सुख से सुखी होने वाला है सत्यवादी है जितेन्द्रिय है पराक्रमी है बुद्धिमान् है प्रसन्नमुख है गाव या नगर के लिए लड़ाई करने जाता है तो जीत कर ही लौटता है लौट कर आते समय नगरनिवासियो से आत्मीयजनो की तरह कुशल समाचार पूछता है मुस्करा कर बात करता है व्यर्थ किसी पर कृपा नही करता, और न व्यर्थ किसी पर क्रुद्ध ही होता है नीतिज्ञ है धीर है गम्भीर है प्रजापालन के तत्वो को खूब जानता है मोह मे फसने वाला नहीं है तीनो लोको का भोगने म समर्थ है प्रजा के हित के सभी गुण इसमे मौजूद हैं बडो की सेवा करता है सबको कल्याण का माग बतलाता है

अन्त मे सब एकमत हुए उन्होने दशरथ को सम्मति दी कि महाराज आप वृद्ध हैं राम का अभिषेक कर दीजिए हम सब चाहते हैं कि महापराक्रमी राम की महागज पर सवारी निकाली जाय और उस पर छत्र लगाया जाय, इत्यादि —

ब्राह्मणा जनमुख्याश्च पौरजानपदै सह ।
समेत्य मन्त्रयित्वा तु समता गतबुद्धय ।।
ऊचुश्च मनसा ज्ञात्वा वृद्ध दशरथ नृपम् ।
अनेकवर्षसाहस्त्रो वृद्धस्त्वमसि पार्थिव ।।
स राम युवराजानमभिषिचस्व पार्थिवम् ।
इच्छामो हि महाबाहु रघुवीर महाबलम् ।
गजेन महता यान्त राम छत्रावृताननम् ।।

(वाल्मीकि)

प्राचीन भारत मे प्राय इसी तरह चुनाव हुआ करते थे और इस प्रकार का चुनाव होने से सब प्रसन्न रहते थे कभी किसी को किसी प्रकार की शिकायत का मौका न मिलता था राजसूर्ययज्ञादि मे जितने मनुष्य निमन्त्रित होते थे उनका सारा खर्च सम्राट की ओर से ही दिया जाता था उनके रहने, खाने-पीने, मनोरजन आदि का सारा प्रबन्ध भी सम्राट के नियत किये हुए सम्बधी ही करते थे बडी धूमधाम से उत्सव किया जाता था सब कोई राजा के मेहमान होते थे

(3) अभिषेक-क्रिया

इस प्रकार चुनाव हो चुकने पर स्थिर नक्षत्र मे योग्य मुहूर्त आने पर, उस भाग्यशाली व्यक्ति को तिल, सरसो के अभिमन्त्रित तेल से मालिश कर स्नान कराते थे

एक दिन पहले उसे सस्त्रीक उपवास करना पडता था स्नान कर के वह सब प्राणियों को अभयदान देता था इन्द्र के निमित शान्ति की जाती थी इसके बाद फिर सुगन्धित तेल से मदन करके वह स्नानागार मे लाया जाता था वहा पवत के ऊपर की मिट्टी से उसके सिर को, बामी की मिट्टी से कानो को, देवस्थान की मिट्टी से मुख को, हाथी के दातो से खुदी हुई मिट्टी से भुजाओ को, इन्द्र-धनुप के नीचे की मिट्टी से ग्रीवा को, राजागण की मिट्टी से हृदय को, गगा यमुना के सगम की मिट्टी से उदर को, तालाब की मिट्टी से पीठ को, नदी तीर की मिट्टी से पसलियो को, गौशाला की मिट्टी से जघाओ को, गजशाला की मिट्टी से जानु को, अश्वशाला की मिटटी से पिडलियो को और रथ के पहिये के नीचे की मिट्टी से चरणतलो को मलते थे तदनन्तर सारी मिट्टियो को मिलाकर समस्त शरीर को मलते थे इसके बाद उसे सिहासन पर बिठा कर घी, दूध, दही शक्कर और मधुमिश्रित पचामृत से उसका अभिषेक किया जाता था तदनन्तर सर्वौषधि मिले हुए जल से स्नान कराया जाता था जिन घडो से स्नान कराया जाता था वे सोने के होते थे और उनमे सहस्रधारायें होती थी पुरोहित अग्न्याधान करके अभिषेक करते थे तीर्थ और समुद्रो से अभिषेक के लिए जल लाया जाता था सब जलाशयो का पानी भी उसमे रहता था अभिषेक के समय मन्त्र पढे जाते थे उनका आशय —

प्रजापति ने जिस पवित्र जल से सोम, वरुण, इन्द्र, मनु को राजा बनाया–अभिषेक किया था उसी राष्ट्र को बढाने वाली और राष्ट्र को अमर रखने वाली जलधारा से, तुझे राष्ट्रोचित बल के लिए, सम्पत्ति के लिए, यश के लिए और धान्यादि की समृद्धि के लिए, मैं (पुरोहित) अभिषिक्त करता हू तू महा राजाधिराज हो इत्यादि —

इमा आप शिवतमा
इमा राष्ट्रस्य भेषजो
इमा राष्ट्रस्य वर्द्धिनी
इमा राष्ट्रभृतोऽमृता
याभिरिन्द्रमभ्यषिचत् प्रजापति
सोम राजान वरुण यम मनु
ताभिरद्भिरभिषिचामि त्वामह
राज्ञा त्वमधिराजो भवेऽह
बलाय, श्रिये, यशसेऽन्नाद्याय ।
महान्त त्वा महीनां
सम्राज चषणीनां
देवी जनित्र्यजीजनत्
भद्रा जनित्र्यजीजनत्

इसके बाद वस्त्र-धारणा की जाती थी तिलक किया जाता था भाई-बान्धवों में से योग्य पुरुष छत्र चामर आदि लगाते थे छत्रपात्र तैलपात्र आदि का दान होता था महाभोज होते थे भांति भांति के दान किये जाते थे सब लोग नमस्कार करते थे—

राजाधिराजाय प्रसह्याय साहिने
नमो वयं वैश्रवणाय कुमहे
समे कामान् कामकामाय मह्य
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु
वैश्रवणाय कुबेराय महाराजाधिराजाय नम·

(राज्याभिषेकपद्धति)

इसके अनन्तर बड़े ठाठ से हाथी पर सवारी निकलती थी शहर अच्छी तरह सजाया जाता था जगह-जगह अगर जला कर सुगन्धि की जाती थी ध्वजा पताकायें और बन्दनवारें लटकाई जाती थीं झरोखों से स्त्रियां भी सम्राट पर पुष्पों की वर्षा करती थीं—

हर्म्यवातायनस्थाभिर्भूषिताभि समन्तत ।
कीर्यमाण सुपुष्पौघैययौ स्त्रीभिररिन्दम ॥

(वाल्मीकि)

भारत में अनेक सम्राट हुए हैं—कोई दुष्टों का नाश करके अपनी भुजा के बल से, कोई प्रजा-पालन करने की सुन्दर विधि से, और कोई तपोबल से —

जित्वा जय्यान् यौवनाश्वि पालनाश्च भगीरथ ।
सम्राजस्त्वनुशुश्रुम

(महाभारत)

भारत ने सदैव ही वीरों और योग्य व्यक्तियों को हृदय से अपना राजा माना है और उनका यथेच्छ सम्मान भी किया है यदि कोई राजमद से उन्मत्त होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो गया तो वह मारा गया बहुत दिन तक वह अपने आसन पर नहीं जम सका भारत सदैव न्याय का पक्षपाती रहा है आशा है, हमारे नवीन सम्राट भी भारत का शासन न्यायपूर्वक करेंगे

वर्तमान अभिषेक-क्रियायें प्राचीन क्रियाओं से कहां तक मिलती जुलती हैं इसका मिलान पाठक स्वयमेव कर सकते हैं क्योंकि वे आक्टोबर की सरस्वती में वर्तमान अभिषेक की क्रिया का हाल पढ़ चुके हैं

श्री गिरिधर शर्मा
(सरस्वती, दिस 1911 में प्रकाशित)

कालिदास और भवभूति

कवि इस ससार मे बडी से बडी ईश्वरीय महाशक्ति है वह परमात्मा का प्रेषण किया हुआ एक दिव्यदूत है वह इस जगत के मनुष्यो के हृदयों मे उत्साह उत्पन्न कर नवजीवन का सचार करने वाला महापुरुष है कवि अपनी कृति के द्वारा नीचो को उच्च, दुश्चरित्रो को सच्चरित्र, कायरों को शूरवीर, भयभीतों को साहसी बनाने और अन्याय को दूर कर न्याय का साम्राज्य स्थापित करने के लिए दिव्यलोक से अवतीर्ण होते हैं बहुत से कवि ऐसे होते हैं जो केवल अपने देश और अपने ही काल के होते हैं ऐसे कवि विश्वजनीन कवियो की गणना मे नही आ सकते और थोडे समय मे भुला दिये जाते हैं किंतु कोई कोई धन्यतर कवि ऐसे होते हैं जो अपने देश और अपने ही काल के नहीं होते वे सवत्र और सब काल मे पूजे जाते है वे सूय की भाँति प्रकाशमान होते हैं और उनके गुण गान सब जगह होते हैं उनके वचनों की दिव्य कान्ति से सब काल के और सब देशो के मानव-हृदयो मे अनन्त प्रकाश फलता है उनकी कीर्ति अजर और अमर होती है ऐसे ही कवियों के लिए कहा गया है कि—

*जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वरा ।
नास्ति येषा यश काये जराभरणज भयम् ।
(भतृहरि)

* वे सुन्दर रचना करने वाले रससिद्ध कवीश्वर जिनके यशरूपी शरीर मे न जरा का भय है और न मरण का—सदा सवत्र जयशाली हैं

—लेखक

ऐसे कवि विश्व की अनमोल सम्पत्ति हैं आज मैंने जिन कवियो के सम्बन्ध मे कुछ लिखने का विचार किया है वे ऐसे ही कवि थे कालिदास और भवभूति बडे ही प्यारे नाम हैं ये कवि भारत के गौरव और सरस्वती के कृपापात्र थे कवि-कुल के मुकुट थे संस्कृत साहित्योद्यान मे कालिदास और भवभूति कवितारूपी जातिलता के दो मनोहर पुष्प हैं दोनो ही अपने स्वाभाविक सौन्दय से काव्य–रस–वासना–विदग्ध रसिको को मोहित करने वाले हैं दोनो ही अपने दिव्य सौरभ को दूर-दूर तक फैला कर काव्यरसलोलुप मधुकरो को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं जिन मधुकरो को लालित्यमय भीनी-भीनी मधुर सौरभ पसन्द है वे प्रथम पुष्प पर रसपान कर प्रेमोन्मादपरायण होते हैं और जिन्हें माधुर्य के साथ तीव्र सौरभ पसन्द है वे दूसरे पुष्प पर झूमते हैं जल्हण के द्वारा उद्धृत की गई "गोडवहो" के कर्ता कविपतिराज के समकालिक कवि कमलायुध की गाथा क्या विस्मृत की जा सकती है—

> "भवभूइ जलहि निग्गय
> कव्यामयरसकणा इव फुरन्ति ।
> जस्स विसेसा अज्जवि
> वियडेसु कहाणि सेसु"

भिन्नरुचिर्हि लोक के अनुसार जिसे जिस प्रकार का पुष्परस-पराग पसन्द है वह उसी का सग्रह करता है जिन्हे दोनो रस पसन्द है वे दोनो ओर आकृष्ट होते हैं—झुक पडते हैं कभी इस रस का पान किया तो कभी उसका इतना होने पर भी यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि "कविकुलगुरु कालिदासो विलास " का कविकुलगुरु का पद तो कालिदास को ही शोभा देता है देशी या विदेशी अर्वाचीन या प्राचीन सब विद्वानो ने भी कालिदास को ही अग्रस्थान दिया है और दे रहे हैं और भवभूति को ? भवभूति भी कुछ कम नही हैं कालिदास के साथ ही भवभूति का नाम लिया जाता है और यह बात है भी सत्य कि यदि कालिदास की तुलना की जा सकती है तो भवभूति से ही यदि हम कविता के सब अगो पर विचार करें तो कालिदास बहुत बढे हुए है, परन्तु नाटक के विषय मे भवभूति कुछ कम नही इतना ही क्यो, संस्कृत विद्वानो के मत म भवभूति का "उत्तर-रामचरित" कालिदास के नाटक से बढकर है—उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते" मैं इस लेख मे यह बताना चाहता हू कि कौन सा कवि किस किस बात मे एक दूसरे से बढ जाता है—

रचना–शैली

दोनों कवियो के काव्यों को मिलाकर पढ़ने से जो बात सबसे पहले समझ मे आती है वह यह है कि कालिदास की रीति या शैली प्रसादगुण सम्पन्न है न इसम

लम्बे-लम्बे समास हैं और न क्लिष्ट कल्पनायें भाषा अत्यन्त सरल है बनावटी वेशभूषा का नाम नहीं, अश्लीलत्व को ठिकाना नहीं, जटिलता को जगह नहीं, न समास—प्रचुरता है और न है विवादास्पदता सर्वत्र स्वाभाविक सौन्दर्य टपका पड़ता है, "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" का मूर्तिमान उदाहरण है परन्तु भवभूति की शैली की यह दशा नहीं है वह ओजोगुणयुक्त और क्लिष्ट है भाषा लम्बे-लम्बे समासों से पूर्ण है और जटिल है जिस समय भवभूति हुए वह बाण के प्रभाव से परिपूर्ण था इस समय के प्रभाव से बचना भवभूति के लिए सम्भव न था अस्तु एक साधारण संस्कृतज्ञ भी कालिदास की भाषा को समझ सकता है, परन्तु भवभूति की भाषा उसके लिए लोहे के चने होगी कालिदास की कविता का आस्वाद रसभरी के समान किया जा सकता है, परन्तु भवभूति की कविता का आस्वाद मिश्री की मिठाई के आस्वाद के समान लेना होगा कालिदास के सम्बन्ध में रसिक कवि आचार्य गोवर्द्धन ने लिखा है—

"साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये।
शिक्षासमयेऽपि मुदे रतलीला कालिदासोक्ति॥"

कोई भी भाषा क्यों न हो, उसकी कविता का यथार्थ आनन्द तो तभी आ सकता है जब उस भाषा का बहुत अच्छा ज्ञान हो परन्तु कालिदास की कविता का कुछ-न-कुछ आनन्द प्रौढ़ ज्ञान हुए बिना भी विद्यार्थीगण उठा लेते हैं इसीलिए कालिदास की कविता को रसभरी की उपमा मैंने दी है रसभरी को मुख में डालते ही जैसे सारे मुख में रस भर जाता है वैसे ही कालिदास की कविता सुनते ही अलौकिक आनन्द आ जाता है भवभूति की कविता के सुनते ही यह बात नहीं पैदा होती उसके समझने में श्रम पड़ता है उतना ही श्रम जितना कि मिश्री की मिठाई के खाने में वह मिठाई चबा चबाकर खाये बाद आनन्ददायिनी है, भवभूति की कविता समझे बाद कालिदास अनायास लिखते गये हैं और भवभूति ने खूब सोच-सोचकर लिखा है

भाषा

दोनों की भाषा एक प्रकार की नहीं है भवभूति ने भाषा को अपने अधीन किया है ऐसा जान पड़ता है कि भाषा उनके सामने हाथ जोड़े खड़ी है भवभूति की भाषा में यह खूबी है कि वह रस के अनुकूल है भवभूति जिस रस का वर्णन करते हैं वह उनकी भाषा से अच्छी तरह प्रकट होता है भवभूति की रसानुकूलता के कुछ उदाहरण देता हूं—

*"यथेन्दावानन्द व्रजति समुपोढे कुमुदिनी
तथैवास्मिन् दृष्टिर्मम कलहकाम: पुनरयम् ।
झणत्कारक्रूरक्वणितगुणगुञ्जद्गुरुधनु—
र्धृतप्रमाबाहुर्विकवविकरालाल्वणरस: ॥
(उ रा च 5-26)

संस्कृत-भाषा के मार्मिकों से छिपा नहीं है कि यहाँ पूर्वार्द्ध में वात्सल्यरस की छटा है और उत्तरार्द्ध में वीरता की इस वर्णन के अनुकूल कोमल और कठोर शब्दावली का प्रयोग कवि ने किया है जिसकी बार-बार प्रशंसा करनी पडती है उत्तर रामचरित के दो-तीन अनुवाद हिन्दी में हुए हैं उनमें सबसे अच्छा अनुवाद स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न का है, परन्तु उसमें भी मूल की वह छटा कहा ? भवभूति ही हैं, देखिए—

**ज्याजिह्वयावलयितोत्कटकोटिदंष्ट्र-
मुद्गारिघोरघनघर्घरघोषमेतत् ।
ग्रासप्रसक्तहसद तकवक्त्रयन्त्र-
जृम्भाविडम्बिविकटोदरमस्तु चापम् ॥
(उ 4-29)

---

*जिमि करत प्रफुलित कुमुदिनी को उदित पूनम चद ।
तिमि भरत हिय में दरस जाको अति अमल आनद ॥
भन-झनन झनझन करन कटु गुनगु जमय धनु जोइ ।
गहि ताहि यह भुज वीर रस भरि समरप्रिय पुनि होइ ॥
(स्वर्गीय कविरत्न सत्यनारायण का अनुवाद)

**प्रबल प्रतचा जीह लहरांति चचलासी
उतकटित्कोटि विकराल दाढ जा की है ।
घोर घन घररर घोर जा टकोरन की
गजबीली अट्टहासी रनग छायी है ॥
विकट उदर वारो खैंचत तनत सोई
मानो जमुहाई लन परचडता की है ।
विश्वहिं ग्रसन काज उद्यत ये चाप मम
धारे आज जम की सदाप छवि बाकी है ॥
(स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न)

*भरणज्झरिणतमणयणिणतकिंकणीक धनु-
ध्वनद्गुरुगुणाटनीकृतकरालकोलाहलम्।
वितरय किरतो शरानविरतस्फुरच्चूडयो-
र्विचित्रमभिजद्धं ते भुवनभीममायोधनम्।।
(उ 6-1)

इस पदावली के पद-पद से वीर-रस प्रकट होता है पढने मात्र से सहृदयों के रोम-रोम मे शौर्य का सचार होता है ऐसा जान पड़ता है, मानो आंखो के सामने युद्ध हो रहा है बाणो की सनसनाहट और धनुष के टकार से सुनाई पडते हैं कालिदास की भाषा मे यह विविधता नही, वह तो सदा मधुर और सदा कोमल है वीररस का वर्णन हो या शृगार का, करुण का वर्णन हो या और कुछ, वह तो सदा कोमल, सदा सौन्दर्यमयी और सदा माधुर्यभरी ही रहेगी, आप उसमे ककशता न पायेंगे वह परुषता को जानती ही नहीं वह कठोरता को पहचानती ही नही रघु के दिग्विजय को पढिए, इन्दुमती को विवाह कर लाते हुए मार्ग मे राजाओं के साथ हुए अज के युद्ध को देखिए, कालिदास की भारती आपको कोमल ही देख पडेगी—

गान्धर्वमस्त्र कुसुमास्त्रकान्त
प्रस्वापन स्वप्ननिवृत्तलौल्य ।
(रघुवश)

× × ×

तत- प्रियोपात्तरसे ऽधरोष्ठे
निवेश्य दध्मौ जलज कुमार ।।
(रघुवश)

इत्यादि कोमल पदावली तो स्मरण म है न ? इस युद्ध-वर्णन मे भी यहाँ हमारे रसीले कालिदास ने मोहनास्त्र से ही काम लिया है विवाह के मगल-प्रसग के बाद हत्याकाण्ड न होने देना एक खूबी भी है, प्रियोपात्तरस अधरोष्ठ वाला कुमार मोहनास्त्र

*झन झनन कंकन सम कनित जल किंकनीक विसाल।
जुग छोर सन लगि जासु गुन प्रति करति शब्द कराल।।
धनु तानि-अस सर तजत जिन शिख तिरत चचल चारु।
जग भयद अद्भुत तिन दोउन मधि बढत युद्ध अपारु।।
(स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न)

का प्रयोग करे यह एक रसिक-कलाविधान अवश्य है परन्तु वीर-रस के वर्णन मे क्या ऐसे ही प्रयोग उपयुक्त होंगे ? कालिदास का वश होता तो कदाचित् वे घोर युद्ध वर्णन मे भी कुसुमो के ही शर चलाते अस्तु शृंगार और करुण के वर्णन मे दोनों कवियों ने रस के उपयुक्त शब्दो का विन्यास किया है—

*सरसिजमनुविद्ध शवलेनापि रम्य
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मी तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनाऽपि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।।
(अभिज्ञान-शाकुन्तल)

**श्रमाम्बुशिशिरीभवत्प्रसृतमन्दमन्दाकिनी-
मरुत्तरलितालकाकुलल ललाटचन्द्रद्युति ।
अकुङ्कुमकलङ्कितोज्ज्वलकपोलमुत्प्रेक्ष्यते
निराभरणसुन्दरश्रवणपाशमुग्धं मुखम् ।।
(उ रा च 6-37)

---

*जदपि घिसो है चहू ओर तें सिवारन तें
तदपि सरोज अति सुन्दर दिखात है ।
मलिन महा है तोहू उज्जल सुधाकर को
सुषमा अनोखी श्यामताई प्रकटात है ।।
वृच्छन की छालन के बने भये वस्त्र तँहू
यह सुकुमारी नारी परम सुहात है ।
स्वाभाविक सुन्दरता दई ने दई है जिन्हें
कौन वस्तु नाहिं तिन्हें भूषित बनात है ।। (लेखक)

दोहा

**कुंकुम मलेन जासु तउ, उज्जवल अमल कपोल ।
श्रमसीकर सीतल भयो, जो अनुपम अनमोल ।। 1 ।।
मन्द-मन्द लगि पवन जहं मन्दाकिन को आय ।
प्यारी घुंघराली अलक जासु दयो विथलाय ।। 2 ।।
ललित ललाट मयंकद्युति आकुल सहि तिल भार ।
लहलहाति चुइ सी परी, इत उत चलि बहु बार ।। 3 ।।
निराभरन अति तउ सुभग, अस तुम्हरो मुखचन्द ।
सुरति करति हिय में अजहु, भरत छनिक आनन्द ।। 4 ।।

दोनो कवियो के दोनो पद्यो मे उचित शब्दो का प्रयोग है दोनों पद्य अनूठे हैं। तथापि पहले पद्य मे कालिदासता लहरा रही है और दूसरे पद्य मे भवभूतिपन छटा दिखला रहा है

स्वाभाविक वर्णन

स्वाभाविक वर्णन करने की शैली भी दोनों कवियो की पृथक पृथक है भवभूति प्रकृति का जैसे-का-तसा चित्र आंखो के सामने खडा कर देते हैं वे उस वर्णन में कालिदास की भाति उपमा, उत्प्रेक्षा आदि की प्रभा नहीं प्रकट करते देखिए—

*निष्कूजस्तिमिता क्वचित्क्वचिदपि प्रोच्चण्डसत्वस्वना,
स्वेच्छासुप्तगभीरभोगभुजगश्वासप्रदीप्ताग्नय ।।
सीमान प्रदरोदरेषु विरलस्वल्पाम्भसो या स्वय ।
तृष्यद्भि प्रतिसूर्यकैरजगरस्वेदद्रव पीयते ।।

(उ 2-16)

---

*ये जनस्थान सीमा महान ।
जहू सघन गहन वन विद्यमान ।।
नि शब्द शान्तिमय कहु अखण्ड ।
वनजन्तु नाद सो कहु प्रचण्ड ।।
जहू लपलपात रसना अपार ।
तिन तप्त सांस सन कहु विशाल ।
जरि उठत भयकर ज्वालमाल ।।
है गई भूमि जहँ प दरार ।
दीखत कछु जल तिन मझार ।।
अजगर-श्रम सीकर भासमान ।
प्यासे गिरगट तिहि करत पान ।।

(स्वर्गीय सत्यनारायण)

*इह समद शकुन्ताकान्तवानीरमुक्त
प्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति ।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुंज
स्खलनमुखरभूरिस्त्रोतसो निर्झरिण्य ॥

(उ 2—20)

**पुरा यत्र स्त्रोत पुलिनमभवत्तत्र सरिता
विपर्यास यातो घनविरलभाव क्षितिरुहाम् ।
बहोदृष्ट कालादपमिव मन्ये वनमिद
निवेश शैलाना तदिदमिति बुद्धि द्रढयति ॥

(उ 2—27)

---

*यहि वेतस बल्लरि पै खग बैठि
कलोल भरे मृदुबोल सुनावें,
तिन सों झरे पुष्प सुगंधित तोय
वहै अतिशीतल हीतल भावें,
फल पुंज पकेनि के कारन श्यामल
मंजुल जम्बु निकुंज लखावें,
उनमे रुकि कै बरि घोर घनी
झरनानि के स्रोत समूह सुहावें,

([illegible])

**सोहत हो प्रथम जहाँ [illegible]
तहा अब विपुल पुलिन [illegible] है ।
विरल हो प्रथम [illegible]
जहा घनो [illegible] है ।
बहु दिन पाछे [illegible]
[illegible] है ।
यहां [illegible]
[illegible] है ॥

([illegible])

*एते ते कुहरेषु गद्गदनदद्गोदावरीवारयो
मेघालम्बितमौलिनीलशिखरा क्षोणीभृतो दाक्षिणा
अन्योन्यप्रतिघातसङ्कुलचलत्कल्लोलकोलाहल–
रुत्तालास्त इमे गभीरपयस पुण्या सरित्सगमा ॥

(उ 2–30)

× × ×

परन्तु कालिदास का प्राकृतिक वर्णन बिलकुल और तरह का है उनका उद्देश्य दृश्य का केवल चित्र उतार देना ही नही है, वे उन भावो का वर्णन करते हैं जो किसी दृश्य के देखने पर कवि के हृदय मे उठते हैं कुमारसम्भव का हिमालय वर्णन पढिये वह केवल पर्वत का चित्र नही है वह कवि का सवारा हुआ अद्भुत सौन्दर्यमय अनुपम "देवतात्मा नगाधिराज हिमालय" है हिम भी उसके सौभाग्य का लोप करने वाला नही है वह तो इन्दु के किरणो मे निमज्जित हो जानेवाले–अग के समान–है।–इतना सुन्दर पर्वत वर्णन विश्वम्भर के साहित्य मे कदाचित् ही हो माघ का पर्वत-वर्णन भी सुन्दर है और भवभूति का भी भवभूति का देखिए—

दोहा

*जिन कुहरनि गदगद नदति, गोदावरि की धार ।
शिखिर श्याम घन सजल सो, ते दक्खिनी पहार ॥
करत कुलाहल दूरि सो, चचल उठत उतग ॥
एक दूसरी सो जहा, खाइ चपेट तरग ॥
अति अगाध विलसत सलिल छटा अटल अभिराम ।
मन भावन पावन परम, ते सरिसगम धाम ॥

(स्वर्गीय सत्यनारायण)

*प्रथमभिनवमेघश्यामलोत्तुंगसानु—
मदमधरमयूरीमुक्तसंसक्तकेकः ।
शकुनिशबलनीडानोकहस्निग्धवर्षा
वितरतिवृहदश्मा पर्वतः प्रीतिमक्ष्णो ।।

परन्तु कालिदास का वर्णन अपूर्व है, अनन्य है भवभूति के प्राकृतिक वर्णन को एक चित्र मे बता सकते हैं, परन्तु कालिदास के वर्णित मृग को बतलाने के लिए अनेक चित्र बनाने पड़ेंगे या एक सेनोमेटोग्राफ का फिल्म तयार करना होगा। फिर भी वह दृश्य यथार्थ रंग रूप मे दिखलाया जा सकेगा या नहीं, सन्देह रह जाता है देखिए—

**ग्रीवाभगाभिराम मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टि
पश्चार्धेन प्रविष्ट शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्धावलीढै श्रमविवृतमुखभ्रंशिभि कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतर स्तोकमुर्व्यां प्रयाति
(अभिज्ञान-शाकुन्तलम्)

---

*अति ऊंचे उठे जिहि शृंगन पै घन
श्याम घटा छवि छाइ रही
अरु मोदमयी मदमत्त मयूरी
निरंतर कूक मचाई रही
खगनीड विचित्र धरे तरु पगति
जातन शोभ बढ़ाइ रही
सुखमा सो सनी अस पर्वत माल
मनोहर नैननु भाइ रही
(स्वर्गीय सत्यनारायण)

**कसे रथ को हरिण विलोकत,
लखि घहरान अधिक स्यन्दन की
चलत उतावल ग्रीवा मोरत,
कबहू बाण लगन के भय से
आगे पिछलो गात सिकोरत,
छिन छिन मग म थाकित मुख से
दाभ गिराय चला पुनि दौरत,
लखो कुलाच भरत अब कसो
भूतल माहि न निज पग जोरत ।।
(स्वर्गीय पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र, विद्यावारिधि)

कालिदास के स्वाभाविक वर्णन में आप अच्छे से-अच्छे वर्णन पायेंगे, परन्तु वे सब उत्प्रेक्षा उपमा आदि से सवारे ही हुए प्रकृति के नग्न सौन्दर्य का कालिदास वर्णन न करेंगे वे प्रकृति का वर्णन करेंगे—खूब करेंगे परन्तु बनी ठनी प्रकृति को बतलायेंगे उनके मेघदूत और ऋतु-सहार क्या हैं ? अनमोल काव्य-ग्रन्थ हैं प्राकृतिक दृश्यों के बडे सुन्दर वर्णन हैं, परन्तु हैं प्रेमी वियोगियो के हृदय मे प्राकृतिक दृश्यो के देखने पर—उठनेवाले भावो की कल्पना प्रसूत, उत्तमोत्तम मधुरतम शब्दराशिया ! प्रेमी हृदय के भावो की रमणीयता शब्दमूर्तिया !

भावचित्रण

हृदय के भिन्न भिन्न भावो और विचारो को शब्दो द्वारा प्रकट करने मे कालिदास भवभूति से बढे हुए हैं शृगार, करुणा और वात्सल्य प्रभृति रसो और भावो को भवभूति की अपेक्षा कालिदास विशेष पहचानते हैं शकुन्तला की बिदाई का प्रसग करुणा का अनुपम उदाहरण है कवित्व शक्ति की पराकाष्ठा का नमूना है कोई भी सहृदय ऐसा न होगा कि इस प्रसग को पढकर तन्मय न हो जाय, कवि के प्रकृति–प्रेम और मनुष्य हृदय के गूढतम भावो की अभिज्ञता पर मुग्ध न हो और कल्पनाचातुर्य की प्रशसा करते-करते थक न जाय 'अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्' के कहने वाले कवि का करुण–रस–वर्णन कुछ कम नही, जिसके लिए सहृदय कवि-कुल कलाधर आचार्य गोवर्द्धन को कहना पडा कि—

भवभूते सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति ।
एतत्कृतकारुण्ये कथमन्यथा रोदिति ग्रावा ॥

परन्तु विचारपूर्वक देखा जाय तो करुण-रस के वर्णन मे भी कालिदास ही बढकर जान पडेंगे वे कितनी ही बातो का वर्णन करते हुए अपने आप को भूल जाते हैं और इसी तन्मयता म वर्ण्य विषय का अतिशय वर्णन हो जाता है यही कारण है कि उत्तर रामचरित मे करुण की स्रोतस्विनिया बहाई हैं तथापि शकुन्तला के चौथे अक मे जितना करुण-रस उमड पडता है उतना करुणाजनक वर्णन उत्तर रामचरित मे नही यह नही' लिखते हुए मेरी लेखिनी रुकती है 'उत्तर पढते समय के अश्रुपात अभी सूखने भी नही पाये हैं परन्तु शकुन्तला की बिदाई का करुण दृश्य तो हृदय म अकित है यह मिट नही सकता कण्व के आश्रम को छोडकर पतिगृह जाती हुई शकुन्तला का विलाप सखियों और आश्रम के मृग के साथ उसका प्रेम दर्शन, अपने हाथो से सींची हुई लतिकाओं और पौधों के पास से रोते रोते विदा लेना, वनवासी और तपस्वी कण्व मुनि के वात्सल्य और कर्तव्यमय हृदय का वियोग से दुःखी होना, नयनो म प्रेमाश्रु और मुख से शिक्षा भरे उपदेश—ये सब एक-से एक अधिक करुण-दृश्य हैं अनुपम हैं—धन्य है कालिदास निःसन्देह किसी धन्यतम कन्या के पिता रहे होंगे,

नही तो ऐसा सजीव वर्णन होना दुलभ—अत्यन्त दुलभ था ! अथवा उनकी खूबी ही इसी मे है ! कुछ भी हो यह करुण रस का आदर्श है, अत्युत्कृष्ट वर्णन है "काव्येषु नाटक रम्य तत्रापि च शकुन्तला तत्रापि चतुर्थांक' तो स्मरण है न ? कालिदास जो बात थोडे से शब्दो मे कह देत हैं भवभूति बहुत चढा कर उसे कह पाते हैं भवभूति के पात्र करुणा के आवेश मे आकर अत्यधिक विलाप करते हैं तब कालिदास के पात्र दो-चार आसू टपका कर थोडी मर्मातिक बातें करते हुए चुप हो जाते हैं ये थोडी सी बातें जो प्रभाव डालती हैं वह प्रभाव लम्बी-लम्बी बातों का नही पडता

कल्पनाशक्ति

कालिदास की कल्पनाशक्ति अत्यन्त उच्चकोटि की है और वह ऊंचे-से ऊंचे पर विहार करती है कालिदास अपने काव्यो को अलकारो से सजाने मे बडे ही निपुण हैं उपमा तो उसी पर निछावर हो गई है उपमा कालिदासस्य, तो जानते हैं न ? कालिदास की उपमा का साम्य अन्यत्र दशन न देगा भवभूति कल्पना मे इतना उच्च विहार नही करते–कर नहीं सकते प्राकृतिक वणनो मे क्या, और क्या मनोभावो के वणन मे, भवभूति उपमादि अलकारो का बहुत उपयोग नहीं करते–करना नही चाहते भवभूति के नाटको मे 2–4 ऐसे स्थल हैं जो कालिदास की उपमा का स्मरण कराते हैं अधिक नही बात यह है कि भवभूति रस-वर्णन मे ऐसा तन्मय रहते है कि वे अपनी शब्द-प्रतिमा को अलकारो से सजा ही नही सकते, उसे सवारने का ध्यान ही उन्हें नही रहता

शृगार–रस

कालिदास का शृगार-रस प्राय कामजनित विकारो से उत्पन्न होता है और कही-कही तो अश्लील तक हो गया है कुमारसम्भव के 8वें सग के वणन को कौन अच्छा कहेगा ? कदाचित् ऐसे ही कारणो से अनेक टीकाकारो ने उन्ह बुरा-भला कहा है और यह भी सम्भव है कि उन्होने सात सर्ग ही लिखे हो परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि कहीं-कही वे आदश से गिर गय है किन्तु भवभूति का शृगार अत्यन्त पवित्र है ऐसा पवित्र वणन करन वाला दूसरा कवि हुआ ही नही रस और पवित्रता के अनमान वणन करन के कारण भवभूति का उत्तर चरित अनन्वय अलकार का दृष्टा त है—जगत्साहित्य के हिमालय का शिखर है

पात्र–कल्पना

'भवभूति के पात्र आदश पात्र है किसी पात्र को ले लीजिए सर्वसाधारण के लिए वह आदश ही सिद्ध होगा आदशता के शिखर से वह कभी नीचे नही गिरता राम आदशपति और साथ ही आदश राजा हैं और सीता, आदश स्त्री और आदश पत्नी वशिष्ट आदश विद्वान् और आदश गुरु हैं यहाँ तक कि दुर्मुख भी अपने आदश दूतत्व

से पृथक नहीं होना परन्तु कालिदास के पात्र एसे नहीं, वे ससारनभ्य साधारण पात्र हैं और साधारण मनुष्यो जसे ही काम करते हैं इतना ही नहीं, वे साधारण मानव प्रकृति के समान ही अपने भावो को प्रकट करते हैं कालिदास का दुष्यन्त एक धर्म प्रेमी, साधारण रसिक राजा है और शकुन्तला एक साधारण ससारलभ्य स्त्री परन्तु महाभारत के दुष्यन्त को या शकुन्तला को जो कालिदास ने नवीन रूप दिया है वह अनुपम है मैं यह कहना चाहता हू कि कालिदास के पात्र मानवीय हैं और भवभूति के आदर्श–देवी।

दृश्य काव्यों का विशेषत्व

भवभूति के नाटक पढने मे जितने मनोहर हैं उतने रगभूमि पर देखने मे नहीं वे नाटक होने पर भी श्रव्य काव्य की श्रेणी के अधिक अन्तर्गत हैं परन्तु कालिदास के नाटक रगभूमि पर अपना अद्भुत रग जमाते हैं एसी छटा दिखलाते हैं कि देखते ही बन पडे सच बात तो यह है कि कालिदास के नाटको के लिए ही दृश्य काव्य का प्रयोग यथार्थ है

उपसहार

इस लेख म मैंने इस बात का यत्न किया है कि तुलनात्मक रीति से कालिदास और भवभूति के सम्बन्ध मे अपने विचारो को प्रकट करू सस्कृत-भाषा के ये दोना विश्वविख्यात कवि शिरोमणि हैं इनके सम्बन्ध मे जो कुछ मुझे उचित जचा वह वाचकवृन्द की सेवा में भेंट किया है इनकी कोटि का कोई तीसरा कवि दृष्टिगोचर नही होता माघ भारवि बाण दण्डी, मयूर, क्षेमेन्द्र, गोवर्द्धन, जयदेव, जगन्नाथ प्रभृति सैकडो-सहस्रो कविवर है पर तु कालिदास और भवभूति कालिदास भवभूति ही हैं इनकी घडियो मे इन्ही का जन्म हुआ है इनकी प्रतिभा इनका भाषाधिकार, इनकी प्रौढता, इनकी सरलता कोमलता आदि गुण इनके ही थे इनमे किसी मे कुछ विशेषता है तो किसी मे कुछ परन्तु अपूर्व प्रतिभा का चमत्कार कवित्व-शक्ति, सारस्य दृश्य साक्षात्कार का सामर्थ्य चमत्कारिणी मनोहर उक्तिया, सूक्ष्मतर कलाविधान जसे इन दोनो कवियो मे अत्युत्तम हैं वसा चमत्कार कोई नये कालिदास और नये भवभूति पदा हो तो भारतजननी को पाकर कौन प्रफुल्लित न होगा इस भारतवसुधरा को शतश वन्दन कोटिश वन्दन!! भारतमही कभी सत्कवियो से शून्य न हुई और न होवगी ही इसमे दिव्य कवि-कोकिल हुए हैं और होंगे ही और कालिदास और भवभूति तो अमर हैं न? 'नास्ति येषा यश कामे जरामरणज भयम्" क्या भुला दिया जा सकता है क्या ही अच्छा हो यदि मेरे देशबन्धु स्थान स्थान पर 'कालिदाससमिति,' 'भवभूतिसभा आदि सस्थाओ की स्थापना करें

('सरस्वती अगस्त 1925 मे प्रकाशित)

द्विवेदीजी के संस्मरण

पण्डित श्री महावीरप्रसाद जी द्विवेदी क्या न थे ? वे विनोदशील व्यंग-चित्रकार थे सुन्दर गद्य-लेखक थे, उत्तम पद्य निर्माता थे स्पष्टवादी समालोचक थे सफल सम्पादक थे और थे कलाकोविद् सहृदय पुरुष अनेक महापुरुषो की तरह आपका जन्म गाव (दौलतपुर) मे हुआ था आपकी स्कूली शिक्षा न कुछ के बराबर थी परन्तु स्वाध्याय शीलता के कारण गुजरात, मराठी उर्दू, बगाली, अग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में आपने प्रवीणता पाकर विपुल ज्ञान-राशि का सम्पादन किया था आपकी जीवनी अनेक रगो से रजित थी और आपका अध्यवसाय कठिनाइयो पर विजय पाने वाले या आप हिन्दी कवियो की अपेक्षा भी सस्कृत कवियो से विशेष परिचित थे और यही कारण है कि हम नैषधचरित चर्चा, विक्रमाकदेव चरित्र, कालिदास की समालोचना आदि चीजो को पा सके हैं रघुवश कुमारसम्भव और किरातार्जुनीय आदि आपकी पुस्तकें हिन्दी जनता को सस्कृत कवियो के रस का आस्वाद कराती रहगी

मैंने आपकी हिन्दी कालिदास की समालोचना, हिन्दी शिक्षावली की समालोचना पढ़ी थीं और वे,मुझे स्वर्गीय राय देवीप्रसाद जी पूर्ण' बी ए एल एल बी का साहित्य हत्या' नामक समालोचन से कुछ कम न जची थी परन्तु मुझे जिस चीज ने आकृष्ट किया वह द्विवेदी जी की गुण ग्राहकता थी जो उन्होने सस्कृत के आशुकवि अयोध्यानाथ के विषय म सन् 1896 के आसपास श्री वैंकटेश्वर म प्रकट की थी इस लेखमाला को यदि कोई वैंकटेश्वर की पुरानी फाइलों मे से उद्धृत कर प्रकट कर दे तो अच्छा हो, इस लेखमाला को पढ़कर मैं 'मुग्ध'हो गया और मेरे चित्र म वो सस्कृत का प्यार लबालब

भरा था, उमड पडा द्विवेदी जी के 'मग्पाग्यस्य प्रतिस्तव,' 'सूयग्रहणम्,' 'मा'यमु जलीलामृतम्,' कथमह नास्तिक,' इत्यादि सस्कृत काव्य और स्व भारतरत्न ग्रम्बिकादत्त व्यास साहित्याचाय श्री के गुम्फित गद्य काव्य शिवराज विषय पर दी हुई गद्यात्मक समालोचना देखने के योग्य है और आपके सस्कृत गद्य पद्य के नमूने हैं

आपका मुझसे सौहाद था आपने लाला सीताराम जी (जुहीवाले) से कह रक्खा था कि वे मेरी और प पद्मसिह जी शर्मा की चिट्ठियो को जहा पर द्विवेदी जी हो वही पर डाक द्वारा लौटा दिया करें एक बार नौकरी छोड देने के बारे मे पूछने पर द्विवेदी जी ने मुझे लिखा —

"हमारे अनेक मित्रो ने नौकरी छोड देने पर हमे बहुत बुरा भला कहा आपको लिखते तो आप भी खबर लेते"

एक दूसरे मे आपने लिखा —"हमारे नौकरी छोड देने पर लाला सीताराम जी ने हमे अपने यही रख लिया था और 2500) ढाई हजार रुपये इसलिए दिये थे कि हम इनसे अपना काम चलावें और हिंदी की सेवा करें हम लालाजी के यहीं रह गये ऊपर भी हमारे सीताराम हैं और नीचे भी सीताराम, अब तो यह रुपया चुक भी गया है —"

तीस वष पहले कदाचित सन् 1909 मे मैं अपने मामा के पुत्र नारायणसहाय ज्योतिषी को साथ लेकर, झालावाड के दीवान प परमानद जी चतुर्वेदी (जिनको कि द्विवेदीजी ने शिक्षा समपण की है) के आमत्रण पर कायमगज गया था वही पर लाला छोटेलाल जी 'बाहस्पत्य जो सस्कृत फारसी अरबी और अग्रेजी आदि भाषाओ के एक उत्कृष्ट विद्वान थे मिले वे द्विवेदी जी की बडी प्रशसा करते थे और खास करके द्विवेदी जी की नियमितता की जहा तक मुझे मालूम है सरस्वती का एक ही अक युग्माक के रूप मे प्रकाशित हुआ है कदाचित् सन् 1904 मे, बाकी यथा समय प्रकाशन होता रहा ठीक समय पर काम का सम्पन्न होना स्व बाबू चिन्तामणि घोष (इण्डियन प्रेस के स्वनामधन्य स्वामी) को भी बहुत पसन्द था और द्विवेदी जी कतव्यनिष्ठ पुरुष थे मेरे खयाल मे तो इन दोनो कतव्यनिष्ठ पुरुषो का प्रभाव 'प्रवासी' और माडन रिव्यू' के सपादक रामानद जी चटर्जी पर भी होना चाहिए

कायमगज से मैं कानपुर गया स्टशन से सवारी करके, जुही गया सामान और अपने मामा के लडके को बाहर बिठला गया और मैं भीतर जाकर द्विवेदी जी के कमरे मे बठ गया द्विवेदी जी सन् 1906 म मेरा चित्र सरस्वती मे, लम्बी, चौडी प्रशसा के साथ छाप चुके थे मेरा खयाल है कि हिन्दी लेखक के नाते सरस्वती म भी सबसे

पहला चित्र यही छपा था और जायसवाल जी का चित्र दूसरा । फिर तो हिन्दी पत्रों मे धीरे धीरे यह परम्परा चल निकली मेरा यह चित्र राजपूताने के ढग का था और सन् 1903 या 1904 का लिया हुआ था इस समय मैं यू पी के वेश मे था और यह सोच रहा था कि द्विवेदी जी न पहचानेंगे हुआ भी वैसा ही लाला सीताराम जी इस रहस्य को जानते थे मैं द्विवेदी जी के पलग के पास बैठा हुआ अखबार पढने मे लग गया द्विवेदी जी पन्द्रह एक मिनट में शौच जाकर आये खुला बदन, कान पर उपवीत और हाथ मे लोटा उन्होंने आ करके देखा—कोई पुरुष उनके अखबार को पढ रहा है प्रश्न हुआ "आप कौन हैं ?" जवाब दिया गया 'पुरुष'

"यह तो मैं भी जानता हू, परन्तु आप अन्दर कैसे आ गये ?"

"अपना अधिकार समझकर"

तीव्रता बढ गई लाला सीतारामजी मन ही मन मजा ले रहे थे

"आपका नाम?"

"पहले हाथ पैर धोकर आइयेगा, फिर बतलाया जायगा"

भौंहें तन गई मुझे "सीधी से सहस्रगुनी टेढी भौहे मीठी हैं' का मजा आया नाम बताया गया बाहुयुद्ध की जगह बडे जार से आश्लेष हुआ जो कभी भुलाया नही जा सकता

"वाह खूब सामान कहा है ?"

"बाहर"

बडे आनन्द के साथ सामान भीतर लाया गया दो एक दिन मैं वहा रहा द्विवेदी जी के उत्साह और आनन्द का ठिकाना न था

एक रोज मैं, समय की पाबन्दी के महत्व को लेकर कुछ कविता सुना रहा था लाला सीताराम जी भी थे मेरे इस कविता पर आप दोनो खूब प्रसन्न हुए सरस्वती के समय पर निकालने की बात भी चल पडी द्विवेदी जी ने बिना किसी की हिचकिचाहट के कहा कि इस विषय का जितना श्रेय मुझे दिया उसकी अपेक्षा विशेष श्रेय मन की शुद्ध को भी दिया जाना चाहिए यदि वे सब कामो को रोक कर सरस्वती का काम नही करते तो सभवत सरस्वती समय पर प्रकाशित नहीं होती

वे हम दोनों के मिलाप से अत्यंत प्रसन्न थे, उत्साह था " न था आर्मी प्रेस चलाते थे, खुद का कारखाना था, खुद देखभाल करते थे मुझ से कहने लगे कि "द्विवेदी जी का इस कुटिया मे रहना तो परम सौभाग्य की बात है इनके कारण अनायास आप जैसे महानुभावो के दर्शन हो जाते हैं न मालूम कितने काव्यो के रसास्वादन से मुग्ध हुए "द्विवेदी जी राय देवीप्रसादजी 'पूर्ण' के पास लिवा ले गये और उनके साथ हम लोगो का खूब वार्तालाप हुआ पूर्णजी अच्छे लेखक और सुकवि थे और प महावीर प्रसाद जी के प्रति उनका बडा ही सद्भाव था" कालिदास की निरकुशता" और "निराकुशता दर्शन" तो साथ-साथ छपे हैं परन्तु क्या ही अच्छा होता कि इन दोनो के साथ ही पूर्णजी की लिखी हुई 'आत्माराम की टें टें' भी छापी गई होती पूर्ण जी का "विपद्विदारणस्तो" अब भी भक्ति को गद्गद् किये बिना नहीं रह सकता पूर्णजी की "धाराधर धावन" की इस लाइन से —

"मेरे जान ह्वै है सुकुमारी, प्राणप्यारी
सखा सुन्दर सरोजिनी तुषार की सताई सी"

हम लोगो को बडा ही आनन्द आया था 'इसी पद्य मे का "सी" तो वस्तु को मूल से भी अधिक सुन्दर कर देती है' यह बात द्विवेदी जी के और मेरे मुह से सहसा एक साथ निकल पडी

मैं तीसरे दिन वापस आया जुही मे उस वक्त सवारी न मिलती थी मजदूर के सिर पर सामान रखवाया गया तथा द्विवेदी जी और लाला सीताराम जी दोनो पहुचाने को आये सीताराम जी को और द्विवेदी जी को मैंने वापस जाने का आग्रह किया किसी तरह लालाजी को तो मैं वापिस भेज सका परन्तु द्विवेदी जी ने एक न मानी वे स्टेशन तक आये और जब तक मैं चलती हुई में नजर आता रहा, अपनी स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते रहे मैं कायमगज होता हुआ जयपुर होकर यहां पर (झालरापाटन) आ गया

द्विवेदीजी अपने सुख-दुख की बात मुझे लिखते थे और मेरे सुख दुख की बात मुझसे पूछते थे एक दफे अपने भानजे के बम्बई चले जाने के कारण वे बडे दुखी हुए उन्होने लिखा—'पसे टके का कोई दुख नहीं इण्डियन प्रेस से 50) पेंशन मिलते हैं और भी कुछ लिखने पढ़ने से मिल जाता है और यदि न भी मिले तो आर्थिक कष्ट को हम कोई कष्ट नहीं समझते" (अपूर्ण)

नियत पढ़ाई समाप्त कर लेने पर उसकी इच्छा हुई कि मैं लैटिन सीखू इस पाठशाला के एक शिक्षक का पुत्र विश्वविद्यालय मे पढता था वह उसे चार आने सप्ताह फीस के लेकर लटिन भाषा सिखाने को तयार था, परन्तु हीन के पास इतनी भी फीस देने का सुभीता नही था एक दिवस हीन एक सम्बन्धी के यहां रोटी लेने को भेजा गया यह सम्बन्धी धनी था और बवर्ची का काम करता था हीन अपने महान् लक्ष्य का विचार करता हुआ जा रहा था जिस समय वह अपने रिश्तेदार की दुकान पर पहुचा, इसकी आखों मे आंसू भरे हुए थे उस श्रेष्ठ स्वाभाव वाले पुरुष को जब इसके दुख का कारण मालूम हुआ, तब उसने इसकी फीस भर देने की 'हां' कर ली इसके सुनते ही हीन के हर्ष का ठिकाना न रहा हर्षोन्मत्त हो फटे-पुराने कपडे पहनने वाला वह हीन पीछे पैरो लोटता हुआ दौडने लगा उसके हाथ मे से रोटी छूट पडी और कीचड मे लथ पथ हो गई उसके मा बाप इस हानि को सहन नही कर सकते थे, अतएव जब उन्होने इसे धमकाया तब कही इसे सुध आई इसने दो वर्ष तक लटिन पढी इतने समय मे इसने अपने शिक्षक के समान ही लटिन का अभ्यास कर लिया

अब इसके पिता का विचार हुआ कि यदि हीन कोई काम करने लगे तो अच्छा, परन्तु हीन की ज्ञान तृष्णा अपार थी इसे इस समय अपना शौक पूरा करने के साधन भी प्राप्त थे पास के गाव मे इसका एक सम्बन्धी धर्मगुरु का काम करता था उसे हीन के आखिरी गुरु से मालूम हुआ कि हीन बडा ही होनहार लडका है, इसलिए उसने हीन को चेम्नीटझ के मुख्य विद्यालय मे अपने खर्च से भेज दिया यह मनुष्य बडा कम खर्च करने वाला था, अतएव हीन को पूरी पूरी पुस्तकें भी नही मिलती थी, वह अपने सहाध्यायियो की पुस्तकें उधार लाकर नकल कर लेता था और इस तरह अपना अभ्यास बढाता था उस शहर के एक श्रीमान् के लडके का यह शिक्षक हो गया था इससे कुछ अर्से तक इसका काम और भी अच्छी तरह चला

अब इस बात की आवश्यकता हुई कि यदि वह ज्ञान मार्ग मे आगे बढना चाहे, तो उसे विश्वविद्यालय मे प्रवेश करना चाहिए उसने लिप्जिक जाने का निश्चय किया जब वह लिप्जिक पहुचा तब उसके पास केवल तीन रुपये थे उसके रिश्तेदार ने वचन दिया था कि वह अपनी उदारता जारी रखेगा परन्तु उसके पास से उसे बहुत कम सहायता मिलती थी, इसके सिवा उसे कोई आमदनी न थी इस वक्त यह सहायता उसे बडी देर से मिली और वह भी घडबडाहट और उपालम्भ के साथ वह जिस घर मे रहता था उस घर की दासी ने यदि उस पर दया न की होती तो उसे दुख के मारे मर जाने की नौबत आ गई होती उसके पास न द्रव्य था और न पुस्तकें जैसे जसे उसकी कठिनाइया बढ़ती गइ, वसे ही वसे उसकी हिम्मत भी बढती गई छह महीने तक तो वह सप्ताह म केवल दो रात ही सोता रहा

इस अर्से मे उसकी स्थिति दिनो दिन असहनीय होती गई उसके अध्यापक ने दूसरे शहर मे उसे एक कुनबे मे मास्टर की जगह दिलानी चाही उसके लिए वह जगह सब तरह से उपयुक्त थी, पर उसे अपना अभ्यास बढाने योग्य शहर को छोडना पडता था अतएव उसने उस जगह को स्वीकार न किया उसने इन सब सकटो मे रहते हुए भी लिप्जिक मे ही रहने का निश्चय किया इस त्याग का फल भी उसे थोडे ही समय मे मिला ऊपर कहे हुए अध्यापक ने इसी शहर मे उसके लिए वैसी ही एक जगह और ढूढ निकाली इससे कुछ समय के लिए उसकी आर्थिक कठिनता दूर हो गई परन्तु वह अत्यन्त कठोर श्रम करके अभ्यास करता था, इससे भयकर व्याधि मे ग्रस्त हो गया और नौकरी से इस्तीफा देकर उसे अलहदा होना पडा इस बीमारी म उसके पास जो कुछ थोडा सा द्रव्य था, वह भी व्यय हो गया और जब वह चगा हुआ तब पहले का सा दरिद्र का दरिद्र हो गया

सकट की इस पराकाष्ठा के समय मे ड्रेस्डन राजधानी के एक उच्चाधिकारी का ध्यान इसके लिखे हुए लटिन काव्यो की एक प्रति की ओर आकर्षित हुआ इसके मित्रो ने इसे सलाह दी कि वह ड्रेस्डन को जावे क्योकि उनका ख्याल था कि उच्चाधिकारी का आश्रय मिल जाने से उसके घर लक्ष्मी की कमी न रहेगी परन्तु उसके भाग्य मे ऐसा कहा बदा था वह निराशा के लिए बना था उसने प्रवास करने के लिए अपने एक मित्र से कर्ज लिया और वह ड्रेस्डन गया, परन्तु उसे वहा उस अधिकारी के पास से मिवा कुछ व्यर्थ वचनो के और कुछ न मिला आखिरकार उसे अपने निर्वाह के लिए अपनी किताबें बेचनी पडी और काउन्ट डि ब्रूलके पुस्तकालय मे 250) रुपये सालाना पर क्लर्की की तुच्छ नौकरी मजूर करनी पडी ऐसा होने पर भी उस मेहनती होने के कारण रोज का काम किये बाद पुस्तक विक्रेताओ का भी थोडा सा काम करने को समय मिल जाता था उसने पहले पहल एक फ्रेंच उपन्यास का अनुवाद किया इस अनुवाद से उसे 0)रुपये की प्राप्ती हुई लटिन भाषा के कवि टिबुलस की एक पुस्तक का विद्वतापूर्ण उत्तम सस्करण निकालने के लिए उसे लगभग 250) रुपये की प्राप्ती हुई इस रकम से उसने लिप्जिक मे लिए हुए कर्ज को चुका दिया इस समय वह बडी मेहनत से अभ्यास करता था ड्रेस्डन म असख्य पुस्तको का सग्रह होने से उसे अपना अभ्यास बढाने का अच्छा मौका मिला ज्यो त्यो कर वह अपना काम चलाता था परन्तु इस मौके को ही वह अपने श्रम का पूरा बदला समझता था प्राय दो वर्ष तक वह अपनी जगह पर रहा और दो वर्ष मे उसकी तनख्वाह दूनी हो गई, परन्तु इसी समय मे सात वर्ष की लडाई के नाम से मशहूर युद्ध का प्रारम्भ हो गया और उसमे जिस पुस्तकालय मे वह नौकर था उसका भी नाश हो गया हीन को ड्रेस्डन से भाग जाने की नौबत आई और दीर्घकाल तक बिना किसी प्रकार का धधा किए

भटकते फिरना पड़ा ड्रेस्डन मे उसका कुछ सामान पड़ा था वह उसे लेने लौटा तो उसने देखा कि नगर पर शत्रु गोले बरसा रहे हैं उसका सारा सामान ध्वस हो गया वह दरिद्र था, तो भी उसने एक स्त्री से विवाह किया यह स्त्री उसी कुटुम्ब की कन्या थी जिस घर मे वह रहता था उसके कई एक मित्रो ने उसकी प्रशसा करके उसे एक गृहस्थ की मिल्कियत की व्यवस्था करने की नौकरी दिलवा दी उसने कई साल तक इस जगह काम किया,

1763 ई मे जब सब ठौर शान्ति फैल गई तब हीन ड्रेस्डन गया इस समय उसके दुर्भाग्य का अन्त हुआ उसे गोटिनजेन के विश्वविद्यालय मे जो वक्तृता के अध्यापक की जगह खाली थी वह मिल गई, क्योकि वह सत्पात्रता और योग्यता के लिए प्रसिद्ध हो चुका था अतएव इस जगह के लिए वही सर्वोत्तम समझा गया पन्द्रह वर्ष तक उसने इस जगह काम किया इस समय मे एक के बाद एक करके जो पुस्तकें उसने प्रकट की और जो व्याख्यान दिये, उनसे वह अपने समय के उत्तमोत्तम विद्वानो का शिरोमणि समझा गया उसके शिष्य उसे अपने पिता के समान सम्मान देकर पूजते थे सन् 1812 में जब उसकी मृत्यु हुई तब वहा के तमाम नागरिको को अनुभव हुआ कि हमारे विश्वविद्यालय का और नगर का एक रत्न खो गया [1]

---

[1]नवरत्नजी ने जार्ज क्रेक की पुस्तक 'परस्यूट आफ नॉलेज अण्डर डिफीकल्टीज' का 'कठिनाइयो मे विद्याभ्यास' नाम देकर अनुवाद किया था, उसी का एक अश

गिरिधर शर्मा के काव्य मे बड़ा मनोहारी प्रकृति चित्रण मिलता है, जो नायक-नायिका के सन्दर्भ में दिये गये रीतिकालीन ऋतु वर्णन आदि के समान निर्जीव एव परम्परा पालन मात्र नहीं है। 'सरस्वती' तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं मे इनकी कवितायें छपती रहीं इनकी कविताओ का मुख्य विषय स्वदेश प्रेम था इनकी मुख्य मौलिक काव्य-रचना 'मातृ वदना' है

—डा नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास

परमेश्वर शर्मा

पिता के सम्बन्ध मे जो देखा जो सुना

शिवदत्त यदि तू जीवित रहना चाहता है तो इस तेरे बच्चे को पाटनवालों के गोद रख दे इसके पगड़ी योग आ गया है यदि बालक गोद नहीं गया तो तेरी पगडी इसके बधेगी—वृद्ध ज्योतिषी जयपुर निवासी शिवदत्त जी भट्ट से उनके चार वर्षीय एक मात्र पुत्र ब्रजेश्वर की जन्म कुडली देखकर चेतावनी दे रहे हैं झालावाड के राजगुरु श्री गणेशराम जी भट्ट का देहावसान हो गया है रियासत की ओर से महाराज श्री पृथ्वीराज जो द्वारा भिजवाया गया म्याना भी इस बीच जयपुर पहुचा है स 1912 मे चार वर्ष का ब्रजेश्वर भट्ट झालरापाटन आकर झालावाड के राजगुरु घराने का स्वामी बनता है माता हीराकुवर (भट्ट श्री गणेशराम जी की पत्नी) एव मामा (हीराकुवर बा के भाई) राजाराम जी की सरक्षणता मे बालक पढ लिख कर गृहस्थ बनता है

× × ×

'जा नास्तिक' ! पिता के मुख से क्रोधपूर्वक ये शब्द निकल पडते हैं

भट्ट ब्रजेश्वर अपने तृतीय पुत्र गिरिधर को श्रीमद् भागवत् का अध्यापन कर रहे हैं

सहसा बालक पूछ बठता है "पिताजी इस भागवत् मे तो लिखा है 'शौनक

उवाच' 'परीक्षित उवाच' यह तो शुकदेव जी की कही हुई नही हो सकती तो वह भागवत् कौन सी है जो शुकदेवजी ने परीक्षित को सुनाई थी" पिता के पास इस तक का उत्तर नही है उनका सहज श्रद्धालु मन इस सहज जिज्ञासा को कुतर्क मान कर तिलमिला उठता है और वे बालक को उस दिन फटकार कर भगा देते हैं

× × ×

गिरिधर शर्मा को बचपन से ही अध्ययन मे रुचि है दादी माँ हीराकुवर बा की गोद मे बैठ कर सुनी गई अपने पूर्व मे अपठित प्रपितामह बलदेव भट्ट की ज्ञान प्राप्ति निमित्त की गई साधना की कहानी का गहरा प्रभाव मन मे है शौक और भी है, दंड बैठक लगाना, भारी मुद्गर फिराना, घटो तैरना व शतरंज खेलना अत्यंत प्रिय है परन्तु सब से अधिक रुचिकर तो है पुस्तक झालरापाटन के मदरसे मे दर्जा सोयम (3) तीन तक अध्ययन कर जयपुर मे समवयस्का पत्नी नोरती देवी के साथ बैठ कर प्रश्नवर कान्हजी व्यास के सान्निध्य मे साहित्य व व्याकरण का अध्ययन किया है पत्नी के देहावसान के बाद अध्ययनार्थ काशी आ गये हैं गुरु शिवकुमार जी शास्त्री इस शिष्य से अत्यन्त प्रसन्न हैं गुरुजी ने प्रसन्न हो कर एक दिन शिष्य मडली के बीच कहा भी है—'नवरत्नोऽसि' घर मे होने वाली दुर्घटनाओ के समाचार मिलते रहे हैं किन्तु अध्ययन अविचल भाव से चालू है पिता के देहावसान का समाचार वज्रपात के समान आया मन निराशा से भर उठा व आत्म हत्या की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई स्वय के शब्दो मे 'मैं गगा के जल मे उतरता चला गया छाती तक गहराई मे पहुच कर सोचा कि आगे छलाग लगा कर प्रवाह मे अपने शरीर को विसर्जित कर दू कि एक आवाज आई 'ठहर ! अभी बहुत काम करना है' मैं जस सोते से जाग पडा व बाहर निकल आया'

× × ×

काशी छोडकर पाटन आना अनिवार्य हो गया है घर मे वृद्ध माता विधवा भौजाई व छोटा भाई है झालावाड रियासत छोटी सी रह गई है पुराने राणा जालिमसिंह द्वितीय को अग्रेजो ने गद्दी से उतार कर काशी भेज दिया है नये राजा श्री भवानीसिंह के प्रति जनता मे रोष है व स्वय भी कौक ने हैं एकाएक किसी पर विश्वास नहीं करते रियासत के साथ कोटा मे चली गई जागीरी भूमि के एवज मे मई भूमि दी है वह उजाड है सचित सपत्ति—स्त्रियो के गहने – पिता के उत्तर कर्म निमित्त गिरवी रख दिये गये हैं परिवार की अभावग्रस्त स्थिति को सवारने मे दोनो भाई जुटत है छोटा भाई जागीर मे प्राप्त उजाड भूमि को सुधारने सवारने मे, बडा भाई विद्या के प्रसार मे एव राजदरबार मे पारिवारिक परम्परागत राजगुरुत्व को सार्थकता प्रदान करने मे

× × ×

श्री भवानीसिंह जी सतर्क नरेश है वे कसौटी पर कसने के आदी हैं बाहर से एकाधिक विद्वान झालावाड बुलाये गये हैं नरेश के सम्मुख नित्य विद्वमंडली जुडती है शास्त्रचर्चा, काव्यपाठादि होते हैं इस विद्वत्समाज मे अस्तित्व ही नही बनाये रखना है वर्चस्व भी स्थापित करना है काशी म अधूरे छोडे अध्ययन की क्षतिपूर्ति निमित्त घर पर स्वाध्याय दैनिक जीवन का अभिन्न अग बन गया है सैकडो ग्रथो का प्रवाह आता चला जाता है नियमित स्वाध्याय गुरुता प्रदान करता है

× × ×

प्रसिद्ध डिंगल कवि मुरारीदास जी राजसभा म आये हैं कदाचित् झालावाड मे राजकवि का आसन ग्रहण करने की आशा मे वे डिंगल भाषा की क्षमता का पक्ष समर्थन गर्वपूर्वक करते हैं गिरिधर शर्मा कहते हैं कि संस्कृत की सी क्षमता किसी अन्य भाषा मे नही है बातचीत के दौरान मुरारीदास जी कह उठते हैं—"संस्कृत म छन्द तो डिंगल का लिख लोगा प ण वयणसगाई कहा सू लावोगा?" अगले दिन समागम में डिंगल के चोटियाला, साणोर एव प्रहास साणोर छद म वयण सगाई का निर्वाह करते हुए सस्कृत गीत गिरिधर शर्मा से सुन कर मुरारीदास जी स्तब्ध रह गये है *

× × ×

श्री भवानीसिंहजी अंग्रेजी साहित्य के प्रशसक है प्राचीन सस्कृत साहित्य के प्रति उनकी धारणा है कि उसम अधविश्वासपूर्ण असभव सी कथायें मात्र हैं गिरिधर शर्मा का कथन है कि उनमे जीवन के लिए प्रेरणा के साथ ही साथ रसात्मक लालित्य अन्य साहित्यो की तुलना मे बहुत अधिक है उनका आग्रह है कि भवानीसिंह जी सस्कृत साहित्य का अध्ययन करें श्री भवानीसिंह जी को केवल रात के बारह बजे फुरसत मिल सकती है गिरिधर शर्मा का डेरा कोठी पृथ्वीविलास के एक कमरे म पड जाता है एक कुकर है जिसमे दाल चावल, दलिया बन सकता है अपने हाथ से भोजन बनाकर खाना व रात के बारह बजे तक सस्कृत के चुने हुए ग्रन्थो का अध्यापन यह क्रम लम्बे अर्से तक चलता है

× × ×

28 वर्ष की अवस्था मे 11 वर्ष की बालिका से विवाह हुआ है अब वधु ससुराल आ गई है जीविका के निमित्त 'शकर देव गुरुजी का चूरन' चव चूर्ण की

---

*ये तीनों गीत 'सद्वृत्तगुच्छ' म प्रकाशित हैं

मात्रा अन्य व्यक्तियों को दी गई मात्रा से अधिक है चूर्ण एक दम फाँक कर गफर मुह बिगाडता है, खूब जोरो से थूकता है व राजा को गालिया निकालता है हसी के कहकहो के बीच चूर्ण लीला समाप्त होती है

× × ×

'झालरापाटन में कोई कान्ह कवि रहते हैं ?' 'सुकवि' के सपादक श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही अपने शिष्य श्री जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी' सहित कानपुर से आये हैं, पौना मे शर्मा जी के पास बठे हुए पूछ रहे हैं

'कन्हैया' शर्मा जी आवाज देते है और एक युवक हाथ मे झाडू लिये हुए भीतर से आकर सामने खडे हो जाता है सनेही जी आश्चर्य से देखते हैं

'यह आपके घर मे झाडू निकालने वाला कवि कान्ह है ?'

'कन्हैया सनेही को अपनी कविता सुना' और घर का सेवक परन्तु शर्माजी के ज्येष्ठ पुत्र ईश्वरलाल का अभिन्न मित्र कन्हैयालाल कायस्थ बडे जोश के साथ अपनी रचनायें सनेही जी को सुना रहे हैं सुकवि मे समस्या पूर्ति के छपने पर सनेही जी को लिखा गया छदोबद्ध उपालभ भी उसमे हैं लानत तुझ पर अरे सनेही जो न छपे मेरी मधुशाला'

गुरुदेव ने यह चीज मगाई है राजमहल से आया हुआ सेवक एक कागज का पुर्जा देता है जिसमे लिखा गया है द्राक्षासव' अलवर नरेश जयसिंह झालावाड नरेश श्री राजेन्द्रसिंह जी के महमान बन कर आये हुए हैं महफिल जमी हुई है शराब का दौर चल रहा है अलवरेन्द्र ने शर्माजी से भी पीने का आग्रह किया है शर्माजी ने कहा है "मैं पिऊगा लेकिन अपनी स्पशल सेवक घर से द्राक्षासव की शीशी ले आया है शर्माजी स्वय भी पी रहे हैं और अलवरेन्द्र का प्याला भी उसी से भर रहे हैं

गुरुदेव आप क्या खा रहे हैं भीतर से आ कर कुर्सी पर बठते हुए महाराज राजेन्द्रसिंह जी नवप्रवीन गुरु से पूछते हैं

'महाराज यह सुदर्शन चूर्ण है मलेरिया की बहुत अच्छी दवा है—कुनैन से कभी-कभी बहरापन व सिर मे चक्कर आने की शिकायत हो जाती है लेकिन इससे नहीं होती'

'गुरुदेव ! थोडा मुझे भी दीजिए चूर्ण बेहद कडवा है चखकर राजा ने पूरी पुडिया ही माग ली है

"भाया ! देखो गुरुदेव कितना बढ़िया चूरन लाये हैं" ये है रियासत के दीवान भाया शादीलालजी महाराज हाथ से मिला चूर्ण मुंह मे रखकर मुंह दबाये चुपचाप बैठे हैं

इसी समय आते हैं बाबू अमरनाथ गभीर 'गभीर देखा गुरुजी कितना बढ़िया चूर्ण लाये हैं' गभीरजी भी चूर्ण मुंह मे डाल बैठ जाते हैं एक-एक कर दरबारी आते जा रहे हैं राजा के दिये चूर्ण को मुंह म दबाये बैठे हैं कह भी तो क्या !

और अब आता है शंकर सेठ (महाराज का विदूषक) जो उनके पुत्रो को शिक्षा देते हैं मन को आघात लगता है और गिरिधर शर्मा अर्थ की दुनिया मे प्रवेश करते हैं रूई के मुआमदे के सौदो मे काम कर कुछ दिन बाद सेठ विनोदीराम बालचद की दुकान (बैंकिंग फर्म) पर दस हजार रुपया जमा करते हैं एक बार लगा चस्का लम्बी अवधि तक चलता रहता है परन्तु उतनी ही आकस्मिकता से रुक भी जाता है

× × ×

'हम दुनिया का आठवा आश्चर्य देख रहे हैं' इन्दौर के डाक्टर शर्माजी की स्वास्थ्य परीक्षा कर कह रहे हैं उन्हें कफ मे खून जाता है डाक्टरो का कहना है आप को इस समय बिस्तर पर होना चाहिए परन्तु आप इतनी दौड धूप कर रहे हैं आपका फेफडा इतना खराब हो चुका है कि आप छह माह से अधिक जीवित नही रह सकते सक्रमण टी बी के कीटाणुओ का नही अपितु 'Catarh' के कीटाणुओ का है फिर भी है तो सक्रमण ही" स्वय शर्माजी के शब्दो मे "मैं बम्बई गया और झडू भट्टजी से मिला उन्होने मुझे 'च्यवनप्राश व्याघि हरीतकी अवलेह एव द्राक्षासव का सेवन करने की सलाह दी औषधियां मैंने सेरो नही मनो की मात्रा मे खा डाली फिर इन्दौर के डाक्टरों को बतलाया उन्होने कहा "अब आप इस बीमारी से तो मरोगे नही और किसी बीमारी से ही मर सकते हैं '

× × ×

'अरे ये पडत गिरिधर सरमा जी भी नाना बावला है अब मसलमान बणरया है' झालरापाटन के सिद्ध चिकित्सक श्री घनश्याम जी वैद्य घर मे आकर कह रहे हैं यही खबर मोतीकुआ भी पहुचती है जिसे सुन कर चूडावत सरदार लाला भूरजी एकदम चल पडते है शर्माजी के घर पहुच कर देखते हैं कि वास्तव म काजी जी आये हुए हैं व कलमे का प्याला तयार किया जा रहा है क्रुद्ध सरदार की खिची हुई तलवार देख कर काजी जी भाग गये हैं व शर्माजी रह गये हैं अवाक्, स्तब्ध

× × ×

"देवा । गुरु चेनो मे ही ठनेगी तो काम कैसे चलेगा ? और मसविन्दा भी तो आपका ही तयार किया हुआ था।" कौंसिल से लौट कर महाराज भवानीसिंह गिरिधर शर्मा से कह रहे हैं विधवाओ की दशा सुधारने हेतु एक कानून कौंसिल मे पेश हुआ था जिसका मसविदा तैयार किया था गिरिधर शर्मा ने परन्तु राय के लिए पेश किये जाने पर विरोध भी किया था कानून पास हो गया किन्तु सवसम्मति से नही एक मत के विरोध सहित गुरुदेवा का कहना था "महाराज मसविदा तैयार किया था आप का आदेश पालन करने के लिये परन्तु कौंसिल मे आपने जब राय मांगी तो मैंने अपनी स्वतत्र राय दी विधवाओ की दशा का सुधार किसी सरकारी कानून द्वारा नही अपितु सामाजिक विचार क्रान्ति द्वारा होना चाहिए'

× × ×

'सेठ जी ये पण्डिज्जी ये ज्यादा मू डे मत लगाओ नी तो कोई दन रुप्या पान्सो को नगदो देगा --सेठ विनोदीराम, बालचद की फम के मुनीम अपने सेठ जी को सलाह देते हैं पडज्जी अर्थात् पडित गिरिधर शर्मा कर किश्ते बांध दी थी

अजी ये क्या हैं हम से पूछो, जिसका ले लेते हैं देते नहीं आज ही जेल जा रहे थे

राजा के मु ह बरबस फूट पडा 'अरे ये मुझ से नही कहते उत्तर था—"कहा उससे जाय जा जानता न हो जो सब कुछ जानता है उससे क्या कहा जाय ?"

× × ×

राजन आप के राज्य मे एक विद्वान् इतना कष्ट पा रहा है मुझे इस बात का खेद है कहो तो मैं उस अपने साथ ले जाऊ' नाथद्वारा के पीठाधीश्वर झालावाड आये हुए हैं व भवानीसिंह जी से कह रहे हैं महामना मदन मोहन मालवीय ने भी महाराज से आग्रह किया है कि गिरिधर शर्मा को हिन्दू युनिवर्सिटी म सस्कृत विभागाध्यक्ष के रूप म नियुक्त करने की अनुमति प्रदान करें महाराज को बो दोना प्रस्ताव स्वीकार नही हैं उपजाऊ भूमि के स्थान पर उपजाऊ भूमिवाला गडारी' नामक ग्राम जागीर म स्वीकृत किया गया ह परन्तु इस बीच प्यारा भाई देवलोक वासी हो चुका है

× × ×

महकमा सदर मे 20) माहिक पर नौकरी कुछ वर्षों स चालू है परन्तु दीवान श्री परमानन्द कुछ असन्तुष्ट हैं क्योंकि गिरिधर शर्मा रोज दोपहर म घटा भर नीद

निकालते हैं दो आदमियो का काम सुपुर्द कर दिया गया है, परन्तु फिर भी वे सोते पाये गये एक और आदमी का काम दे दिया गया है अर्थात अन्य व्यक्तियो की तुलना मे तिगुना कर दिया गया है फिर भी सोना नही छूटा काम का चेकिंग किया गया चढा हुआ कोई काम नही बार बार चेकिंग काम पूरा कहा-सुनी

× × ×

आज घर मे आटा नही है चोकर को पीस कर एक मोटी रोटी सेकी गई है छोटा भाई कहता है 'दादा ! तू खाले' बडा भाई कहता है 'भाई तू खाले' दोनो भूखे सो जाते हैं

× × ×

अस्तित्व के लिए अथक परिश्रम पुस्तको का अनुवाद कर प्रकाशको को बेचना बम्बई से पत्र आया है आपने जो 200/- की वी पी द्वारा पुस्तक भेजी है उसे छुडाने मे हम असमर्थ हैं हमारा स्वय का छोटा सा प्रेस है परिवार के व्यक्ति ही मिल कर कम्पोज व छपाई का काम करते है किसी प्रकार काम चला पा रहे हैं यदि आप 50/- मे वी पी छोडने के लिये पोस्ट आफिस को लिखें तो बडी कृपा हो आग्रह स्वीकार करते हुए पोस्ट आफिस को लिख दिया गया है जो कुछ राशि प्राप्त हो उसी से काफी सहारा परिवार को मिलेगा

× × ×

'अजी ये क्या ह यह तो हम से पूछो'

दैनिक राजदरबार मे गिरिधर शर्मा के काव्य की प्रशसा हो रही है कि इसी समय श्री धनीराम जी बोल उठते ह ये दीवाना अदालत के आदमी हैं इनकी अदालत म पेश हुए मुकदमे को खारिज करके आये हैं भट्ट ब्रजेश्वरजी के समय के 200/- उधार की वसूली के लिए पेश इस मुकदमे म वादी का कहना था कि यदि इन्ह जल की सजा सुना दी जाये तो रकम अभी वसूल हो सकती ह गिरिधर शर्मा का कहना था कि हम रकम देने से इ कार नही है पर तु एक मुश्त नही दे सकते किश्तो में चुका सकते है न्यायाधीश ने वादी की मागें अस्वीकार कर दी

× × ×

"अरे ! गिरिधर ! नवरत्न ! झालरापाटन वाला !!" गुरुजी उठ बठते हैं कुशल-क्षेम, शास्त्र चर्चा के उपरान्त गुरुजी कहते हैं 'अजी गिरिधर ! बोले क्यो नही ? लाल क्यो खाई ?

उत्तर था "महाराज ! यह प्रसादी जीवन में कब मिलती ?"

× × ×

महगाई बढती जा रही है जागीर की बधी हुई आमदनी के सिवाय आय का अन्य कोई साधन नही है छोटे पुत्र को म्यूनिसिपल बोड झालरापाटन मे राज्य सेवा मे नियुक्ति मिली है उसे 35/– मासिक मिलते हैं राजस्थान सरकार ने जागीरो का प्रबध अपने हाथ मे ले लिया है वसूली तहसील करती है प्रतिशत काट कर राशि जागीरदार को दे दी जाती है परन्तु वह कब मिले निश्चित नही है

× × ×

बडे पुत्र ईश्वरलाल को 'लोकवाणी प्रेस" मे 125/– मासिक पर काय मिला है वह अपने परिवार सहित जयपुर चला आया है बृहत्तर राजस्थान सरकार ने जागीरो को पुनगृहीत कर लिया है अब जागीरदारो को मुआवजा मिलेगा–कब ? जब उनके मामलो पर विचार कर लिया जावेगा

× × ×

म्यूनिसिपल बोड मे सचिव पद तोड दिया है अत छोटे पुत्र की नौकरी छूट गई है पुन नियुक्ति के लिए दौड धूप करने पर शिक्षा विभाग मे सहायक अध्यापक पर नियुक्ति मिली है पुत्री शकुतला भी स्थानीय बालिका विद्यालय मे सहायक अध्यापिका है

× × ×

पुत्र ईश्वरलाल का लोकवाणी प्रेस का काय समाप्त हो गया है अब उसे लालचद जी सेठी की अध्यक्षता म सचालित बिनोद मिल्स मे 150/– मासिक का सेवा काय मिला है वह सपरिवार उज्जन है, परन्तु उसका स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा है उसे दो बार लम्बी-लम्बी अवधि के लिये अस्पताल मे भरती करवाया जा चुका है

× × ×

पुत्र ईश्वरलाल को एम्बुलेन्स मे उज्जैन से पाटन पहुचा दिया गया है रात्रि का समय है जोरो से पानी बरस रहा है रोग से जूझता हुआ जजर शरीर दम तोड देता है बहिन शकुन्तला रो रही है, पत्नी माधुरी देवी बेहोश है, मा रत्न ज्योत्स्ना विलाप कर रही है, भाई परमेश्वर किकर्तव्य विमूढ स्तब्ध खडा ताक रहा है और शर्माजी—उन्हें बार-बार घबराहट का दौरा सा पडता है यद्यपि किसी समय डाक्टर शिवचरण भटनागर ने कहा था—कि 'महाराज आपका दिल तो शेर का सा है'

× × ×

पुत्र अपने पीछे काफी गृहस्थी छोड गया है विधवा पत्नी, चार पुत्र व दो पुत्रिया सबसे बडा पुत्र योगेश्वर अपनी बुआ शांति के पास जयपुर मे रह कर द्वितीय वर्ष कला मे अध्ययन कर रहा है सबसे छोटा सत्येश्वर तीन वर्ष का है

× × ×

आय का साधन पुत्री शकुन्तला व पुत्र परमेश्वर को मिलने वाला नगण्य सा वेतन है सचित पूजी को बढती हुई महगाई बहुत कुछ निगल गई है और अब तो वह और भी तेजी से समाप्त होती जा रही है राजस्थान विश्वविद्यालय से एम ए (पूर्वार्द्ध) मे कम अक प्राप्त होने पर योगेश ने मध्य भारत वि वि मे प्रवेश लिया है वह इदौर है छोटा भाई महेश्वर जयपुर मे बी ए मे पढ रहा है राजस्थान साहित्य अकादमी ने 100/— मासिक आदर वृत्ति दी है उससे कुछ राहत मिली है फिर भी प्रतीक्षा है बच्चे कब पढ लिखकर गृहस्थी सभालते हैं।

× × ×

'बेटा जो हो गया वह हो गया अब उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं' शर्माजी अपने छोटे पुत्र परमेश्वर से कह रहे हैं परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये एक टूरिंग टाकिज म साझेदारी की परन्तु पार्टनरशिप के झगडों में सिनेमा बरबाद हो गया व भारी नुकसान लगा है वृद्ध पिता कह रहे हैं "मैंने रुई के सौदो मे लाखो खोये हैं व लाखो कमाये है एक बार एक बहुत बडा सौदा कर बैठा था अचानक भाव नीचे जाने लगे, आशका थी कि जो कुछ कमाया है वह और जमीन जायदाद सब कुछ चला जावेगा वे दो महीने मैंने घोर मानसिक कष्ट मे बिताये थे परन्तु सौदे की तिथि जब आई उस समय तक भाव वापिस कुछ बढ गये थे व सौदा बिना नफे नुकसान के बराबर पर पूरा हो गया था उसके बाद से मैंने सट्टा न करने की

कसम खा ली भविष्य मे ध्यान रखना कि बहकावे में आ कर किसी के चक्कर मे न पडो

× × ×

शरीर क्षीण होता जा रहा है वर्षों से चला आया कमर व घुटनों का दर्द भी बढता जा रहा है अभी 8-10 दिन पहले ही 80वी वर्षगाठ मनाई गई है शर्मा जी 6-7 दिन से ज्वरग्रस्त हैं वैद्य कृष्णलाल मिश्र औषधि दे रहे हैं परन्तु कोई प्रभाव नहीं है वैद्यजी का कहना है कि इन्हे लीवर का कैंसर है परन्तु इनके हृदय की मासपेशिया इतनी मजबूत हैं कि वे इन्हे जीवित रख रही हैं

× × ×

30 जून 1961 आज नाडी क्षीण होती जा रही है दो दिन से भारी तडपन है बराबर उठाने का आग्रह करते हैं सहारे से उठकर थोडी देर बैठे रहते हैं व फिर लेट जाते हैं जीभ पर काटे उभर आये हैं

"रोते क्यों हो ?" आचल से शर्मा जी की आखें पोछते हुए रत्नज्योत्स्ना देवी पूछती हैं

"कुछ नही री !!!" और शब्द नहीं निकलते जबान तुतलाने लगी है रात्रि मे किस समय जीवन लीला समाप्त हो जाये, कहा नहीं जा सकता निरन्तर निगरानी रखनी है आधी रात तक परमेश्वर पास में रहा है बार-बार नाडी देखता रहा है नाडी लगातार क्षीण होती चली जा रही है बारह बजे शकुन्तला आ बैठती है लगभग 3 बजे जोरों की घरघराहट शकुन्तला की पुकार अरे यह क्या हुआ!' कुहराम गीतापाठ पौत्र योगेश द्वारा पाठ मौन भाव से मत्रजाप पडौसी लालाराम जी थाय द्वारा फोन पर शिक्षा मत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय को सदेश—प्रात सात बजे रेडियो न्यूज—राजमाता हीराकुवर बा द्वारा रेशमी चादर भेजना—शवयात्रा—अग्निदेव द्वारा आत्मसातीकरण


समकालीन गद्य

नवरत्न जी के समय का गद्य-लेखन

हिन्दी गद्य के जिस मार्चे पर प महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन लेखक डटे थे वहा अंग्रेजी से मुकाबला तो था ही लेकिन उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण एक विदेशी सस्कृति के भयावह हमले से बचाव की तयारी थी हिन्दी समथक मामा य और अकिंचन पक्ष के लोग थे और उ होने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि विदेशी सत्ता के आतक को तोडने के लिए भाषायी आतक को तोडना जरूरी है इस तरह ही आजादी के सघप को 'जन आदोलन' का रूप दिया जा सकता था वह उन्होंने दिया भी साहित्यकारो की एक पूरी की पूरी पीढी हिन्दी गद्य, कविता, कहानी, उपन्यास लिखने के साथ साथ पत्रकारिता भी करने लगी साहित्यिक पत्रकारिता के वे दिन अद्भुत उ मेप के थे सरस्वती हो या कि 'माधुरी या दूसरी कोई पत्रिका वह केवल साहित्य की नही थी बल्कि विस्तृत ज्ञान और घटनाओ को प्रकाश म लाने वाली 'कोप' थी हिन्दी मे एक साथ ज्ञान विज्ञान की अनन्त सामग्री प्रकाशित होने लगी भारतीय भाषाओ के साथ-साथ विदेशी भाषाओ मे लिखे छपे नाना अनुशासनो की इतनी बहुमूल्य सामग्री हिन्दी पत्रिकाओ म पढने को मिलने लगी कि पाठक अंग्रेजी की अनिवायता का तक भूलते गये

यह देखन की बात है कि राजस्थान जसे पिछडे और सामती आतक से टूटे-पिट प्रान्त म—जिसे तब राजपूताना कहते थे—राष्ट्रीय चेतना की रोशनी फैलाने का

काम हिन्दी-समर्थकों ने किया उनमे सबसे आगे पडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' पडित रामनिवास शर्मा, लज्जाराम मेहता, लक्ष्मीसहाय माथुर, कृष्णगोपाल माथुर, कन्नोमल झालावाड नरेश भवानीसिंह, हरिभाऊ उपाध्याय तथा दूसरे अनेक विद्वान लेखक थे इन लेखको का काम था पत्र पत्रिकायें निकालना हिन्दी सस्थान सस्थायें स्थापित करना, विश्व महत्व की साहित्यिक अथवा दूसरे अनुशासनो की पुस्तको का अनुवाद करना और रियासतों मे हिन्दी को राज काज की भाषा बनाने के लिए दबाव डालना वे इस तरह स्वतन्त्रता सग्राम के हिस्सेदार और सास्कृतिक मोर्चे पर खडे सजग सिपाही थे सन् 1900 मे राजपूताने की एक छोटी सी रियासत से (झालावाड) प गिरिधर शर्मा ने 'विद्या भास्कर' नामक पत्रिका निकाली जिसमें प्रकाशित होने वाला साहित्य 'मातृ भूमि के लिए उत्सग की अदम्य शक्ति' देता था वही से बाद मे प रामनिवास शर्मा ने 'सौरभ' नाम की पत्रिका निकाली जो 'सरस्वती' और 'माधुरी' के बराबर सम्मानित हुई प रामनिवास ने गद्य-लेखन का जबरदस्त काम किया 'सौरभ' की सम्पादकीय टिप्पणिया उनके विस्तृत ज्ञान को तो बताती ही हैं साथ ही उस शिल्प से भी परिचित कराती हैं जो गद्य को पद्य से अलग करता है शर्माजी उस समय तमाम हिन्दी की पत्रिकाओ मे छपे

प गिरिधर शर्मा के समय लिखा जाने वाला गद्य दरअसल द्विवेदीकालीन गद्य परम्परा का है इसलिए उस समय के राजस्थान के चार हिन्दी लेखको के आलेख यहां प्रस्तुत हैं ये आलेख शिक्षा, हिन्दी भाषा वज्ञानिक आविष्कारो और पत्रिकाओ में लिखी जाने वाली टिप्पणियो की प्रकृति से परिचित कराते हैं और उस समय के हिन्दी लेखन तथा शैलियो की जानकारी देने मे सहायक होते हैं

यह तथ्य ध्यान आकर्षित करता है कि कुछ चिन्तायें जिन्हे हम अग्रेजो के कारण मानते थे वे उनके चले जाने पर भी ज्यो की त्यो बनी हैं जसे शिक्षा और भाषा की समस्यायें ये व्यापक जन हित से जुडे प्रश्न विरासत मे मिले होने के कारण अनुत्तरित नही हैं बल्कि उस तगडी शरारत और शातिराना खेल के हिस्से हैं जिसे अग्रेज भी खेल रहे थे और जिन्हें अनुत्तरित रखना नव-उपनिवेशवाद की ओर देखने वाली आज की नौकरशाही को भी पसन्द है इस सत्य से हम आज भी मुकर नहीं सकते कि भाषा और शिक्षा की लडाई अहम् होती है इसलिए सब से अधिक भ्रान्तियां और असमंज्यता वहीं फली होती हैं और वही सबसे अधिक शक्तिशाली मोर्चा लगाना पडता है

लेखक कन्नोमल धौलपुर, लज्जाराम महता बून्दी कृष्णगोपाल माथुर झालरापाटन तथा प रामनिवास शर्मा झालावाड़ के हैं

न च

कन्नोमल

शिक्षा-सुधार

इस समय सभी प्रकार के सुधारो का आन्दोलन हो रहा है अधिकाश मनुष्यो का ध्यान राष्ट्रीय सुधार की ओर है, पर परमावश्यक सुधार जो सब सुधारो का मूलाधार है, शिक्षा-सुधार है शिक्षा दो प्रकार की है–सार्वजनिक शिक्षा और उच्चकोटि की शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षा जो इस समय दी जा रही है हमारे जातिविकास के अनुकूल नहीं है न वह जातीय हीं है और न वह देश और काल की आवश्यकता के अनुसार ही है उसके प्राप्त करने मे जितना समय दिया जाता है, जितना परिश्रम और व्यय किया जाता है उतना लाभ नही है सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सत्य कहा है कि "हमारी शिक्षा वैसी हीं है, जसे किसी घोडे के लिए गाडी" घोडा गाडी मे जोता जाता है वह उसे लिये लिये फिरता है पर उसे गाडी में जुतने की कोई इच्छा नही है और न वह उससे कोई लाभ ही उठा सकता है वह जानता है कि गाडी में जुतने के लिए ही उसे दाना चारा दिया जाता है यदि वह उसमें न जुते तो उसको अपना पेट भरना कठिन हो जायगा हम लोग भी शिक्षा की गाडी में इसी स्वार्थ से जुते रहते हैं, पर न तो उसमे हमारी कुछ रुचि है और न उससे हम कुछ सच्चा लाभ ही उठाते हैं विद्याध्ययन का उद्देश्य केवल पेट भरना ही नहीं है, प्रत्युत उससे लौकिक और पारमार्थिक चमत्कार को प्राप्त करना है, जिससे सासारिक सभ्यता और आध्यात्मिक

ज्ञान बढे हमारे प्राचीन ऋषि और महर्षि विद्या को इसी उद्देश्य से पढत थे और यही कारण है कि वे हमारे लिए विद्या और ज्ञान का ऐसा विशाल भण्डार छोड गए हैं किसी भी समय की प्राचीन कालीन सभ्यता मे विद्या, क्रय-विक्रय का विषय नहीं था यह बात केवल नवीन सभ्यता मे ही ह

इस बात को जाने दीजिये इस पर तो हम फिर कभी लिखेंगे इस लेख का विषय तो उच्चकोटि की शिक्षा और विशेषत सार्वजनिक शिक्षा ही है और इसी पर हमे यहा विचार करना है कि ये दोनो प्रकार की शिक्षाए कसी होनी चाहिये ? और इनके प्रचार और प्रसार के क्या उपाय हैं ?

यदि मटिक्युलेशन परीक्षा तक पढना प्रचलित सावजनिक शिक्षा है, तो इतनी शिक्षा प्राप्त करने म ही लडको को 10 या 11 वष लग जाते है और इस परीक्षा के पास करने पर उनकी योग्यता कुछ भी नही होती है न मातृभाषा ही आती है और न अग्रेजी मे ही पूरे होत है इन लोगो से कोई काम भी अच्छा नही हो सकता है जब इन्हे कोई दूसरी शिक्षा मिले या किसी दफ्तर मे काम करत कुछ दिन हो जावें तब कही कुछ काम चला सकते हैं सावजनिक शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि उसके प्राप्त करन म न तो अधिक काल लग और न उसे प्राप्त करने के बाद लडका ऐसा अनाडी रह जाए कि वह किसी तरह का काम ही न कर सके उसे कम से कम ऐसा योग्य अवश्य हो जाना चाहिए कि वह अपन और अपने घरवालो के लिए खाने पहनने लायक जरूर कमा सके

अग्रजी राज्य मे शिक्षा की बागडोर सरकार के हाथ मे ही है वह जो कुछ करे वही होता है वह कब हम जातीय और देशकालानुकूल शिक्षा देने लगी इसके अतिरिक्त उसक विचार बडे ऊचे हैं जिनको काय म परिणत करने मे लाखो रुपयो की आवश्यकता है देशी राज्यो म नई शिक्षा बडी सुगमता से प्रचलित हो सकती है क्योकि राजा महाराजाओ को अपन राज्यो मे सब कुछ करने का पूरा अधिकार है यह बात समझ म नही आती कि व अग्रेजी शिक्षा की क्यो नकल करते हैं ? वे अपनी प्रजा की उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षा दे सकते हैं यदि अग्रजी अफसर जो देश भाषा म अनभिज्ञ हैं अग्रेजी दफ्तर अपनी आसानी के लिए रखें तो कोई आश्चय की बात नही है पर हमारे राजा महाराजा अपनी रियासतो म अग्रेजी फार्मों मे दफ्तर रखें यही बात बडे आश्चय की है उन्ह तो अपने सब दफ्तर हिन्दी म ही रखने चाहिए क्योकि उनकी अधिकांश प्रजा, यही भाषा जानती है जब यह बात मानली तो उनको अपनी प्रजा हित के लिए शिक्षा भी वसी ही देनी चाहिए न कि अधूरी अग्रेजी शिक्षा सावजनिक शिक्षा, जो देशी राज्यो म तत्काल ही प्रचलित हो सकती है, इस प्रकार

मे होनी चाहिए कि शिक्षा का मुख्य माध्यम हिन्दी हो अंग्रेजी और उर्दू, द्वितीय भाषाओ के तौर पर पढाई जावें शिक्षा प्राप्त करने मे लडके का 6 या 7 वर्षो से अधिक काल न लगे

पहले चार वर्षो की शिक्षा एक सी होनी चाहिए इस समय मे लडके को हिन्दी भाषा मे लिखना पढना बहुत अच्छी तरह आ जाना चाहिए पहले वर्ष मे तो वह केवल हिन्दी का ही अभ्यास करे, दूसरे वर्ष से उर्दू या अंग्रजी द्वितीय भाषा के तौर पर पढे चार वर्ष का पाठ्य-क्रम ऐसा रखा जाय कि लडका हिन्दी का अच्छा ज्ञाता हो जाय और कुछ उर्दू और अंग्रेजी से भी परिचित हो जाय इतनी शिक्षा सब लडको के लिए सामान्य हो और उसके प्रचार के लिए स्थान स्थान पर पाठशालाए हो जब लडका चार वर्ष की पढाई पढ ले और प्रवेशिका परीक्षा (जो इस शिक्षा को समाप्त करने पर होगी) पास कर ले तो उसे दो वर्ष की ऐसी शिक्षा दी जाय जो उसके लिए परमोपयोगी हो और जिसके द्वारा वह अपना जीवन निर्वाह भी कर सके ऐसी शिक्षा कसे दी जा सकती है—इसे सुनिये —

यदि राज्य बडा हो तो प्रत्येक सूबे या प्रान्त मे और यदि छोटा हो तो सिर्फ राजधानी मे ही एक लोक-हितकारी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय इस विद्यालय मे निम्नलिखित स्कूल हो और प्रत्येक स्कूल मे दो वर्षो की शिक्षा हो पूर्वोक्त चार वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के बाद लडका चाहे जिस स्कूल मे दो वर्ष की शिक्षा के लिए पढे और जब पढ चुके तो योग्यता का प्रमाणपत्र प्राप्त करे विश्वविद्यालय मे ये स्कूल हो —शिल्प कला स्कूल, विज्ञान स्कूल, व्यापारिक स्कूल, औद्योगिक स्कूल, कानून का स्कूल, मेडिकल स्कूल, आयुर्वेदिक स्कूल, कृषि स्कूल, इंजिनियरिंग स्कूल सस्कृत स्कूल, क्लर्क या मुत्सद्दी स्कूल, उपदेशक स्कूल इत्यादि जसी राज्य की आवश्यकता हो वसे ही एक स्कूल और बढा दिया जाय इन सब स्कूलो मे जो पुस्तकें पढाई जावें वे सब इस प्रणाली पर लिखी हो कि थोडे मे बहुत आ गया हो और उनमे इन 2-विषयो के मोटे-मोटे सिद्धान्त सभी निर्दिष्ट हो ऐसी पुस्तको की रचना करनी होगी और इस कार्य के लिए एक पुस्तक-रचना समिति स्थापित करनी होगी यह समिति इन पुस्तको को स्वय लिखे या अन्य विद्वानो से लिखवावें इन स्कूलो के सीखे हुए लडके सब आवश्यक कार्यों के लिए योग्य हो जावेंगे और राज्य मे सब काम चला सकेंगे

ये लडके कारीगर व्यापारी, वकील, डाक्टर वैद्य कृषि-ज्ञाता, ओवरसियर, पण्डित, क्लर्क मुत्सद्दी उपदेशक आदि-आदि हो जायेंगे अर्थात् जितने प्रकार के मनुष्यो की राज्य मे आवश्यकता है सब हो सकेंगे बाहर से आदमियों को बुलाने की जरूरत न रहेगी

इस विश्वविद्यालय मे एक विशाल पुस्तकालय, एक वाचनालय और एक म्यूजियम भी रहेगा लडको को सब विषय हिन्दी मे पढाये जावेंगे परन्तु अन्यान्य विषयो के साथ एक घटे अग्रेजी और उर्दू की शिक्षा भी दी जावगी क्योकि इन दोनों भाषाओ से परिचय करना बडा जरूरी है जो लडके इन विषयो मे उच्च-शिक्षा प्राप्त करना चाहें वे या तो राज के खर्चे पर अन्य स्थानो मे जाकर शिक्षा प्राप्त करें या इन्हीं नियमो पर सब राज्यो के लिए राजपूताना नाम का विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय जिसमे उच्चकोटि की शिक्षा दी जाय यह प्रस्ताव पीछे हो सकता है

पहले तो प्रत्येक राज्य मे ऐसे विश्वविद्यालयो के स्थापित होने की आवश्यकता है यदि इस काय के लिए सब राज्य नही मिल सकें तो जो राज्य ऐसा प्रबन्ध करना चाहे, वही करें कम से कम उन राज्यो की प्रजा को तो शिक्षा मिल जायगी और उनकी देखा देखी दूसरे राज्यो मे भी ऐसा प्रबन्ध होने लगेगा इन विश्वविद्यालयो मे पढ़ने वाले लडको के लिए एक विशाल छात्रालय बनाना होगा, जहा पर लडके राज्य के खच से अथवा अपने खच से रह और इन स्कूलो मे शिक्षा प्राप्त करें यह विषय पूर्णतया एक लेख मे नही लिखा जा सकता है, समय मिला तो इस विषय पर एक दो लेख फिर लिखूगा यदि कोई महाशय इस विषय मे मुझ से पत्र व्यवहार करेंगे तो मैं उन्हें इस सम्बन्ध मे और बातें बताऊगा लेख बडा हो गया है इसलिए इसे यहीं समाप्त करता हू

('सौरभ' सितम्बर 1920 ई मे प्रकाशित)

मुझे देखकर उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ 'बोले आप तो अपने नाम के अनुरूप ही हैं, बच्चे की तरह बच्चन। हमने आपकी पुस्तक पढ़ी है। महाराजा साहब भी आपकी कविता के प्रेमी हैं। अभी नवयुवक हैं, आपकी ही उम्र के हैं। मैंने उन्हें हिन्दी पढाई है।

—हरिवंश राय बच्चन

लज्जाराम मेहता

भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा

उद्योग का आरम्भ

कोई 20-25 वर्ष की बात होगी जब हिन्दी को भारतवर्ष की सार्वजनिक भाषा के सर्वोच्च सिंहासन दिलाने का आंदोलन आरम्भ हुआ था उस समय इस कार्य को भारत की वास्तविक उन्नति का, हिन्दुस्थान में राष्ट्रीयता पैदा करने का मूल सूत्र मान लेने पर भी इसके आंदोलन करने वालों तक में इने गिने कर्मवीरों को छोड़कर इसकी सफलता पर पूरा भरोसा नहीं था जो इस कार्य के शत्रु थे, वे हिन्दी-उर्दू का पचड़ा आगे डाल कर इस उद्योग को बौने हाथों से धरती में पड़े पड़े चन्द्रमा को छू लेने के प्रयत्न के समान बतला कर हंसी उड़ाया करते थे और जो उदासीन थे, जो भिन्न भाषा भाषी थे अथवा जिनका उद्देश्य अंग्रेजी को भारतवर्ष की जातीय भाषा बना लेने का था, वे इसे निरर्थक बकवाद मानकर इससे उपेक्षा करते थे, घृणा करते थे और "युक्तियुक्त मुपादेय वचन बालकादपि"—इस सिद्धान्त को लातों से रौंद कर कहने वालों की ओर अपना बहरा कान कर देने के सिवाय कुछ नहीं करते थे यहां तक कि जब मैंने मि. बाकर के सभा भवन में उनकी प्रेरणा से इस विषय में कुछ कहा तब मि. कपूर महाशय जो सभापति थे उन्होंने वहीं हिन्दी उर्दू का झगड़ा खड़ा करके इस बात

का घोर विरोध किया आगाघ्रा में अधिकांश मरहठे और गुजराती थे केवल, उनसे किसी तरह का अनुमोदन पाने की आशा नहीं थी और उस समय बम्बई में थी वेंकटेश्वर प्रेस में कमपाजिया को छोड़कर हिन्दी जानने वालों की संख्या नगिल्किता और मनाधिका अनुभियो न पैरवा से आगे नहीं बढ़ती थी किन्तु उस समय भी मेरी घोर निराशा में सदाशा का सचार करने वाले मेरे मन की मुरझाई हुई लता को डहडहा देने वाले एक महाराष्ट्र सज्जन खड़े हुए बहुत दिन हो गये अब मुझको इनका पूरा नाम याद नहीं है शायद इनका पतृक नाम मि साठे था यह हिन्दी भाषा बिलकुल नहीं बोल सकते थे इन्होंने मराठी में मेरे प्रस्ताव का अनुमोदन किया और एक पुस्तक जिसको इन्होंने रचा की थी और इन्होंने ही अपने खर्च से उसे प्रकाशित किया था, उसी समय मुझे दी इस काम के आरम्भ का संक्षिप्त इतिहास का यह बहुत ही छोटा सा एक अंश है

उद्योग मे सफलता

किन्तु इस आंदोलन के लिए हिन्दी हितैषियों के सतत उद्योग ने, इतने वर्षों के अविश्रान्त परिश्रम से केवल इस विषय में कृतकार्यता ही प्राप्त करली हो सो नहीं, वरन् ससार को दिखला दिया कि सच्चे हृदय का निरन्तर प्रयत्न का, विघ्न बाधाओं से विरोध से न डरने का, निष्फल होने पर भी हताश न होने का और दृढ संकल्प का किस तरह सुफल फला करता है उन लोगो के सामने केवल एक यही प्रश्न न था जमाना उर्दू की टक्करें झेलने का था वे भी नहीं चाहते थे कि हिन्दी उर्दू की परस्पर मुठभेड हो वे जानते थे कि हिन्दी और उर्दू एक जान दो तन हैं ' दोनो का व्याकरण एक दोनो के क्रियापद एक और दोनो मे भाव प्रकाशित करने का मार्ग एक फिर दोनो अलग अलग दो कैसे हो सकती हैं यदि दिखाव के लिए थोडी देर तक दोनो दो भी हो जाय तो दोनो जीव ईश्वर के समान एक है एक चने की दो दाल हैं लिपि के सवाल को उन्होने सर एंटोनी (आजकल लार्ड) मकडानेल महोदय की न्याय प्रियता से अवश्य ही हल कर लिया था किन्तु भाषा के विषय का खिचाव मिटा नही अस्तु इस समय इस विषय को छेड कर न तो विषयान्तर मे जाना अभीष्ट है और न समय ही इस बात के अनुकूल है इतना इस जगह अवश्य लिखना पडेगा कि हिन्दी उर्दू के विरोध की कुछ भी पर्वाह न कर हिन्दी के प्रचार मे दत्तचित रहने के अतिरिक्त उन्होने अपने मुख्य विषय को हाथ से नही जाने दिया उन्होने साहित्य की उन्नति के लिए निरन्तर उद्योग किया वास्तव में इस सफलता का श्रेय जिन महानुभावो पर है उनका नाम हिन्दी इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा यदि मैं कारणवश उनका यहां उल्लेख न भी करू तो काल पाकर इस सफलता का सेहरा उन्हे अवश्य पहनाया जायगा

किन्तु इतना लिखने से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि इसका श्रेय केवल मुट्ठी भर हिन्दी हितैषियों पर है उनके आन्दोलन को उनके उद्योग को भारतवर्ष की जनता ने, हिन्दी भाषा-भाषियों ने अपनाया है, पर-भाषा वालों ने उसका अनुमोदन किया है और सबसे बढ़कर यह कि प्रकृति ने उनका हाथ पकड़ कर नैसर्गिक सहायता दी है और इसीलिए केवल पच्चीस वर्ष के ज़रा से ज़माने मे इतना काम हो गया है जितने के लिए कम से कम एक शताब्दी की आवश्यकता थी पहले समय मे हिन्दी के अच्छे अच्छे लेखक अवश्य थे किन्तु पाठकों का और उनके अभाव से प्रकाशकों का नाम नहीं था दूसरे ज़माने मे पाठकों की संख्या चाहे हज़ारों पर हो गई प्रकाशक अनेक खड़े हुए किन्तु लेखक नाम शेष हो गए अब न लेखकों का अभाव है न प्रकाशकों की कमी है और न पाठकों की न्यूनता है हिन्दी साहित्य के अंग प्रत्यंगों की पुष्टि की जा रही है और सच पूछिये तो उन्नति के मैदान मे हिन्दी सरपट दौड़ रही है राजनैतिक क्षेत्र में आ खड़ी है

राजनैतिक मैदान मे हिन्दी

इतना होने पर भी जब तक देश के नेताओं को इसकी आवश्यकता नहीं हुई तब तक उन्होंने इस काम को अच्छा और आवश्यक समझने पर भी इसकी उपेक्षा करने मे कमी नहीं की उनकी उपेक्षा भी सकारण थी उनका पहला कार्य अंग्रेज़ी भाषा के द्वारा अंग्रेज़ी भाषा-भाषियों के अन्तःकरण पर, विलायती प्रजा के मन पर और साथ ही देश की गवर्नमेंट पर अपने विचार अंकित करने और बंगाली, महाराष्ट्र, मदरासी, गुजराती, पंजाबी आदि को एक सूत्र मे बांध लेने का था जितने समय मे उन्हें इस कार्य मे कृतकार्यता प्राप्त हुई, उतना ही या उसके लगभग समय हिन्दी को सार्वजनिक भाषा की योग्यता प्राप्त करने मे लगा बस दोनों ओर की इस तरह अनुकूलता पर, गत तीन वर्षों से उन लोगों ने हिन्दी को क्या अपनाया मानो प्रकृति ने उसका हाथ पकड़ कर भारतवर्ष की राष्ट्रीय अथवा सार्वजनिक भाषा के उच्च सिंहासन पर बिठला ही तो दिया अब समय वह आ गया कि जिसमे भारतवर्ष के भिन्न भिन्न और समस्त भाषा भाषी इसके सामने हाथ जोड़े खड़े रहें एक तन्त्र से सब मिलकर इसकी आरती करें और छोटी बहन या यदि कोई महाशय छोटी बहन मे बुरा मान बैठें तो बड़ी बहन उर्दू पास खड़ी खड़ी इसकी बलैया लें और राजभाषा अंगरेज़ी अपने ठाठ अपने गौरव, अपनी प्रतिभा और अपने महत्व को हृदय कोण मे धारण करते हुए भी इसे फूलों की माला पहनावे

इतना शीघ्र इतना बढ़ कर और इस तरह पर कार्य सिद्धि होने पर भी हिन्दी की राष्ट्रीयता, जनता और सरकार के समक्ष प्रमाणित हो जाने पर भी एक बहुत बड़ा बहुत

ही जटिल प्रश्न हिन्दी वालो के सामने है वास्तव मे वह बहुत उलभा हुआ है समय को देखते हुए अभी न तो उसे सुलझाने का ही अवसर है और न उसे इसी तरह उलझन मे डाले रखने मे कल्याण हो सकता है जब हिन्दी भाषा इस तरह भारतवर्ष की सामान्य भाषा स्वीकार करली गई तब लिपि का तो कोई प्रश्न ही नही रहा. वह सर्वसम्मत सिद्ध हो गया अब उसके विषय मे कोई विवाद नही रहा अब बहस है केवल भाषा के स्टाइलो के विषय मे

हिन्दी

स्वर्गीय बाबू अयोध्या प्रसाद जी खत्री ने अपनी पुस्तको मे कई वर्ष पूर्व इसके ठेठ हिन्दी, हिन्दी, पण्डित स्टाइल, बाबू स्टाइल, मौलवी स्टाइल और उर्द यो छ या सात स्टाइल, माने थे इस तरह उनके अनेक स्टाइल अनेक से एक होकर अब तीन हो गये अथवा इस वादग्रस्त विषय को जाने दिजिए मुझे इस लेख मे केवल तीन स्टाइलो का उल्लेख करना है एक हिन्दी, दूसरा हिन्दुस्थानी और तीसरा उर्दू हिन्दुस्थानी का दूसरा नाम खडी बोली भी कहा जा सकता है किन्तु हैं ये दोनो भिन्न-भिन्न अस्तु मुझे हिन्दी कविता की खडी पडी या ब्रज भाषा के झगडे से इस समय कुछ मतलब नही है मुझे लेख समाप्त करने से पूर्व गद्य हिन्दी के उक्त तीनो रूपो के लिये यहा कुछ लिखना है

वर्तमान ढग की गद्य-रचना का आरभ कबसे हुआ है सो "खोज' वाले जाने किन्तु इसके प्रथम लेखक, स्वर्गीय लल्लू जी लाल माने जाते हैं यदि इस ढग का प्रारभ उस समय से भी मानलें तो कुछ हानि नही किन्तु इसमे किसी प्रकार का सशय नही है कि इसको परिमार्जित कर इसका प्रचार करने वाले भारतेन्दु जी थे उन्होने जो ढाचा डाला उसी पर स्वर्गीय लेखको ने रचना की और उन्ही लोगो के मार्ग पर वर्तमान लेखक चल रहे हैं हिन्दी गद्य के प्राचीन और अर्वाचीन लेखको के उद्योग से उनकी निरन्तर और समान रचना शैली ने इतना अवश्य कर दिया है कि चालीस वर्ष पहले जो भाषा क्लिष्ट समझी जाती थी जिसे समझने वाले इने गिने से थे और जिसे समझाने के लिए लाला श्रीनिवासदासजी को अपने 'परीक्षा गुरु' और 'रणधीर प्रेममोहनी" मे सरल से सरल सस्कृत शब्दों के नीचे टिप्पणियां देकर उनका अर्थ समझाना पड़ा था उसको क्लिष्ट से क्लिष्ट भाषा भी अब सरलता से समझी जा सकती है शाही जमाने के फारसी और आजकल के उर्दू दफ्तरो ने जिन कायस्थो को और ऐसे ही और और कलम के नौकरों को यहा तक हिन्दी द्वेषी हिन्दी से विमुख कर डाला था कि वे "श्रीगणेशाय नम' की जगह "बिस्मिल्लाह' करते थे और उनके बालको का विद्यारम्भ सस्कार होने के "मतलब" होता था आज ईश्वर कृपा से इनमे

सकडो हिन्दी लेखक हैं, हजारो हिन्दी पाठक हैं और आजकल के नव युवाओ मे हिन्दी न जानना गाली समझी जाती है केवल इतना ही नही किन्तु मुझे यह लिखने का साहस होता है कि अनेक मुसलमान सज्जन अब हिन्दी के सुलेखक दिखलाई देने लगे हैं और यदि इसका यही प्रवाह धाराप्रवाह रहा तो बीस वर्ष मे इनका नम्बर भी सैकडो पर पहुच जायगा ऐसे केवल ये लोग ही हिन्दी के भक्त बने हो सो नही किन्तु अब बगालियो मे, महाराष्ट्रो म, गुजरातियों म और रजवाडियो मे हिन्दी के अच्छे अच्छे लेखक दिखलाई देने लगे हैं पाठको की सख्या बढती जा रही है और उनकी प्रान्तीय भाषाओ की साहित्य परिषद् हिन्दी का आदर करने लगी हैं अब मदरास प्रान्त भी हिन्दी प्रचार के उद्योग से खाली नही है और इसके लिए जहाँ भी अच्छा होनहार हमारी आखो के सामने खडा खडा मुस्करा रहा है

हिन्दुस्थानी

इसका दूसरा रूप हिन्दुस्थानी अथवा खडी बोली कहा जा सकता है इसके प्रथम लेखक, मैं राजा शिवप्रसाद को मानता हू वे भी वास्तविक लेखक नहीं कहे जा सकते क्योंकि पहले उन्होने प्रचलित हिन्दी में अनेक ग्रथो की रचना की फिर रुख उनका बदल गया उन्होने खडी बोली म ठेठ हिन्दी का ठाठ' लिखा अवश्य, परन्तु उन्हे लाचार होकर प्रणाम, नमस्कार की जगह माथा टेकना पडा और पण्डित अयोध्या सिहजी ने 'अधखिले फूल' और ऐसी ही एक अन्य पोथी मे वास्तव म सफलता अवश्य पाई किन्तु उन्हें भी 'स्त्री की जगह 'इसतरी' का प्रयोग करना पडा इसलिए ही कहना पडता है कि सस्कृत या फारसी की सहायता के बिना केवल अथवा ठेठ हिन्दी लिखना प्रकृति के विरुद्ध है इतना उल्लेख खडी बोली के विषय म है किन्तु प्रचलित हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता म पहला नम्बर हिन्दुस्थानी का है राजा शिवप्रसाद जी के बाद इस प्रकार की भाषा लिखने का उद्योग पण्डित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी ने 'मिलकी लिबर्टी' के अनुवाद मे किया है अगरेजो को भारत वर्ष की नौकरी के लिए हिन्दी सीखकर 'हायर प्रोफिसेन्सी अथवा लोअर प्रोफिसेन्सी की जो परीक्षाए देनी पडती हैं उनकी भाषा यही हिन्दुस्थानी है गवनमेन्ट भी कुछ वर्षों से प्राइमरी कक्षाओ-के लिए ऐसी ही भाषा का प्रचार करना चाहती है जिसका स्वरूप एक हो और वह फारसी और नागरी अक्षरो मे समानता से लिखी जाय देश के राजनैतिक नेताओ मे से अधिकाश का झुकाव इसी ओर है यहाँ तक कि जिन महानुभावो ने हिन्दी के लिए अब तक बहुत कुछ कर डाला है, जिनसे हिन्दी बहुत कुछ आशा रखती है, जो आजीवन हिन्दी को कभी भूलने वाले नहीं हैं और जो इस बात के लिए खूब प्रसिद्धि पा चुके हैं कि जब हिन्दी म व्याख्यान दें तब एक भी शब्द फारसी का और जब उर्दू

बोलें तब एक भी शब्द सस्कृत का न आने दें उनकी भाषा मे भी अब खिचडी की ओर ढल जाने का आभास दिखलाई देने लगा है

उर्दू

इसका तीसरा स्टाइल उर्दू है इसको 'सलीस उर्दू और 'फसीह' उर्दू—यो दो भागो मे बाटना चाहिए इस विषय म अधिक लिखने का प्रयोजन नही है हां, इतना अवश्य कह देना है कि फसीह उर्दू और वतमान हिन्दी के बीच मे बहुत बडी खाई है वह खाई पाटकर एक नही की जा रही है दोनो ओर से यत्न यह हो रहा है कि दोनो भाषाए दिन-दिन अधिक-अधिक दूर होती जाय इस काम के लिए एक ओर सस्कृत के और दूसरी ओर फारसी के शब्द ठूसे जा रहे हैं सलीस उर्दू और हिन्दुस्तानी मे कुछ विशेष अन्तर नही है काल पाकर थोडे सस्कृत शब्दो के ग्रहण कर लेने के अनन्तर यदि दोनो एक हो जाय तो कुछ आश्चय नही ऐसी स्थिति मे प्रश्न यह उठता है कि आगे के लिए भारत वष की सावजनिक भाषा का रूप ग्रहण करने के निमित्त हिन्दी को उक्त तीनो प्रकार के रूपो मे से कौन सा स्टाइल अगीकार करना चाहिये

होनहार पर विचार

तीनो रूपो का दिग्दशन करने से पाठक अवश्य अनुमान कर सकते है कि भाषा के *विषय मे दुनिया किधर को जा रही है मेरे ख़याल से इसके लिए दो ही माग हैं* एक यह कि प्रचलित हिन्दी को ही जारी रक्खा जावे और दूसरे राजनतिक नेताओ की इच्छापूर्ण करने के लिए सौ डेढ सौ वष के परिश्रम का मटियामेल करके हिन्दुस्थानी को स्वीकार कर लिया जाय दोनो मे से कौन अच्छा है—सो बतलाने का अभी समय नही है इसी प्रश्न को हिन्दू मुसलमानो के मेल के समय उठाना मानो हिन्दी उर्दू के झगडे को फिर से जगा कर जनता मे खलबली पैदा कर देना है राजनतिक आन्दोलन के आगे जो भाषा साहित्य के प्रश्न की कदर नहीं करते हैं वे अवश्य ही मेरे इस लेख को असामयिक, बे मौके बतलाए बिना नहीं रहेंगे किन्तु मुझे भय है कि यदि धारा प्रवाह को समय-समय पर स्थान स्थान पर बांध बाध कर न रोका जायगा तो हिन्दी भाषा एक और ही चौथा माग अवलम्बन कर लेगी अभी हाल के ही एक दैनिक समाचार पत्र में मैं किसी सभा की रिपोट पढ़ चुका हू उस रिपोट से ही मेरे मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ है सम्भव है कि हिन्दी के इस तरह बेतहाशा दौडने से हिन्दी भाषा इस रिपोट की सी भाषा हो जाय उस भाषा का नमूना यह है कि—"हिन्दुओ की अज़ीमुश्शान कान्फ्रेंस श्रीमान् के सभापतित्व मे मुनअकिद हुई" अथवा —"एक

सम्पादक का ऐसा खिलाफ वाकेग्रात लिखना जिससे जनता को भ्रम मे पड जाने का अन्देशा है अत्यन्त काबिले अफसोस है ' यदि बेतहाशा दौड लगाते-लगाते हिन्दी इस नमूने की हिन्दी हो जाय तो मान लेना चाहिए कि हिन्दी साहित्य का सवनाश हो गया

भाषा कसी होनी चाहिये

ऐसी दशा मे इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि भाषा का स्टाइल किस प्रकार का होना चाहिए इस लेख मे नहीं आजकल के बर्ताव मे हिन्दी हितैषियो का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दी ऐसी भाषा हो जो भारतवष के एक ओर से दूसरे छोर तक सुगमता से सरलता से समझ मे आ सके और उसके शब्द-बाहुल्य मे, उसकी सरसता मे और उसके माधुय में न्यूनता न आने पावे वक्ता और लेखक के आन्तरिक भावो को कण मधुर शब्दो मे पूर्णता से प्रकाशित कर सके वही भाषा परन्तु क्या उक्त रिपोट की भाषा से अथवा दूसरी चाल की हिन्दुस्थानी से यह काय अच्छी तरह हो सकता है इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' के अतिरिक्त कुछ नही है मैं मानता हू सब ही विद्वान इस बात को बिना आनाकानी के स्वीकार करेंगे कि केवल मदरास की एक दो भाषाओ को छोड कर भारतवष मे जितनी भाषाए प्रचलित है उन सबकी जननी सस्कृत है सस्कृत से ही वे सब भाषाए निकली हैं और सस्कृत ही अन्यान्य भाषाओ के जानने वालो के लिए हिन्दी भाषा सिखा देने का, सरलता से समझा देने का मुख्य साधन है मैं गुजराती हू, बचपन की भाषा मेरी मराठी है और हिन्दी थोडी बहुत मैं लिखने पढने लगा हू यदि मराठी सीखने की इच्छा हो, पाठशाला मे बैठ कर पाठ रटने की मेरी उमर न हो और पढाने वाला भी कोई योग्य गुरु मेरे निकट न हो तब मेरी इच्छापूर्ति का साधन क्या है ? अब से पच्चीस तीस वर्ष पूर्व जब यह प्रश्न मेरे अन्तःकरण मे खडा हुआ तब सस्कृत के सहारे से ही मुझे कृतकार्यता प्राप्त हुई अब भी मैं उस मराठी को जितना अधिक समझ सकता हू जिसमे सस्कृत शब्दो का बाहुल्य है इतना महाराष्ट्रो के लिए सरल मराठी को नही भारतवष के समस्त प्रान्तो मे केवल सस्कृत शब्दो के द्वारा हिन्दी शीघ्र समझी जा सकती है हिन्दी मे सस्कृत शब्दो का प्रयोग पहले की अपेक्षा अब लोगो के अधिक अभ्यास मे पड जाने का उदाहरण लाला श्रीनिवासदास जी के ग्रन्थो के हवाले से मैं ऊपर दे चुका हू

इतना कहने मे मेरा प्रयोजन यह नही है कि प्रचलित हिन्दी मे सस्कृत के शब्द ठूस ठूस कर भर दिये जाय जहा तक बन सके भाषा सरल हो भाषा के लक्षण मे ऊपर बता चुका हू मेरे विचार से न तो उक्त रिपोट की सी भाषा का प्रचार होना लाभदायक है और न केवल हिन्दुस्थानी से काम चल सकेगा हिन्दुस्थानी बनाने का

परिणाम यही होगा जो रिपोर्ट की भाषा का है और रिपोर्ट की भाषा भारतवर्ष तो क्या त्रिलोकी में भी नहीं समझी जा सकती

इन बातों को लिखकर अपने हार्दिक भाव प्रकाशित कर देने पर भी मेरा आग्रह इस बात के लिए नहीं है हां इतना अवश्य है कि समय अब आ गया है—जिसमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन को हिन्दी हितैषियों को इस बात का विचार कर लेना चाहिए कि भाषा का स्टाइल कैसा होना चाहिए इस बात के लिए एक कमेटी नियत होना आवश्यक है जो बंगाली गुजराती, मराठी, उर्दू आदि भाषाओं के विद्वानों की राय से रिपोर्ट करें कि भाषा कैसी होनी चाहिये नहीं तो कुछ समय में वही रिपोर्ट वाला नमूना तयार है मेरा यह खयाल है और जहां तक मैं सोच सकता हू सच्चा विचार है कि यदि अन्यान्य भाषा-भाषियों के इस विषय में नोट लिए जावेंगे तो केवल उर्दू वालों को छोडकर सब ही प्रचलित हिन्दी को स्वीकार करने में कभी आनाकानी न करेंगे क्योंकि जो भाषा उर्दू वालों के लिए सरल है वह अन्य प्रान्त वालों के लिए क्लिष्ट है यहां तक कि संस्कृतहीन द्राविडी, तेलगी भाषा वाले भी संस्कृत मिश्रित हिन्दी को ही पसन्द कर सकते हैं क्योंकि मदरास में संस्कृत का प्रचार अन्य प्रान्तों से विशेष पाया जाता है हां, ऐसा करने से सम्भव है कि उर्दू वाले हमसे छूट जाएं पडोसी को जिससे चोली दामन का सा साथ है उसे छोड देना सबसे अधिक मुझको अखरता है किन्तु प्रश्न इसीलिए गम्भीर है कि हिन्दुस्थानी ग्रहण करने से हमारी भाषा प्रान्तीय बनाई जा सकती है और प्रचलित हिन्दी से सवदेशी इसके सिवाय संस्कृत से प्राचीन साहित्य से भी हम दूर हट जायेंगे इन्हीं बातों के सोच विचार के लिए मैंने कमेटी नियत करने की सम्मति दी है

('सौरभ सितम्बर 1920 ई में प्रकाशित)

यदि द्विवेदीजी, गुप्तजी और नवरत्न जी की त्रिवेणी का संगम न हुआ होता तो हिन्दी आज कभी भी इतने उस स्थान पर नहीं पहुच पाती जिस स्थान पर आज पहुच सकी है।

—सूर्यनारायण व्यास

कृष्ण गोपाल माथुर

रेडियम् का आविष्कार

फ्नाच सन् 1921 के "विज्ञान" में मैं "रेडियम् की करामात" पर कुछ बातें लिख चुका हू आज यह बताना है कि रेडियम् के आविष्कार मे किन किन वैज्ञानिको ने मस्तिष्क लडाया और कैसे इसका आविष्कार किया

यूरेनियम धातु का आविष्कार

पाठक याद रक्खें कि यूरेनियम् धातु रेडियम् धातु की बडी बहन है दोनो का जनक पिच्ब्लैंड नामक एक पदार्थ है इस पदाथ से सब से पहले यूरेनियम् धातु ही प्राप्त हुई इसके आविष्कारक हैं आण्टियन हेनरी बेकारल आपका ज न सन् 1852 ईस्वी की 1ऽवी दिसम्बर को फा स की पेरिस नगरी मे हुआ आपके पिता और पितामह विख्यात पदार्थतत्वज्ञ थे अतएव आपको इच्छा भी हुई कि मैं भी पदाथतत्वानुशीलन मे ही अपना जीवन बिताऊ सब से पहले आप ने पौलिटेक्निक स्कूल मे विद्याध्ययन आरभ किया, और सन् 1877 में वहा की पढाई समाप्त कर के इजीनियर हुए 8 साल के बाद आपने उसी इजीनियरिंग विभाग मे प्रथम श्रेणी का पद ग्रहण किया यह आपके कठिन परिश्रम और कायकुशलता का फल था इसके बाद आपन डाक्टरी की

शिन्ना पाई और सन् 1888 मे "डाक्टर आफ साइ स" की उपाधि प्राप्त की आप के पिता नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम म अध्यापक थे उनकी मृत्यु के बाद सन् 1892 मे आप अपने पिता की जगह म्यूजियम मे अध्यापक हुए वहा आपको कई पदार्थों की जाच करने का मौका मिला वही आपने पिचब्लैंड नामक पदाथ की जाच की मालूम हुआ कि इससे यूरेनियम् धातु निकल सकता है अतएव आपने सन् 1896 म उसी से यूरेनियम् धातु का आविष्कार कर डाला इस आविष्कार से आप बडे यशस्वी हुए यह धातु बडे विचित्र प्रकार की साबित हुई बिना उत्ताप प्रयोग के भी यह साधारणत अपनी किरणें फैला देती है इस आविष्कार के बाद बेकारल ने और भी आविष्कार करके अपना नाम कमाया

रेडियम् का आविष्कार

पोलैंड के अ तगत वारसा शहर मे "मेरीकुरी" नाम की एक बहुत ही पदार्थविद्या मे पारगता स्त्री हो गई है स 1897 मे इसका ज म हुआ इसका पिता बडा विख्यात वैज्ञानिक था उसने एक "वैज्ञानिक अनुसधान मन्दिर' भी निज का खोल रखा था मेरीकुरी की वही विद्या आरम्भ हुई इसने थोडी सी अवस्था मे 'मन्दिर' की शीशियो का साफ करते-करते प्राय समस्त रासायनिक द्रव्यो के नाम सीख लिए बुद्धि इसकी बडी तेज थी इसके-बाद इसने वारसा-विश्वविद्यालय मे नाम लिखाया और वहाँ से अत्य त सुख्याति के साथ शेष परीक्षा मे उत्तीर्ण हुई उन दिनो पेरिस नगरी मे लिप्मैन विज्ञानी का बडा नाम था अतएव मेरीकुरी ने पेरिस आकर इ ही महाशय के पास शिक्षा समाप्त की वहा पिरीकुरी नाम का एक विज्ञानी भी था मेरीकुरी ने सन् 1875 मे उसके साथ विवाह कर लिया पिरीकुरी उन दिनो तडित-विज्ञान के अनुसधान मे लगे हुए थे मेरीकुरी सरीखी योग्य वज्ञानिका को पत्नी रूप मे पाकर आप बहुत हर्षित हुए और अपने अनुसधानो पर और भी जोर दिया फल,यह हुआ कि आपने तडित-विज्ञान मे नाना प्रकार के आविष्कार कर डाले और खूब यश लूटा

इधर, श्रीमती कुरी बेकारल द्वारा आविष्कृत यूरेनियम रश्मि को लेकर-परीक्षा करने लगी परीक्षा करते करते कितने ही नूतन तथ्य उसने अपने स्वामी को बताये तब दोनो एक साथ मिलकर उस काम म दत्तचित हुए उ होने सोचा कि यूरेनियम रश्मि को लेकर परीक्षा करने म विशेष फल मिलने की आशा नही हैं बल्कि यूरेनियम् के जनक पिचब्लैंड नामक पदाथ को लेकर परीक्षा की जावेगी तो कुछ मिलेगा अतएव वे पिचब्लैंड नामक पदाथ को लेकर परीक्षा करने लगे परीक्षा-करते करते उ होने रेडियम् नामक एक बहुत ही अद्भुत नए धातु का आविष्कार किया पर इस म उनको कठोर परिश्रम और पूरा व्यय करना पडा कोई 27 मन पिचब्लैंड स ये कुल

ग्रेन रेडियम् निकाल सके और इस काम मे उनका 20000 फ्रैंक* खर्च हो गया वैज्ञानिक खोज कुछ यो ही नहीं हो जाती जिसमे नए तथ्य के आविष्कार मे इतना समय, इतना परिश्रम और इतना व्यय होना तो स्वाभाविक बात है 'विज्ञान-मंदिर" की स्थापना करते समय विज्ञानाचार्य सर जगदीश चन्द्र बोस ने अपने भाषण मे कहा था कि "मुझे अपने काम मे बडी-बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा आशा और निराशा से टकराना पडा, परन्तु मैं अक्लान्त मन और शरीर को लेकर बराबर कार्यक्षेत्र मे अग्रसर होता रहा आज इतने दिनो के पश्चात् इस अवस्था को पहुचा हू अस्तु हमारे अध्यवसायी दम्पत्ति ने भी किसी तरह रेडियम् का आविष्कार कर ही डाला अपनी यह सफलता देखकर उनको हर्ष भी खूब हुआ इनके इस आविष्कार की बात चारो ओर फल गई और नोबल पुरस्कार समिति ने आपका सवा लाख रुपये का नोबल-पुरस्कार देकर सम्मानित किया इस प्रकार रेडियम् का आविष्कार हुआ

एक बार की बात है मि क्यूरी के हाथ से रेडियम् की शीशी एकाएक छूट कर जमीन पर गिर पडी और टूट गई बस फिर क्या था, इतना बहुमूल्य और प्रयासलब्ध रेडियम् घर की चीजो में मिल गया दम्पति बडे उदास हुए, परन्तु दोनो ने बहुत कष्ट उठा कर उसको इकट्ठा किया इसके बाद, इस मामले मे उन्होने बडी सावधानी रखी

अब, दूसरे लेख मे मैं यह बताने की चेष्टा करूगा कि रेडियम् से किन किन विज्ञानियो ने क्या क्या आविष्कार किया और इसकी शक्ति किन-किन रोगो के नाश करने के काम मे लाई गई

('सौरभ' मई-अगस्त 1921 ई मे प्रकाशित)

*फ्रान्स का रुपया है बेल्जियम् और स्विटजरलण्ड मे भी यह चलता है इसका मूल्य 9॥ पैसे के बराबर होता है

विविध-विषय

1 महात्मा गान्धी का व्यक्तित्व

समस्त जगत के ग्रौर विशेषत भारत के महान् पुरुष महात्मा गान्धी के व्यक्तित्व को विभिन्न दृष्टियो से देखते हैं परन्तु हमारी दृष्टि मे वस्तुत उनका लोकोपकारी व्यक्तित्व निम्नलिखित है —

1 उनकी नैतिक शक्तिया
2 उनकी विद्याबुद्धि
3 उनका काम

1 उनकी नैतिक शक्तियां

एक चरित्रशील की दृष्टि म सर्वाधिक उनकी नैतिक शक्तियां ही वस्तुत उनकी सबसे बड़ी विशेषताए हैं जब हम भूत ग्रौर वर्तमानकालीन नाना जातियों ग्रौर व्यक्तियो की नैतिक शक्तियो का अनुशीलन करते हैं ग्रौर उनकी महात्मा गान्धी की नैतिक शक्तियो के साथ मिलाते हैं तो हमें उनम कठिनाई से दो एक व्यक्ति ऐसे मिलते हैं कि जिनको हम महात्मा गान्धी के समकक्ष रख सकें किसी का यह कहना वस्तुत सत्य

है कि गाधी की सी निर्दोष सत्यपरायणता, अपार दृढता, अपूर्व सहिष्णुता, विलक्षण निर्भीकता, सच्ची देशहितैषिता, लोकोत्तर त्यागिता, न्यायप्रियता और समष्टिवादिता आदि आदि गुण चिराग लेकर ढूढने पर भी आजकल के ससार मे कही देखने को नही मिलते गाधी वस्तुत नीति का देवता है ऐसे समय मे जब कि ससार से भारतीय नैतिक बल का जनाजा निकलने वाला था, एक ऐसे व्यक्ति के उत्पन्न होने की अत्यधिक आवश्यकता थी सो ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने म गाधी को यहा भेज इस मुमुर्षु देश को नैतिक जीवन के सुधार का अवसर प्रदान किया

2 उनकी विद्या-बुद्धि

विद्या-बुद्धि की दृष्टि से भी गाधी बडा भारी आदमी है उसने समाज-शास्त्र, राजनीति शास्त्र, आचार-शास्त्र मे अभूतपूर्व परिवतन किये अब तक भारतवासियो की दृष्टि मे असल मे ये विषय पृथक् पृथक् थे परन्तु उसने बतलाया कि वस्तुत ये एक ही माला के मणि या एक ही अगी के अग हैं और ये एक दूसरे के बिना जीवित नही रह सकते उसने समाज-शास्त्र के सर से उच्छृ खलता, राजनीति-शास्त्र के सर से हिंसा और आचार शास्त्र के सर से दम्भ का कलक दूर कर और जगत् और विशेषत भारत के सम्मुख समाज, राजनीति और आचार शास्त्र-सम्मत एक नवीन आदश सिद्धात रखा और अपने चरित्र से पूणत उसकी क्रियात्मकता का भी सबूत दिया

3 उनका काम

उनके काम के दो विभाग हैं—

एक — देश को स्वतन्त्रता के लिए तैयार करना

दूसरा — उसे स्वतन्त्रता दिलाना

महात्मा गाधी पहली बात मे पूणत कृतकाय हैं उसने एक ऐसे देश को, जो कि शताब्दियो से दूसरी जातियो और अपनी परम्परागत नाना निबलताओ का दास था, जिसकी प्रजा नाना धम, जाति आदि आदि सकडो रेखाओ मे विभक्त थी, कुछ ही महीनो मे उसे जगा, उठा और स्वतन्त्रता के सग्राम के लिए तयार कर दिया यह भारत ही नहीं पृथ्वी भर के इतिहास मे एक अद्भुत बात है

अब रहा देश को स्वतन्त्रता दिलाना सो मन से तो प्राय भारतवासी अब अपने आपको स्वतन्त्र समझने लगे क्योकि वे बलात् किसी बन्धन को इस समय स्वीकार करने को तयार नही हैं या कम से कम पुराने ढग के सब के सब बन्धन उनकी दृढता

और विचार-स्वातन्त्र्य के सामने निकम्मे और निरर्थक से हो रहे हैं अब रही पूर्ण स्वतन्त्रता सो यह न तो अकेले महात्मा गांधी के हाथ की बात है और न किसी दूसरे के यह तो प्रबलतम निर्दोष स्वावलम्बन का फल है और इसका प्राप्त करना स्वयं देश के हाथ मे है परन्तु कांग्रेस की अब तक की हिंसा—शून्य कार्य प्रणाली, प्रजा की एकता, दु ख-सहिष्णुता और गवर्नमेन्ट की दूरदर्शिता यह आशा दिलाती है कि अधिक सम्भव है महात्मा गांधी भारतीय प्रजा को पूर्ण स्वतन्त्र देखने मे कृतकार्य हो

स्वराज्य मिलने से क्या होगा ?

हम से अनेक मनुष्य समय समय पर पूछा करते हैं क्यो महाराज स्वराज्य मिलने से क्या हो जावेगा ? इस प्रश्न से उन लोगो का यह मतलब होता है कि स्वराज्य से उन्हें कोई तात्कालिक लाभ भी होगा ? ऐसे लोगो से हमारा यही कथन है कि उन्हें इस बात को ठीक-ठीक समझने के लिए महात्मागांधी के स्वराज्य के दस लक्षणो को समझना चाहिए हाँ, हमारी ओर से इतना ही उत्तर है कि स्वराज्य से—

1 उनको भरपेट रोटी और वस्त्र आदि मिलने लगेंगे

2 लाखो दीन हीन भारतवासियों के दु ख दर्द को भी सुनने वाला कोई होगा

3 बाहर के लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रीति से उन्हें सता न सकेंगे

4 सबसे बडी बात यह होगी कि उन्हें मनुष्योचित जीवन निर्वाह करने को मिलेगा, उनकी उन्नति मे कोई बाधक न हो सकेगा

5 उनकी भावी सन्तान उत्तरोत्तर सुखी हो सकेगी

6 उनका भारतवर्ष पूर्व की तरह ही ससार मे अपने गुरुत्व को स्थापित कर सकने का अवसर प्राप्त करेगा

7 सबसे बडी बात यह होगी कि स्वतन्त्रता का आनन्द, जिससे कि चिरकाल से भारतवासी वचित हैं, प्राप्त हो जावेगा, सबसे बडा दु ख जो परतन्त्रता है सदा के लिए मिट जावेगा परन्तु इन अच्छी बातो के लिए और विशेषत परम प्यारी स्वतन्त्रता के लिए—

   1 हमे सदैव दूसरो से अपनी रक्षा करने और ससार से पापों को मिटाने के लिए अपना सर्वस्व को युद्धाग्नि मे स्वाहा करने को सदैव तैयार रहना होगा

   2 स्वच्छन्दोचित आनन्द और सुखों से हमे वचित रहना पडेगा

3 प्रत्येक भारतवासी के साथ प्रेम, एकता, समानता और भ्रातृभाव का व्यवहार करना होगा।

4 अपने पापो और दोषो को दूर करना होगा

5 अपने को और अपने देश को अधिक से अधिक सभ्य और उन्नत बनाने म परिश्रम करना होगा

6 प्रत्येक बात की उत्तरदायिता को स्वीकार करना होगा और

7 समस्त मानव समाज की सुख शान्ति और समृद्धि के लिए प्रयत्नशील बनना होगा

हिन्दी कविता का समालोचना का युग

प्रत्येक बात का आदिम युग उसके उत्साह-वृद्धि का युग होता है ऐसे ही एक समय था कि खडी हिन्दी बोली के कवियो को उत्साहित करने की आवश्यकता थी और इसी लिए उस समय के लोगो ने तात्कालिक कवियो को उत्साहित करना भी अपना कर्तव्य समझा इसी का यह फल है कि आज हम अपने समाज मे हिंदी के कई सुयोग्य प्रतिभाशाली कवियो को देखते हैं परन्तु अब यह उत्साह का आदिम युग बीत गया अब समालोचन युग की बारी है इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि कविता कौमुदी के सच्चे विकास के लिए योग्य समालोचक इस ओर ध्यान दें हम थोडे समय से बराबर देखते आ रहे हैं कि साहित्य क्षेत्र मे अनेक झाड झकड ऐसे पदा होते जा रहे हैं कि यदि उनकी ठीक निदाई खुदाई न हुई तो यही नही कि वे साहित्यिक पौधो को ही ले बठेंगे परन्तु वे साहित्यिक शुद्ध विकास मे भी विघ्नकर सिद्ध होगे और इससे हिन्दी के स्थिर काव्य साहित्य को बहुत कुछ धक्का लगेगा हम देखते हैं कि समालोचना के अभाव से आजकल हिन्दी में अधिक बडे कवियो की भी अनेक कविताए प्राय काव्य के गुणोत्कर्ष के कारण नहीं प्रत्युत उनके व्यक्तित्व के कारण ही आदर पाती हैं उनमे अर्थ, सौन्दर्य आदि तो रहा दूर, परन्तु छन्द प्रणयन आदि काव्यकला के मोटे-मोटे दोषो की भी परवा नहीं की जाती इसका यह कारण नही है कि वे कवि नही हैं या कविता करना नही जानते परन्तु कारण केवल यही है कि समालोचना की भीति के अभाव मे असावधानता के कारण स्वभावत उनसे ऐसी अशुद्धिया हो जाती हैं जो कि दोषग्राही और गुणत्यागी व्यक्तियों के लिए हास्य का कारण होती हैं

("सौरभ" सपादक प रामनिवास शर्मा की सपादकीय टिप्पणियो से साभार)



श्रद्धा-स्मरण

- –हरिभाऊ उपाध्याय
- –डॉ. हरिवंशराय बच्चन
- –बनारसीदास चतुर्वेदी
- –डॉ. रघुवीर [illegible]
- –युगलकिशोर चतुर्वेदी
- –जवाहरलाल जैन
- –डा. प्रभुनारायण 'सत्यम'

हरिभाऊ उपाध्याय

नवरत्नजी-श्रद्धांजलि

पहली जुलाई को झालावाड़ से मुंह अंधेरे ही ट्रंकाल आया नवरत्न जी नहीं रहे एक दिन पहले ही मैंने जयपुर से फोन द्वारा उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे पूछताछ की मुझे बताया गया था कि उनकी अवस्था संदिग्ध है और कैंसर की आशंका है

नवरत्नजी इधर काफी दिनों से अस्वस्थ थे अवस्था की दृष्टि से पके आम थे फिर भी खबर सुनकर धक्का लगा बड़ी देर तक फिर नींद नहीं आई कई बातें ध्यान में आती रहीं

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नया युग प्रवर्तन कर हिन्दी के विकास के लिये जिस राजप्रासाद के निर्माण के आधारभूत स्तंभो की रचना की थी उनमे से एक स्तंभ गिर गया

नवरत्न जी सच्चे अर्थों में द्विवेदी युग के सच्चे प्रतीक तो थे ही इसके अलावा वे नवयुग के संदेशवाहक भी थे उनमें नये और पुराने इन दो युगों का अद्भुत सम्मिश्रण था वे दो युगों की संधि के सच्चे प्रतिनिधि थे उन्होंने अपने नेत्रों की ज्योति खोकर

भी अपनी पारसगुण युक्त दिव्यदृष्टि से दूसरो के मानस के अन्धकार को दूर किया और उनका अन्तर प्रकाशमान बनाया

व्यक्तित्व और जीवनवृत्त

गिरिधरजी का व्यक्तित्व बडा प्रभावशाली और सहज ही आकर्षित कर लेने वाला था सुडौल देह, उन्नत ललाट, सौम्य और सरल स्वभाव

नवरत्न जी का जन्म विक्रम स 1938 की ज्येष्ठ शु 8 को झालरापाटन म हुआ इनके पिता प ब्रजेश्वर शर्मा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे इसलिये प्रायमिक शिक्षा के बाद मुख्यत आपको संस्कृत की ही शिक्षा दी गई नवरत्न जी को यह शिक्षा जयपुर और फिर काशी म मिली काशी मे प शिवकुमार जी शास्त्री और महामहोपाध्याय प गगाधरजी शास्त्री के निकट सम्पक मे आने का आपको मौका मिला संस्कृत के अध्ययन के बाद का सारा ज्ञान आपने स्वाध्याय द्वारा ही प्राप्त किया संस्कृत व हिन्दी के अलावा बगला, गुजराती, मराठी, अरबी और फारसी व अंग्रेजी का अध्ययन भी आपने स्वय किया राजस्थानी के तो आप विद्वान थे ही

नवरत्नजी का कृतित्व

परिश्रम नवरत्नजी की दूसरी प्रकृति बन गई थी उनकी रचनाओ की विविधता और संख्या देख कर आश्चय होता है गुजराती भाषा भाषी होते हुए भी खडी बोली म उन्होने प्रथम प्रब ध काव्य 'सावित्री की रचना की रवीन्द्रनाथ ठाकुर की विश्व-पूजित कृति गीताजलि का सीधे बगला से हिन्दी मे आपने सबसे पहले पद्यमय अनुवाद किया इस अनुवाद को महाकवि टगोर न भरतपुर मे सुना था सुनने के बाद उन्होने कहा था—' मेरे भावो को व्यक्त करने मे जितनी सफलता आपको मिली है अन्य किसी को नही मिली ' गुरुदेव के आदेश अनुरोध से गीताजलि का संस्कृत मे भी पद्यानुवाद किया यह कृति अभी तक अप्रकाशित ही पडी है उमर खयाम का नवरत्नजी ने हिन्दी गुजराती और संस्कृत म पद्यमय अनुवाद किया है टगोर की प्रसिद्ध कृति गार्डनर का हिन्दी अनुवाद ' बागवान (ब्लक्वर्स मे)' फ्रूट गदरिंग का अनुवाद 'फल सचय' तथा 'द क्रीसेंट मून का गुजराती काव्यमय अनुवाद बालचन्द्र' के नाम से आपने ही किया है गुजराती के कवि सम्राट नान्हालाल द कवि की काव्यकृतियो को आपने हिन्दी भारती को समर्पित किया है वे कृतिया हैं युग पलटा और महासुदर्शन, प्रेमकुञ्ज, उषा, जयाजयन्त अन्य गुजराती कृतियो के हिन्दी रूप हैं—सरस्वती चन्द्र, राइ का पवत, आरोग्य दिग्दर्शन आदि मराठी भाषा से शुश्रूषा बगला से विश्व कवि टगोर कृत

चित्रांगदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इसके अलावा तक्नीकी विषयो पर भी आपने पुस्तकें लिखी उदाहरण के लिये अर्थशास्त्र, व्यापारशिक्षा, शुश्रूषा, कठिनाई मे विद्याभ्यास आदि के नाम लिये जा सकते हैं अंग्रेजी से नवरत्नजी ने कवि स्कॉट, शेक्सपीयर, गोल्डस्मिथ, वर्ड सवर्थ, टेनीसन आदि की रचनाओ के स्फुट काव्यमय अनुवाद किये हैं

हिन्दी निष्ठा

नवरत्न जी की हिन्दी निष्ठा अद्वितीय थी उनकी सबसे बडी आकाक्षा थी कि एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसमे हर विषय की शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो प्रारभ से ही उनकी यह स्पष्ट मान्यता थी कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्र भाषा बन सकती है उनका मत था कि सस्कृत अध्ययन के औचित्य से इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन हिन्दी मे ही वह क्षमता है कि वह देश के करोडो लोगो की बोल चाल की भाषा बन जाय अन्य भाषाओ की उत्तमोत्तम रचनाओ को हिन्दी भाषा का परिधान पहनाना होगा इसी कारणवश उन्होने अनुवादो पर विशेष ध्यान दिया उनका मत था कि ससार भर की भाषाओ और उनके साहित्य से हिन्दी लेखकों और साहित्यकारो को भाव, शब्द और विचार ग्रहण करना चाहिये नवरत्न जी ने अनेक बार यह विचार प्रकट किया था कि प्रादेशिक भाषायें अपने अपने प्रदेशो मे चलें, किन्तु जहा अखिल भारतीय शिक्षा के माध्यम का सम्बन्ध है, उसका भाषा हिन्दी ही होनी चाहिये इस सम्बन्ध मे एक बडा रोचक सस्मरण याद आ रहा है

बम्बई मे उस वर्ष हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता पूज्य महामना मदन मोहन जी मालवीय कर रहे थे नवरत्न जी भी अधिवेशन मे उपस्थित थे और लोगो के साथ जब उनके बोलने की बारी आई तो नवरत्न जी ने अपने भाषण मे कहा—"मालवीय जी ! आपको दुनिया आदर देती है तो दे ! परन्तु गिरिधर शर्मा से आप तभी आदर पा सकेंगे जब ' हिन्दू विश्वविद्यालय ' की जगह ' हिन्दी विश्वविद्यालय" बनायेंगे "हिन्दू नाम काफी नहीं, 'हिन्दी ' के माध्यम से सब विषयो की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये"

इस घटना से नवरत्न जी की तेजस्विता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही हिन्दी के प्रति उनका कितना अनन्य प्रेम था, इसका भी पता लगता है

आधुनिक कविता और नवरत्न जी

नवरत्न जी को आधुनिक कविता की उच्छृखलता और सस्तेपनवाला पक्ष

नापसन्द था कविता के सम्बन्ध मे उनका विचार था- "कविता वह जो हिय घसे" जो काव्य "हिय न घसे" वह उन्हें नहीं जचता था

नवरत्न जी का अन्तिम काल काफी कष्ट से बीता कोई 24 वर्ष पूर्व उनकी नेत्र ज्योति जाती रही थी बड़ा परिवार था मृत्यु से कुछ समय पूर्व उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री ईश्वरलाल का शरीरान्त हो गया अत्यन्त विषम आर्थिक परिस्थितियों म भी उन्होने अपना धीरज नहीं खोया —

"अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्य न पलानयम्"—अर्जुन की दो प्रतिज्ञायें थीं—'न तो दैन्य दरसाऊगा, न भागूगा" इसी तरह नवरत्न जी ने सब कष्टो के बावजूद न तो अपनी दीनता दिखलाई और न मैदान छोड कर ही भागे

"यथा चतुर्भि कनक परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदन तापताडन॰
तथा चतुर्भि पुरुष परीक्ष्यते, त्यागेन, शीलेन, गुणेन, कर्मणा

(जिस प्रकार स्वर्णकार सोने को घिस कर, काट कर, गरम कर, ठोक कर परीक्षा करता है उसी तरह जीवन की विषम परिस्थितियो ने नवरत्न जी के त्याग, गुण, शील और कर्म की परीक्षा ली और वे हर परीक्षा मे खरे उतरे)

"लज्जा गुणौघजननी जननीमिवस्वा-
मत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानम्
तेजस्विन सुखमसूनपि सन्त्यजन्ति
सत्यव्रत व्यसनिनो न पुन प्रतिज्ञाम् ॥"

नवरत्न जी ने भी अपनी साहित्यसेवा की प्रतिज्ञा को नही छोडा, प्राण भले ही छोड़ दिये दीनता नही दरसाई, भय कष्ट भले ही झेला ऐसे पुरुषसिंह मानव मात्र के लिये आदर्श हैं उनके चल बसने पर अश्रुपूरित नयनो से, भरे गले और शोकमय हृदय से श्रद्धाञ्जलि के ये कुछ शब्द सुमन अर्पित करने के सिवा हम और कर भी क्या सकते हैं ?

सरस्वती, प्रयाग अगस्त 1961 ई

हरिवंशराय बच्चन

गिरिधर शर्मा—एक संस्मरण

समाचार पत्रों में पढ़ा कि पंडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का स्वर्गवास हो गया यह दुखद समाचार अप्रत्याशित नहीं था अभी गत मास उन्होंने अपने जीवन के अस्सी वर्ष पूरे किये थे उस समय हिन्दी के कई पत्रों में उनका जो संक्षिप्त परिचय छपा था उसमें उनकी दीर्घकालीन अस्वस्थता की चर्चा थी तीन-चार दिन हुए उनके पौत्र श्री योगेश शर्मा का पत्र आया था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि शर्माजी की हालत चिन्ताजनक है 'धर्मयुग' में उनका जो चित्र छपा था वह भी रोगशैया का था दुर्भाग्यवश वह रोगशैया उनकी मृत्युशैया सिद्ध हुई भगवान उनकी आत्मा को अपनी शरण में ले और उनके परिवार सदस्यों एवं उनके मित्रों को यह वियोग सहने की शक्ति दें

नयी पीढ़ी के लेखकों एवं पाठकों में उनका नाम अपरिचित सा हो सकता है लगभग तीस वर्ष से हिन्दी में सक्रिय रूप से लिखना उन्होंने बंद कर दिया था वह द्विवेदी-युग के लेखक थे द्विवेदीजी का दर्शन करने के लिए एक बार वह झालरापाटन से द्विवेदी जी के निवासस्थान दौलतपुर (रायबरेली) भी गए थे और द्विवेदी जी ने उनका बड़ा सम्मान किया था उन दिनों इस प्रकार की तीर्थ यात्रा को साहित्यकार-धर्म का मुख्य अंग माना जाता था कोई किसी के लेख काव्य में कोई गुण देख या उससे प्रभावित हो, उससे मिलने या सम्पर्क स्थापित करने का अवसर ढूंढता रहता था 'दिनकर' जी की प्रारम्भिक कविताओं से आकर्षित हो एक बार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहीं कहा था कि यदि 'दिनकर' अफ्रीका के जंगलों में रहते होते तो उनसे

मिलने को मैं वहा भी पहुचता लेखको के पारस्परिक परिचय, नवटय एव सम्बन्ध का परिणाम यह था कि साहित्य ससार मे सदभावना का एक स्निग्ध वातावरण बना हुआ था यदि कही ईर्ष्या-द्वेष था भी तो वह जसे एक परिवार के लोगो मे था परिवार की मर्यादा से सीमित, नियन्त्रित

जीवन आज अधिक व्यस्त हो गया है, लेखको के दृष्टिकोण बदल गए हैं और साहित्य-क्षेत्र अधिक प्रतियोगितापूर्ण हैं पहले सब हिन्दी के लिए कुछ कुछ कर रहे थे, आज सबको दूसरो को पीछे छोडते हुए या पीछे समझते हुए अपने को आगे बढाना बढवाना है दूर-दूर बठी जो कलमे एक-दूसरे पर विष उगला करती हैं यदि उन्हे कर दिया जाय तो मुझे विश्वास है कि वे सहसा रस भले ही न बरसाने लगें, अपनी बहुत सी अवांछित और अभद्र -कटुता और तीक्ष्णता से मुक्त हो जायेगी क्या कोई ऐसी तरकीब बतला सकता है जिससे इन साहित्यिक तीर्थ यात्राओ का महत्व फिर से नई पीढी के लेखको म बढाया जा सके ?

—

'नवरत्न' जी के प्रथम दर्शन मुझे उनकी इसी प्रकार की साहित्यिक तीर्थयात्रा मे हुए थे यह बात है सन् 1935 की मेरी 'मधुशाला' निकल गयी थी और उसने मेरे विषय मे एक विचित्र प्रकार का कौतूहल उत्पन्न कर दिया था कौन है यह आदमी ? क्या इसके पास बडी दौलत है ? क्या यह दिन रात नशे मे पडा रहता है ? क्या यह जो लिखता है वह सब उसका अनुभूत सत्य है ? क्या यह मधुशाला मे रहता है, मधुबालाओ से घिरा, एक आधुनिक उमर खैयाम की तरह ?—शायद कुछ इसी प्रकार की जिज्ञासा थी जिसने 'नवरत्न' जी को लाकर मेरे मकान के सामने खडा कर दिया उन दिनो मैं अपने इलाहाबाद के मुटठीगजवाले मकान मे रहता था मैं घर के किसी मरीज की दवा लाने या किसी ट्यूशन पर गया हुआ था मेरी अनुपस्थिति मे वह मेरे लिए एक पुर्जा छोडकर वापस चले गए मैं लौटकर आया तो देखता हू कि गली मे बडी स्फूर्ति-सी है जो मिलता है, वही कहता है एक बडी सी मोटर आपके घर आयी थी, कई आदमी थे जसे मेरे घर पर किसी की मोटर आने से ही मुझे बडप्पन मिल गया था और लोगो की दृष्टि मे मेरा आदर बढ गया था पुर्जे में लिखा था "हम तो आपकी मधुशाला देखने आए थे, पर साकी ही गायब था हम महाराज बनारस की कोठी मे ठहरे हैं अब वही आपकी प्रतीक्षा करेंगे—गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' झालरापाटन वाले" शर्मा जी के नाम से मैं अपरिचित नहीं था इसकी याद तो नहीं थी कि कभी 'सरस्वती' के पृष्ठो मे उनकी रचना छपती थी, पर उनका "रुबाइयात उमर खयाम" का अनुवाद मैंने पढा था और उसकी एक प्रति मेरे पास थी यह अनुवाद उनका 1931 म प्रकाशित हुआ था उस पुस्तक से जाना था या किसी और से सुन रक्खा था कि

वह झालरापाटन राज्य के राजपुरोहित हैं इसकी तो मैं कभी प्रत्याशा ही नहीं कर सकता था कि वह मेरे घर पर आयेंगे पुर्जा पढ़कर मैं यह सोचने लगा कि जब शर्माजी ने मधुशाला की कल्पना लेकर मेरे 295 नम्बर मुट्ठीगंज के अधवन बेढंगे बे कलई किए हुए मकान को देखा होगा तब उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई होगी यदि उन्हें यह पंक्ति याद होगी कि 'चहक रहे सुन पीनेवाले, महक रही ले मधुशाला' तो मेरे घर के सूनेपन और मेरे मकान के आगे बहती हुई दुर्गंधित नाली से उन्हें कितनी निराशा हुई होगी

शाम को मैं बलुआ घाट स्थित महाराज बनारस की कोठी पर पहुंचा जो मेरे घर से बहुत दूर नहीं थी वास्तव में मधुशाला तो वहां थी बाहर कई मोटरें खड़ी, फाटक पर राजस्थानी पीली पगड़ी में बन्दूकधारी पहरेदार, मालूम हुआ महाराज झालरापाटन आए हुए हैं और कोठी में ठहरे हुए हैं, पुरोहित जी उन्हीं की पार्टी में आए हुए हैं उनके पास पहुंचते ही मैंने उन्हें पहचान लिया, उनकी पुस्तक में मैं उनका चित्र देख चुका था—भरा हुआ, सांवला, लम्बा शरीर, बन्द कालर के कोट पर रेशमी पगड़ी, ललाट पर चन्दन मुझे देखकर उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ, बोले, 'आप तो अपने नाम के अनुरूप ही हो, बच्चे की तरह बच्चन हमने आपकी पुस्तक पढ़ी है महाराज साहब भी आपकी कविता के प्रेमी हैं अभी नवयुवक हैं, आपकी ही उम्र के हैं मैंने ही उन्हें हिन्दी पढ़ाई है मैं आपसे मिलने गया था तो वह भी मोटर में बैठे थे वह भी थोड़ी बहुत कविता करते हैं आपसे मिलने को उत्सुक हैं''

उनकी बातें सुनते हुए मेरी कल्पना इतिहास को वेधती हुई उस आत्म-बलिदानी, स्वामिभक्त झाला सरदार की ओर चली गयी, जिसने हल्दीघाटी की लड़ाई में महाराणा प्रताप के छत्र को अपने सिरपर लगवाकर उनके निकट से शत्रुओं का दबाव अपने ऊपर ले लिया था और स्वयं वीरगति प्राप्त कर महाराणा को बचा लिया था उन्हीं के वंशज महाराज झालरापाटन को आज मैं साक्षात् देख सकूंगा, मेरा कितना सौभाग्य है तभी ध्यान आया, यह तो अच्छा हुआ कि जब वह मेरे घर पर पधारे तब मैं नहीं था, नहीं तो मुझे गालिब के दो शेरों को उलट-पलट कर कुछ इस तरह कहना पड़ता

वो आए घर पे मेरे
यह खुदा की रहमत है,
कभी हम उनको कभी
बोरिए को देखते हैं

उनको बिठाने के लिए मेरे पास कमरे में सिवा एक लकड़ी के नंगे तख्त के और था ही क्या

शर्माजी ने कहा, "मैं तो एक प्रकार की तीर्थयात्रा पर निकला हू मेरी आंखों मोतियाबिंद का आक्रमण हो रहा है, सोचा, इसके पूर्व कि मेरी आंखों की ज्योति तरह से चली आए, मैं अपने साहित्यिक-बन्धुओं के दर्शन कर आऊं" परिवार के कि वृद्ध की वत्सलता से उन्होंने मेरी शिक्षा-दीक्षा, मेरी पारिवारिक स्थिति, मेरी नौक मेरी तनख्वाह आदि के विषय में पूछा सच्चाई को छिपाने की मेरी आदत न थी मैं उन दिनों अग्रवाल विद्यालय में 35 रुपये प्रति मास पर काम कर रहा था यह सुनकर वह दुखी हुए और उन्होंने मेरे प्रति बडी सहानुभूति दिखलाई कहने ल "देखिए, उर्दू के कितने शायरों को निजाम और नवाबों के यहां से वजीफे मिलते पर हमारे राजे-महाराजे हिन्दी की ओर से उदासीन हैं मैं चाहता हू कि नवयु महाराज में हिन्दी के प्रति कुछ प्रेम जगाऊं आप उनसे मिलें तो अपनी कुछ बहुत अ कविताएं सुनाएं"

पर मैं तो उनसे मिलने के लिए भद्रजनोचित पोशाक में भी नहीं आया था मुझसे कह रहे थे—"महाराज के सामने नंगे सिर जाने की प्रथा नहीं है खैर, मैं आप एक पगडी देता हू और हां, महाराज को "खमा घणी अन्नदाता" कहकर सम्बोधि करना चाहिए और मेरे मन में 'मधुशाला' की ये पंक्तियां गूंज रही थीं 'राज्य उल जाएं भवों की भाग्य सुलक्ष्मी सो जाए जमे रहेंगे पीने वाले, जगा करेगी मधुशाल और राव में भेद हुआ है कभी नहीं मदिरालय में' मेरे मन में बडा तनाव हो रा था, और मैं महाराजा के दर्शन करके लौट आने का विचार कर रहा था कि बाह 'खमा घणी अन्नदाता' के स्वरों के बीच महाराज स्वयं कमरे में आ गए दरबा औपचारिकता की परवाह न करके उनके इस प्रकार आ जाने से हम दोनों अचकच उठे—गोरा, लम्बा, भरा शरीर चेहरे पर मुस्कान और सरलता, बदन पर बासंती र का राजस्थानी तनसुख मेरा मन तो उनके अंदर परिव्याप्त झाला सरदार के रक्त को हं नमन कर रहा था शर्माजी ने मेरा और मेरे कवित्व का परिचय अतिशयोक्तियों दिया बीच बीच में उनकी और महाराज की कुछ बातें राजस्थानी बोली में भी हं जाती शर्माजी के संकेत पर मैंने कुछ कविताएं और 'मधुशाला' की रुबाइयां सुनाईं दोनों ने ही बडी सहृदयता से सुनी महाराज चले गए तो पुरोहित जी ने मुझसे कहा "महाराज आप से बहुत ही प्रभावित हुए हैं आपसे फिर मिलना चाहेंगे"

दूसरे दिन उन्होंने मुझे फिर बुलाया और बातचीत के सिलसिले में मेरे सामने एक प्रस्ताव रख दिया— 'महाराज आपको अपने साथ रखना चाहते हैं, आपका भाग्य जाग जायेगा—स्व मंदिरे वा नृप मंदिरे वा-कवि की शोभा तो राज प्रासाद में ही होती है"

मेरे गले में गुड़ भरी हँसिया ग्रटक गयी अपने प्रिय कवि पंतजी के कालाकांकर राज्य में आश्रय लेने से मैं बहुत विक्षुब्ध था क्या मैं वही खुद करूंगा मैंने निर्ममता से वह हँसिया अपने गले से खींच ली शर्माजी दरबारी आदमी थे मेरा रुख पहचान गए, बोले, "मूर्खता कर रहे हो, पछताओगे"

दो-तीन दिन बाद शर्माजी के स्वागत में प्रयाग विश्वविद्यालय में, लॉ कॉलेज हाल में, एक कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका सभापतित्व महाराज झालावाड़ ने किया शर्माजी का स्वर शांत और गम्भीर था हालांकि कविताएं उन्होंने विनोदात्मक ही सुनायी थी उन दिनों वह कुछ ऐसे पद्य लिख रहे थे जिनके अन्त में कोई कहावत फिट बैठ जाती थी—भाव में भी और तुक में भी याद है, एक पद का अंत हुआ था इस कहावत से,

'अंधी पीसे कुत्ता खाए'

मगर अधिक रस-बरसा था उनके 'रुबाइयात उमर खैयाम' के अनुवाद से एक पंक्ति आज तक नहीं भूल सका

'वह गुलाब गर्वीली नगरी अरम कहाँ है ?'

अब तक तो उमर खैयाम के दर्जन से ऊपर अनुवाद हिंदी में निकल चुके हैं शर्माजी सभवत उसके सर्वप्रथम अनुवादक थे—जैसे कि वह 'गीतांजलि' के भी हिन्दी में अपना अनुवाद प्रकाशित करने के दो वर्ष पूर्व उन्होंने 'रुबाइयात' का अनुवाद संस्कृत में भी प्रकाशित करा दिया था रुबाइयों के अनेक अनुवाद सामने आ जाने के बावजूद शर्माजी के अनुवाद की अपनी विशेषता है विचित्र बात है कि रुबाई के लिए जिस छोटी पंक्ति का उपयोग उन्होंने किया था, उसे अपनाने का साहस फिर किसी अनुवादक को नहीं हुआ अनुवाद अथवा स्वतन्त्र रुबाई की पंक्ति कितनी बड़ी रक्खी जाए, यह अभी हिन्दी के लिए प्रयोगावस्था में है ज्यादा लोगों ने पंक्ति को ज्यादा बड़ी ही किया है छोटी पंक्तियों के प्रयोग कम हुए हैं शर्माजी की पंक्ति एक माध्यमिक स्थिति की ओर संकेत करती है अनुवाद में, कम से कम इस लम्बाई की पंक्ति में, मूल के विचारों को किसी भी तरह बढ़ाया नहीं जा सकता उन्हें थोड़े में, सिमटाकर, संक्षिप्त करके ही रक्खा जा सकता है इससे शर्माजी के अनुवाद में जो कसाव है, जो संयमन है वह किसी अनुवाद में नहीं आ पाया है ऊपर उद्धृत पंक्ति ही इसका उदाहरण है अंग्रेजी का शब्दार्थ यों होता, 'अवश्य ही अपने समस्त गुलाबों के साथ अरम गायब हो गया है'

शर्माजी इससे कम शब्दों में लगभग वही भाव और प्रभाव व्यक्त और उत्पन्न कर देते हैं

उस कवि-सम्मेलन में मैंने 'प्याले का परिचय' सुनाया, जिसमे ये पंक्तियां आती हैं—

मुझको न सके ले धन कुबेर,
दिखलाकर अपना ठाठ-बाट,
मुझको न सके ले नृपति मोल
दे माल खजाना, राजपाट,

अमरा ने अमृत दिखलाया आदि मुझसे शर्माजी की तीन दिन पहले जो बातचीत हो चुकी थी और जिसकी खबर महाराज साहब तक पहुच ही गयी होगी, उसके संदर्भ मे इन पंक्तियो मे एक अजीब लाक्षणिकता आ गयी शायद उन्होने यह भी समझा हो कि मैंने ये पंक्तियां उक्त प्रसग के बाद रचीं, पर पूरी रचना कम से कम साल भर पुरानी थी इतना स्वाभिमान और इतनी उग्रता से व्यक्त उन्हें कब सहन हो सकता था उनका रुख मेरी तरफ से बदल गया फिर न उन्होंने मुझे बुलाया ही और न मैं ही स्वय गया

अब जब शर्माजी की मृत्यु का समाचार सुना तो ये सब बात एक एक करके मुझे याद आने लगी सोचता हू कि मेरे सामने जो प्रस्ताव उन्होने रखा था, उसम उनकी कितनी वत्सलता, कितनी सहृदयता, कितनी हिन्दी के एक गरीब लेखक की सहायता करने की भावना थी—उनके रोष मे भी कितना अपनत्व था

शर्माजी की मातृभाषा गुजराती थी, उनके कुछ प्रकाशन गुजराती मे भी हुए हैं हिंदी को उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप मे अपनाया था और उसके विकास मे उन्होने अपना सक्रिय और सृजनशील योग दिया था संस्कृत मे उनकी मौलिक रचनाओ का सग्रह 'गिरिधर सप्तशती' के नाम से प्रकाशित हुआ था वह अपनी रचनायें स्वय प्रकाशित करते थे और परिचितो, इष्ट मित्रो मे बाट देते थे लेखन से धनार्जन उनका लक्ष्य नहीं था

(नवभारत 1961)

बनारसीदास चतुर्वेदी

राजगुरु स्व गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

स्व गिरिधर शर्मा के दशन मुझे सर्वप्रथम फीरोजाबाद के 'भारती-भवन' के एक उत्सव मे हुए थे, जो सभवत 1912 के आसपास हुआ था तत्पश्चात् जब मैं 1914 मे इदौर के राजकुमार कालिज मे आध्यापक नियुक्त हुआ तो स्व माधवराव विनायक कीवे साहब के निवास स्थान पर मध्य भारत हिदी साहित्य समिति की जो मीटिंग हुई थी, उसमें उनके दशन हुए यह समिति उन्ही की प्रेरणा का फल थी उन दिनों गिरिधर शर्मा जी का नाम हिदी जगत मे काफी प्रसिद्ध हो चुका था और 'झालरापाटन के महाराज हिदी सेवको के आश्रयदाता थे जब वे टीकमगढ पधारे और महाराज वीरसिंहजू देव के अतिथि हुए तो उनके दशन भी मुझे हुए थे मैंने एक लेख भी विशाल भारत मे उन पर छापा था

यह जानकर हर्ष हुआ कि गिरिधर शर्मा जी की शताब्दी मनाई जा रही है ऐसे शुभ अवसर पर उनकी मुख्य मुख्य रचनाओ का सग्रह भी छपना जरूरी है राजस्थान प्रदेशीय सम्मेलन को भी सक्रिय करना चाहिए

आज तो सम्पूर्ण वातावरण राजनैतिक चर्चाओं से ओत-प्रोत है यह आवश्यक भी है एक उक्ति है 'शस्त्रेण रक्ष्यते राज्ये शास्त्र चर्चा प्रवर्तते' पर हमारा मुख्य ध्येय

साहित्य और संस्कृति का विकास करना है और साहित्य और संस्कृति का लक्ष्य मनुष्य है छोटे छोटे स्थानो के निवासियो की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए क्या क्या काम हो रहे हैं, उनका लेखा-जोखा रखना हमारा कर्त्तव्य है हमे छोटे छोटे कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहन देना है और साथ साथ 'नवरत्न' जी जसे पुराने कार्यकर्ताओ की स्मृति रक्षा भी आवश्यक है संस्कृत का श्लोक है—

घृतमिव पयसि निगूढ
भूते भूते वसति विज्ञान
सुत ते मथतव्य
मनसा मान दण्डेन ।।

अर्थात् जिस प्रकार दूध मे घी छिपा हुआ है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी में कोई न कोई समझ-बूझ छिपी है हम मन रूपी मथनिया से उसे निरतर मथना चाहिये

इस अवसर पर मैं स्व गिरिधर शर्मा जी को अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हू

द्विवेदी जी से पहली मुलाकात

सन् 17 की बात है पडितजी जूही मे द्विवेदीजी से मिलने गए द्विवेदीजी उस समय शौच गए हुए थे वह बैठ गए और लगे पत्र पत्रिकाओ के पन्ने उलटने द्विवेदीजी शौच से लौटे-कान पर जनेऊ, हाथ मे लोटा-उन्होने देखा कि कोई अपरिचित व्यक्ति निस्सकोच भाव से उनकी पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने उलट-पटल रहा है वह ठहर गए, पूछा आप कौन हैं ?

पडितजी ने उत्तर दिया —'मनुष्य'

द्विवेदीजी बोले —सो तो ठीक है पर यहां कैसे घुस आए

पडितजी —अपना अधिकार समझ कर, पहले आप निवृत्त हो लें फिर सब बताया जाएगा

द्विवेदीजी भौंहें तन गई चेहरा तमतमा गया परन्तु परिचय पाने पर द्विवेदीजी हर्षातिरेक से विमुग्ध हो गये नयनों मे प्रेमाश्रु छलक आए दौड कर पडितजी को स्नेहालिगन मे बांध लिया

रघुवीर सिंह

स्वर्गीय पं. गिरिधर शर्मा "नवरत्न"

कोई सत्तर वर्ष पूर्व की बात है मैं उस समय मान्य पाठ्य-पुस्तक "हिन्दी शिक्षावली", पांचवें भाग[1] का अध्ययन समाप्त कर आगे पाठ्यपुस्तक "बालविनोद", चौथा भाग[2] प्रारंभ करने वाला था, तब "बाल विनोद" के दूसरे और तीसरे भाग[3] मेरे हाथ आये मैंने उन्हें पूरा पढा तीसरे भाग मे एक पाठ "पुस्तक प्रेम" था, जो तब की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका, "सरस्वती" से यथावत् उद्धृत किया गया था इसी प्रकार तीन और पाठ थे, जिन्हें सरस्वती से उद्धृत करते समय थोडा-बहुत परिवर्तित कर दिया गया था, ये थे—"ईश विनय", तथा "ग्रीष्म-वर्णन" उसी तरह "बाल विनोद" दूसरे भाग मे भी दो पाठ 'ग्रीष्म ऋतु" और 'गिलहरी" "सरस्वती" से उद्धृत किये गये थे कालांतर मे "सरस्वती" के पूर्वकालीन खण्ड देखने को मिले तो पता लगा कि प गिरिधर शर्मा "नवरत्न" ने उनकी रचना की थी इनमे से जिस पाठ की मेरे मन पर गहरी छाप पडी थी, वह था 'पुस्तक-प्रेम" तब से जब भी कोई नई पुस्तक मेरे हाथ में आ जाती मुझे अनायास ही इसकी पंक्तियां स्मरण हो आती थी

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक से ही हिन्दी पद्य की भाषा और शैली मे विशिष्ट परिवर्तन होने लगे थे खडी बोली के आचार्य प महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा

[1] "हिन्दी शिक्षावली', पाचवा भाग, सपादक, प दीन दयाल तिवारी व लाला सीताराम, प्रकाशक इंडियन प्रेस इलाहाबाद, चौदहवां पुनमुद्रण, 1913 ई

[2] "बाल विनोद", चौथा भाग, सम्पादक प रामजीलाल शर्मा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1910 ई

[3] "बाल विनोद" दूसरा भाग व तीसरा भाग, सपादक प रामजी लाल शर्मा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1910 ई

से हिन्दी-काव्य में खड़ी बोली की जो नवीन धारा प्रवाहित हुई थी उसी प गिरिधर शर्मा ने भी अपनी कविताएं लिखी थीं उनके कई काव्य ग्रथ प्र जिनमें उल्लेखनीय हैं जयाजयत, भीष्म प्रतिज्ञा, शुकन्या, सांख्य-दोहावली, योगी तथा जापान विजय आगे चल कर उन्होंने अतुकान्त छन्द लेखन को भी और अपने "सावित्री" काव्य की रचना ऐसे ही छन्दो में की उन्होंने रविन्द्र नाथ ठाकुर के गीताजलि, बागवान, फल-सचय तथा चित्रांगदा शीर्षक काव्य के हिन्दी अनुवाद किये, जिनका तब विशेष स्वागत हुआ था

अंग्रेजी आधिपत्य-काल मे तत्कालीन देशी राज्यो मे शिक्षा-साधनों और का अभाव था तथा जनसाधारण की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नही थ विद्याभ्यास सहज सभव नही था, अत तब श्री नवरत्न जी का गद्य ग्रथ मे विद्याभ्यास' का पूर्ण स्वागत तथा विशेष प्रसार हुआ मैंने भी उसे ग्र रुचि और उत्सुकता से पढा था

श्री नवरत्न जी भूतपूर्व झालावाड राज्य के राजघराने के राजगुरु झालावाड नगर से कोई तीन मील दक्षिण मे स्थित झालरापाटन नगर में निव थे वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे अत सन् 1914 ई में श्री हिन्दी समिति, भरतपुर, के निजी भवन की आवश्यकता पर उन्होंने प्रेरक भाषण जिसके फलस्वरूप भवन निर्माण का आयोजन हुआ और अंतत नवम्बर, मे समिति अपने निजी भवन मे स्थापित हो गई

सन् 1918 ई मे इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के आठवें मे श्री नवरत्न जी ने विशेष उत्साह और लगन के साथ भाग लिया और मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना में भी वे अग्रणी हुए अन्य विशिष्ट पुरुषो के साथ श्री नवरत्नजी के महती प्रयास और परिश्रम से ही मार्च ई मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सत्रहवा अधिवेशन भरतपुर मे आयोजित हो सका

कविश्रेष्ठ रवीन्द्रनाथ ठाकुर इस मे सम्मिलित हुए थे यह सम्मेलन की उपलब्धि थी इसी अधिवेशन मे सभापति प गौरीशकर ओझा को "साहित्य वा" की मानद उपाधि भेंट कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, ने एक सर्वथा नई पूर्ण परम्परा का प्रारम्भ किया पुन इसके द्वारा राजस्थान में हिन्दी की बजने लगी

मुझे निश्चित रूप से यह स्मरण नहीं है कि श्री नवरत्न जी से सवप्रथ

भेंट कब और कहां हुई, परन्तु मेरा विश्वास है कि अप्रेल, 1935 ई मे इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के चौबीसवें अधिवेशन मे हुई होगी उस सम्मेलन मे मैं उपस्थित था, और वहां वे भी आए थे स 2003 वि (1946 ई) मे कराची मे हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के चौतीसवें अधिवेशन मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने दूसरी बार अपनी मानद उपाधि 'साहित्य वाचस्पति" से हिन्दी के जिन मनीषियो और साहित्यिको का सम्मान किया गया, उनमे प गिरिधर शर्मा "नवरत्न" भी थे, जो सवथा उचित तथा उनकी मनकी महती सेवाओ के अनुरूप ही था

श्री नवरत्न जी से मेरी अन्तिम भेंट सन् 1949 ई के उत्तरार्द्ध मे हुई थी राज्यो के विलीनीकरण के बाद भारत-सरकार ने भूतपूव नरेशो की समुचित योग्यताओं से लाभ उठाने के लिए उन्हे विदेश सेवा मे नियुक्त कर दूतावासो म भेजने का काम शुरू किया इस क्रम मे झालावाड नरेश महाराज राणा हरिश्चन्द्रसिंह जी को बमा मे नियुक्त किया गया उनके बिदाई समारोहो मे सम्मिलित होने मे तब झालावाड गया था उस अवसर पर झालरापाटन नगर मे जो समारोह आयोजित हुआ उसमे झालावाड नरेश के साथ मैं झालरापाटन गया उससे पहिले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सन् 1948 ई के मेरठ अधिवेशन मे मुझे मगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया था तब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा दिये जाने वाले इस मगलाप्रसाद पारितोषिक का अपना विशिष्ट महत्व था और इसे एक गौरवपूवक उपलब्धि माना जाता था अत इस अवसर पर श्री नवरत्न जी ने महाराज राणा हरिश्चन्द्रसिंह जी को मेरी इस उपलब्धि की जानकारी देते हुए, इसे हिन्दी साहित्य का "नोबल पुरस्कार" वर्णित कर मेरी इस सम्प्राप्ति को विशेष रूपेण गौरवान्वित किया था

स्वर्गीय प गिरिधर शर्मा "नवरत्न" की साहित्य साधना की परम्परा आज भी उनकी विदुषी पुत्री सुश्री शकुन्तला कुमारी "रेणु" मे यथावत् चल रही है, जो स्वर्गीय श्री गिरिधर शर्मा "नवरत्न' की "सूक्ति मुक्तावली" को प्रकाशित करवाने वाली हैं

सीतामऊ (म.प्र)

युगलकिशोर चतुर्वेदी

जन जागृति के कवि नवरत्नजी

झालरापाटन (राजस्थान) निवासी स्व प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के साथ मेरा परिचय काफी समय पूर्व से रहा है भरतपुर से उनका पुराना पारिवारिक सबध रहने के कारण युवावस्था मे उनका यहा प्राय आना-जाना रहता था जहा तक मुझे स्मरण है उस समय कवि के रूप मे इतने प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय नही हुए थे जितने सस्कृत के उद्भट विद्वान् तथा वेदान्त दशन के प्रकाण्ड पडित के रूप मे जाने जाते थे उन दिनो उनके भाषण बडे गभीर तथा दाशनिक होते थे और वे कई-कई घटो तक चलते रहते थे फिर भी श्रोतागण उन्हे ध्यान से सुनते और प्रभावित होते थे

बचपन की यादो म 'नवरत्नजी' की कविताओ की याद अब भी सुरभित है उनकी कविताओ मे राष्ट्रीयता और ओजस्विता कूट कूट कर भरी थी इन्हीं से आकर्षित हुआ मैं जीवन भर उनका प्रशसक बना हू

मुझे उनके निकट सम्पक में आने तथा प्रेमपूर्ण आतिथ्य ग्रहण करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है अत जब उनके देहावसान का दुखद समाचार पढा तो उससे मर्मान्तिक वेदना का अनुभव करना तथा उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करना सवथा

स्वाभाविक था परन्तु मेरे पास उन्हे श्रद्धांजलि देने के लिए शब्द ही कहा थे ? तब से लेकर आज तक मैं यही अनुभव करता रहा हू कि ६0 वर्ष पूर्व देश प्रेम, हिन्दी की भक्ति तथा साम्प्रदायिक एकता के जिन उदात्त भावो को उन्होने अपनी कविताओं मे गुम्फित किया उन्हें प्रचारित-प्रसारित करना ही उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि देना है आज जब हम पूर्ण स्वतन्त्र हैं और राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक हैं तब तो नवरत्न जी की भावोदीप्त और राष्ट्रीय ओज से भरी कविताओ को पढाना और उन्हे जन जन तक पहुचाना और भी आवश्यक है

सर्व प्रथम हम उनके स्वदेश-प्रेम की एक रचना लें

उन्होने लिखा —

उदय न होगा भानु पूर्व छोड पश्चिम मे,
आकर्षण शक्ति कहीं धरा की न जावेगी
हिलेगा न हिमालय चाहे जसी हवा चले,
मणिमय दीप की न ज्योति बुझ पायेगी
बहेगी न उल्टी गगा, झुकेंगे न वीर सिर
प्रकृति स्वधर्म से न कभी चूक जावेगी
टरेंगे न ब्रह्मवाक्य, भोगेंगे स्वराज्य हम,
सम्पदा यहाँ की यहीं पीछी लौट आवेगी

× × ×

जब कवि की स्वराज्य के प्रति इतनी तीव्र उत्कण्ठा तथा उसकी प्राप्ति के अवश्य-भावी होने मे ऐसी दृढ आस्था है तो उसमे देशप्रेम की भावना की उतनी ही तीव्र उत्कण्ठा होना भी स्वाभाविक है अपने देश के प्रति उनके जो विचार है उसके उत्थान हेतु देशवासियो के क्या क्या भाव होने चाहिए तथा तदर्थ किन-किन विशेष कर्त्तव्यो का पालन किया जाना आवश्यक है, इस सत्य को व्यक्त करने के लिए उनकी निम्न लिखित कविता कितनी मार्मिक है, इसे भावना प्रधान सहृदय व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है —

मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीव-प्राण
मेरा सनमान मेरे देश की बडाई मे
जियूगा स्वदेश हित, मरूगा स्वदेश काज
देश के लिए न कभी करूगा बुराई मैं

भीषण भयंकर प्रसंग में भी भूल के भी
भूलूंगा न देश हित, राम की दुहाई, मैं
जब लौं रहेगी सांस, सर बस लुटा दूंगा
ईश को भी झुका लूंगा देश की भलाई में

× × ×

जो व्यक्ति सांस रहते देश के हित में सर्वस्व लुटाने के लिए कृतसंकल्पी हो उसके लिए देश की भलाई में ईश्वर को झुका लेना कोई असंभव बात नहीं।

राजस्थान जैसे राजनैतिक चेतना की दृष्टि से पिछड़े प्रदेश के झालावाड़ जैसे छोटे से राज्य के दरबारी कवि के हृदय में देशप्रेम की इतनी प्रबल लालसा उस युग में प्रकट करना, जब देशभक्ति की चर्चा करना या 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण तक करना अक्षम्य अपराध माना जाता था, सराहनीय साहस ही कहा जा सकता है।

स्वदेश के प्रति असीम प्रेम तथा उसकी भलाई के लिए सर्वस्व निछावर करने की प्रबल इच्छा हो, परन्तु देशोत्थान के लिए वहां के निवासियों में पारस्परिक प्रेम तथा भिन्न भिन्न धर्म और सम्प्रदायों के प्रति आदर एवं सम्मान के भाव न होकर उनके द्वारा असहिष्णुता का परिचय दिया जाता हो तो, उस देश का कैसे भला हो सकता है? अथवा ऐसे लोगों की मातृभूमि कष्टकलाप क्यों न भोगे? इस ओर इंगित करते हुए कवि ने कितने सुन्दर विचार व्यक्त किये हैं —

'जाना नहीं अच्छा कभी जैनियों के मन्दिर में"
"किसी भांति अच्छी नहीं कृष्ण की उपासना"
"शंभु का स्मरण किये होना जाना क्या है, कहो!"
"राम नाम लेने से क्या सिद्ध होगी कामना?"
"म्लेच्छ हैं मुसलमान' 'हिन्दू बड़े काफिर हैं"
ऐसी हो परस्पर में बुरी जहां भावना
प्रेम नहीं आपस का, एक फिर क्यों कर हो?
क्यों न भोगे हिन्द माता नयी नयी यातना??

× × ×

अब बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यदि हमारे देश के लोग भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के प्रति सहिष्णुता की बात करें तो कोई असाधारण बात नहीं क्योंकि अब तो पिछले

चार दशको से राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के उपदेशो और काग्रेस के निरतर प्रचार ने इन भावो को सवसाधारण तक पहुचा दिया है परन्तु इस शताब्दी के दूसरे दशक के प्रारभ मे साम्प्रदायिक एकता का इतने स्पष्ट शब्दो मे सदेश सुनाना दिव्यदृष्टि के विचारक या कबीर जैसे समाज सुधारको के लिये ही सभव हो सकता है

इतने ऊचे दर्जे के देशभक्त, स्वराज्य प्राप्ति के लिये मर मिटने वाले तथा साम्प्रदायिक एकता के ऐसे बडे पक्षधर कवि का अपनी मातभाषा के प्रति आत्मीयता के कैसे भाव होने चाहिए इसका भी दिग्दर्शन उन्होने अपनी कविताओ द्वारा प्रचुर मात्रा मे कराया है नवरत्नजी की मान्यता थी —

अगरेजी, जर्मन, ग्रीक, फ्रेंच, लैटिन, त्यो
    रशियन, जापानी, चीनी, प्राकृत प्रमानी हो
तमिल, तलगी, तूलू, द्रविड, मराठी, ब्राह्मी
    उडिया, बगाली, पाली गुजराती छानी हो
जितनी अनार्य-आर्य भाषा जग जाहिर है
फारसी अरबी, तुर्की सब मन आनी हो
जनम वृथा है तो भी मेरे जान मानव को
    हिन्द मे जनम पा के हिन्दी जो न जानी हो"

यह है किसी समय की उपेक्षित तथा वतमानकालीन राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम ! जिससे प्रेरित होकर सस्कृत के उद्भट विद्वान तथा अन्य कितने ही प्रादेशिक भाषाओ के पण्डित होते हुए भी उन्होने भावमयी काव्यधारा हिन्दी के माध्यम द्वारा ही प्रवाहित करना समीचीन समझा साथ ही आपकी कविता रीतिकालीन शृगारी कवियो की भाँति ऐश्वय और विपुल वभव की गोद मे पले हुए राजामहाराजाओ के मनोरजन अथवा बौद्धिक विलास के लिये न होकर भारत जसे पिछडे हुए, रोजी रोटी के सघष मे रत देश के जनसाधारण को प्रेरणा देने तथा उसका पथ प्रदशन करने के लिये ही है इसीलिये झालावाड नरेश के राजकवि होते हुए भी नवरत्न जी जनकवि माने जाते हैं इनके अतिरिक्त विभिन्न विषयो से सबधित आपकी और भी उपयोगी रचनायें हैं जिनको प्रकाश मे लाने की ओर राजस्थान सरकार अथवा राजस्थान साहित्य अकादमी को अविलम्ब ही चेष्टा करनी चाहिये

अशोक मार्ग, सी स्कीम,
जयपुर,

जवाहरलाल जन

राजस्थान के मूर्द्धन्य राष्ट्रीय कवि

हो चित मे निभयता जहा, ऊचा जहा पै जनसीस होवे ।
स्वतत्र हो ज्ञान सदा जहा पै, होवे जरा भी उसमे न बाधा ।

× × ×

होवे जहा पौरुप स्रोतभारी, बहे जहा से शुचि कमधारा
दिशा दिशा मे बहती हुई सो, सदव अच्छे फल दे हजारो ।
कुरीतियो की मरु बालुराशि, विचार स्रोत, पथको न ढाके ।
नेता जहा तू सब काम का त्यों, विचार, आमोद, प्रमोद का हो ।

× × ×

स्वतत्रा के उस स्वग मे तू, मेरे प्रभो, भारत को बिठादे ।

1929 का वर्ष, झालरापाटन के एक सादे एक मजिले घर के खुले आगन मे, रात्रि के प्रारभ मे, 45 वर्षीय प्रौढ कवि ने अपनी रचनाए 20 वर्षीय अण्डरग्रेजुएट को अत्यत प्रेम से सुनाई इनमे बगला भाषा से अनूदित हिन्दी गीताजलि का उपयुक्त पद्य भी था मैंने अग्रेजी गीताजलि की कविता का बहुत विस्तार से महाराजा कालेज के

अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष श्री दिनेशचन्द्र दत्त से अध्ययन किया था जितना आनंद मुझे अंग्रेजी काव्य को सुनकर और समझकर आया था, उससे कहीं अधिक आनंद कवि नवरत्नजी से हिन्दी पद्यों को सुनकर आया तभी से मेरा भक्ति संबंध कविजी से प्रारंभ हुआ जो पूरे परिवार के साथ स्नेह-संबंध में विस्तृत हुआ बाद मे उनके पुत्र ईश्वरलाल शर्मा और पुत्री शकुंतला रेणु से मैत्री-संबंध गहरा हुआ क्योंकि ईश्वरलालजी दैनिक लोकवाणी से संबद्ध होकर मेरे साथ कई वर्ष रहे शकुन्तला की काव्य प्रतिभा से अधिक उसकी पितृसेवा और पितृभक्ति ने मुझे प्रभावित किया शकुंतला ने नवरत्नजी की अप्रकाशित विपुल साहित्य-संपत्ति का बड़े परिश्रम से संयोजन तथा संपादन करके रखा है

फिर तो नवरत्नजी के साथ कई बार मिलना हुआ और हर बार उनसे मिलना, काव्य चर्चा और राष्ट्रीय चर्चा का उदात्त प्रसंग ही बन गया उनका हृदय काव्यपूर्ण था तो दृष्टि राष्ट्रीय नवरत्नजी का कवित्व-निर्झर अटूट था, वह रात दिन झरता ही रहता था, बातचीत मे, विनोद मे घूमने फिरने मे, काव्य-रचना मे, अनुवाद मे, कहानी उपन्यास मे—शायद उनका प्रत्येक जागृत क्षण काव्यमय हो गया था पिछले बीस वर्षों मे उनकी दृष्टि क्षीण होकर समाप्त हो गई थी, तब वे शकुंतला को अपनी रचनाएं लिखवा देते थे, पर जिस गति से वह लिख पाती थी, उनकी रचना की गति उससे कहीं अधिक तीव्र रहती थी उनकी जन्म-शताब्दी के अवसर पर उनकी सारी अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह प्रकाशित हो सके तो वह हमारी नवरत्नजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी

नवरत्नजी हिन्दी के पंडित और मर्मज्ञ तो थे ही, वे हिन्दी को स्वतन्त्र हिन्द की राष्ट्रभाषा मानते थे और उसे इस पद पर आसीन देखते थे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, फारसी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी का ज्ञान भी गहरा और व्यापक था इन सब भाषाओं की अनेक उत्तम रचनाओं का अनुवाद इन्होंने अपने जीवन मे किया इन सब भाषाओं से उन्हें प्रेम था, पर इसके साथ ही उनका दृढ विश्वास था कि हिन्द के निवासी को तो हरेक को हिन्दी आनी ही चाहिये उनका मानना था—

जन्म वृथा है तो भी मेरे जान मानव का
हिन्द मे जनम पाके हिन्दी जो न जानी हो।

नवरत्नजी को अपने देश के प्रति अगाध प्रेम था उन्होंने अपने आप को देश के साथ एकाकार कर के कहा था—

मेरा देश-देश का मैं, देश मेरा जीवन-प्राण,
मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई मे।

जिऊगा स्वदेश हित, मरूगा स्वदेश काज ।
देश के लिये न कभी करूगा बुराई मैं ॥
भीषण भयकर प्रसग मे भी भूल करके भी
भूलूगा न देश हित राम की दुहाई मैं ॥
जब लो रहैगी सास सवस्व भी लुटा दूगा ।
ईश को भी झुका लूगा देश की भलाई मे ।

ईश को भी झुका लेने का साहस और तमन्ना कवि मे ही हो सकती है ईशोपनिषद के ऋषि ने 'कविमनीषी परिभू स्वय भू' कह कर ईश्वर की परिभाषा की है

इतना ही नहीं नवरत्न जी ने यह भी चाहा है—मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन, मेरो जीव, मेरो सब लगै देश की भलाई मे

नवरत्न जी की अपने देश की परिभाषा भी व्यापक से व्यापक और सूक्ष्म से सूक्ष्म थी इसका बडा मनोरजक वर्णन उन्होने निम्नलिखित पद्य मे किया है—

ईश के प्रपच बीच सार व्योम मडल है
व्योम मडल भांति सूयचक्र बलिहारी है ।
सूयचक्र बीच सार भूमि है सुहानी सारी
सारी भूमि भाति एशिया की भूमि न्यारी है ।
एशिया मे भारत, भारत माहि राजस्थान
राजस्थान बीच झालावाड शोभावारी है ।
झालावाड मह सार जननी महाजनो की
जन्म भूमि प्राण प्यारी पाटन हमारी है ।

नवरत्न जी ने अपने देशप्रेम का प्रारम्भ ईश्वर की सृष्टि की परिधि से करके उसकी पूर्णता अपनी जन्म भूमि झालरापाटन नगर के बिन्दु मे की गनीमत है कि कविजी पाटन पर रुक गये, वे अपनी प्रतिभा से अपनी जन्म भूमि को झालरापाटन के अपने छोटे से जराजीर्ण सफेद घर मे भी केन्द्रित कर सकते थे कौन रोक सकता था—जहां न पहुचे रवि, वहा पहुचे कवि

जब यह देश गुलामी की अधेरी रात मे बेहोश था, तब कवि ने देश को जगाया उसे साहस बधाया था—

उदय न होगा भानु पूव छोड पश्चिम मे
आकपरण शक्ति धरा की न कही जायेगी।
हिलेगा न हिमाचल चाहे जैसी हवा चले
मणिमय दिये की न ज्योति बुझ पायेगी।
बहेगी न उल्टी गगा, झुकेंगे न वीर सिर
प्रकृति स्वधर्म से न कही चूक पायेगी।
टरेंगे न ब्रह्म वाक्य, भोगेंगे स्वराज सुख
सपदा यहा की यही पीछे लौट आयेगी।

और सचमुच 1947 में स्वराज्य आ गया, अग्रेज इस देश से चले गये, पर 'अग्रेजियत' यहां छोड गये जो भारतीय राज्यकर्ताओ की छत्रछाया मे दिन दूनी और रात चौगुनी बढ रही है, फिर भी आशा है कि नवरत्नजी के ब्रह्म-वाक्य सिद्ध हो के रहेगे और हम स्वराज्य सुख भोगेंगे और इस 'हमारे' देश के अतिम नागरिका को सबसे पहले शामिल किया जायेगा कहना न होगा कि जिस स्वतत्रता के स्वग की प्राथना रवीद्रनाथ ठाकुर ने तथा उनका अनुसरण करके नवरत्नजी ने की थी, उससे हम अभी कोसा दूर हैं, पर इन कवियो की दृष्टि हमे आश्वस्त भी करती है

कवि ने मृत्यु के पश्चात् अपने स्मारक पर अकित करने के लिये अपना चरित्र सूत्ररूप म स्वय लिख दिया था—

अनुचित सत्ता वशीभूत हो शीश झुकाना,
कायरता का काम सदा जिसने था जाना॥
रहा सदा स्वाधीन किया निजमन का चाहा।
किया सदा उपकार उच्चतर चरित निवाहा॥
दु खो से ना डिगा, न फूला सुख मे आकर
सोता है इस ठौर वही कवि गिरधर नागर॥

इस नागर कवि के कर कमलो मे उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर हार्दिक श्रद्धाजलि

साधारण मानव, विशेष मानव और महामानव इन तीनो रूपो का समन्वितरूप-सुधारक मानव, मानव की इन विभिन्न कोटियो मे से मैं अपने निजी अनुभव से स्व गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' को सुधारक मानव मानता हू सुधारक मानव मे सामान्य से लेकर महामानव तक के गुण स्वत अनुस्यूत रहते हैं तभी उनमे सुधार की चहुमुखी क्षमता आती है 'नवरत्न जी' मानव -चरित्र और स-प्रयासो के सोपान पर चढते रहने के अपने उत्साह को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति देकर सदव मानव को ऊचा उठाने की प्रेरणा देने मे कृत सकल्प रहे यह काय न सरल है, न ही सवसाधारण इसके सपादन के लिए सक्षम ही होता है देवात्मा या ऋषि अश ही मानव सुधार काय को प्रतिफलित कर सकता है मानव-सुधार इकाई रूप से समाज सुधार के विस्तृत क्षेत्र को अपने स्नेहाञ्चल मे समेट लेता है

कवित्व हमारे चरित्रनायक का स्वभाव था, मिठास आपका सम्मोहन मत्र था समाज सुधार और देशभक्ति का सकल्प था आपका साध्य जिसकी सफलतापूवक पूर्ति के लिए आपने राष्ट्र भारती (हिन्दी) को ही एक मात्र साधन के रूप मे अपनाया था

"नवरत्न' जी स्वभाव से ही सवधमसमभावी थे सम्प्रदायवाद तथा मतपथवाद को पारस्परिक कलह, वमनस्य और ईर्ष्या का स्रोत मानकर सदव उसे व्यक्ति, समाज और देश के लिए घातक मानते रहे अपनी कविताओ मे धम के नाम पर आपसी विद्रोह के विरुद्ध ये उद्गार द्रष्टव्य हैं —

जाना नही, अच्छा कभी जनियो के मन्दिर मे,
किसी भाति अच्छी नही कृष्ण की उपासना ।
शम्भु का स्मरण किये होना जाना क्या है ?
राम नाम लिए से क्या सिद्ध होगी कामना ?
हैं म्लेच्छ मुसलमान हिन्दू बडे काफिर हैं ।
ऐसी हो परस्पर मे बुरी जहा भावना ।
प्रेम न हो आपस का एक फिर क्यो कर हो ?
क्यो न भोगे हिन्द माता ? नयी-नयी यातना ?

इस कविता मे युग बोल रहा है और साथ ही भारतीय समाज का आपसी रागद्वेष भी साकार हो उठा है 'नवरत्न" जी सुधारक थे उन्हे पाखण्ड पसद नहीं वे सच्चे समाजवादी थे समता के हामी (पक्षधर) और प्रचलित सम्प्रदायवाद के कट्टर विरोधी थे प्रस्तुत कविता का एक एक शब्द इस नग्न सत्य को मुखरित कर रहा है

"नवरत्न" का कुशल कवि देशप्रेम मे एकनिष्ठ होकर भी मानवता के व्यापक

दायरे को अपने मे समेटे हुए है निम्न कविता मे कवि के हृदय की विशालता ने अपनी जन्मभूमि के प्रेम को जिस प्रकार अंक म समेटा है देखते ही बनता है —

ईश के प्रपच सावभौममण्डल है,
व्योममण्डल भाति सूयचक्र बलिहारी है,
सूयचक्र बीच सारभूमि है सुहानी सारी,
सारी भूमि भांति एशिया की भूमि प्यारी है,
ऐशिया मे भारत और भारत माहि राजस्थान,
राजस्थान बीच झालावाड शोभा वारी है,
झालावाड गेह सार जननी महाजना की,
जन्मभूमि प्राणप्यारी "पाटन" हमारी है ।

अपनी जन्मभूमि पाटन के पाटम्बर मे ब्रह्माण्ड को समेट बैठना स्व नवरत्न जी जैसे "कल्पना-केसरी" का ही काम था

आपकी अन्य रचनाओ मे भी देशप्रेम और राष्ट्रीयता के भाव प्रचुर मात्रा में परिलक्षित होते है निम्न उदाहरणो से यह कथन स्वय ही समर्थित है—

"मेरा देश, देश का मैं देश मेरा जीवन प्राण,
मेरा सम्मान मेरे देश की बडाई मे।"
तथा
"चर्चा जहा देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले,
और न खुले कही खुदा की खुदाई म ।"

× × ×

इन पक्तियो मे देशप्रेम की सीमा हो गयी खुदा की खुदाई एक तरफ और कवि का देशप्रेम एक तरफ; इसी प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी आपने जो कुछ लिखा तन्मय होकर लिखा है, निम्नलिखित पक्तिया आपके हिन्दी अनुराग की मुह बोलती गवाहिया हैं —

अग्रेजी, जमन, फ्रेंच, ग्रीक, लैटिन, यो
रशियन, जापानी, चीनी, प्राकृतिक मणानी हो।
तमिल, तेलगू तुल्लू द्राविडो, मराठी, ब्राह्मी,
उडिया, बगाली, पाली, गुजराती छानी हो।
जितनी अनाय आय भाषा जग जाहिर है
फारसी ऐराबी तुर्की शबनम आनी हो ।
जन्म वृथा है तो भी मरे जाने मानव का,
हिन्द मे जन्म लेकर हिन्दी न जानी हो ।

विवेचना

- मूलचन्द पाठक

पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न एवं उनका संस्कृत कृतित्व

नाना देशे नाना भाषाः रम्याः प्रिय विराजन्ते ।
किन्तु वदामस्सत्य स्वारस्य संस्कृतस्यान्यत ।।

(गिरिधरसप्तशती, 697)

विभिन्न देशों मे अनेकानेक सुन्दर भाषायें विद्यमान हैं, पर हम सत्य कहते हैं कि संस्कृत का अपना ही कुछ विलक्षण सौन्दर्य है

राजस्थान मे झालावाड से लगभग तीन मील दूर स्थित झालरापाटन अपने सुरम्य प्राकृतिक परिवेश एव प्राचीन मन्दिरो के लिए प्रसिद्ध है इसी कस्बे के एक कोने मे सरस्वती के मौन साधक प गिरिधर शर्मा नवरत्न का आवास "नवरत्न सरस्वती भवन" उनकी पुण्य स्मृति को सहेज कर उपेक्षित सा खडा मन मे एक टीस सी जगा देता है

संयोग से मैं पंडित जी का सम्बन्धी हू वे मेरे चचेरे भाई के श्वसुर थे भाई

साहब के विवाह मे मैं सम्मिलित हुआ था, पर तब मेरी नादान उम्र थी साहित्य और साहित्यकार शब्द भी तब मेरे लिए अपरिचित थे उस विवाह की कुछ स्मृतिया मेरे मन मे शेष हैं, पर उनका पडित जी के व्यक्तित्व या साहित्य से कोई सम्बध नही है

मुझे पडित जी को पहली बार अच्छी तरह देखने और उनके निकट सम्पर्क म आने का अवसर सन् 1951 मे मिला उस समय मैं कॉलेज म आ चुका था तथा साहित्य मेरा प्रिय विषय था तब किसी पारिवारिक काय से मुझे जयपुर से पाटन जाना पडा गया तो एक-दो दिन के लिए ही था पर आग्रहवश पाच-छह दिन रुक जाना पडा शायद मेरा मन भी यह चाहता था पडित जी के प्रति मेरे मन मे गहरी श्रद्धा थी मुझे अयाचित ही उनका सान्निध्य मिल गया

उस समय पडित जी की उम्र लगभग 70 वष की रही होगी अनेक वर्षों से वे अन्धत्व से ग्रस्त थे उनका बाह्य व्यक्तित्व गरिमामय एव प्रभावशाली था कद काठी अच्छी थी पर स्वास्थ्य ह्रासो मुख था अन्धता ने उन्हे गतिहीन कर दिया था जिसका असर उनकी शारीरिक दशा पर भी पडना स्वाभाविक था उनकी चारपाई घर की पोली मे घुसते ही एक बरामदानुमा कमरे मे जो चौक की ओर खुलता था बिछी रहती थी वही वे बठे या लेटे रहते थे बीच बीच मे वे कुछ बोलते या किसी को बुलाते रहते शायद अकेलापन उन्हे रास नही आता या घर के लोग स्वभावत अपने दनिक कार्यों मे व्यस्त रहते यह सम्भव नही था कि उनके हर बुलावे का उत्तर दिया जाता या कोई उनके पास लगातार मौजूद रहता पडित जी की पत्नी श्रीमती रत्नज्योत्स्ना देवी एव पुत्री सुश्री शकुन्तला कुमारी रेणु अपनी व्यस्तताओ म भी उन्हे सभालती रहती थी

वहा मैं फुर्सत मे था तो अधिक से अधिक समय पडित जी के पास गुजारता कभी वे अखबार पढवाते तो कभी कोई पुस्तक उस उम्र मे भी उनकी अध्ययन म पर्याप्त रुचि थी शारीरिक असमथता तो थी पर उनका मन सदैव क्रियाशील रहता वे ध्यानस्थ होकर कुछ सोचते रहते मन ही मन कविता बनती रहती जब वह पूरी हो जाती तो लिखने के लिए आवाज देते पास बठाकर लिखवाते लिखवाकर एक-एक अक्षर पढ़वाते, वतनी ठीक कराते रचना कभी सस्कृत की होती, कभी हिन्दी की एक दो बार उन्होने मुझ से भी लिखवाया उनकी पुत्री शकुन्तला जी इन फुटकर रचनाओ को एक कापी में उतार देती प्राय प्रतिदिन यही क्रम चलता

पडित जी की अन्धताजन्य विवशता देखकर खेद होता, विशेष रूप से इसलिए भी कि जवानी म वे बडे कमशील व्यक्ति रहे थे उन्होने दूर दूर की यात्राए की, अनेक

सस्थाओ की स्थापना की, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ का सम्पादन किया, विद्वानो का सत्सग किया झालावाड नरेश श्री भवानीसिंह जी उन पर बडे कृपालु थे उनके पुत्र राजेन्द्रसिंह जी भी उनका बहुत सम्मान करते थे पडित जी वश परम्परा से राजगुरु थे दरबार के प्रमुख विद्वानो मे उनका स्थान था सयोग से राजा विद्याव्यसनी एव काव्यरसिक थे उनके यहा कवियो और विद्वानो का जमघट लगा रहता दूर-दूर से गुणीजन आते तथा राजसम्मान एव पुरस्कार प्राप्त करते पडित जी इन सारी साहित्यिक गतिविधियो के सूत्रधार थे बाहर के विद्वान अतिथि उनके घर आते, गोष्ठिया होती, चहल पहल रहती अन्धता ने उनकी इस कर्मसकुल जीवनचर्या को सहसा कु ठित कर दिया गतिशीलता एकाएक रुक गयी घूमना फिरना बन्द हो गया बिस्तर से लगकर रह गये धीरे-धीरे स्वास्थ्य भी गिरता गया किन्तु हिम्मत नही हारी प्रतिभा एव वैदुष्य की पू जी पास थी. बैठे-बैठे ही साहित्य-साधना करते रहे समाज को अपने मन की निधि देते रहे

पडित जी का मकान साधारण था रईसी नही थी, पर आर्थिक कष्ट भी नही था वशक्रमागत जमीन-जायदाद थी घर का काम अच्छी तरह चलता था अतिथियो का भी अच्छा सत्कार होता था ब्राह्मणोचित सादा रहन-सहन था आज की तरह आवश्यकताए बहुत अधिक नही थी

घर का वातावरण पुस्तकमय था हर कमरे मे पुस्तको के अम्बार थे घर म कोई और सामान शायद ही दिखाई देता जिधर दृष्टी जाती उधर पुस्तकें ही पुस्तकें मेरी पुस्तको मे विशेष रुचि थी इसलिए जब भी मौका मिलता मैं कौतूहलवश उन्हें उलटता-पलटता अधिकतर सस्कृत व हिन्दी की पुस्तकें थी—प्राय लेखका द्वारा भेटस्वरूप दी हुई पुस्तकें इतनी थी कि उनकी उचित सभाल सभव नही थी योंही इधर उधर बिखरी थी सभव है कुछ खास पुस्तकें निश्चित स्थान पर सभाल कर रखी गयी हो, पर अधिकतर अव्यवस्थित थीं

पुस्तको को देखने से पता लगा कि पडितजी का देश के चोटी के विद्वानो एव लेखको से सम्पर्क या परिचय था वे अपनी नवप्रकाशित पुस्तकें उनके पास भेजते थे उस जमाने के शायद ही किसी प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक की स्वहस्ताक्षरित रचनाए उनके भण्डार म न रही हो

पडितजी अपने जीवन के सस्मरण सुनाते उनकी सभाषण-शैली रोचक थी किस तरह गांधीजी से मिले ? कब कहां किन विद्वानो के सम्पक म आये ? प महावीर प्रसाद द्विवेदी से पहली मुलाकात का रोचक प्रसग भी उन्होने सुनाया बडी अद्भुत थी उनकी

स्मृतियो की सम्पदा वस्तुत साहित्यिक सस्मरणो एव जीवन-अनुभवो के वे एक जीवित सग्रहालय थे

पडितजी का व्यक्तित्व पाडित्यमय था उनकी आकृति एव मुद्रा भी वदुष्य की परिचायक थी पर उनमे अह का लेशमात्र भी नही था वे मूलत सहृदय थे—स्नेह और करुणा से ओतप्रोत वृद्धावस्था एव अ धता के कारण उनके व्यवहार मे निरीहता एव दैन्य का भाव—यदा कदा दिखायी दे जाता था

उन दिनो पडितजी के शरीर मे पीडा रहती थी ज्योही कोई मिलने वाला उनके पास आकर बैठता वे अपना हाथ या पाव लम्बा कर दबाने का सकेत करते मुझे खुशी है कि उक्त प्रवास मे मुझे भी उनकी इस तरह की सेवा करने का किंचित् अवसर मिला

पाच-छह दिन यो ही बीत गये, पर इस दौरान एक ऐसे व्यक्तित्व का परिचय मिला जो असाधारण क्षमताओ एव सभावनाओ से परिपूर्ण होते हुए भी शारीरिक विवशता के कारण असमय मे ही कु ठित होकर रह गया तथा अपनी प्रतिभा के विभिन्न आयामो को जीवन-कम मे पूर्णतया रूपान्तरित नही कर सका

नवरत्नजी को सस्कृत विद्या पैतृक परम्परा से प्राप्त हुई थी अपने पिता पडित व्रजेश्वर शर्मा से उन्होने सस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किया बाद म पाटन जयपुर एव वाराणसी के विद्वनो के सान्निध्य मे रहकर सस्कृत साहित्य एव शास्त्रो का गभीर अध्ययन किया उर्दू, फारसी आदि भाषाए भी सीखी गुजराती उनकी मातृभाषा थी अग्रेजी, मराठी बगला आदि का भी अभ्यास किया पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्हे अपना अध्ययन-क्रम बीच मे ही छोडना पडा झालावाड नरेश भवानीसिंह जी की सत्प्रेरणा स वे साहित्य-साधना म दत्तचित हो गये

पडित गिरिधर शर्मा का सस्कृत कृतित्व विस्तृत एव विविध कहा जा सकता है उसम लगभग 30-35 रचनाए सम्मिलित हैं इनमे से लगभग एक तिहाई ही प्रकाशित हुई हैं शेष अभी तक अप्रकाशित हैं प्रकाशित रचनाओ मे 1– श्री भवानीसिंह कारकरत्नम्, 2– अमरसूक्तिसुधाकर, 3– श्री भवानीसिंहसद्वृत्तगुच्छ, 4– नवरत्ननीति, 5– गिरिधरसप्तशती 6– प्रेमपयोधि 7– योगी, 8– अभेदरस, 9– न्यायवाक्सुधा, 10– शोरमण्डलम् 11– जापानविजयम् आदि उल्लेखनीय हैं दुर्भाग्य स ये सभी रचनाए अब उपलब्ध नहीं होतीं

अप्रकाशित रचनाओ म कुछ अनुवाद हैं, जस कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि का,

फारसी के करीमा और गुलिस्तां का तथा अंग्रेजी कवि ग्रे की एक शोकान्तगीतिका चाणक्य के नीतिसूत्रों पर चाणक्यसूत्रकारिका तथा मयूर कवि के सूर्यशतक पर संस्कृत टीका भी आपने लिखी मौलिक रचनाओं मे श्रमचतुर्विंशति, आत्मनिवेदनम्, नवरत्नोपदेश', नक्षत्रमाला, प्रश्नोत्तरमाला, नवरत्नसुभाषितानि, भारतवन्दना, मातृभूमिवन्दना, राजस्थानवन्दना धरावन्दना, रत्नज्योत्स्नाष्टकम्, गंगाष्टकम्, बालकृष्णाष्टकम्, नागरतन्त्रम् आदि परिगणनीय हैं

नवरत्नजी का उक्त कृतित्व सख्या की दृष्टि से प्रभावशाली है पर मात्रा की दृष्टि से उतना विपुल नहीं है तथापि उसे बहुत थोडा भी नही कहा जा सकता विषयवस्तु एव शैली की दृष्टि से उसमे पर्याप्त वैविध्य है उनकी कुछ रचनाए प्रशस्तिपरक है, कुछ देशभक्ति के गीत हैं, कुछ ईश्वरभक्ति, देवस्तुति एव दार्शनिकता से ओतप्रोत हैं तो शेष सभी नीतिपरक उन्होने विभिन्न भाषाओ की कतिपय प्रसिद्ध कृतियो का संस्कृत मे अनुवाद भी किया है इनमे उमरखैयाम को रुबाइयो तथा गीताञ्जलि के अनुवाद महत्वपूर्ण हैं

पडितजी मुख्यत पद्यकार हैं गद्य का उन्होने विरल ही प्रयोग किया है— केवल दो कृतियो मे ये दो कृतियां व्याकरण एव छन्दशास्त्र से सम्बन्धित हैं इनका मूलअंश' पद्यात्मक है पर उस पर व्याख्या सस्कृत गद्य म प्रस्तुत की गयी है पडितजी म गद्य लेखन की अच्छी क्षमता है पर दुर्भाग्य से उन्होने इस माध्यम का अधिक उपयोग नहीं किया।

नवरत्न जी के साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण एव विकास 19वी सदी के अंतिम भाग तथा 20वी सदी के पूर्वार्द्ध क भारतीय जनजागरण एव स्वातन्त्र्य-आदोलन की विराट चेतना के प्रभाव म हुआ इस युग की स्वातन्त्र्य भावना, राष्ट्रप्रेम, समाज सुधार की आकाक्षा, स्वदेशी-प्रेम तथा देश के नैतिक पुनर्निर्माण की चेतना ने नवरत्नजी को गहराई से प्रभावित किया तथा उनके काव्य को एक निश्चित दिशा दी वे सस्कृत की प्रगतिशील परम्परा के अनुगामी ह अपने युग की आधुनिकता को उन्होने सहज भाव से स्वीकार किया ह सामान्य सस्कृत पडितो के समान वे अतीतोन्मुखी एव रूढिवादी नही हैं विगत के प्रति गौरव का भाव रखते हुए भी उन्होने आधुनिक विचारो को यथाशक्ति अपनाया है यही कारण है कि वे अपनी रचनाओ म परम्परावादी के रूप मे नहीं अपितु अपने युग की चेतना के सहभागी के रूप म ही स्मरण किये जाएगे

पडितजी मूल रूप से मुक्तक कवि हैं, प्रबन्ध रचना म उन्होने रुचि नही दिखाई

उनका कृतित्व अधिकतर नीतिपरक स्फुट पद्यो, गीतियो, लघु कविताओं तथा सुभाषितों के रूप मे प्रस्फुटित हुआ है उनकी लम्बी रचनाए जैसे अमरसूक्ति-सुधाकर, प्रेमपयोधि तथा गीताञ्जलि आदि अनुवाद हैं या गिरिधरसप्तशती, आर्योपदेशरत्नमाला आदि मुक्तक पद्यो के सकलन है सभवत राजदरबार से सबध के कारण या जीवन के उत्तरभाग मे अन्धे हो जाने के कारण वे प्रब धकाव्य की रचना मे प्रवृत्त नहीं हुए

नवरत्नजी के काव्य की कुछ दिशाए स्पष्टत पहचानी जा सकती हैं वे झालावाड नरेश के राजगुरु एव आश्रित कवि थे ये राजा स्वय भी बडे गुणवान्, प्रजावत्सल एव विद्वान् थे ऐसे आदश राजा को पाकर कवि का उनके विषय मे मौन रहना सभव नही था वसे भी सस्कृत मे आश्रयदाता राजा के प्रशस्तिगान की पुरानी परम्परा रही है राजस्थानी का चारण-काव्य उसी परम्परा मे आता है नवरत्नजी यद्यपि नर-वणन के पक्षधर नही है पर राजा के सद्गुणो पर वे इतने मुग्ध हैं कि उनकी प्रशसा मे लेखनी उठाने का लोभ-सवरण नही कर सके 'भवानीसिंहकारकरत्नम्" तथा "भवानीसिंहसद्वृतगुच्छ' वसे तो क्रमश व्याकरणशास्त्र और छन्दशास्त्र के ग्रथ हैं, पर लेखक का वास्तविक उद्देश्य शास्त्र के आवरण मे राजा का यशोगान करना ही रहा है यह जरूर है कि पुराने दरबारी कवियो के समान उन्होने अतिरजित वणन नही किया है राजा तो उपलक्ष्यमात्र है जिसके माध्यम से कवि ने आदश एव प्रजावत्सल शासक के सद्गुणो का ही महात्म्य गाया है फिर भी यह कहना गलत नही होगा कि कवि के मन म अपने 'अन्नदाता' को प्रसन्न करने की भी प्रच्छन्न भावना रही है

नवरत्नजी के काव्य का दूसरा महत्वपूण स्वर राष्ट्रीय भावना का है जसा कि कहा जा चुका है, पडित गिरिधर शर्मा कवि व्यक्तित्व का निर्माण एव विकास भारतीय स्वातन्त्र्य-आंदोलन के समानान्तर हुआ वे स्वय इस आदोलन म सक्रिय रूप स शामिल नहीं हुए पर मन से वे इसके समथक थे, उनकी अनेक कविताओं मे राष्ट्रीयता, देशप्रेम एव राष्ट्रभक्ति का स्वर मुखरित हुआ ये कविताए सख्या मे चार-पाच ही हैं, पर उनम कवि की स्वातन्त्र्य-कामना, देशप्रेम एव उसके लिए सवस्व-त्याग की भावना व्यक्त हुई है जसे

देशो म सकलप्रियो विजयते देश नमाम्यादराद्
देशनच्छविरस्ति मेऽप्यनुपमा देशाय स्वस्त्यस्तु मे ।
देशात् कोऽपि मम प्रियो न भुवने देशस्य भक्तोऽस्म्यहं,
देशमन्स्फुरति सदव विमला हे देश! तुभ्य नम ॥

नवरत्न जी के काव्य की तीसरी भावदिशा भगवद्भक्ति के रूप मे प्रकट हुई है धार्मिक ग्रास्था की दृष्टि से वे वष्णव सप्रदाय की पुष्टिमार्गीय शाखा के अनुयायी हैं पोडशी, अभेदरस, ग्रात्मनिवेदनम्, श्रीकृष्णाष्टकम्, गगाष्टकम् ग्रादि कविताग्रो मे कवि की ग्राराध्य श्रीकृष्ण के प्रति अनुरक्ति, द य, दशनाभिलापा, ग्रात्मसमपण, अनुग्रह-याचना ग्रादि विविध भाव निबद्ध हैं "अभेदरस" मे कवि ने भगवान के साथ ग्रपने तादात्म्य का विभि न प्रकार से निरूपण किया है

नवरत्नजी की भक्तिभावना पुष्टिमाग के साप्रदायिक ग्राग्रहो से ग्रस्त है तथापि उसमे यत्रतत्र कवि की भाव-प्रवणता एव समपण भाव की ममस्पर्शी ग्रभिव्यक्ति देखी जा सकती है, विशेष रूप से "ग्रात्मनिवदनम्' म

कवि नवरत्न के का य की ग्रतिम कि तु सबसे महत्वपूर्ण प्रवृत्ति एव दिशा है नीतिविवेचना वे मुख्यत नीतिकवि है उनके काव्य के ग्र य सभी पक्ष गौण हैं सस्कृत म नीतिकाव्य की सुदीर्घ परम्परा रही कौटिल्य, बृहस्पति, विदुर ग्रादि प्राचीन नीतिकार प्रसिद्ध हैं परवर्ती का न मे भतृ हरि का नीतिशतक, पचत त्र तथा हितोपदेश, सस्कृत के विभिन्न काव्यो मे नीतितत्त्व के निरूपण की व्यापक प्रवृति एव सुभाषित सग्रहो म सकलित ग्रसख्य पद्य सस्कृत नीतिकाव्य की मूल्यवान धरोहर है नवरत्नजी का नीति-काव्य इसी परम्परा की त्रयी कडी है सभी समय कवियो ने ग्रपने युग के जीवन-मूल्यो एव सामाजिक परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे नीतितत्व का ग्रभिनव निरूपण किया है नवरत्नजी भी ग्रपने नीति विवेचन म युगीन स्थितियो एव प्रवृत्तियो से प्रभावित हुए हैं उसमे उनके जीवन विवक एव समाज दशन की स्पष्ट ग्रभिव्यक्ति देखी जा सकती है

'गिरधरसप्तशती' नवरत्नजी का प्रमुख नीतिकाव्य है इसके सात सौ पद्यो मे लेखक ने परिवार, समाज राष्ट्र एव जीवन के विभिन्न पहलुग्रो पर ग्रपना चिन्तन सरल कि तु प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत किया है इसम छोटे से छोट विषय स लेकर गभीरतम विषय पर कवि ने ग्रपने विचार प्रकट किये हैं

समाज म स्त्री के कार्यक्षेत्र के बारे म कवि का दृष्टिकोण इस प्रकार व्यक्त हुग्रा है—

वाला इव बाला सम्यक पाठ्या परन्विद ध्ययेम् ।
गृहस्वामिनी सा स्याद, न स्यात्सम्मलनोत्सवा चपला ॥

लडको मे समान लडकियो को भी शिक्षा दी जाय, कि तु यह ध्यान रखना चाहिये कि वे घर की स्वामिनी हो, सम्मलनो की चचल नारी नहीं

निर्बल के श्रम का शक्तिशाली द्वारा किस प्रकार शोषण किया जाता है इसका वर्णन निम्न पद्य म किया गया है —

मूष्यो बिलानि विदधति तेषु भुजगा वसन्ति शक्तिभृत ।
निर्बलकृतश्रमफल बलवन्तो भुञ्जते नितराम् ॥

चुहियाये बिल बनाती हैं, किन्तु उनम शक्तिशाली सप निवास करते हैं निर्बल द्वारा किये गये श्रम के फल को बलवान लोग यो ही हडप जाते हैं

एक अन्य श्लोक मे आधुनिक शिक्षा पर व्यग्य करते हुए कवि ने कहा है —

सकलानि पुस्तकानि प्रणाशयोग्यान्यह मन्ये ।
पितर सुता कुबुद्धि येषा पठनने मन्य ते ॥

मेरे मतानुसार उन सब पुस्तको को नष्ट कर देना चाहिये जिन्हे पढ कर पुत्रगण पिता को मूख मानने लगते हैं स्थिति विशेष म विधवा विवाह का समथन करते हुए नवरत्नजी ने कहा है—

यदि विधवा वैधव्य परिपालयितु चिर न शक्ता स्यात् ।
समय प्रतीक्षमाणा निरीक्ष्य योग्य पति कुर्यात् ॥

यदि कोई विधवा अधिक समय तक वैधव्य का पालन न कर सके तो उसे समय की प्रतीक्षा करते हुए योग्य पति ढूढकर विवाह कर लेना चाहिये

'गिरधरसप्तशती' मे कवि कही सीधे उपदेश देता है, कही अपना मन्तव्यमात्र प्रकट कर चुप हो जाता है, कही किसी बात पर तीखी टिप्पणी करता है तो कही हास्य एव व्यग्य का सहारा लेकर सबको हसा देता है जसे

छित्त्वा नासा स्वीया स्वय सगव गदति जनोनीच ।
किमभून्नासा छिन्ना कि स्वपशकुन परस्याभूत् ॥

नीच व्यक्ति अपनी नाक स्वय ही काट कर गव से कहता है कि मरी नाक कट गयी तो क्या हुआ, दूसरे का तो अपशकुन हो गया

सप्तशती की अनेक सूक्तियो म एक परिचित सा घरेलूपन दृष्टिगत होता है घर के बुजुग की तरह सीख देकर कवि हमे माग दशन देता है, ऊच-नीच समझाता है, लोकव्यवहार की शिक्षा देता है कवि का उद्देश्य हमारे जीवन एव व्यवहार को अधिक सयत, सतुलित एव विवेकयुक्त बनाया है

गिरिधरसप्तशती तथा अन्य कृतियो मे कवि आधुनिकता के प्रति ग्रहणशील रहा है सस्कृत का लेखक होते हुए भी वह रूढिवादी एव पुरातनपथी नही है नये विचारो के लिए उसम खुलापन है अपने समाज और परिवेश के प्रति उसम पर्याप्त जागरूकता है

पडितजी का अधिकाश काव्य विचार-प्रधान है उसमे मननशीलता है, भावो की तरलता एव कल्पना की रगीनी उतनी नही चित्रात्मकता का भी उसमे प्राय अभाव है भाव एव कल्पना की भाषा चित्रमयी होती है, पर नवरत्न जी की कविता मे विचारो का बाहुल्य है जिसके कारण उससे बिम्ब और चित्र प्राय नही उभरते उसम उपदेशात्मकता तथा सपाटबयानी भी प्राय आ जाती है सरलता, सादगी एव स्पष्टता के गुण उसमे है, एक जानी पहचानी निकटता भी है, किन्तु गहरी अनुभूति मे निमग्न करने वाली तन्मयता उसम विरल ही है वह हमे अनुभूतियो की प्रक्रिया म से गुजरने का अवसर नही देती उनका बौद्धिक सार एव निष्कष ही हमारे सामने प्रस्तुत करती है वह मुख्यत नीतिपरक सूक्तियो की कविता है, जिसमे निराकार विचार अधिक हैं, भावमय चित्र कम.

पडित जी की कविता जीवन के धरातल को अधिक छूती है, उसकी गहराई मे नही उतरती वे जीवन को उसके दैनदिन बाह्य व्यवहार मे ही अधिक देख सके हैं, उसकी आन्तरिकता मे कम

द्विवेदी युग की हिन्दी कविता के समान नवरत्नजी का सस्कृत काव्य वर्णनात्मक तथा इतिवृत्तपरक है उसमे सौन्दय के सूक्ष्म स्पन्दन एव जिन्दगी की गहरी पकड कभी-कभी ही देखने को मिलती है

तथापि वे जीवन-परिदृश्य के कुशल पयवेक्षक हैं, इसमे सदेह नही जीवन की सवसामान्य अनुभूतियो एव प्रवृत्तियो को उन्होंने अच्छी तरह देखा, परखा और सूत्रबद्ध किया है किन्तु उनका अतिक्रमण कर वे अन्तस्तल की गहराइयो मे नही जा सके यही उनके काव्य की सीमा है एव शक्ति भी

नवरत्नजी की प्रतिभा प्रथम कोटि की नही है, उसमे मौलिकता की भी कमी है सप्तशती के अनेक पद्यो मे उन्होने प्राचीन सस्कृत कवियो की सूक्तियो को अपनी भाषा मे मात्र दोहरा दिया है अनुवाद कार्य मे उनकी अतिशय रुचि भी सकेत देती है कि उनमे सजनात्मक क्षमता की कुछ न कुछ कमी है काव्य रचना के सभी बाह्य उपकरण उनके पास हैं पर मौलिक उपादान पर्याप्त मात्रा म नही है उनकी कविता को पढ़ते

हुए प्राय लगता है कि जो बात कही गयी है वह हम सबकी जानी पहचानी सी है, उसमे नयापन नही है उसे पद्य मे ढालने की कला मात्र उनकी है

नवरत्नजी का सस्कृत भाषा पर अच्छा अधिकार है उन्होने हिन्दी व सस्कृत दोनो मे पर्याप्त लिखा है, पर उनकी प्रथम प्रेमपात्र सस्कृत है, हिन्दी नही हिन्दी की अपेक्षा सस्कृत को उनकी देन कहीं अधिक प्रतीत होती है वे अपने समय के एक ऐसे सस्कृत रचनाकार है जिन्होने इस पुरानी भाषा को लोकजीवन के निकट लाकर सामान्य जन की आशा, आकाक्षा एव वैचारिकता की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया उनकी सस्कृत सरल, प्रवाहमय एव प्रसादगुण से परिपूर्ण है उसम न कृत्रिमता है और न अलकरण की प्रवृत्ति सस्कृत के पुराने कवियो की तरह शब्द क्रीडा म भी उनकी रुचि नही है पडिताऊपन स रहित उनकी भाषा, सहज, व्यावहारिक एव मुहावरेदार है लोकभाषा के अनेक दनिक प्रयोगो को उन्होने सस्कृत म अपनाया है

पडितजी की भाषा सस्कृत की शक्तिमत्ता की परिचायक है विभिन्न भाषाओ की कृतियो का सस्कृत म अनुवाद कर उन्होने सिद्ध कर दिया है कि यह भाषा दूरस्थ तथा अपरिचित भाषाओ के भावो, विचारो और मुहावरो को भी अपने मे ढालकर सशक्त रूप मे अभिव्यक्त कर सकती है

पडितजी ने अपनी रचनाओ मे विभिन्न शलियो का प्रयोग किया है सस्कृत छन्दो के अलावा उन्होने हिन्दी के भी अनेक लोकप्रिय छन्दो को यथावसर ग्रहण किया है नन्ददास के भ्रमरगीत के अनुवाद 'प्रेमपयोधि' मे उन्होने मूलकृति के छन्द का सस्कृत में बडी दक्षता से उपयोग किया है हिन्दी की गीत शली भी उन्होने अपनायी किन्तु उनका सबसे प्रिय छन्द सस्कृत का आर्याछन्द ही है

आधुनिक सस्कृत लेखको मे नवरत्नजी का अपना स्थान है अपने समकालीन समाज की विविध प्रवृत्तियो को सस्कृत मे प्रतिबिम्बित करने का तो स्तुत्य प्रयास उन्होने किया ही, उसे आधुनिक विचारो की अभिव्यक्ति का समथ माध्यम भी बनाया सस्कृत प्रत्येक युग के चिन्तन, मनन एव श्रेष्ठतम विचारो को अपने मे सचित करती रही है नवरत्नजी का काव्य सस्कृत की इसी सनातन प्रवृत्ति का आधुनिक सस्करण कहा जा सकता है

सस्कृत विभाग,
सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर.

जीवन सिंह

द्विवेदी युगीन साहित्य के प्रतिमान

मनुष्य की जीवन-यात्रा मे समय के पडावों को साफ साफ देखा जा सकता है इतिहास इसी की सूचना है और अगली यात्रा का सबक भी मनुष्य की अन्य यात्राओ की तरह इसकी साहित्य-यात्रा भी चलती है, जिसमे रचनाकार अपने समय के सरोकारो को व्यक्त करने का प्रयास करते है हिन्दी मे आधुनिक भावो और विचारो को सृजित एव प्रेरित करने वालो मे पहला नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है भारतेन्दु ने अपने अल्प-जीवन म अनेक परिवतनकारी काम किए उनकी सबसे बडी बात यह है कि जिस साहित्य को पिछले दो सौ बरसो स जन जीवन का वियोग सहन करना पडा था, उस साहित्य को उन्होने जन जीवन की वास्तविकताओ से जोडा अब साहित्य का मतलब किसी राजा या महाराजा को रिझाना नहीं था और न ही किसी ईश्वरीय महापुरुष के जीवन-चरित का गद्य या पद्य मे अनुवाद करने तक सीमित था दुनिया के दूसरे देशो के साहित्य एव जीवन को देख-जान कर हमार देश के नागरिक का मन भी बदलने लगा था उसे भी यह अनुभव होने लगा था कि साहित्य का ससार, जीवन से उतना स्वतत्र एव पृथक नही है, जितना कि पिछले रचनाकारो ने मान रखा है उन्हे यह लगा कि जीवन की सारी व्यवस्थाओ, सोच-विचार तथा मानव-सबधो का सचालन करने म राजनीति तथा शासनसत्ता का प्राथमिक स्थान है राजनीति

मनुष्य की सचालक है, वह नीति-निर्माण करने का अधिकार रखती है, इस कारण अर्थ-नीति की नियता भी वही है और शिक्षा भी उसके अधिकार से बाहर नहीं है इसका प्रभाव मनुष्य के सास्कृतिक एव सामाजिक जीवन पर होता है जीवन के ये सभी पक्ष उस समय के साहित्यकार को उत्तेजित करने लगे थे और वह कविता की पुरानी रीतियो से अपना पीछा छुडाने के लिए व्यग्र रहने लगा था उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे पुराने परिवेश को नवीनता देने एव यथार्थ सम्बद्ध करने की दृष्टि से सर्वाधिक व्यग्रता एव सक्रियता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मे दिखाई पडती है इनके सबध म आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एक वाक्य म जसे सब कुछ कह दिया है—भारतेंदु के समय भाषा का निखरा हुआ शिष्ट सामान्य रूप प्रकट हुआ था लेकिन "इससे भी बडा काम उन्होने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया, और उसे वे शिक्षित जनता के साहचय म ले आए "

इस समय तक पुराने साहित्य की प्रतिष्ठा थी हिन्दी-कविता का पाठक रस, अलकार, नायक नायिका-भेद आदि से बने सस्कार से तत्कालीन काव्य का मूल्याकन करता था उसके पास ऐसे प्रतिमान अभी तक नही थे, जो साहित्य की परख किसी अन्य गम्भीर आधार पर कर सकें पुरानी रीतियो और परिपाटियो पर चलन वाले साहित्य के प्रतिमान थे तो सही किन्तु वे मनुष्य-जीवन के सम्पूर्ण यथार्थ की दृष्टि से बहुत ओछे पडते थे वे अमीरो रईसो, राजाओ-महाराजाओ की जरूरतो को पूरा करते थे, इस कारण रस, अलकार और नायक नायिका भेद से आगे भी कोई ससार है, यहा तक उनकी दृष्टि नही पहुच पाती थी वे यह नही सोच पाते थे कि समाज का एक बहुत बडा वर्ग दिन रात परिश्रम करता है, खून-पसीना एक करता है, फिर भी उसकी बुनियादी जरूरतो की पूर्ति नही हो पाती ? दूसरी ओर उनके आदर्श राजा महाराजा, सामत एव रईस, बडे अधिकारी कोई बडा काम न करने के बावजूद इतने सम्पन्न और समृद्ध हैं ? ये प्रश्न उठते भी थे तो, भाग्यवाद से वह इनका समाधान कर लेता था कहने का मतलब यह है कि साहित्य के भीतर ऐसे प्रश्न उठाना, आदमी के सोच को साहित्य के माध्यम से इस ओर मोडना साहित्य, राजनीति एव समाज-सभी दृष्टियो से कम खतरनाक नही था

भारतेंदु ने पहली बार अभिव्यक्ति के इसी खतरे को उठाया हिन्दी साहित्य को पुराने रास्ते से हटाकर नए रास्ते की ओर मोडा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस सबध मे बहुत सही लिखा कि "भारतेंदु ने उस साहित्य को दूसरी ओर मोडकर हमारे जीवन के साथ फिर से लगा दिया इस प्रकार हमारे जीवन और सहित्य के बीच जो विच्छेद पड रहा था, उसे उन्होने दूर किया "

कहने की आवश्यकता नहीं कि हिंदी साहित्य मे भारतेंदु ने जो युगांतरकारी काम किया था आग चलकर उसका विकास आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी एव अन्य युगीन रचनाकारों के हाथा हुआ साहित्य और जीवन के प्रगाढ सबध की स्थापना तथा साहित्य की भाषा पर आए नए दायित्व को ध्यान मे रखते हुए द्विवेदी जी न एक नए वातावरण का निर्माण किया उन्होने भारतेंदु के जमाने म आए परिवतन को समृद्ध किया तथा उसकी कमियो से सीख लेते हुए आगे बढ़ने का उद्योग किया उनकी प्रेरणा और अनुभवी नेतृत्व स तत्कालीन साहित्य म जीवन एव साहित्य के सबधो के नए पक्ष उद्घाटित हुए, जो साहित्य के लिए प्रतिमान बने आचाय शुक्ल ने इस समय को 'द्वितीय उत्थान' कहा है तथा इसका समय सवत् 1950 से 1975 स्थिर किया है

जसा कि हम कह चुके हैं कि द्विवेदी युग के पहले ही हमारे देश के सामाजिक—राजनतिक परिवेश म हलचलें दिखाई देती हैं अब अंग्रेजी-राज की आलोचना आरम्भ हो चुकी थी यद्यपि "अग्रेज-राज सुख-साज सजे सब भारी, पै धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी" म भारतेंदु ने भारतीय मानस की दुविधाजनक स्थिति को स्पष्ट कर दिया था बात यह है कि अग्रेज-राज के प्रति सम्मोहन का भाव पूरी तरह नष्ट नही हो पाया था सन् 1900 के आसपास भी ऐसी स्थिति थी कि अंग्रेजी राज का न तो पूरी तरह स्वीकार किया जा रहा था और न ही उसका सम्पूण विरोध हो रहा था फिर भी इतना अवश्य था कि नवजागरण की आकांक्षा उस समय के हरेक रचनाकार के मन म थी नवजागरण की भावना उस समय की रचना के प्रतिमानो म महत्वपूण स्थान प्राप्त कर चुकी थी य रचनाकार अपने समय की पहचान पुराने सिद्धातो के साथ नए विचारो से करना चाहते थे दिवेदी युग स पहले भारतेंदु हरिश्चद्र, बालकृष्ण भट्ट आदि रचनाकारों म नूतन और पुरातन के सघष को साफ साफ देखा जा सकता है और यह भी देखा जा सकता ह कि इस सघष मे नए विचार सफल होते हैं रचनाकार का पक्ष, नूतन का पक्ष बनता है आचाय रामचद्र शुक्ल ने इसको ध्यान म रखते हुए बालकृष्ण भट्ट के सदभ म सही लिखा है कि नूतन और पुरातन का वह सघषकाल था, इसमे भट्ट जी को चिढ़ाने की पर्याप्त सामग्री मिल जाया करती थी समय के प्रतिकूल पुराने बद्धमूल विचारो को उखाडने और परिस्थिति के अनुकूल नए विचारो को जमान म उनकी लेखनी सदा तत्पर रहती थी"

द्विवेदी युग मे कला के इन्ही प्रतिमानो को रचनाकारो ने अपना उद्देश्य बनाया, किन्तु भारतेंदु युगीन रचनाकारो जैसी स्पष्टता, नवीनता तथा विचारो की यथाथता इस युग म नहीं आ पाई भारतेंदु युग मे रचना के नए प्रतिमानो को जितनी स्वाभाविक निश्छलता के साथ स्थापित किया गया था और उन्हे रचना का जितना गम्भीर एव

व्यापक आधार मिला था, उतना द्विवेदी युग म नही मिल सका यद्यपि द्विवेदी युग की रचना भारतेदु युग के प्रतिमानो की परम्परा पर ही आगे बढी कि तु जसी स्वाभाविक स्वच्छ दता का रास्ता बनना चाहिए था, वह इस युग मे नही बन पाया कविता क भीतर श्रीधर पाठक अकेले एसे रचाकर थे, जिसम 'सीधी सादी खडी बोली और जनता के बीच प्रचलित लय' क साथ 'कथा की सावभौम मार्मिकता' देखन को मिलती है इस युग मे श्रीधर पाठक ने भारतेदु युग की परम्परा का विकास कर कविता की सरचना, अभिव्यजना शली, प्रकृति का स्वरूप निरीक्षण तथा जीवन के नए पक्षो को उद्घाटित किया था उनकी स्वच्छ दता का माग सच्चा एव स्वाभाविक था पुरानी कविता म जीवन के विभिन्न विषयो के स्वरूप निरीक्षण पर उतना ध्यान नही दिया गया था, जितना कि उसकी शास्त्रबद्धता पर वे प्रकृति का वणन प्रकृति के विभिन्न रूपो को देखकर नही कर रहे थे अपितु काव्यशास्त्री ग्र थो मे प्रकृति के स्वरूप वणन को पढकर वे प्रकृति पर लिखते थे, इससे चित्रण म सच्ची और स्वाभाविक स्वच्छ दता नही आ पाती थी श्रीधर पाठक ने पुस्तकीय-स्पदनो को प्रमाण न मानकर जीवन-स्पदनो को ही प्रामाणिक माना इसका परिणाम यह हुआ कि रचना को जीवन मे विचरण करने का नया अवसर मिला रीतिकाल म प्रकृति के नाम पर रूढिबद्ध ऋतु वणन लिख जाते थे, जिनम ऋतुओ के शास्त्रीय अनुभव वर्णित होत थे श्रीधर पाठक ने इस बधन स कविता को मुक्ति दिलाई उन्होने 'गुनवत हमत' कविता म हमत ऋतु मे पदा होन वाली मूली, मटर को समाविष्ट कर कविता के लिए उन्मुक्त विचरण करने का नया द्वार खोला

लेकिन पाठक जी जसी उन्मुक्तता टिकाऊ नही रह सकी इस परम्परा के स्थान पर आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी की परम्परा का विकास हुआ द्विवेदी जी नवजागरण और नए विचारो के पक्षधर थे कि तु उनकी शर्तें कुछ इस तरह की थी कि वे रीति-कालीन सामतवाद से तो मुक्ति चाहत थे पर सस्कृत-कालीन सामती परिवेश का अभिव्यजना शैली एव सरचना का समथन करते थे नए विचारो के प्रति उदारता उनमे थी कि तु नए विचारो के लिए अति प्राचीन शिल्प के प्रति मोह उनमे स्पष्ट दिखाई देता है इस प्रकार, ये रीतिवाद से मुक्ति चाहते थे कि तु पुरानी कुलीनता के साथ इसका परिणाम यह हुआ कि इस युग मे राष्ट्रीय पुनरुत्थान की भावना प्रबल हुई इस प्रसग मे आचाय शुक्ल का यह उद्धरण विचारणीय है— 'खेद है कि सच्ची और स्वाभाविक स्वच्छ दता का यह माग हमारे काव्य क्षेत्र के बीच चल न पाया बात यह है कि उसी समय पिछले सस्कृत काव्य के सस्कारो के साथ प महावीर प्रसादजी द्विवेदी हिन्दी साहित्य क्षेत्र म आए, जिनका प्रभाव गद्य साहित्य और काव्य निर्माण दोनो पर बहुत ही व्यापक पड़ा हिंदी म परम्परा से व्यवहृत छन्दो के स्थान पर सस्कृत के वृत्तो

का चलन हुआ, जिसके कारण सस्कृत पदावली का समावेश बढने लगा भक्तिकाल और रीतिकाल की परिपाटी के स्थान पर पिछले सस्कृत साहित्य की पद्धति की ओर लोगो का ध्यान बटा द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका द्वारा बराबर कविता म बोलचाल की सीधी सादी भाषा का आग्रह करते रहे जिससे इतिवृत्तात्मक (मैटर आफ फक्ट) पद्यो का खडी बोली म ढेर लगने लगा"

कहने की आवश्यकता नही कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने समय के यथाथ को पहचाना तो था किन्तु वे भारतीय जीवन की समग्रता म युगीन यथाथ को नही समझ पाए थे वे रीतिवाद के विरोधी थे, रूढियो के विरोधी थे किन्तु सुधारवाद उनके चिन्तन की सीमा बन चुका था इस कारण उनके सघर्ष का व्यापक स्वरूप नही बन पाया भारत के समग्र भविष्य को वे विवेचित विश्लेषित नही कर पाए इस सबके बावजूद इस युग के साहित्य का मुख्य प्रतिमान नए विषयो एव नए विचारो से उत्पन्न जीवन यथार्थ को उद्घाटित करना रहा श्रीधर पाठक की कविता म विधवाओ की वेदना और शिक्षा प्रचार का समर्थन तत्कालीन साहित्यिक परिवेश की देन है पौराणिकता से तार्किक दृष्टि को अधिक महत्त्व देने की बात भी इस युग म सामने आई अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' न 'प्रियप्रवास' म श्रीकृष्ण को व्रज के रक्षक नेता के रूप म दिखाया तथा उनके कार्यों को तार्किक परिणति देने का प्रयास किया गोवधन पवत को कृष्ण द्वारा उगली पर उठाने की लोकप्रचलित घटना को हरिऔध' ने आधुनिक मानव-मन को ग्राह्य बनाने के लिए इस तक का सहारा लिया—

लख अपार प्रसार गिरी द्र मे
व्रज-धराधिप के प्रिय-पुत्र का ।
सकल लोग लगे कहने उसे
रख लिया उगली पर श्याम ने ।।

इस प्रकार, चमत्कारो पर विश्वास करने वाले मानव मन को उसके अपने ही कर्मों पर भरोसा रखने की सहज सीख दी जाने लगी थी जिस प्रकार 'हरिऔध ने कृष्ण के कार्यों म ईश्वरत्व के स्थान पर 'महापुरुषत्व को स्थापित किया उसी तरह मथिलीशरण गुप्त जसे 'भक्त' कवि को भी राम की सारी ईश्वरता के बावजूद उनके मनुजत्व को रेखांकित करना पडा 'साकेत' मे उनके राम जहा एक ओर मध्यकालीन राम की छाया लिए रहते हैं वहा दूसरी ओर वे आधुनिक मनुष्य की प्रना को भी सतुष्ट करने वाले बन जाते हैं 'साकेत' के राम भी मनुज-अवतारी हैं, लेकिन उनके मनुष्यत्व का पक्ष अधिक व्यापक एव आधुनिक है

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया ।

× × ×

भव म नव-वभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त करान आया ।
सदेश यहाँ मै नही स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।

राम सीता, लक्ष्मण कृष्ण, आदि के चरित्र, भारतीय मानस में एक निश्चित स्वरूप प्राप्त कर चुके हैं अत इस युग के कवियो के सामने यह समस्या रही कि लोकमानस म रची बसी इनकी प्रतिमाओ को युगानुरूप नवीनता का बाना कस पहनाया जाय, जिससे उनका पारम्परिक स्वरूप भी विकृत न हो तथा जन जीवन के व्यापक सम्बन्धो का उद्घाटन भी हो जाय यह काम हरिऔध और गुप्त जी ने अपनी सीमाओ के भीतर किया है इस सदभ म गुप्त जी की नई भावनाओ और नए विचारों का स्वागत करते हुए आचाय रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे अपनी टिप्पणी इन शब्दो म की है 'रामायण के भिन्न भिन्न पात्रो के परम्परा से प्रतिष्ठित स्वरूपो को विकृत न करके उनके भीतर ही आधुनिक आदोलनो की भावनाए—जसे किसानो और श्रमजीवियो के साथ सहानुभूति युद्धप्रथा की मीमासा, राज्य व्यवस्था म प्रजा का अधिकार और सत्याग्रह विश्वव धुत्व, मनुष्यत्व-कौशल के साथ झलकाई गई ह" दरअसल, उस समय जिन उद्देश्यो को लेकर सामाजिक राजनतिक आन्दोलन चल रह थ, कविता के माध्यम से गुप्त जी उन्हे अधिक प्रभावी बनाकर साहित्यिक-सांस्कृतिक समथन एव सहयोग कर रह थे इस प्रकार य परिवतन के पक्षधर तो थे लेकिन इनका परिवतन कतिपय सामाजिक राजनतिक सुधारो तक सीमित होकर रह जान वाला था परिवतन की जैसी समग्र चेतना भारतेंदुकालीन रचनाकारा म और आग चलकर बालमुकुन्द गुप्त म मिलती है, वसी इस युग के रचनाकारो म नही ये एक ओर अग्रेजी शासन को प्रगतिशीलता का वाहक मानते थे, दूसरी ओर तत्कालीन विसगतियो को भी उजागर करना चाहत थे इस कारण इनकी दृष्टि सुदूर अतीत की ओर तो जाती थी निकट भविष्य की ओर नही ये सुधार चाहते थे, परिवतन नहीं इन्हे सामतवादी पूजीवादी शोषण की वास्तविकता कम समझ मे आती थी

इस युग के गद्य साहित्य के रचनाकारा की चेतना का स्वर कविता की अपेक्षा ऊचा एव विकसित रहा बालमुकुन्द गुप्त ने भारते दु युग की चेतना का विकास किया तथा इनके अलाव महावीरप्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र ने रूढ़ियो का विरोध किया

भारतीय समाज की निष्क्रियता पर सबसे अधिक प्रहार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने किए हम यहा यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि अपने समय के यथार्थ को जितनी सम्पूर्णता मे सरदार पूर्णसिंह देख सके थे, उतना इस काल का कोई दूसरा रचनाकार नही पूर्णसिंह जी ने परिमाण की दृष्टि से अधिक नही लिखा, लेकिन जो लिखा है वह इस युग की चेतना के स्वर म सबसे आगे है उस समय साधु सन्यासियो, पडित, पादरी, मौलवियो की मलिनता को उजागर करने वाला तथा सारी संस्कृति-सभ्यता को श्रम से जोडने वाला यह अकेला ही लेखक था—जिसका नाम था अध्यापक पूर्णसिंह रीतिवाद और रूढिया के विरोधी तो अन्य लेखक भी थे, लेकिन तत्कालीन संस्कृति के सामती आधारो के यथार्थ की इतनी सूक्ष्म पहचान रखने वाले अकेले अध्यापक पूर्णसिंह ही थे उनके 'मजदूरी और प्रेम निबध के ये विचार आज भी साहित्य का प्रतिमान बने हुए हैं इनकी प्रासगिकता आज भी असदिग्ध है —

"जब तक जीवन के अरण्य मे पादरी, मौलवी, पण्डित और साधु सन्यासी हल, कुदाल और कुरपा लेकर मजदूरी न करेंगे तब तक उनका मन और उनकी बुद्धि अनतकाल बीत जाने तक मलिन मानसिक जुआ खेलती रहेगी उनका चिंतन बासी, उनका ध्यान बासी, उनकी पुस्तकें बासी, उनका विश्वास बासी और उनका खुदा भी बासी हो गया है"

देखने की बात यह है कि सामाजिक-राजनैतिक यथार्थ को देखने समझने की दो दृष्टिया इस समय के रचनाकारो मे थी एक ओर ऐसे रचनाकार और लेखक थे जो देश की प्रकृति म अंग्रेजो की विकास बुद्धि एव व्यवहार कौशल के कायल थे और वे अपने देश की उन्नति भी उसी पद्धति पर चाहते थे इसलिए उनका विशेष जोर सुधारो पर था वे देश की उन्नति चाहते थे, राष्ट्र प्रेम तो इनके भीतर था किन्तु वह 'देश की उन्नति' तक सीमित था दूसरी ओर, ऐसे विचारक और साहित्यकार भी थे जो केवल प्रगति या छोटे बडे सुधारो की अपेक्षा 'देश की मुक्ति' चाहते थे अंग्रेजो की सारी बौद्धिक कुशलता के बावजूद ये साहित्य-सर्जक उन्हे शोषक और उपनिवेशवादी-साम्राज्यवादी मानते थे और यह समझने लगे थे कि अंग्रेजो का शासन रहते हुए हम अपनी संस्कृति एव सभ्यता का मुक्त विकास नही कर सकते इसके लिए आवश्यक है कि पहले अंग्रेजी शासन से देश को मुक्ति मिले उल्लेखनीय है कि तत्कालीन भारतीय राजनीति मे भी विचारो की उक्त दानो धाराए उस समय विद्यमान थी कहना न होगा कि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के राष्ट्र प्रेम एव देशोद्धार सम्बधी विचारो पर पहली धारा का प्रभाव अधिक था वे विचारो से सुधारवादी थे यह उनकी बहुत बडी सीमा थी, उनके इन विचारो का असर उस समय के लेखको पर भी था कविता

वह, खडी बोली का साहित्य मे प्रारम्भ काल था उसके ऊपर दो जिम्मेदारिया थीं—तत्कालीन चेतना के निर्माण और कलात्मकता की यही वजह रही कि आचाय महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' का सम्पादन करते हुए जितना ध्यान भाषा-निर्माण पर दिया, उतना विचार एव भाव-सम्पन्नता पर नहीं आचाय रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' मे इस युग के रचनाकारो की भाषा के विषय म जितना लिखा है उतना इनके विचार एव भावकौशल पर नही इस सदभ म आचाय द्विवेदी का असाधारण महत्व है कि वे खडी बोली का एक ऐसा स्वरूप निर्मित कर गए जो आसानी से अग्रगामी चेतना की वाहक बन सके बहरहाल द्विवेदी जी ने भाषा क जो प्रतिमान तय किए, उन्ही पर साहित्य का नया भवन तयार हो सका भाषा निर्माण के सन्दभ म द्विवेदी जी के योगदान की आचाय शुक्ल ने खूब प्रशसा की है जब कि दूसरी ओर उनके सस्कृत काव्य के सस्कारो के कारण उन्ह स्वाभाविक स्वछन्दता के माग म बाधक भी माना है शुक्ल जी ने इस तत्व को भी अपनी खरी-खरी कहने की शली म प्रकट किया है कि द्विवेदी जी के विचारात्मक निबधो म 'विचारो की वह गूढ गुम्फित परम्परा नही मिलती, जिससे पाठक की बुद्धि उत्तजित होकर किसी नई विचार पद्धति पर दौड पडे ' इसके बावजूद जितना उनका योगदान है, उसको बराबर रेखाकित किया है भाषा के सम्बन्ध मे प्रतिमान निर्धारण का काम आचाय महावीरप्रसाद द्विवदी ने किया इस तथ्य को स्वीकार करते हुए शुक्लजी ने कहा है कि 'उनक कारण भाषा म बहुत कुछ सफाई आई बहुत स कवियो की भाषा शिथिल और अव्यवस्थित होती थी और बहुत से लोग ब्रज और अवधी आदि का मेल भी कर देते थे सरस्वती' के सम्पादनकाल मे उनकी प्रेरणा से बहुत से नए लोग खडी बोली म कविता करने लगे उनकी भेजी हुई कविताओ की भाषा आदि दुरुस्त करके वे 'सरस्वती' म दिया करते थे इस प्रकार के लगातार सशोधन स धीरे धीरे बहुत से कवियो की भाषा साफ हो गई उन्ही नमूनो पर और लोगो न भी अपना सुधार किया '

द्विवदी जी ने भाषा-परिष्कार और निर्माण म तो उल्लेखनीय योगदान किया पर काव्यभाषा का नया सस्कार व निर्मित नही कर पाए व बोलचाल की भाषा को कविता म अपनाने क लिए जोर देत थे कि तु बोलचाल की भाषा से उनका मतलब ठेठ या हिन्दुस्तानी' से न होकर 'गद्य की व्यावहारिक भाषा स होता था इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी कविता-भाषा म और पूरे युग म उसका ठेठ हिंदी सस्कार नही बन पाया उनकी बोलचाल की भाषा पढे लिखे मध्यवर्ग की बोलचाल की भाषा थी, न कि हिन्दी प्रदेश के किसान मजदूर वग की ठेठ देहाती बोलचाल की भाषा आग चलकर निराला' न यह काम किया 'निराला' की पूववर्ती कविताओ की भाषा द्विवेदी जी

जी की परम्परा मे है जबकि परवर्ती कविताओ मे ठेठ देहाती बोलचाल की भाषा है भाषा के मध्यवर्गीय स्तर को प्रतिष्ठित करने का परिणाम यह निकला कि इस युग की अधिकतर कविताए 'इतिवृत्तात्मक (मैटर ऑफ फैक्ट) हो गई 'उनमे वह लाक्षणिकता, वह चित्रमयी भावना और वह वक्रता बहुत कम आ पाई, जो रस सचार की गति को तीव्र और मन को आकर्षित करती है'

हरिऔध की काव्यभाषा मे जहां एक ओर ठेठ हिन्दी का ठाठ है वहा दूसरी ओर सस्कृत की समस्त पदावली का कौशल भी हरिऔध जी ने भाषा के दूसरे रूप को द्विवेदी जी के प्रभाव से ग्रहण किया किन्तु यहां भी उन्होने अपनी राह बनाई उन्होने सस्कृत छन्दो और पदविन्यास को अपनाकर भी 'कोमलकात पदावली' से पीठ नही फेरी, इसका कारण था–ठेठ बोली पर उनका अधिकार बहरहाल, वे हिंदी के स्वभाव की रक्षा कर पाने मे सफल हुए, जिसमे द्विवेदी जी उतनी सफलता प्राप्त नही कर सके थे गुप्त जी की आरम्भिक कविताओ मे गद्यात्मकता और इतिवृत्तात्मकता है लेकिन उनकी 'कालानुसरण की क्षमता' के कारण आगे चलकर गुप्त जी की भाषा मे सरसता और कोमलता के लक्षण दिखाई देते हैं

भाषा के बिगडने का पूरा माहौल इस युग मे था, लेकिन गद्य और कविता दोनो की भाषा के वास्तविक कौशल को प्राप्त करने का सघर्ष करने वाले रचनाकार भी इस युग मे कम नही थे जैसे आज भी अनेक लेखक ऐसे हैं जो हिन्दी के पदविन्यास और उसकी ठेठ प्रकृति के जानकार नही हैं, वे अग्रेजीदा हिन्दी-लेखक हैं, वैसे ही उस जमाने मे सस्कृत-अग्रेजी और अरबी फारसी के पूरे विद्वानो ने हिन्दी को 'अपने' जैसी बनाने का प्रयास किया था इसके अलावा भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओ, विशेषकर बगला का प्रभाव हिन्दी भाषा पर पड रहा था दरअसल, भाषा का निर्माण और विकास, विचारो भावो से होता है जैसे हमारे विचार होंगे, वैसी ही हमारी भाषा होगी इस युग के विचारो मे राष्ट्रीय अभिजात का बोलबाला रहा, तथा अग्रेजी-सत्ता एव ज्ञान विज्ञान का असर भी मन के किसी कोने मे छुपा बैठा है इसलिए गद्य की भाषा या कविता की भाषा का स्वरूप, नवशिक्षित वर्ग की 'बोलचाल' को आधार मानकर चला है इसका परिणाम हुआ कि जिस तरह की सरसता, कोमलकांत पदावली की जरूरत थी वह उस समय नही आ पाई वह तब ही आ पाई, जबकि विचारो का अभिजातवर्गीय आधार बदला वह जब ग्राम किसान-मजदूर और मध्यवर्ग के वैचारिक आधार को पुष्ट करने वाली बनी निराला की परवर्ती कविताए जहा एक ओर नए विचारो को प्रकाशित करती है, वहा दूसरी ओर भाषा के नूतन पक्ष का आविष्कार भी करती हैं

भगवतीलाल व्यास

घनीभूत सवेदना के कवि नवरत्न जी

पं गिरिधर शर्मा नवरत्न (सन् 1881-1961) ने जिन दिनों काव्य सृजन आरभ किया वह समय देश तथा हिंदी दोनो के लिए कठिन परीक्षा का समय था उस समय खडी बोली मे काव्य रचना एक दुस्साहस समझा जाता था क्योकि प्रचलित ब्रज काव्य परम्परा से हट कर एक अलग रास्ता बनाना पूरी परम्परा को नाराज करना था किंतु यह काय भारतेंदु काल से ही आरभ हो गया था भाषा, छन्द, विषयवस्तु आदि विविध पक्षो को लेकर प्रयोग करने की छटपटाहट इन दिनो की काव्य रचना मे सहज ही देखी जा सकती है महावीर प्रसाद द्विवेदी जसे आचार्यों ने तो अपना पूरा जीवन ही खडी बोली के खुरदरेपन को सवारने तथा उसे सुललित साहित्यिक भाषा का दर्जा प्रदान करने मे होम दिया

यदि हम द्विवेदी काल के कवियो की रचनाओ को विश्लेषित करें तो एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु और सामने आता है और वह यह कि कविता के माध्यम से आजादी की लडाई मे साझीदार होने की ललक इस समय तक स्वतत्रता-सग्राम एक जन आन्दोलन का रूप धारण कर चुका था इसलिए कवियो, लेखको और बुद्धिजीवियो ने इसम अपना योग देना अपना कतव्य समझा जन आन्दोलन का हिस्सा व जनभाषा

के व्यवहार द्वारा ही बन सकते थे इसलिए यह कहा जाना प्रसगत न होगा कि स्वतत्रता सग्राम और खडी बोली काव्य परम्परा ने एक दूसरे को ताकत पहुचाई है, समृद्ध किया है

तत्कालीन साहित्यिक पत्र पत्रिकाओ म 'सरस्वती' पत्रिका प्रमुख थी जिसका सम्पादन हिन्दी के कई स्वनामधन्य विद्वानो द्वारा समय-समय पर किया गया सामग्री की दृष्टि से विविध विषयो को समाहित किये हुए भी यह पत्रिका आजादी की लड़ाई मे शब्द का कारगर हथियार साबित हुई सन् 1910–20 वाले दशक के अक उठाकर देखने पर यह तथ्य पुष्ट होता है इन अको मे सवश्री मथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, कामता प्रसादगुरु, रूपनारायण पाडेय, सियाराम शरण गुप्त, पदुमलाल, पुन्नालाल बख्शी, केशवप्रसाद मिश्र, प गिरिधर शर्मा नवरत्न प्रभृति कृतिकारो की रचनाए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे दासताजन्य पीडा व्यक्त करती हुई बेडियो को काट फेंकने का आह्वान करती है

प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने काव्य रचना सन् 1900 के आसपास आरम्भ की तथा 'सरस्वती' सहित अन्य पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाशित होने लगे गुजराती भाषा-भाषी होने के बावजूद नवरत्न जी को अपने पिता प ब्रजेश्वर शर्मा से सस्कृत ज्ञान विरासत म मिला था इसके अतिरिक्त वे बगला, मराठी, अरबी, फारसी तथा अग्रेजी भाषाओ के भी अच्छे ज्ञाता थे उन्होने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीताजलि का तथा उमर खैयाम की रुबाइयो का अनुवाद भी किया था ये अनुवाद अपने समय मे काफी चर्चित रहे

स्वतत्र काव्य रचना की दृष्टि से पण्डित जी के काव्य को हम निम्नाकित वर्गों मे बाट सकते हैं—

(अ) **खण्ड काव्य**—सत्यवान और सावित्री की कथा पर पडित जी ने चारसर्गों म 'सती सावित्री' नामक खण्ड काव्य की रचना सन् 1907 मे की उल्लेखनीय है कि चार सर्गों वाले इस लघु खण्ड काव्य मे अतुकान्त काव्य शैली का प्रयोग किया गया है यह खण्ड काव्य सन् 1911 मे गुजरात से प्रकाशित हुआ था

(आ) **लम्बी कविताए**—कुछ पौराणिक प्रसगो को आधार बना कर पडित जी ने लम्बी रचनाओ का सृजन भी किया है ऐसी रचनाए इतिवृत्तात्मक ही अधिक बन पडी है 'पिंजरे का सुग्गा', 'विश्वामित्र और मेनका' आदि कविताए आपकी लम्बी कविताओ म से प्रतिनिधि रचनाए कही जा सकती हैं

(इ) **स्फुट विषयों पर छोटी कविताए** — पंडित जी की काव्य प्रतिभा उनकी छोटी कविताओं और छन्दो मे ही मुखरित हुई है 'गिरिधर गरिमा' मे स्फुट विषयो पर उनकी 35 छोटी कविताए सकलित हैं जबकि 'काव्य कुञ्ज' म 53 छन्द हैं

दोनो ही कृतियो की रचनाओं को विषय वस्तु की दृष्टि से निम्नाकित वर्गों मे बाट सकते हैं

1 ईश वन्दना

2 राष्ट्र प्रेम

3 ऋतु वर्णन

4 सामाजिक समस्याएं एवम् विसगतियां

5 भाषा प्रेम

6 पराधीनताजन्य स्थिति पर व्यग्य

7 उपदेश एवम् उद्बोधन

8 विविध पुस्तक प्रेम, श्रम, सहकार, विद्यानुराग, धार्मिक सहिष्णुता आदि

श्री नवरत्न की भाषा :

पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न की काव्य भाषा मे दो धाराए स्पष्ट देखने को मिलती है—

1 सस्कृतनिष्ठ सामासिक पदावली युक्त भाषा

2 सरल बोलचाल की भाषा

दोनो प्रकार की भाषा-धाराओं के निम्नाकित उदाहरण द्रष्टव्य हैं

सामासिक पदावली :

शस्त्र धारिणी, शास्त्र सारिणी
शत्रु वारिणी, दुख दारिणी
विश्व तारिणी, कार्य कारिणी
महाशक्ति अवदात
वन्दे मातरम्

(रचनाकाल सन् 1913 उल्लेखनीय है कि यह गीत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन सन् 1915 म गाया जाने वाला प्रथम राष्ट्रगान था)

सरल बोलचाल की भाषा–

जो हाथ पर अपने
नहि हैं हिलाते
खाना बिना श्रम किये
डट के उडाते
आलस्य म समय क्यो
अपना बिताते
वे मूढ कूच जग से
कर क्यो न जाते ?

कही-कही ब्रज परम्परा के दशन छ द और भाषा दोनो दृष्टियो से होते हैं जसे–'पुस्तक-महत्व' पर लिखा गया यह छ द—

दिखावें जगतरूप देवे ज्ञान तत्वन को
जासो नरनाह ! कौन जन सुख पावे ना ?
उक्तियां कवि दन की मधुर-मधुर भाषें
सौ-सौ वार पूछे हू बतावें उकतावें ना
विश्व के महान् मतिमान विदवानन की
बानिया सुनावें सरसावें गरबावें ना
ऐसे शान्त ऐसे साधु ऐसे गुरु पुस्तक है
धन हू किये तें जौन ऊन मन लावें ना ।

हिन्द और हिन्दी प्रेम केन्द्रीय स्वर–

नवरत्न जी के काव्य म देश प्रेम और भाषा-प्रेम पग-पग पर देखने को मिलता है देश की पराधीनता से वे भी अ य कवि मनीषियो की तरह चिन्तित थे तथा इससे मुक्ति का मच वे राष्ट्रीय एकता मे देखते थे भाषा राष्ट्रीय एक्य का सुदृढ सूत्र है इस बात को आज समझ कर भी अनसमझा किया जा रहा है किन्तु उस समय के लगभग सब कवियो ने एकता के लिए एक भाषा की आवश्यकता बडी गहराई से महसूस की थी पडित 'नवरत्न' जी के इस छद मे राष्ट्रीय एकता का आह्वान करते हुए राष्ट्र भाषा के पद पर हिन्दी को प्रतिष्ठित किया गया है

श्रीयुत् वकिमच द्र चटरजी का बगाल
प्रेमभाव धार आया, लगे लोग हरखन
पजाब लाजपत का, तिलक का महाराष्ट्र
आपउ मे गले मिलें, लगे खूब सरसन

नवरत्न राजस्थान मध्य हिन्द आगे आये
देख के फिरंगी के करेजे लगे धरकन
उत्कल बिहार की क्या सारा देश एक हुआ
राष्ट्रभाषा हिन्दी की भुजा की देख फरकन
(काव्य कुंज से)

देश के प्रति पूर्ण निष्ठा उनके काव्य का केन्द्रीय स्वर है वे देश को आराध्य की तरह पूजते थे रसखान ने 'मानुष हो तो वही रसखानि—' सवये मे जिस प्रकार हर स्थिति मे अपने आराध्य कृष्ण के सान्निध्य की कामना की है, उसी उत्कटता के साथ नवरत्न जी देश-हित मे सवस्व समपण की कामना करते हैं।

चर्चा जहा देश की हो, मेरी जीभ वही खुले
और नही खुले कही खुदा की खुदाई मे
मेरे कान गान सुनें साचे देशभक्तन के
और गान आवें कभी मेरे ना सुनाई मे
मेरे अग रग चढे एक देश प्रेम को ही
और रग भग हो के बूडे जा तराई मे
मेरो तन, मेरो धन, मेरो मन, मेरो जीव
मेरो सब लगे प्रभो देश की भलाई मे

सामाजिक विसगतियो पर पैनी नजर—

यद्यपि नवरत्न जी के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रप्रेम है किन्तु सामाजिक विसगतियो के प्रति भी वे उदासीन नही हैं सामाजिक कुरीतियो और विसगतियो के प्रति उनकी यह चिन्ता उनके काव्य म यत्र-तत्र प्रकट हुई है

सामाजिक कुरीतिया हो अथवा विसगतिया, सबके मूल म न्यूनाधिक रूप से आर्थिक विपमता ही उत्तरदायी है इस बात को कवि अच्छी तरह जानता है तथा प्रसगानुसार रेखांकित भी करता है उदाहरण के लिए 'वृद्ध-विवाह' शीपक कविता की निम्नांकित पक्तियां द्रष्टव्य हैं

एक महाजन था धनदास, द्रव्य बहुत था उसके पास
जिसके थे सब नाती पोते, ऐसी तो था उसकी पोती
पाच नारिया परन चुका था फिर भी इसका जी न भरा था
फिर भी कर ली एक सगाई, दस हजार कामत ठहराई

काव्य की दृष्टि से ये पक्तियां भले ही उत्कृष्टता की कसौटी पर खरी न उतरें कि तु ये पक्तिया भाव-प्रवणता की दृष्टि से अपने समय का तथा कवि की सवेदना की जीवन्त दस्तावेज जरूर हैं

प्रसग है ऋतु वरान का कवि ग्रीष्म ऋतु की भयकरता का वरान कर रहा है मगर उसकी सजग दृष्टि वग वैषम्य को चिह्नित करती हुई अपना सामाजिक दायित्व पूरा करती है -

धनवानो के नौकर मारे पखा खींच खींच कर हारे
टट्टी छिडके वेदम मारे फिर भी ये सब सुने विचारे
मिलता है मुश्किल से पानी, उस पर भी है ऐंचातानी
पनिहारिन पानी भरती है, आपस मे लड लड मरती है

इस तरह प गिरिधर शर्मा नवरत्न की कविता म विस्तार और चमत्कार के गुरा भले ही कम मात्रा म मिलें किन्तु घनीभूत सवेदना के स्वर स्पष्ट रूप से सुन जा सकते हैं उनकी दृष्टि मे कविजनोचित वह उदात्तता, निर्माल्य और ओज विद्यमान है जा उनके कृतित्व को स्मरणीय बनाने के लिए पर्याप्त है

35, फतहपुरा खारोलवस्ती,
उदयपुर (राज)

मालवीय जी हिन्दी युनिवर्सिटी बनाइये

1918 म बम्बई म कांग्रेस अधिवेशन के साथ-साथ हि दू महासभा का भी उत्सव हुआ था जिसकी अध्यक्षता मालवीय जी ने की थी। मालवीय जी तथा अपार जन-समूह के सामने पडित नवरत्न जी ने सिंह गर्जना कर कहा था 'मालवीय जी, जनता आपका आदर करती है ता।करे पर गिरिधर शर्मा से आप उसी समय सम्मान पायेंगे जब कि हि दू युनिवर्सिटी हि दी विश्वविद्यालय म परिवर्तित हो जायेगी।'

कलानाथ शास्त्री

नवरत्न जी की सस्कृत सर्जना

राजस्थान के जिन मनीषियो ने हि दी और सस्कृत मे विपुल साहित्य रचना करके अपने चरणचिह्न इतिहास की पगडडी पर छोडे है उनम झालरापाटन के प गिरिधर शर्मा नवरत्न का नाम अग्रणी पक्ति मे आता है राजस्थान के एस बहुत कम विद्वान और साहित्यकार है जिनका नाम साहित्य के इतिहासकारो ने अपने लिखे इतिहासो म शामिल करने का कष्ट उठाना उचित समझा मेरे विनीत मत म इसके अनेक कारण हो सकते हैं जिनका उल्लेख मैं अ यत्र भी कर चुका हू राजस्थान के किसी साहित्यकार ने हिन्दी और सस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध इतिहास नही लिखे अ य राज्यो के जिन विद्वानो ने लिखे व चाह काशी के हो या प्रयाग के, बाहर के कुछ विद्वानो का कृतित्व ही उन तक पहुच पाया कुछ को उ हाने उल्लेखनीय तभी माना जब ऐसा उ ह आवश्यक लगा जस गुलेरी जी काशी म कुछ वप रह वसे भी उनक कृतित्व की चमक भौगोलिक सीमाओ से दबने वाली नही थी दूसरे, राजस्थान क अनेक सतो, साहित्यकारो और विद्वानो न बहुत सी रचना हि दी के साथ साथ राजस्थानी म और लोक भाषाओ मे भी की तीसरे, पिछली पीढी के राजस्थान के विद्वान और साहित्यकार अपन स्वय के सगठन या सस्थाए बनाने की अपक्षा नागरी प्रचारिणी सभा जसे सगठनो को तन, मन, धन से सहयोग देन म गौरव समझत थे और अपने सम्मान की अपेक्षा अ यो के सम्मान म सतोष अनुभव करते थे

इन सभी स्थितियो के बावजूद जिन सौभाग्यशाली विद्वानो का कृतित्व इतिहास

की सामग्री बना या राजस्थान की सीमाओं के बाहर प्रकाश में आया उनमें नवरत्नजी भी हैं यह क्या हमारे लिए गौरव की बात नही है ? इस वर्ष उनकी जन्मशती है उनके हिन्दी साहित्य के कृतित्व के बारे में इतिहासकारो ने बहुत कुछ लिखा है संस्कृत में भी उनका कृतित्व उतना ही उल्लखनीय है बल्कि मेरे विचार मे उससे भी कही अधिक प. गिरिधर शर्मा झालरापाटन मे ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी स 1938 म जन्मे थे और प्रारभिक शिक्षा उनकी वहीं शुरू हुई यह शिक्षा प्रमुखत संस्कृत की थी जयपुर आकर भी उन्होने मूर्धन्य विद्वानो से संस्कृत का गहन अध्ययन किया काशी से भी संस्कृत का वैदुष्य प्राप्त किया उन दिनो संस्कृत के वैदुष्य के बिना सामान्यत विद्वत्ता की ख्याति बस भी नही मिलती थी चाहे वह साहित्य रचना किसी भी भाषा मे करता हो यही कारण है कि द्विवेदी काल के अधिकाश हिन्दी साहित्यकार संस्कृत के प्रौढ विद्वान थे प. श्रीधर पाठक, हरिऔध प. पद्मसिंह शर्मा बालकृष्ण भट्ट आदि संस्कृत से ही हिन्दी म आये महावीर प्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि तो संस्कृत म बहुत अच्छी कविता लिखते थे उसके बाद भी यह परम्परा चलती रही उदयशकर भट्ट, हजारी प्रसाद द्विवेदी विद्यानिवास मिश्र, द्विजेन्द्रनाथ मिश्र आदि संस्कृत के विद्वान होकर हिन्दी मे साहित्य रचना करने लगे

संस्कृत मे अनुवाद

नवरत्नजी गुजराती ब्राह्मणो की प्रश्नवर उपजाति के थे अत गुजराती तो उनकी मातृभाषा ही थी गुजराती के उत्कृष्ट साहित्य का अध्ययन भी उन्होने गहराई से किया था हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य भी रुचि से पढा उर्दू और बगला साहित्य में भी उनका अच्छा ज्ञान था अपनी युवावस्था से ही उन्होंने संस्कृत मे बहुत अच्छी कविता करना शुरू कर दिया था श्री कृष्ण गगा आदि के लिए स्तुतिया तो उन्होने प्राचीन संस्कृत की परिपाटी के अनुरूप ही लिखीं, किन्तु बहुभाषाविद् होने का यह परिणाम तो होना ही था कि वे अन्य भाषाओ के उत्कृष्ट साहित्य का संस्कृत मे अनुवाद करने की भी सोचते जिस प्रकार उन्होने रविबाबू की गीतांजलि का और गुजराती के कवि नानालाल दलपतराय के साहित्य का हिन्दी मे अनुवाद किया उसी प्रकार उमर खयाम की रुबाइयो का और नन्ददास के भ्रमर गीत का संस्कृत म अनुवाद किया इस दृष्टि से अन्य भाषाओ के साहित्य के संस्कृत म अनुवाद करने वाले विद्वानो म इनका नाम बहुत प्रतिष्ठा से लिया जाता है

उमर खयाम का अनुवाद उन्होने सीधे न करके फीटजराल्ड के अंग्रेजी अनुवाद से किया था 75 रुबाइयो का फिटजराल्ड ने प्रथमत अंग्रेजी म अनुवाद प्रकाशित किया था, उन्ही का 'अमरसूक्ति सुधाकर शीर्षक से नवरत्न जी ने संस्कृत अनुवाद प्रकाशित किया 1929 मे छपे इस अनुवाद म फिटजराल्ड का अंग्रेजी अनुवाद भी साथ ही

छपा है मूर्धन्य विद्वान द्वारा किया गया अनुवाद होने के कारण इसमें जो साहित्यिक उत्कर्ष और शैली का सौन्दर्य परिलक्षित होता है उस पर कुछ कहना अनावश्यक है अनुवाद संस्कृत के छन्दों में हुआ है और अनुवादक ने कहीं कहीं थोड़ी स्वतन्त्रता भी ली है ऐसी स्वतन्त्रता फिट्जराल्ड ने भी ली थी इस कारण संस्कृत अनुवाद उमरखैयाम से थोड़ा दूर चला जाए तो अस्वाभाविक नहीं किन्तु इसकी सहज शैली और सुन्दर शुद्ध भाषा बरबस हृदय को मोह लेती है

ब्रजभाषा में "भ्रमरगीत" प्रसिद्ध है इसे नन्ददास का लिखा माना जाता है जो अष्टछाप के एक प्रमुख कवि थे इसमें रोला और दोहा के अन्त में 9-10 मात्रा का एक फिकरा कवि ने और लिख दिया है जिससे शैली का अनूठापन आ गया है और पद्य भी चुटीला बन जाता है कुछ आधुनिक कवियों ने भी इसी परिपाटी पर "कुमदार दोहे" लिखे हैं नवरत्नजी ने इस भ्रमरगीत का संस्कृत अनुवाद ठीक उन्हीं छन्दों में किया इस भी उसी प्रकार संस्कृत में लगाई जा देखते ही बनती है "प्रेमपयोधि" नाम से यह अनुवाद 1951 में छपा अंग्रेजी की प्रसिद्ध कविता दी हरमिट (गोल्डस्मिथ द्वारा लिखित) का भी संस्कृत में अनुवाद इन्होंने 'योगी' शीर्षक से किया है इसका हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने 'एकान्तवासी योगी' शीर्षक से किया है यह ज्ञात हुआ है कि शेख सादी के फारसी काव्य गुलिस्तां के अनेक पद्यों का संस्कृत में अनुवाद इन्होंने "नीतिशोद्यानम्" शीर्षक से किया था जो अब तक अप्रकाशित है

इस प्रकार उत्कृष्ट साहित्य का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने वाले साहित्यकारों में नवरत्नजी विशेषतः उल्लेखनीय हैं ये अनुवाद कार्य उन्होंने 20वीं सदी के प्रारम्भ में ही शुरू कर दिया था उन्होंने गुजराती, बंगला और अंग्रेजी से कविताओं उपन्यासों और नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया है मराठी में भी अर्थशास्त्र और व्यापार संबंधी पुस्तकों और लेखों के हिन्दी में अनुवाद किये हैं इसके अतिरिक्त भर्तृहरि के शतकों का गुजराती में अनुवाद किया है इस प्रकार विभिन्न भाषाओं में विभिन्न भाषाओं से अनुवाद कार्य करने वाले बहुत कम विद्वान हुए हैं

महाकवि माघ के शिशुपालवध के दो सर्गों का अनुवाद उन्होंने 'हिन्दी माघ' नाम से संवत् 1985 में छपाया था इसी प्रकार का एक अन्य अनुवाद है पद्यरत्नप्रभा यह पंडितराज जगन्नाथ के सुप्रसिद्ध काव्य भामिनीविलास में संकलित अन्योक्तियों का हिन्दी में अनुवाद है ये अन्योक्तियां अभूतपूर्व उत्कृष्ट शैली में लिखी गई हैं और संस्कृत साहित्य में बहुत समादृत हैं स्वयं नवरत्नजी ने भामिनीविलास के इस अन्योक्ति संकलन की (जिसे जगन्नाथ ने अन्योक्तिविलास नाम दिया) अपनी भूमिका में भूरि भूरि प्रशंसा की है इस अनुवाद की विशेषता यह है कि संस्कृत के विभिन्न छन्दों में खड़ी

बोली मे यह अनुवाद किया गया है एक अक्षर के छोटे से छोटे "मिनी छद" से लेकर सस्कृत के बडे से बडे छद का प्रयोग इसम उ होने किया है स 1980 (सन् 1923) मे प्रकाशित ये पद्य हरिऔध की पद्धति से सस्कृत के छदो मे लिखे गये उत्कृष्ट हिन्दी पद्य है प रामच द्र शुक्ल ने अपन हि दी साहित्य के इतिहास मे नवरत्न जी के सस्कृत और हि दी पर समान अधिकार का सराहना के साथ उल्लेख किया है जसा ऊपर लिखा जा चुका है, राजस्थान के बहुत कम ऐसे साहित्यकार हैं जो इस इतिहास म उल्लेख पा सके हैं गुलेरीजी, नवरत्नजी, जयपुर के पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न आदि कुछ ही ऐसे सौभाग्यशाली हैं

मौलिक रचनाए

नवरत्नजी ने बाल्यकाल से ही सस्कृत मे काव्यरचना शुरू कर दी थी वे भालावाड नरेश के राजगुरु थे राजा भवानीसिह उनको बडी श्रद्धा से देखते थे इ ही भवानीसिह को लक्ष्य करके नवरत्नजी ने अनेक कविताए लिखी 1924 मे "भवानीसिह कारकरत्नम्" छपी जिसमे राजा को कर्ता, कम आदि विभिन्न कारको क रूप मे अनूठी काव्यशैली मे चित्रित किया गया है इसमे उ होने अपनी ओर से भाष्य भी लिखा है जिसम व्याकरण के सिद्धा तो का अच्छा प्रतिपादन है सन् 1926 मे 'सद्वृत्तपुष्पगुच्छ" छपा जिसमे इनके यश का वरणन है

इन्होने नीति और उपदेश के बडे अच्छे सस्कृत काव्य लिखे हैं नीति सम्ब धी 700 पद्या का एक सकलन गिरिधरसप्तशती नाम से प्रकाशित हो चुका है इससे पूव "नवरत्न-नीति" "आर्योपदेश-रत्नमाला" (सन् 1941) आदि नामो से इ होने नीति के पद्य प्रकाशित किये थे इनमे छोटे-छोटे आर्या छ दो मे सरल शली मे नीति की बाते बताई गई हैं पुस्तको के अच्छे सग्रह के बिना कोई विद्वान् नही हो सकता, यह बडे सरल शब्दो मे वे कहते हैं

"लभ्यानि पुस्तकानि प्राच्यानि भव तु वा प्रतीच्यानि।
सग्राह्याण्यखिलानि प्राज्ञ स्यात् पुस्तकी पुरुष ॥

बहुधा मणि को अनानवश ठुकरा दिया जाता है और काच के नग सिर पर धारण कर लिय जाते हैं कि तु उससे उनकी कीमत मे फक नही पडता जब कीमत लगाई जाती है तो जोहरी काच और मणि के फक को साफ कर देता है

"लुठति मणि पादाग्रे काचो वा शिरसि धार्यते पुरुष ।
क्रयविक्रयवेलाया काच काचो मणिमणिर्ज्ञेय ॥"

नवरत्नजी की 20 रचनाए 20वीं सदी के पूर्वाद्ध मे निकलने वाली सभी

प्रतिष्ठित संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं मे छपी थी संस्कृत चन्द्रिका (शोलापुर महाराष्ट्र), संस्कृत रत्नाकर (जयपुर), सुप्रभातम् (काशी) आदि पत्र इनकी रचनाएं बडे आदर के साथ छापते थे इनकी अनेक संस्कृत कृतिया अब भी अप्रकाशित हैं इनमे कुछ तो नीति के पद्य हैं, कुछ स्तुतियां हैं और कुछ अनुवाद हैं आत्मनिवेदनम्, प्रश्नोत्तर-रत्नमाला, न्यायवाक्सुधा आदि अनेक ऐसी पाण्डुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा मे हैं

यश का विस्तार

नवरत्नजी का जितना कृतित्व संस्कृत मे रहा है उतना ही हिन्दी मे भी उन्होने सरस्वती, सुधा, माधुरी आदि तत्कालीन शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं मे खूब लिखा स्वयं विद्याभास्कर नामक पत्र का सम्पादन किया इन्दौर मे मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर मे हिन्दी साहित्य समिति, कोटा मे भारतेन्दु समिति जसी संस्थाओं की स्थापना मे उनका प्रमुख हाथ रहा संवत् 1974 मे इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन मे गांधीजी ने अध्यक्षता की थी नवरत्न जी भी उसमे सम्मिलित हुए थे वहां उन्होने गांधीजी को राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी को स्वतन्त्रता संग्राम का माध्यम बनाने का पुरजोर अनुरोध किया जिसे गांधीजी ने स्वीकार किया इनका संस्कृत जगत् और हिन्दी जगत् मे समान रूप से सम्मान था यह सब कुछ होते हुए भी हम सब अनुभव करते हैं कि इतने विशाल कृतित्व का जो सम्मान और यश मिलना चाहिए था वह इन्हे नही मिल पाया इसका एक कारण तो यह था कि नवरत्नजी झालरापाटन छोडकर कही नही गये एकांत साधना और निरन्तर लेखन उन्हे बहुत प्रिय थे दूसरा कारण यह तो है ही कि हम राजस्थानियो को अपने विद्वानो और साहित्यकारो को उतना सम्मान देना नही आता, उतने ऊंचे आसन पर बिठाकर उन्हे पूजना हम नही जानते जिससे अन्य प्रदेशो के व्यक्ति उन्हे दूर से भी देख सकें और के उन प्रदेशो मे भी सम्मान प्राप्त कर सके वसे, हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इन्हे साहित्यवाचस्पति उपाधि दी किन्तु राजस्थान मे इनका कोई बडा अभिनन्दन हुआ हो, या अभिनन्दन ग्रन्थ निकला हो याद नही पडता सन् 1960 मे जब ये 80 वर्ष के हुए थे तो कुछ साहित्यकारो और मित्रो तथा शिष्यो ने इनके सम्मान मे एक आयोजन अवश्य किया था जुलाई, 1961 मे इनका निधन हो गया आज हम जब उनके कृतित्व का आकलन करते हैं तो लगता है वे एक ऐसी विभूति थे जो अपने वैदुष्य और साहित्य रचना की छाप उस युग पर तो छोड ही गये जिसे उन्होने अपने सान्निध्य से गौरवान्वित किया, ऐसा कालजयी साहित्य भी छोड गये हैं जिस पर भावी पीढ़ियां गर्व करेंगी

विष्णु चन्द्र पाठक

स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रेरक कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

सन् 1881 म तत्कालीन राजपूताना के एक प्राचीन नगर झालरापाटन (झालावाड) मे एक ऐसे बालक ने जन्म लिया जो आगे चलकर हिन्दी राष्ट्र भाषा का ख्याति-प्राप्त तथा ओजस्वी वक्ता बना, स्वतन्त्रता की तडपन भरी काव्य धारा का प्रणेता बना तथा देश के कोने कोने म जिसन अपने प्रखर व्यक्तित्व द्वारा भोग विलास मे डूबे सामन्तो तथा राजाओ के राष्ट्र प्रेम का सजीवन मत्र प्रदान किया वह बालक था गिरिधर जो बाद मे पडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के नाम से प्रसिद्ध हुआ गुजराती हिन्दी, अग्रेजी, बगला, फारसी, उर्दू, मराठी आदि भाषाओ मे काव्य सृजन करने वाले अथवा उनके प्रसिद्ध ग्रथो के अनुवाद करन वाले 'नवरत्न' ने राष्ट्रीय तथा हिन्दी प्रेम से ओत-प्रोत सहस्रा रचनायें लिखी बावन वष की आयु मे उनकी आखो की रोशनी जाती रही तब भी वे बोल-बोलकर रचनायें लिखवाते रहे अग्रेजी के विख्यात कवि मिल्टन की तरह, उसी भाववग और गति से लिखती रही उनकी पत्नी श्रीमती रत्न-ज्योत्सना देवी पडितजी का अटूट विश्वास था कि स्वतन्त्रता को लोकभाषा हिन्दी के द्वारा ही अकुरित किया जा सकेगा इसलिए उन्होने इस गरीब-निवाज भाषा को अपनाया

नवरत्न जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन म पूरे जोश के साथ भाग लिया करत थ वे हिन्दी भाषा के समथ पक्षधर थे सम्मेलन के मच से पढ़ी गयी हिन्दी-प्रेम तथा

राष्ट्रीय भावनाओं के आवेग से लिखी गयी उनकी अमर रचनायें श्रोताओं को मत्र-मुग्ध करने के साथ-साथ असख्य भावो के आदोलन बिलोडन का प्रमुख आधार बनती थी यह कहने की आवश्यकता नही है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन उस समय कांग्रेस के अधिवेशनो से किसी भी प्रकार कम नही होते थे हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने पडित जी को साहित्य वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित कर उनके अटूट हिन्दी प्रेम को ही सम्मानित किया था नवरत्न जी की 'मातृ वदना' रचना देश पर मरमिटने वाले नौजवान क्रान्तिकारियो का कण्ठहार थी इस विषय पर 1897 म गोपालदास की लिखी 'भारत भजनावली' तथा 1901 मे गुरुप्रसाद द्वारा लिखी गयी 'भारत सगीत' शीर्षक रचनायें मिलती हैं किन्तु भाव तथा भाषा की दृष्टि से नवरत्न जी की 'मातृ वदना' कविता अधिक महत्वपूर्ण है हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान गोपालसिंह 'क्षेम' ने 'हिन्दी साहित्य कोश' मे नवरत्न जी के काव्य का विमोचन करते हुए ठीक ही लिखा है—"जिस समय अधिकाश कवि मध्यकालीन वातावरण मे ही सास ले रहे थे और काव्यधारा ह्रासोन्मुखी हो रही थी, स्वदेश भाव का यह जागरण देश-प्रेम का शखनाद ही माना जायेगा आपने अतीत के प्रति निष्क्रिय मोह एव प्रतिक्रियात्मक आसक्ति तथा राष्ट्रीयता मे अन्तर करते हुए जागरण का जो शखनाद किया, उसे कभी विस्मृत नही किया जा सकता

परतत्रता के दिनो मे अग्रेजो ने बडी चतुराई से अपनी सभ्यता को देशवासियो पर लाद दिया था अन्त तक आते-आते हमने यह जसे स्वीकार ही कर लिया था कि ज्ञान का भडार उन्ही के पास है नवरत्न जी ने बार बार और हर स्तर पर इस 'सास्कृतिक पराधीनता' के भाव को तोडने का प्रयत्न किया सन् 1918 के इदौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन पर स्वागत-गान के रूप मे गाई 'राष्ट्र गान' कविता मे उपयुक्त सत्य पूरी प्रखरता के साथ व्यक्त हुआ है पडितजी का यह 'राष्ट्रगान हिन्दी भाषा का ऐसा प्रथम गान था जिसे विशाल जन समूह ने मच पर खडे हो कर अपार उल्लास और समर्पण भाव के साथ गाया था 'राष्ट्र गान' म भारत की प्राकृतिक श्री का यह वर्णन द्रष्टव्य है —

हिम गिरि ऊचे मस्तकवाला है तेरा दृढ पहरेवाला
जलनिधि गर्जन करे निराला, रिपुओ का मद हरने वाला
पजाबी, गुजरात निवासी, बगाली हो या ब्रजवासी
राजस्थानी या मद्रासी, सब के सब हैं भारतवासी
तेरे सुत प्रिय देश ! जय देश ! जय देश !

लम्बी दासता तथा सन् 1857 की विफल क्रांति के बाद जहा अंग्रेजो के विरुद्ध एक शब्द तक बोलना कठिन हो गया था वहा हिन्दी के स्वाधीनता प्रेमी कवियो के नवरत्न जी एक छोटे रजवाडे के छोटे से नगर मे बठे राष्ट्रीयता का शखनाद कर रहे थे 'जीवन्मृत' कविता मे उन्होने देशवासियो के स्वाभिमान और कमठता को लक्ष्य करते हुए लिखा —

जो आत्म-पौरुष नहीं जन धारते हैं
द्रव्याथ हाथ सब ठोर पसारते हैं
वह आत्मगौरव महा जड मारते हैं
मनुष्य जन्म अपना हा-हा हारते हैं

'नवरत्न जी' ने अपने काव्य म 'राष्ट्रहित' को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया था उनका जीवन और राष्ट्रहित एकाकार हो गय थे 'देश-हित' लम्बी कविता मे उनकी जीवन-कामना का एक ऊर्ध्वमुखी सपना इस प्रकार व्यक्त हुआ है —

मेरे अग रग चढे एक देश प्रेम को ही,
और रग मग हो के डूब जात वाई मे
मेरा धन, मेरो तन, मेरो मन, मरो जीव,
मेरा सब लगे प्रभु देश की भलाई मे

यह तथ्य रेखाङ्कित करने योग्य है कि पडित जी की काव्य रचना का समय कोई साधारण नही था स्वदेश प्रेम की बात करना खाँडे की धार पर चलना था उस समय काग्रेस पार्टी तक अपना काय प्रस्ताव पारित करने तक सीमित किये थी लेकिन पडितजी निर्भीकता के साथ जन चित्त से कायरता का भाव निकालने का काम कर रहे थे

उठो उठो शीघ्र करो न देरी
है एक ही तो यह बात मेरी
स्वदेश सेवाव्रत को उठाओ
प्रधान कत्तव्य सपूत का है
प्रसन्न माँ को रखना सदैव
हे भाइयो ! भारतभूमि माँ की
सेवा करो धम यही तुम्हारा

'नवरत्न' जी ने भारत के जन-जन मे स्वदेश प्रेम का शखनाद फूक कर यहाँ के निवासियो के कुम्हलाये मनो मे अपने देश, अपनी धरती, अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति

तथा अपनी परम्पराओ से प्रेम करने की सतत प्रेरणा दी उन्होने अपने काव्य द्वारा अपनी धरती से पावन अनुराग का सगीत पैदा करने का महान् काय किया है इसके लिये उन्होने देश के कण-कण को महत्त्व प्रदान किया गरीब, सत्रस्त, धमभीरू, जातिगत रूढियो मे जकडे लोगो को उन्होने ललकार कहा "तुम्हारा असली अन्नदाता भारत है, यहा की मिट्टी है इसलिए विदेशियो की चाटुकारिता छोड कर गुलामी की चादर को उतार कर फेंक दो कोई काम करने म अपमान नही है वे लोग जो अपनी शान शौकत का प्रदर्शन करते हैं, वे देश जो अपने धन-दौलत पर इतराते हैं उनके खजाने हमने भरे हैं यही भाव 'मातृवदना' की निम्नाङ्कित छद मे व्यक्त हुआ है —

कोई वस्त्र बुने, करे जुलाहे का काम कोई,
करत सुतारी कोई शिल्प काज सारत है
मोचीपन करे कोई, बनाते मिठाई कोई,
लगा कोई फर्नीचर आलय सवारत है
दीपक बनावे कोई, रग लावे कोई कोई,
सेवकी म द्रव्य पाय उमर गुजारत है
सब देश चाकर है भारत के वाह-वाह,
एक मात्र अन्नदाता सरदार भारत है

नवरत्न जी के समय मे हिन्दी मे बाल साहित्य का नितान्त अभाव था प्राचीन बालको की अलौकिक कथाओ तक ही बाल साहित्य की परिधि थी ऐसे समय म 'नवरत्न जी' ने आगे बढकर बच्चो के लिए सुन्दर तथा प्रेरणादायी काव्य रचनायें लिखी इन रचनाओ मे बाल-मनोरजन ही नही, एक नैतिक मूल्य सम्बोध भी है 'बच्चा' कविता म वे भारत मे प्रजातत्र की स्थापना का सपना देखते हैं लिखा है—

सब मेरे हैं, मैं हू सबका
मान करू गा, शुचि जन मत का
प्रजातत्र स्थापित कर दू गा
मैं अपनी धुन का हू पक्का
भारत माता का हू बच्चा

राष्ट्र प्रेम के कारण ही नवरत्नजी राष्ट्र-नेताओ के प्रति आदर भाव के साथ समर्पित थे उनके लिए गोपालकृष्ण, गाधी, बालगगाधर तिलक पुरुषो के नाम नही थे, दिव्य आदश के पु ज थे पडित जी इन राष्ट्र-नेताओ के महान् जीवनादर्शों से अपने हृदय का कोना-कोना प्रकाशित करते रहते थे यही कारण है कि गोपाल कृष्ण

गोखले और तिलक की मृत्यु पर उन्होंने हृदयविदारक कवितायें लिखीं इन दोनों राष्ट्र नेताओं पर लिखी रचनायें उनके प्रति पंडित जी के उत्कट प्रेम को ही व्यक्त नहीं करती बल्कि स्वतन्त्रता संग्राम में उन दोनों (गोखले और तिलक) की महत्वपूर्ण तथा रचनात्मक भूमिका को भी संकेतित करती हैं गोखले के लिए उन्होंने लिखा—

बुद्धिधन ! नीतिधन !! पूत भारत माता के !!!
राजनीति तत्व वेत्ता, अर्थ-विद्या पारावार
चला कहां गया कहां ? मां के जने प्यारे भाई
गोखले गोपाल कृष्ण मचाकर हाहाकार

'मां के जने प्यारे भाई' से लक्षित होने वाला 'सहोदरत्व' विशेष रूप से द्रष्टव्य है

इसी प्रकार तिलक की मृत्यु पर लिखी ये पंक्तियां बहुत मार्मिक हैं —

वह स्वराज्य महापथ दर्शक
प्रभु परायण, नीति पयोनिधि
वह महामति, कृष्ण सखा महान्
तिलक आज गया उठ ही गया

कलम के बल से लडता रहा
प्रबल गर्जन भी करता रहा
सुभट केसरि जो न हटा कभी
तिलक आज गया उठ ही गया

तिलक के उठ जाने का शोक भावुकता ही नहीं है वह दुःख की विकट घडी है खास तौर पर इसलिए कि अभी गांधी पूरी तरह स्थापित नहीं हुए थे और देश छिन्न भिन्न था नेतृत्व देने वाले तिलक उठ गये थे छिन्न भिन्न देश की आर्त स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने निम्नलिखित कवित्त लिखा—

छिन्न-भिन्न राज्य तन्त्र छह सौ छियासी राज्य
लोग बाग भिन्न भिन्न भाषा को उचारत है
सैंकडों हैं जाति-पांति संगठन ठीक नहीं,
मति-गति सारे जन न्यारी-न्यारी धारत हैं

मन अकुलावे महादेश दशा देख-देख,
ध्येय का न पता कहीं बुद्धि माद्य भारत है।
मारग लगावे वारो ज्ञान शक्तिदाता कोऊ,
नेता है न साचो या सो गिरो जात भारत है।

लार्ड कर्जन ने भारतीयों का शोषण करने तथा स्वतन्त्रता संग्राम को भेद भरी नीति से कुचलने मे अपनी अहम् भूमिका निभाई थी उस समय बडे बडे क्रान्तिकारी शूरवीरो तक मे इतनी हिम्मत नही थी कि अपनी लेखनी से तत्कालीन धूर्त अंग्रेज सरकार पर सीधा आक्रमण कर सकें लेकिन 'नवरत्न' जी ने बन्दूक की गोली से भी गहरी मार करने वाला आक्रमण किया उन्होंने निर्भीकतापूर्वक लिखा—

एलगिन गिन गिन दे गया हरामी दुःख,
दुरजन कर्जन ने क्रूरता पसार ली।
एमसन लगा गया सभा तोड़ने का तांता,
फूलर ने फूल शाही अपनी बघार ली।
एबटसन पाजी ने लाजपत दूर किये,
फ्रेजर औ हेयर ने धूम-धाम धार ली।
कहे काल कवि दुष्ट मिन्टो ने तो घोटा दम,
भारत की जान, जॉनमार्ले ने मार ली।

पण्डितजी प्रवासी गुजराती थे, अत उनकी मातृभाषा गुजराती थी किन्तु उन्होंने गुजराती के स्थान पर हिंदी की उन्नति को अपना जीवनध्येय बना लिया था भरतपुर में 'हिंदी साहित्य', इन्दौर म हिंदी साहित्य समिति तथा सन् 1907 म जयपुर म पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साथ मिलकर 'साहित्य संसद' तथा कोटा मे 'भारतेन्दु समिति' आदि संस्थाओ के निर्माण मे नवरत्नजी का अथक योगदान आज भी उनके हिंदी प्रेम का साक्षी है

सन् 1918 मे बम्बई की हिन्दू महासभा के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए मालवीयजी से इसी हिंदी सेवक ने कहा था 'मालवीय जी ! जनता आपका आदर करती है तो करे पर गिरिधर शर्मा से आप उसी समय सम्मान पायेंगे जब हिन्दू विश्वविद्यालय हिंदी विश्वविद्यालय मे परिवर्तित हो जायेगा ' पंडितजी के इस कथन से अनेक ख्यातिनामा लोग रुष्ट हो गये थे, किंतु, सहृदय और मन की सच्चाई को जानने वाले मालवीयजी ने कहा —' नवरत्नजी ठीक कहते हैं, राष्ट्रभाषा के हित के लिए यह आवश्यक है "

नवरत्नजी का पक्का विश्वास था कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा उसके माध्यम से ही राष्ट्र की अखडता स्थापित की जा सकती है तथा गरीब, पिछड हुए, जीवन भर अभावो मे पिसत फिर भी प्रसन्न तथा सतुष्ट रहने वाले हजारो हजार लोगा की 'सास्कृतिक परोहर' को बचाया जा सकता है उ होने दूसरी भाषाग्रा म भी साहित्य सृजन किया लकिन वहा भी वे हि दी नही भूले उदू म हि दी का यशगान करते हुए 'कलन्दर' (नवरत्नजी का उदू तखल्लुस) ने कुछ शानदार शेर लिख वे इस प्रकार थे

सुनो ए हिंद के बच्चों तुम्हारी है जुबा हिंदी
तुम्हारा हो यही नारा हमारी है जुबां हि दी
पढो हिंदी, लिखो हिंदी, करो सब काम हिंदी मे
मरी ग्राला खयालो से तुम्हारी महरबा हि दी
हजारो लफ्ज ग्रायेंगे नये ग्रा जाय क्या डर है
पचा लेगी उन्ह हिन्दी कि है जिंदा जुबा हिन्दी
'कल दर' मुर्शिदे कामिल बडे ही साफगो हो तुम
जुबा है हिंद की हि दी पढेगा सब जहां हि दी

स्वत त्रता सग्राम के ग्रमर गायक तथा ग्रपनी उदात्त कविता से बुझे हुए हृदयों म राष्ट्रीयता का ज्वालामुखी धधकाने वाले इस निडर राष्ट्रभाषा हि दी प्रेमी को मैं श्रद्धापूवक प्रणाम करता हू

प गिरिधर शर्मा ने भारत का जो चित्र खींचा उसमे सभी प्रान्त भारत के ग्रविच्छिन्न ग्रग माने गये।

—'सस्कृति के चार ग्रध्याय' रामधारीसिंह 'दिनकर'

श्याम सुन्दर शर्मा

हिन्द मे जनम पाके हिन्दी जो न जानी हो

पडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के राष्ट्र प्रेम को हिन्दी-प्रेम के द्वारा ही समभा जा सकता है उनका यह अटूट विश्वास था कि जब तक हि दी देश की भाषा नही होती स्वतत्रता प्राप्त होना सभव नही है इसलिए उ होने राष्ट्र-भाषा का उसी तरह गुणगान प्रारम्भ किया जसे वे 'राष्ट्र' का कर रहे थे इसी समझ के कारण अब पडितजी को एक धुन सवार हुई कि हिन्दी भाषा को देश मे कसे स्थापित किया जाए झालावाड से काम शुरू किया, वहाँ हिन्दी समिति खोली इस काम मे सहयोग देने वाले रहे श्री कृष्ण गोपाल माथुर, जो अब सुना है कि उज्जन म रहते है झालावाड के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लाल च द्र सेठी जो बालचद विनोदीराम फम के मालिक थे इनके सहयोग स हि दी प्रेमी बन गये वे पडितजी को अपना गुरु मानते थे यद्यपि दोनो की उम्र मे ज्यादा फक नही था इनकी एक फैक्ट्री उज्जन मे थी, एक इ दौर म भी थी बस इसी माध्यम से उज्जन तथा इ दौर मे 'मध्य भारत हि दी समिति की स्थापना हो गई इ दौर के तत्कालीन अमात्य सरदार कीवे को इ होने इस काय म सहयोगी पाया इ दौर इनका कायक्षेत्र बन गया और वहा हि दी की जबरदस्त उन्नति हुई वहाँ के महान राजा होल्करो की मातृभाषा मराठी थी कि तु वे दूरद्रष्टा थे जानते थे कि

हिन्दी के बिना भारत का काम नही चल सकता है हिन्दी को अपनाया और खूब अपनाया बडा प्रचार हुआ नागरी भाषा का

महामना मालवीय जी से भी इनका परिचय हो गया और उनसे तो इन्होने यह भी कह दिया कि 'हिन्दू विश्वविद्यालय' न बना कर 'हिन्दी विश्वविद्यालय' बनाइये मालवीय जी इनसे सहमत हो गए लेकिन उस समय यह सभव नही हुआ उस वक्त ही क्या जो पढाई आज अग्रेजी मे हो रही है हिन्दी म सम्भव नही हुई यही भारत का दुर्भाग्य है लार्ड मेकाले ने जो अग्रेजी की पढाई की नीव डाली, भारतीयो को सब प्रकार से अग्रेजी भक्त बनाया वह भक्ति आज भी वैसी की वसी है 200 से ऊपर देश की राष्ट्रीय प्रयोगशालाओ मे एक भी एसी नही जिसमे हिन्दी के जरिए शोध, पढाई या दनिक काम हो रहा हो बहुभाषी देश होने क कारण अनेक विज्ञान विषयो के धुरन्धर विद्वान अपनी मातृभाषा या अग्रेजी जानते हैं

पडितजी चाहते थे कि अग्रेजी तथा यूरोप की अन्य समृद्ध भाषाओ मे जो महान् ग्रथ है उनका हिन्दी म अनुवाद हो और सब विषयो पर मौलिक ग्रथ लिखे जाएँ हिंदी की समृद्धि के लिए पडित गिरिधर शर्मा सारे भारत मे विचरते रहे उनका परिचय महात्मा गाधी से भी हुआ और उन्होने गाधीजी को हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाने का गुरु मत्र दिया 1918 मे इन्दौर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ जिसके स्वागताध्यक्ष नवरत्न जी थे इस सम्मेलन मे गाँधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित की

हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' जब तक चली और जब तक पडित महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा पद्मलाल पुन्नालाल बख्शी उसका सम्पादन करते रहे तब तक 'नवरत्नजी' की कवितायें तथा लेख उसम छपते रहे भारत के सभी प्रसिद्ध पत्रो म इनकी रचनायें छपती थी इनके काशी नागरी प्रचारिणी सभा से भी अच्छे सम्बन्ध थे वे हमेशा कहते थे—सभा द्वारा सस्कृत तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओ के उच्च तथा सुन्दर काव्य ग्रन्थ तथा अन्य शास्त्र पुस्तकें हिन्दी अनुवादित होनी चाहिए ताकि हिन्दी भाषा पूरी तरह समृद्ध व सम्पन्न होकर राष्ट्र भाषा ही नही सब भाषाओ की महारानी बन जाये उनका विश्वास था कि राष्ट्र भाषा की समृद्धि प्रान्तीय भाषाओ का विकास तो करेगी ही साथ ही उर्दू को भी समुन्नत करेगी हिन्दी दूसरी भाषाओ की प्रतिद्वन्द्वी नही है प्रान्तीय भाषाओ का वचस्व छीन कर हिन्दी का लाभ होने वाला नही है पडितजी हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा और केन्द्र भाषा के रूप मे स्थापित देखना चाहते थे वे चाहते थे कि हिन्दी का आदर हो, वह सवत्र बोली व समझी जाये

गिरिधर जी ने पडौसी राज्य कोटा मे हिन्दी का प्रचार और प्रसार करने मे

योगदान दिया कोटा के महाराव भीमसिंह जी से मिले और हिन्दी को मुख्य स्थान देने की प्रार्थना की कोटा में 'भारतेन्दु समिति' की स्थापना की जिसने हिन्दी को बढ़ाने और बलवती बनाने में खूब काम किया राज्य का तमाम काम हिन्दी में होने लगा हिन्दी की अनेक पाठशालायें खुलीं 'भारतेन्दु समिति' अब भी सभा सम्मेलन बुलाती है साहित्यकारों का सम्मान करती है, उन्हें प्रोत्साहन देती है कोटा के पास 'रणबांकुरे हाड़ाओं' की राजधानी बूंदी है वह भी पंडित जी का कार्यक्षेत्र बनी वह सूर्यमल्लमिश्रण, लज्जाशंकर मेहता जैसे सिद्ध साहित्यकारों की जन्मस्थली है श्री लज्जाशंकर मेहता ने हिन्दी की जीवन भर सेवा की ऋषिदत्त मेहता स्वतन्त्रता सेनानी थे और हिन्दी-पत्रकारिता के स्तम्भ तथा सुयोग्य सम्पादक थे पंडित जी इन सब को हिन्दी-सेवा की प्रेरणा देते रहे

भरतपुर में नवरत्न जी का काफी आना जाना था वहां के महाराजा कृष्णसिंहजी बड़े स्वतंत्र स्वभाव के अक्खड़ जाट थे अंग्रेजों से कतई नहीं डरते थे जो चाहते निर्द्वन्द्व करते थे हिन्दी के बड़े प्रेमी थे पंडित जी की प्रेरणा से उन्होंने 1927 में भरतपुर में अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का अधिवेशन आयोजित किया इस अधिवेशन के सभापति थे महामना मालवीय जी मैं भी उसमें भाग लेने गया था इन्दौर के उपप्रधान मन्त्री सरदार कीबे तथा श्रीमती कीबे भी आई थी भरतपुर में राज्य का सब काम हिन्दी में होता था

अलवर की बात ही मत पूछिये वहां के राजा जयसिंह निडर तथा दबंग थे वे हिन्दी, ब्रजभाषा में कविता लिखते थे और अंग्रेजी विरोधी थे हिन्दी के व जबरदस्त हिमायती थे राज्य का सब काम हिन्दी में होता था राजा जयसिंह झालावाड़ नरेश सुकवि सुधाकर के अनन्य मित्रों में थे पंडित जी से प्रायः उनका मिलना होता था

करौली धौलपुर भी हिन्दी के प्रभाव से अछूते नहीं थे धौलपुर के तत्कालीन महाराजा बड़े समझदार व्यक्ति थे लाला कन्नूमल जी (जो हिन्दी भाषा के भक्त तथा लेखक थे) उनके यहां न्याय शासन में उच्चाधिकारी थे उनके कारण हिन्दी का खूब प्रचार तथा प्रसार था

जयपुर एक बड़ी रियासत थी किन्तु वहां के राजा किसी से मिलते नहीं थे उनके दिवान टोंक के नवाब सर फयाज अली खां थे उनके मन में हिन्दी के लिए कोई उत्साह नहीं था राज-काज उर्दू में होता था परन्तु हिन्दी के लिए लड़ने वाले कम नहीं थे पंडित जी जयपुर आते जाते रहते थे किसी समय वहां संस्कृत के पांच सौ पंडित थे उन्हीं में से भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने हिन्दी का पक्ष लिया उन्होंने

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षायें शुरू करवाई सम्मेलन का काय सभाला खुद पढाते, कमलाकर गुरुजी पढाते, प्रभुनारायण जी नाट्याचाय पढाते

पडित जी की मूल रचनायें तथा अनुवाद पुस्तको की सख्या इतनी है कि गिनती सहज नही उन्होने अपने जीवनकाल म 100 से ऊपर पुस्तके लिखी है उनम बहुत सी अप्रकाशित हैं नवरत्न जी ने आखिरी समय तक बोल बोल कर श्रीमद्भागवत का 'दशम् स्कध' हिन्दी मे छन्दबद्ध कराया पता नही वह कहा है ? यह सुनने मे आया है कि एक बार घर म आग लग गयी थी तब बहुत सी हस्तलिखित सामग्री स्वाहा हो गयी

प्रकाशित विख्यात पुस्तको मे सबसे उत्तम है सस्कृत मे उमर खैयाम की रुबाइयो का सुदर श्लोको म अनुवाद इस पुस्तक का नाम 'अमर सूक्ति सुधाकर है इस पुस्तक मे 75 पद्य हैं एक से एक सुन्दर इन रुबाइयो मे समय की अनतता, जीवन की विकारशीलता, अल्पकालीनता तथा अनिश्चयता का मार्मिक विवेचन है पडित जी ने हिन्दी तथा गुजराती म भी इसका अनुवाद किया है- सस्कृत मे 'भवानीसिंह सद्वृत्त पुष्पगुच्छ एक लघु काव्य पुस्तिका है जो लगभग साठ पृष्ठो की है जनियो के धमग्रथ 'भक्तामर स्त्रोत्र' का हिन्दी अनुवाद कर पण्डित जी ने 'सवधम समभाव' को आस्था का परिचय दिया उन्होने कई अग्रणी कविताओ का अनुवाद किया जिसमे गोल्डस्मिथ की 'हर्मिट' नाम की एक कविता भी है 'योगी' शीषक से यह अनुवाद छोटी पुस्तक के रूप म प्रकाशित हुआ है उन्होने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'क्रीसेन्ट मून' किंवा शिशु' नाम की प्रसिद्ध बगला रचना का गुजराती मे अनुवाद किया जा वि स 1982 म छपा था उसका नाम है 'बालचन्द्र बालको का नन्दन कानन

'व्यापार शिक्षा' पडितजी की हिन्दी मे मौलिक रचना है जिससे इनकी बहुमुखी प्रतिभा का अन्दाज सहज ही लग जाता है व्यापार जैसे टेकनिकल काम म भी उनका रस था, जानकारी थी 'अथशास्त्र' नाम से इस कठिन विषय पर हिन्दी मे मौलिक पुस्तक 80 वष पूव छप गई थी सुश्रुषा' नाम से नर्सिंग विषय पर इनकी मौलिक पुस्तक भी छपी 'कठिनाई म विद्याभ्यास अग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है सस्कृत के परम विख्यात कवि माघ के 'शिशुपाल वध' सस्कृत महाकाव्य के प्रथम व द्वितीय सग का हिन्दी म रूपान्तर हिन्दी माघ' वि स 1985 म होल्कर ग्रथमाला 30वी सख्या के अन्तगत प्रकाशित किया गया पण्डितजी ने भर्तृहरि के नीति शतक का गुजराती रूपान्तर किया जो वि स 1984 म छपा गुजराती भाषा के वरेण्य कवि नानालाल दलपतराय के 'प्रेम कुज' नाटक का हिन्दी म रूपान्तरण पडितजी द्वारा वि स 1985 म किया गया पडितराज जगन्नाथ के 'भामिनी विलास' के अन्याक्ति

प्रकरण का इन्होने हिन्दी पद्यो मे रूपान्तर किया गुजरात के कवि नान्हालाल के प्रसिद्ध नाटक 'जया जयत' की हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने का श्रेय पडितजी को ही है यह एक अद्भुत मनोवैज्ञानिक नाट्यकृति है इसमे 'भोग और योग' का अन्तर्द्वन्द्व चित्रित हुआ है जया योग की प्रतीक है तो जयत भोग का आखिर जया की जयत पर विजय होती है

'गिरिधर सप्तशती' सस्कृत के सुप्रसिद्ध 'आर्या' छन्द मे लिखे 700 श्लोको की सुदर एव दिव्य कृति है 'नवरत्न नीति' अथवा 'आर्योपदेश रत्नमाला 111 श्लोका की उपदेश प्रधान पुस्तक है 'कविता कुसुम' (अग्रेजी साहित्य के बगीचे के रग बिरगे फूल) हिन्दी म वि स 1982 मे छपा 'पचम देव स्तुति' मे हिन्दुओ के पाच देवताओ विष्णु, शिव, गणेश, सूय एव दुर्गा की स्तुतिया हैं पडितजी ने 'आरोग्य दिग्दशन' नाम से स्वास्थ्य सम्बधी मौलिक ग्रथ लिखा 'जापान विजय काव्यम्' 'सौर मडल काव्यम्' 'काव्य कलाप', 'नीतिमुकुर' आदि सस्कृत की मौलिक कृतिया हैं

अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि नन्ददास के 'भ्रमर गीत' का सस्कृत म 'प्रेम पयोधि' नाम से अनुवाद किया जो वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णवो के लिए महान् उपलब्धि थी प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' से सवप्रथम हिन्दी पाठका को परिचित कराने का श्रेय भी पडितजी को ही जाता है इस अनुवाद के सम्बन्ध म पडितजी ने स्वय लिखा है—"गीताजलि बगभाषा म है, गीतो का माधुय अनुपम है अनुभव का विषय है कहने का नही इसके भाषान्तर अग्रेजी, फ्रेंच, जमन आदि मे हुए हैं वे सब गद्य भाषान्तर हैं मैंने यह भावान्तर पद्य म किया है एक गीतमय पुस्तक का भाषान्तर गेयतापूण पद्यो म करना कठिन व्यापार है सात वष म मैं इसे पूण कर सका हू जगत् की सारी भाषाओ मे सवप्रथम पद्यमय भाषान्तर यह मेरी गीताजलि है"

प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' अत्यत सरल स्वभाव के सीधे सादे प्राणी थे, झालावाड दरबार के गुरु होने के कारण उन्ह 'स्वण कडा पहनने को दिया गया था जिसे उन्होने कभी नही पहना उन्हे धन, पद, विद्या का अभिमान नही था सस्कृत, फारसी, उर्दू और बगला के ज्ञाता होने के अलावा हिन्दी और गुजराती के व असाधारण विद्वान् थे उन्ह सरस्वती का वरदान प्राप्त था उनकी एक भी कृति ऐसी नहीं जा दोषपूण या भद्दी हो जो कुछ उन्होने छुआ उसे कचन कर दिया

नरेन्द्र सहाय सक्सेना

पण्डित श्री गिरिधर शर्मा "नवरत्न" : एक मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के लिए यह दुर्भाग्य है कि जीवित अवस्था मे वह अपने महारथियो को पूछता और निधन के पश्चात् श्रद्धाञ्जलिया अर्पित करता है महाप्राण निराला इसके ज्वल त उदाहरण हैं इसी प्रकार प गिरिधर शर्मा नवरत्न तथा प रामनिवास शर्मा की स्थिति रही है अपने जीवन काल म यश उनसे दूर दूर रहा अब भी उनका मूल्यांकन नहीं हुआ है

जिसने एक बार भी पडित गिरिधर शर्मा नवरत्न से साक्षात्कार किया वह उनके भव्य डीलडौल एव प्रभावशाली व्यक्तित्व को भुला सके ऐसा सभव न था मैंने पडित गिरिधर शर्मा का नाम सुना था, आचार्य के रूप म सन् 1941 ई म श्री नन्द चतुर्वेदी से परिचय हुआ और उन्होंने ही सवप्रथम मुझे नवरत्न जी के विषय मे बताया चतुर्वेदी जी ने कहा था कि वे उनके काव्यगुरु हैं जिस श्रद्धा से उन्होंने यह सब कुछ कहा था वह आज तक मुझे स्मरण है तभी उनके दर्शन करने की इच्छा बलवती हो उठी थी

उसके पश्चात् सन् 1950 म हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कोटा मे हुआ वहा भी उनकी बहुत चर्चा रही किन्तु उनके ठोस सुझावो को कार्यान्वित करने के लिए किसी के पास समय न था सम्मेलन के गुटबाज लोगो ने उन्हे क्रियान्वित करने की चिंता नही करी

अवश्य ही अपनी असमर्थता के कारण वे तीस वर्षों से हिंदी जगत के समक्ष सक्रिय रूप से न आ सके किंतु हिंदी के प्रति नवरत्न जी का प्रेम लेशमात्र भी कम नहीं हुआ लेखनी का काम उन्होने मुझ को दिया फलस्वरूप हिंदी साहित्य को कई सुयोग्य शिष्य मिले.

सन् 1955 ई मे झालरापाटन मे तहसीलदार नियुक्त होकर गया था उन दिनो जागीर पुन ग्रहण के अन्तगत मुआवजे के दावे भरे जा रहे थे नवरत्नजी भी उसी सिलसिले म तहसील म पधारे थे अपने कनिष्ठ पुत्र परमेश्वरजी को लेकर सर्वप्रथम तभी उनके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ उनका भरा हुआ शरीर कृश हो गया था किंतु ललाट की चमक मे कोई कमी नही थी नेत्र ज्योतिविहीन होने पर भी सुन्दरता से उठ जाते थे इन्हे देखकर आसानी से कहा जा सकता था कि उनमे किसी समय सर्वेक्षण की पनी दृष्टि रही होगी

जागीर उन्मूलन के विषय मे झालावाड़ जिले के लगभग समस्त प्रमुख जागीरदारो से मेरा वार्तालाप हुआ किंतु राजस्थान सरकार को कोई भी क्षमा न कर सका था सबके मन म रोष था

जागीर एकमात्र आधार होते हुए भी शर्मा जी ने अपने निर्विकार भाव से मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था उनके मन म तनिक भी रोष न था इस विषय को लेकर संताप से वे बहुत दूर थे उन्होने युगद्रष्टा की भांति उसका स्वागत किया और बतलाया कि यह उनका सौभाग्य है कि इस राष्ट्रीय यज्ञ म उनका भी "पत्र-पुष्प" का योगदान हुआ है

नवरत्न जी तनिक खिन्न हो गये थे मैंने आश्चर्यचकित हो कारण पूछा तो उन्होने और भी स्तंभित करते हुए कहा कि यदि यही पुनीत काय 30 (तीस) वर्ष पूर्व हुआ होता तो मैं तहसील के द्वार पर अनुदान लेने न आता

मैंने अपनी निममता अनुभव कर खेद प्रगट किया तो शर्मा जी एक बालक की तरह सरल हो गये थे अपने स्वाभाविक स्नेह से उन्होंने बतलाया था कि उन्हे

तहसील तक आने मे तनिक भी खेद नही हुआ दु ख इसी बात का है कि वे मुआवजा लिये बिना न रह सके

द्विवेदी युग के साहित्य महारथी नवरत्न जी के नवीनतम विचारो ने मुझे अवाक् कर दिया था बाद मे पता चला कि शर्माजी पत्र पत्रिकायें पढवा कर अपने आपको समय के साथ रखते हैं उनकी ज्ञान गरिमा उनकी बुद्धिमहिमा कुछ ऐसी थी जिसका उदाहरण अ यत्र मिलना अब तो सभव नही है

शर्मा जी की सवतोमुखी प्रतिभा ने तत्कालीन हिंदी साहित्य को नयी दिशा दी अपनी साधना से उ होने हिंदी साहित्य को अनेक प्रकार से सम्पन्न किया

अनुवादक के रूप मे–

सवत्र ही अनुवाद मूल लेखन से अधिक कठिक माना गया है लेखन को कल्पना के लिय विस्तृत क्षेत्र खुला मिलता है जबकि अनुवादक को सीमित अधिकतम सफल अनुवादक वही होता है जिसकी विद्या, बुद्धि अथाह हो इस कठिनतम गुरुतर काय म शर्माजी की मेधा ने निखार पाया और वे तत्कालीन हि दी साहित्य को ऐसे रत्न दे गये जिनका अभी हम मूल्याकन भी नही कर सके हैं पडित गिरिधर शमा हि दी म अनुवाद के मिल्टन की भाति सवदा स्मरणीय रहगे कसी समता है दोनो मे! मिल्टन ने अपने भारी भरकम व्यक्तित्व से तत्कालीन आग्ल साहित्य को नया मोड दिया शर्मा जी ने यही काय अपने अनुवादो से किया मिल्टन अपनी वृद्धावस्था मे नेत्रहीन हो कर अपनी पुत्री की सहायता से साहित्य सेवा करते रहे शर्मा जी की भी नेत्रज्योति जाने के पश्चात् उनकी विदुषी पुत्री शकुन्तला कुमारी ने आज म कौमाय व्रत धारण करके साहित्यिक वृत्ति मे योगदान दिया

शर्मा जी के अनुवादो ने हि दी साहित्य को क्या दिया इसका मूल्याकन तो अभी भविष्य के गभ है जब कभी कोई साहित्यिक मनीषी हि दी साहित्य मे प्रवृत्त विविध गतिविधियो पर सामूहिक विचार करेगा उस समय उसे शर्मा जी के अनुवादो के मूल्याकन का अवसर मिल सकता है जिस प्रकार जायसी और तुलसीदास को आचाय रामचन्द्र शुक्ल ने हि दी साहित्य मे प्रतिष्ठित किया वसा ही स्थान नवरत्न जी को भी आवश्यक खोज पश्चात् प्राप्त होगा इसमे तनिक भी स देह नही है

उनके रुबाइयात उमर खैयाम के हि दी अनुवाद ने बच्चन को प्रेरणा दी और हि दी काव्याङ्गण म प्रथम बार मधुशाला ने हाला के प्याले ढाल ढाल कर काव्यप्रेमियो को दिये सम्प्रति भी यह अनुवाद हि दी काव्य जगत मे अनोखा, अनूठा माना जाता है

इस विषय मे बच्चन ने लिखा है, "मगर अधिक रस बरसा था उनके रुबाइयात उमर खयाम के अनुवाद से एक पक्ति अब तक नही भूल सका हू—

"वह गुलाब गर्वीली नगरी 'इरम' कहा है ?'

अब तक तो हिन्दी मे उमर खयाम के दजनो से ऊपर अनुवाद निकल चुके हैं शर्मा जी सभवत उसके प्रथम अनुवादक थे रुबाइयो के अनक अनुवाद सामन आ जाने के बावजूद शर्मा जी के अनुवाद की अपनी विशेषता है "विचित्र बात है कि रुबाइयो के लिये जिस छोटी पक्ति का प्रयोग उन्होने किया था, उसे अपनाने का साहस फिर किसी भी अनुवादक का नही हुआ अनुवाद म रुबाई की पक्ति कितनी बडी रखी जायें, यह अभी हिन्दी के लिये प्रयोगावस्था म है ज्यादा लागो न पक्ति को ज्यादा बडी ही किया है, छोटी पक्तियो के प्रयोग कम ही हुए हैं

शर्मा जी की पक्ति एक आध्यात्मिक स्थिति की ओर सकेत करती है, अनुवाद म कम से कम इस लम्बाई की पक्ति म मूल के विचारो को किसी भी तरह बढाया नही जा सकना और, थोडे मे सिमटा कर सक्षिप्त म ही रखा जा सकता है उससे शर्माजी के अनुवाद मे जो कसाव है, जो सयम है, वह किसी भी अनुवाद म नही आ पाया है"

बच्चन जी की उपयु क्त पक्तिया शर्माजी के प्रत्येक अनुवाद पर लागू होती हैं शर्माजी ने जिसका अनुवाद किया, प्रथम उसको आत्मसात करके ही कलम उठाई इसीलिये उनके अनुवाद आज भी हि दी जगत म आदश के रूप म स्वीकार किय जाते हैं

रुबाइयात उमर खयाम का हिंदी अनुवाद करने के दो वष बाद उ होने उमर खयाम का सस्कृत अनुवाद 'अमर सूक्ति सुधारक" सस्कत साहित्य को भेंट किया नवीन प्रेरणा के लिए, नव भावसृजन के हेतु ! किंतु हिंदी जसा स्वागत उसका नही हुआ उसका मूल्य पहचाना जमन सस्कतज्ञो ने ! और उसकी कीमत 1 पाउण्ड हात हुए भी जमन विद्वान ने खरीदी !

इसी टक्कर का दूसरा पद्यबद्ध अनुवाद शर्मा जी ने हिंदी को दिया कवि कुलगुरु रवीन्द्र की विश्वविख्यात "गीताञ्जलि' का यह भी सवप्रथम अनुवाद था इसके पश्चात् हिंदी साहित्य मे एक नया मोड आ गया बगला की ओर हिंदी साहित्यसेवियो की श्रद्धाभक्ति बढ गई और उसके काव्य एव साहित्य का अधिक मनन, अनुशीलन होने लगा इसका प्रभाव हमारी हिंदी कविता पर स्पष्ट लक्षित है इसी सिलसिल मे शर्मा जा

ने रवीन्द्रनाथ की दूसरी पुस्तक गाडनर का हिंदी अनुवाद 'बागवान' किया, और इसी प्रकार 'चित्रांगदा का अनुवाद हिंदी म करके शर्माजी ने नाट्य साहित्य का माग प्रशस्त किया कई नवादित लेखको ने उससे प्रेरणा पाई

यही नही, शर्माजी बगला विचारधारा से हिन्दी साहित्यिको को परिचित करा के बठ गये हा उन्होने गुजराती साहित्य के हिन्दी अनुवाद द्वारा तत्कालीन हिन्दी साहित्य मे क्रांति उत्पन्न कर दी गुजराती उनकी अपनी भाषा थी इस कारण उसके अनुवाद अधिक सफल हुए हैं गुजरती के कवि सम्राट नान्हालाल दलपत राम कवि को सब प्रथम हिन्दी से परिचित करवाने का श्रेय उन्ही को जाता है इस कवि के जया जयन्त, प्रेमकुन्ज, उषा, युग पलटा, महासुदशन का हिन्दी अनुवाद उन्होने किया इस प्रकार गुजराती विचारधारा से परिचित होने की हिन्दी कवियो का नवीन प्रेरणा मिली और वे शक्तिशाली काव्य रचना मे सफल हो सके

उस कठिन युग मे जबकि पठन-पाठन के इतने साधन न थे, युवक निराशाभिमुख थे, शर्माजी ने "कठिनाई मे विद्याभ्यास" का अनुवाद करके उन्हे एक प्रेरणा व सम्बल दिया

उपन्यास क्षेत्र म आपने गोवद्धनराम माधवराम त्रिपाठी कृत "सरस्वती चन्द्र" का हिन्दी अनुवाद कर मागदशन किया इसी प्रकार मराठी की अलभ्य पुस्तक 'शुश्रूषा का हिन्दी अनुवाद करके आपन भारती का भडार भरा

सस्कृत मे उमर खयाम की रुबाइयो के अतिरिक्त उन्होन 'कारकरत्नम् तथा 'सद्वृत्तपुष्पगुच्छ' और लिखी थी

नवरत्नजी कवि के रूप मे

शर्मा जी द्वारा विरचित कविताओ का अधिक उल्लेख सम्प्रति हमे उपलब्ध नहीं है सभव है उनके अप्रकाशित साहित्य मे दबा पडा हो किन्तु जो कुछ कवितायें उपलब्ध है वे बजोड तथा अद्भुत हैं वे ऐसी कविताये है जिन्होने अधिकाशत प्ररणा दी और नवोदित कविया का माग प्रशस्त किया

श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय उनकी एक कविता से कितने प्रभावित हुए, वह उन्हीं के शब्दा म सुनिये—इसके पूव मुझे पण्डितजी की प्रसिद्ध कविता पुस्तक प्रेम पढने को मिल चुकी थी जो पहले "सरस्वती' और बाद मे प लोचन प्रसाद पाण्डेय ने "कविता

कुसुम माला" मे सग्रह कर इडियन प्रेस मे छपाई थी यह कविता मुझे इतनी प्रिय लगी कि मैं सदव ही इसे गुनगुनाया करता था और अब भी यह मुझे इतनी ही प्रिय है"

उपाध्यायजी ने इस कविता से अपनी काव्य साधना मे पर्याप्त प्रेरणा ली और अपनी कई कवितायें आपसे सुधरवाईं इस प्रकार के सस्मरण न जाने कितने उनके मित्रो, शिष्यो व सहयोगियो से प्राप्त हो सकते है परिश्रम तो इसमे अवश्य होगा किन्तु परिश्रम के अनुपात मे जो उनका मूल्य होगा वह सप्रति आकना अवश्य कठिन होगा कि तु भविष्य म नही

ऐसी ही एक घटना मुझे आज भी स्मरण है राजस्थान निर्माण के पश्चात् झालावाड जिले के अन्तगत सन् 1949 मे सवप्रथम पचपहाड तहसील मे नियुक्त हुआ एक दिन एक सज्जन ने मुझे अपना परिचय निरतर हरि के नाम से दिया व हर प्रकार से विचित्र थे बोलचाल, वेशभूषा, कायकलाप तथा धुन मे उन्होने बडे आदर से सयत्न सहेजी हुई शर्मा जी की किसी पत्र म प्रकाशित ' बच्चा ' शीषक कविता निकाली और मुझे यह बताया कि अब उनका यह ध्येय है कि इस कविता को अधिकाधिक मात्रा मे छपा कर होनहार बच्चो म वितरण करे कितनी प्रतिया वे इस समय तक छपवा कर बाट चुके थे, यह तो मुझे स्मरण नही है लेकिन उ होने कई हजार क ऊपर सख्या बताई थी मुझे यकायक उनकी बात पर विशवस नही हुआ मुझे स देह हुआ कि कही यह शर्माजी के नाम से धोखा तो नही हो रहा है कि तु वमी कोई बात नही थी मने उस कविता की 500 (पाच सौ) प्रतिया छपा कर उनको दी और वे आन द विभोर हो कर चले गये थे

"सरस्वती ' के साथ ही साथ पूना से प्रकाशित होने वाले 'चित्रमय जगत" म भी उनकी कवितायें प्रकाशित होती थी फुटकर रूप म होने के कारण उनकी रूपरेखा निश्चित नही हो सकी शर्माजी अपनी कविताओ के प्रति कितने जागरूक थे इसका एक उदाहरण पर्याप्त होगा एक बार उन्होने अपनी एक कविता मेरा देश चित्रमय जगत म प्रकाशनाथ भिजवाई सम्पादक महोदय ने उसम कुछ फेरबदल कर दिया तो शर्मा जी उनके सिर हो गये जब तक वह अपने मूल रूप मे नही छपी शर्मा जी ने चन नही लिया इतना अधिकार था शर्मा जी को अपनी भाषा और अपने भावो पर कि उसकी शुद्धता और उनकी उपयुक्तता को लेकर वे किसी से भी लोहा लेने को तत्पर रहते थे

उर्दू, फारसी के विद्वान होने के नाते उनकी गति उर्दू नज्म लिखने मे भी थी वहा व अपने उपनाम ' कल दर ' के नाम से लिखा करते थे पृथ्वी विलास पलेस(झालावाड

नरेश्वर के निवास स्थान) पर कवि गोष्ठियो तथा मुशायरे जमा करते थे वहा शर्माजी का उच्चकोटि के विद्वानो तथा आलिम-फाजिलो से सावका पडता था इस कारण सतत सघर्षण से उनकी प्रतिभा बहुमुखी हो उठी थी

दक्ष व्याख्याता

प्राय लेखक वक्ता नही होते पर नवरत्न जी के भाषण जिन्होने सुने हैं वे उनके पाण्डित्य और ज्ञान से अवश्य प्रभावित हुए हैं उज्जन वाले श्री सूर्यनारायण जी व्यास ने पण्डितजी विषयक अपने सस्मरण मे लिखा है और इसका समर्थन किया है "बच्चन" तथा श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय ने प्रयाग विश्वविद्यालय मे 'लॉ कॉलेज' के हाल मे महाराजा झालावाड (श्री राजेन्द्रसिंह 'सुधाकर') के सभापतित्व मे एक कवि सम्मेलन हुआ था वहा श्री बच्चन पडितजी से प्रभावित हुए थे तो श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय का कथन है कि वे शाजापुर (मध्य भारत) मे अपने बाल्यकाल म सुने पडित जी के भाषण अब तक विस्मृत नहीं कर पाये है उन्होने अपने सस्मरण मे लिखा है—"सन् 1927 म इन्दौर मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथमाधिवेशन खिलचीपुर नरेश महाराजा साहब दुर्जनसालसिंह जी की अध्यक्षता मे हुआ था इसका आयोजन "श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर" (जिसके सस्थापक स्वय प गिरिधर शर्मा नवरत्न थे) के तत्वावधान मे हुआ था इसी के साथ विराट कवि सम्मेलन भी हुआ था इसकी अध्यक्षता पूज्यपाद पण्डित जी ने की थी इस अवसर पर दिया गया आपका प्रवचन काव्य साहित्य पर एक अपूर्व प्रबन्ध के रूप मे ही हुआ था उसकी प्रत्येक पक्ति से साहित्य की रसधारा प्रवाहित होती थी भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से वसा भाषण कदाचित ही कही हुआ होगा

झालावाड निवासियो को तो पण्डित जी के भाषण यदा कदा सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता ही रहता था वे उनकी वाणी की विचक्षणता को अभी भी नही भूले हैं

सपादना-काय

साहित्य प्रसार का यह प्रमुख क्षेत्र भी आपसे अछूरा नही रहा झालावाड से ही आपने 'विद्याभास्कर' नामक एक पत्र निकाला किन्तु इसका जीवनकाल अधिक समय तक नही रह सका आपके अनुज श्री माणिकलाल शर्मा (वासुदेव शर्मा) की आकस्मिक अकाल मृत्यु न आपको इस ओर से विरक्त कर दिया अत यह पत्र कुछ अक निकालने के पश्चात ही बन्द हो गया

इस थोडे से समय मे ही अपनी अद्भुत मेधा के कारण एक सफल सम्पादक के

सभी गुण प्राप्त कर लिये थे अपने शिष्यो की सम्पादन सबधी समस्यायें वे सुलझाते थे और अपने बहुमूल्य परामर्श से उनका पथ प्रदर्शन किया करते थे इस क्षेत्र म भी उनकी सेवायें बहुमूल्य हैं

"चित्रमय जगत" के अभूतपूर्व सम्पादक श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय आपका आभार प्रदर्शन करते थे—"कि तु पत्र की साहित्यिक सामग्री की प्राप्ति के लिए पण्डितजी ही मेरे सहायक सिद्ध हुए पडितजी बारबार पत्रादि के द्वारा मेरा उत्साहवर्द्धन करते रहे आपने कुछ कवितायें भी भेजी और झालावाड नरेश स्व भवानी सिंहजी को विलायत से वापस पधारने पर सचित्र लेखादि देकर सहयोग दिया था"

सस्थापन काय

मध्य भारत के विद्वानो तथा राजस्थान के कतिपय साहित्यसेवियो के अतिरिक्त सभवत बहुत कम हिन्दी प्रेमियो को यह ज्ञात होगा कि श्री मध्य भारत हि दी साहित्य समिति इन्दौर, जिसके तत्वावधान म 'वीणा' उनकी सेवा 34 वर्षों से कर रही है के सस्थापक श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न थे हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना आपने सन् 1914 ई म की इस सस्थापन काम म पण्डित जी को डा सरजू प्रसाद जी तिवारी, सर सिरेमल बापना साहब एव सरदार माधव राव विनायक राव किबे का सहयोग प्राप्त हुआ था इसके पश्चात् इस सस्था की नीव दृढ़ करने मे आप तन-मन से जुट गये इसक लिये आपको बार-बार इन्दौर जाना पडता था कि तु कभी आपके मस्तक पर इस परेशानी से सल नहीं आया समिति के तत्वावधान म जो उत्सव, सम्मेलन अथवा साहित्यिक गोष्ठिया होती उनमे आपका सक्रिय सहयोग भीपस्थ होता था आपने सन् 1912 मे झालरापाटन मे श्री राजपूताना हि दी साहित्य समिति की स्थापना की साथ ही हि दी के उत्थान के हेतु सन् 1912 ई म ही भरतपुर म हि दी समिति की स्थापना की थी

आपके सतत प्रयत्न से कोटा मे भारतेन्दु समिति की नीव पडी इस सस्थान ने भी राजस्थान म हि दी साहित्य की, इस क्षेत्र मे बहुत बडी सेवा की है कि तु उसका दायरा अधिक विस्तृत न हो सका पार्टीबाजो म पडने क कारण इस सस्था की प्रगति अवरुद्ध हुई और, अब उसकी सेवायें पूर्ववत् नही रही हैं

साहित्यिक यात्री

द्विवेदी युग के लेखको तथा साहित्यिको मे आपस म कैसा सौहार्द था, परस्पर

लेखकगण किस प्रकार स्नेह स्थापित करते थे! आजकल सब एकदम पलट गया है वह सहानुभूति, वह स्नेह तथा सौहार्द सब कुछ अब स्वप्न सा प्रतीत होता है

उस समय लेखकों म गुटबाजी न थी एक दूसर पर छोटे नहीं उछाले जाते थे अनुभव प्राप्त लेखक तथा सम्पादक नवोदित साहित्य लेखकों को प्रोत्साहन देने के यत्न म रहते थे उनकी भूलें, उनकी खामिया बतलाकर उन्ह मार्गदर्शन देते थे और आज बडे लेखक ऐसे पत्रो का उत्तर देना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं बडे' सम्पादक उनकी रचनाओ को "सध यवाद वापस" लिखने के अतिरिक्त जो भी उनके पास आया हुआ होता है, और कुछ नहीं करते उनकी एक निश्चित पक्ति के कभी दशन नहीं हो पाते

"वीणा" इस समय अवश्य अपनी परम्परा बनाये हुए है आज भी सुयोग्य सम्पादकमण्डल नाम को न देखकर रचना को देखता है आज भी वहाँ नवोदित लेखकगण स्थान पाते हैं 'वीणा' ने कई साहित्य प्रतिभाओ की स्थापना हिन्दी साहित्य मन्दिर मे की है इसके अतिरिक्त उनको पत्र लिखने पर निराश नही होना पडता पत्र का उत्तर स्नेहसिक्त प्राप्त होता है यदि वीणा का अनुकरण हिन्दी के अन्य पत्र पत्रिकाए भी करने लग तो हिन्दी का भण्डार जो हम कई वर्षों मे भरना चाहते हैं उसके भरने म आधा समय भी नही लगे

ऐसी बात नही कि उस बीते द्विवेदी युग मे केवल छोटे लेखक ही दिग्गजो से सम्ब ध स्थापित करते हा लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार स्वय पहल करने म नहा हिचकिचाते थे उन पुराने दिनो की याद कर डा हरिवशराय बच्चन' ने लिखा है 'उन दिनो इस प्रकार की तीथयात्रा को साहित्यकार धम का मुख्य अग माना जाता था कोइ किसी के लेख, काव्य म कोई गुण दोष देखता तो उससे प्रभावित होकर उससे मिलता या उसस सपक स्थापित करने का अवसर ढूढता रहता था दिनकरजी की प्रारभिक रचनाओ से आकर्षित हो एक बार पडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने कहा था "यदि दिनकर' अफ्रीका के जगलो मे रहते होत तो उनसे मिलने मैं वहा भी पहुचता" लेखको के पारस्परिक परिचय, नकट्य एव सम्ब ध का परिणाम यह था कि साहित्य ससार म सद्भावना का एक स्निग्ध वातावरण बना हुआ था यदि कहीं ईर्ष्या द्वेष था भी तो वह जसे 'एक परिवार के लोगो मे या परिवार की सीमा स सीमित, नियन्त्रित"

इस प्रकार की साहित्यिक यात्राय पण्डितजी ने अपने जीवनकाल म बहुत की थी विस्तार भय से कतिपय यात्राओ का ही विवरण देना यहां उचित होगा

सभवत सर्वप्रथम यात्रा शर्माजी ने उस युग के तीर्थ आचार्य प महावीर प्रसाद द्विवेदी के यहा, झालरापाटन से उनके निवास स्थान दौलतपुर (रायबरली) जाकर की थी द्विवेदी जी ने स्नेहसिक्त हो उनका बडा मान सम्मान किया फिर तो उनकी यात्राओ का जो तांता लगा तो जब तक वे असमर्थ न हो गय, जारी रहा

उनके शाजापुर के भाषणो, शाजापुर के सन्1927 ई के विराट कवि सम्मेलन का सभापतित्व, तथा प्रयाग विश्वविद्यालय के लॉ कालेज हाल के कार्यक्रम पर हम पहल ही विचार कर चुके हैं यह सब कार्यकलाप उनकी साहित्यिक यात्राओ की चमकदार कडिया थी

सन् 1918 ई म हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन का आयोजन इन्दौर नगरी म किया गया पण्डितजी वहा पहुचे और जिस उत्साह तथा परिश्रम से उसका प्रबन्ध उन्होने किया उसको उसम भाग लेने वाले सज्जन आज तक नही भूले हैं यह सब क्या पुराने तथा नये साहित्यिको से मैत्री दृढ करने तथा परिचय प्राप्त करने के लिए सन् 1926 म नवरत्न जी को साहित्यिक सभाराधना का पुन अवसर प्राप्त हुआ इस शुभ अवसर पर पुण्यश्लोक महामहोपाध्याय श्री गौरीशकरजी ओझा के सभापतित्व मे विश्वबन्धु कवि रवीन्द्र का स्वागत सत्कार भरतपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन म किया गया था इस पव पर भी उन्होने अपन स्वाभाविक उत्साह तथा कमण्यता का पूर्ण परिचय दिया इसी अवसर पर विराट कवि सम्मेलन मे नवरत्नजी को सवश्रेष्ठ कवि घोषित करके स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया था

सन् 1935 की तीथयात्रा श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय के मुख से सुनी है इसके बाद जब सन् 1935 म पुन इन्दौर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विराट अधिवेशन महात्मा गाधी के सभापतित्व मे हुआ उसमे भी पण्डितजी ने तन-मन धन से उद्योग किया था यद्यपि पण्डितजी के नेत्रो म विकार हो जाने से दृष्टि क्षीण हो चुकी थी फिर भी मुझे साथ लेकर, मेरे कन्धे पर हाथ रखे बराबर इधर-उधर विद्वानो तथा साहित्य महारथियो के पास आते-जाते रहे. उनके साथ मुझे कई विद्वानो से परिचय तथा सम्पर्क मे आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था इस प्रकार की एक यात्रा उन्होने सभवत युग की जिज्ञासा से प्रेरित होकर की— 'कौन है यह आदमी? क्या इसके पास बडी दौलत है ? क्या यह दिन-रात नशे मे पडा रहता है ? क्या यह जो कुछ लिखता है यह उसका अनुभव सत्य है ? यह मधुशाला म रहता है ? मधुबाला से घिरा हुआ, एक आधुनिक उमर खयाम की तरह इलाहाबाद के मुट्ठीगज मे स्थित बच्चन के निवासस्थान के समक्ष लाकर खडा कर दिया था बच्चन बाहर के आने पर

उनको एक परचा मिला— "हम तो आपकी मधुशाला देखने आये थे, पर, साकी ही गायब था हम महाराज बनारस की कोठी म ठहरे हैं अब वहीं आपकी प्रतीक्षा करेंगे गिरिधर शर्मा नवरत्न, झालरापाटन वाले" अपने संस्मरण म बच्चन ने एक एसी घटना पर प्रकाश डाला है जिस पर यकायक विश्वास नही होता अवश्य ही इसका महत्व इतर लोगा पर न हो किन्तु जो राजदरबारो के निकट सम्पक म रहे हैं उनके लिए तो बहुत ही महत्वपूर्ण है उन्होने लिखा कि "उनकी भूरिभूरि प्रशसा करके नवरत्नजी ने उनको झालावाड दरबार म लेने का पूरा प्रयत्न किया था, किन्तु वे (बच्चन) अडे रहे"

> मुझको न ले सके धनकुबेर
> दिखला कर अपना ठाठ बाट
> मुझको न सके ले नृपति मोल
> दे माल, खजाना, राजपाट"

इससे वे रुष्ट हुए थे, खिन्न भी अमूमन राजदरबारो का यह रवैया रहता था कि जो एक दफा वहा जम गया वह दूसरे को पर रखने न देता था हमेशा ऐसा वातावरण बनाये रखना इसके लिए आवश्यक होता था कि राजा उसके अलावा, कम से कम उसके क्षेत्र मे अन्य का विचार न कर सके बच्चन जी ने कहा है कि महाराजा झालावाड (श्री 'सुधाकर') उनकी मधुशाला से बहुत प्रभावित थे जिसमे नवरत्न जी का बहुत हाथ था

विविध भाषा ज्ञान

उर्दू फारसी के नाता ही नहीं अपितु वे भारी विद्वान थे तभी तो इतनी सफलता से वे उमर खयाम की रुबाइयात का हिन्दी पद्यबद्ध अनुवाद इतनी सफलता से कर सके उर्दू मे तो वे 'कलन्दर' के नाम से शायरी किया ही करते थे गुजराती उनकी अपनी भाषा थी और उसके कितने ही ग्रथ रत्नो का हिन्दी अनुवाद उन्होने किया मराठी पर भी उनका पूरा अधिकार था, तभी "शुश्रूष" का हिन्दी अनुवाद वे पूर्ण सफलता से कर सके सस्कृत पर उनका अधिकार हिन्दी के समान ही था तभी उन्होने रुबाइयात उमर खयाम का पद्यबद्ध अनुवाद देववाणी सस्कृत मे किया इसके अतिरिक्त अन्यान्य छोटी-बडी पुस्तको की भी रचना उन्होने इस भाषा म की सस्कृत रचनाओ का सग्रह 'गिरिधर-सप्तशती" के नाम से प्रकाशित हुआ है (अग्रेजी के प्रसिद्ध कवियो की अनेक उत्तमोत्तम कविताओ का भी आपने हिन्दी म पद्यबद्ध रूपान्तर किया है जो "कविता कुसुम' के नाम से भाग-1, 2 प्रकाशित हुआ है तीसरा भाग अभी अप्रकाशित है) रवीन्द्र टगोर के ग्रथ मूल बगला से ही हिन्दी मे भाषान्तरित हुए हैं जिनकी स्वय रवि ठाकुर ने सराहना की है

नयी धाराओं के प्रवर्तक

अपनी इस उपरोक्त साहित्य साधना के अतिरिक्त उन्होंने उस समय हिन्दी साहित्य में नये प्रयोग भी किये थे जिनको हम सर्वथा भूल गये हैं जिनमें से कई तो पल्लवित, पुष्पित हो रहे हैं और कई को 'नये प्रयोग' नामकरण करके आगे बढ़ाया जा रहा है पूज्यपाद श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध को अतुकान्त काव्य का प्रवर्तक तथा सूत्रवाहक माना जाता है किन्तु गिरिधर शर्मा ने उनका प्रयोग बहुत पहले कर लिया था उनका अतुकान्त एक छन्द अवलोकन करें —

"मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूं।
भाता मुझे सो नव मित्र सा है
देखू उसे मैं नित बार बार
मानो मिला मित्र मुझे पुराना।"

इसी प्रकार कवि त्रिलोचन शास्त्री को हिन्दी काव्य मे सॉनेट का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु शर्मा जी इस पर भी पूर्व मे ही प्रयोग कर चुके थे चित्रमय जगत् म प्रकाशित उनके सानट के अश का नमूना अवलोकन कीजिये—

"जो नर धन वाला है वही सुधी है सुकवि भी है"

राजस्थानी निम्न पद की कितनी सुन्दर भावव्यंजना है उपरोक्त पंक्ति मे 'जननी जण जे भागवन्त, मत जण जे गुणवन्त, भागवन्त के द्वार प पड्या रहे गुणवन्त"

सम्मान

नवरत्नजी की सेवाओ को जितना देखा परखा गया उसी के अनुरूप उनका सम्मान हुआ वास्तविक मूल्यांकन तो उनका कभी हुआ ही नही जो उनको परखा जाता खर! हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उनको 'साहित्यवाचस्पति' की उपाधि से विभूषित किया इन्दौर की विन्ध्य सभा ने उनके पाण्डित्य से प्रभावित तथा अभिभूत हो कर उन्हे 'प्राच्यविद्यामहार्णव" कहा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के लिए भी उनका नाम प्रस्तावित हुआ पत्र पत्रिकाओ मे लेखादि भी प्रकाशित हुए किन्तु सम्मेलन गुटबाजी से ऊपर नही उठ सका

पद्मविभूषण प सूय नारायण जी व्यास ने उनको सम्मानित करने का अन्तिम प्रयत्न किया था उन्हे राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो जो विशिष्ट विद्वानो को भारत सरकार द्वारा दिया जाता है उसके लिये मैंने प्रयास भी किया था और महामहिम राष्ट्रपतिजी (डा राजेन्द्र प्रसाद जी) ने मेरा प्रस्ताव अपने समथन के साथ गृह विभाग की ओर भिजवा भी दिया था किन्तु उसके पूव कि उसका कोई नतीजा निकलता—' ऐ काल, तेरे पहियो की घर-घर, आखिर पिसलती चली गई यह, गिरिधर" साहित्य महारथी प गिरिधर शर्मा नवरत्न 1 जुलाई सन् 1961 को 81 वष की अवस्था मे स्वर्गारोही हुए

साराश यह कि जिस भी दिशा मे शर्माजी का पर बढा, लक्ष्य प्राप्ति के बगर पीछा नही हटा साहित्य के जिस भी अग को उन्होने छुआ उसमे आगामी पीढी के लिये माग प्रशस्त करके ही छोडा और जिस मस्तक पर उनका एक बार वरदहस्त पडा वह वह बगर विद्वान हुए नही रह सका ऐसी महिमा, साधना, निष्ठा थी नवरत्नजी की यदि असमय मे नेत्र ज्योति उनको धोखा न देती तो उनकी गणना भारत के इन गिने शीषस्थ विद्वानो मे होती

मालवा और राजपूताने म हिन्दी साहित्य के प्रचार मे उन्होने (नवरत्नजी) बड़ा काम किया।

—आचाय रामचन्द्र शुक्ल

मनोहर प्रभाकर

स्वभाषा और स्वदेश के गायक गिरिधर जी

किसी भी धरती की अपनी समद्ध साहित्यिक परम्परा का निर्माण पेशेवर लेखको द्वारा नहीं, उन वागीश्वरो द्वारा हुआ है, जो समर्पित भाव से सृजनधर्मिता को अंगीकार करते हैं पण्डित गिरिधर शर्मा ऐसे ही वागीश्वरो मे से एक थे जेष्ठ शुक्ला अष्टमी, सवत्–1938 को झालरापाटन मे जन्मे पण्डित गिरिधर शर्मा की शिक्षा, झालरापाटन जयपुर और काशी म परम्परागत ढग से हुई वे सस्कृत, फारसी, बगला और गुजराती के उद्भट विद्वान थे झालावाड नरेश के सरक्षण मे वे आजीवन साहित्य की साधना मे लगे रहे महामना पण्डित मदन मोहन जी मालवीय ने जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का बीडा उठाया तो पण्डित जी ने उसके निर्माण मे सक्रिय योगदान दिया बहुत कम लोगो को इस बात का अहसास है कि महात्मा गाधी को हिन्दी के क्षेत्र मे लाने का श्रेय श्री नवरत्न जी को ही था उन्होने मध्यभारत साहित्य समिति की स्थापना की और हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर तथा भारतेन्दु साहित्य समिति–कोटा के निर्माण और उत्थान मे उनका बडा भारी योगदान रहा

ब्रिटिश शासन काल मे जब अग्रेजी और फारसी की तूती राज दरबारो मे बोलती थी तो नवरत्न जी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का अनुष्ठान प्रारभ किया झालावाड, भरतपुर, जयपुर और कोटा मे राजकाज मे हिन्दी के प्रत्यावतन की दिशा मे उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही

पण्डित गिरिधर शर्मा उच्च कोटि के कवि एव अनुवादक थे राजस्थान मे आधुनिक राष्ट्रीय काव्यधारा के वे अग्रणी कवि थे, जिन्होने "मातृवन्दना" नामक

अपने काव्य सग्रह मे सवप्रथम सस्कृत के स्तवनो से प्रभावित देशानुराग की कविताम्रो को स्थान दिया इस सग्रह की रचनाम्रो म मातृभूमि की व दना अनेक रूपो मे हुई है कभी कवि अपने गौरव को स्मरण करता है, तो कभी वह देश-भक्ति मे डूब कर देश-हित के लिए अपने आपको समर्पित करने का सकल्प करता है भारत के गौरवपूण अतीत का स्मरण करते वे एक स्थान पर कहते है

कौन महारानी लक्ष्मी सा था युद्धवीर ?
कौन माता अहिल्या सा कही दानवीर था ?
जाकर विलोक जाति-जातियो का इतिहास
आयजाति तेरे जैसा किस म खमीर था ?

इसी प्रकार "जयदेश' नामक एक अ य रचना मे वे भारत को "वेदोद्गाता-भाग्य विधाता" कहकर उसके महिमा मडित सास्कृतिक वभव का स्मरण कराते हैं विभिन्नता मे अभिन्नता के दशन कराते हुए वे देश की भौगोलिक एकता को राष्ट्रीय एकता के रूप मे निम्न,शब्दो मे चित्रित करते हैं

पंजाबी गुजरात निवासी
बगाली हो या ब्रजवासी
राजस्थानी या मद्रासी,
सबके सब हैं भारतवासी
तेरे सुत प्रिय देश !
जय देश ! जय देश ! !

देश को सवस्व समझकर उसके हित 'राम की दुहाई' देकर जब कवि जीने और मरने की प्रतिज्ञा करता है, तो उसका देशानुराग अपने प्रखरतम स्वरूप म उजागर होता है वह कहता है

मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीव प्राण
मेरा सम्मान मेरे देश की बडाई मे
जीऊगा स्वदेश हित मरू गा स्वदेश काज
देश के लिए कभी न करू गा बुराई मैं
भीपण भयकर प्रसग मे भी भूल के भी
भूलू गा न देशहित राम की दुहाई मैं
जब लौं रहेगी सास सवस्व लुटा दू गा
ईश को भी झुका लू गा देश की भलाई म

कवि का अन्तर देशानुराग की भावनाम्रो से इतना अभिभूत है कि वह केवल

देश प्रेम के रग म ही डूबे रहना चाहता है, क्योंकि उसकी दृष्टि मे दूसरे सभी रग भग होकर डूब जाते हैं वह अपना सवस्व देश पर न्योछावर कर देना चाहता है

चर्चा जहाँ देश की हो, मेरी जीभ वही खुले
और नही खुले कही सुन्न की सुदाई म
मेरे सुनें कान गान साचे देश-भक्तन के
और गान आवें कभी मेरे न सुनाई म
मेरे अग रग चढे एक देश प्रेम को ही
और रग भग हो के डूब जात वाई म
मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन, मेरो जीव
मेरो सब लगे प्रभु देश की भलाई मे

नवरत्न जी ने ही सवप्रथम उमर खयाम की रुबाइयो का हिन्दी और सस्कृत म अनुवाद किया खैयाम की रुबाइयो मे निहित जीवन की क्षण भगुरता और आनन्द-भावना को उन्होने सरल हिन्दी मे उतारा खयाम की बहुत प्रसिद्ध रुबाई, जिसम प्रेयसी के साहचय की स्वग के रूप मे कल्पना की गई है, उ होने इस प्रकार रूपातरित की है —

हो अपूव रसकाव्य लता-तरु की छाया हो।
सुधापूण हो कुम्भ, रोट टुकडा हो, तू हो –
गाती सुमधुर गान विजन मे बैठ पास मम
आह, वही तो निजन वन है, मुझे स्वग सम ॥

नवरत्न जी की मान्यता थी कि अग्रेजी, बगला, गुजराती और फारसी मे जो उदात्त साहित्य उपलब्ध है, उसे हिन्दी के माध्यम से लोगो को उपलब्ध कराया जाये अपनी इस कल्पना को उन्होने पूरी सामर्थ्य के साथ मूत रूप दिया अग्रेजी के प्रख्यात कवि गोल्ड-स्मिथ की 'हर्मिट' नामक रचना का अनुवाद उ होने 'योगी' नाम से किया इस अनुवाद के आमुख मे इन्दौर के तत्कालीन प्रधानमत्री सर सिरेमल बाफना ने लिखा है कि "पडित जी के जीवन का लक्ष्य हिन्दी को दुनिया की अन्य समर्थ भाषाओ के समकक्ष बनाने मे योगदान देना रहा है और ये एक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए भी प्रयत्नशील रहे है गोल्ड स्मिथ की कृति 'हर्मिट' के अनुवाद म हष, मोह और प्रेम की परिभाषा उन्होने निम्न शब्दो मे की है —

हन्त हन्त जो हर्ष भाग्य हम तक पहुचाता।
है वह लघुतर, अथिर दिवस का या दो दिनका,
और जिसे जन छलबल करके है हथियाता,
वह उससे भी अधिक अधिकतर चचल पाता।

ग्रोर मित्रता क्या है ? केवल एक नाम है,
मोह नीद है, बुद्धि चेतना का विराम है ।
ग्रोर ग्रभी तक प्रेम एक श्रुत धुन ही धुन है
है पृथ्वी पर लभ्य नही वह ग्रदृश्य ही है ।

नवरत्न जी ने इ दौर ग्रोर झालावाड नरेश की ग्राथिक सहायता से दो दजन से भी ग्रधिक सस्कृत ग्रोर बगला तथा गुजराती के ग्र था के ग्रनुवाद हि दी पाठका को दिये उनक उल्लेखनीय हि दी ग्रनुवादो म रवी द्रनाथ ठाकुर की कृति 'फ्रूट गर्दरिंग' कवि माघरचित 'शिशुपालवध' तथा गुजराती के कवि ना हालाल दलपतराम कृत 'जया जय त 'ग्रादि प्रमुख हैं कवि हाल की 'गाथा सप्तशती' की ही तरह उ होने सस्कृत मे 'गिरिधर सप्तशती' रचना की इसी प्रकार खयाम की चुनी हुई रुबाइयो को भी वे 'ग्रमर सूक्ति–सुधारस' के नाम से सस्कृत मे लाये

नीति विपयक उनकी रचनाग्रो मे 'नवरत्न नीति' उनकी प्रमुख रचना है

बाल-साहित्य की रचना के क्षेत्र म भी पण्डितजी ने ग्रनेक प्रयत्न किये रवी द्रनाथ की पद्य कथाग्रो का गुजराती ग्रनुवाद उ होने 'बालच द्र' के नाम से किया है, जो बहुत लोकप्रिय हुग्रा इस प्रकार पण्डित जी जीवन पयन्त निष्काम भाव से साहित्य साधना म लगे रह पण्डित जी की मा यता थी कि पुरस्कारो ग्रोर सम्मान की भावना से प्रेरित होकर कोई महान् रचना नही की जा सकती 'जया जयन्त' की भूमिका मे उ होने स्पष्ट कहा है कि "श्रीमद्‌भागवत, महाभारत रामायण ' चादी-सोने के टुकडो की मोहताज नहीं भीष्म ग्रोर हनुमान साहित्य जगत म सहज पदा नही हुए उनकी उत्पत्ति का मूल्य स्थूल सम्पत्ति नही नवरत्न जी की साहित्य सम्पदा के बारे म भी यही बात ग्रक्षरश लागू होती है उ होने किसी पुरस्कार ग्रथवा सम्मान की कामना जीवन मे नही की साहित्य रसिको की सेवा ही उनके जीवन का ध्येय रहा उनके यही सस्कार विरासत मे मिले, उ नकी पुत्री सुश्री शकुन्तला रेणु को, जो राजस्थान की प्रमुख गद्य गीत लेखिकाग्रो ग्रोर कवयित्रियो मे रही हैं रेणु जी को इस बात का बहुत ग्रफसोस है कि उनके पिताश्री का पर्याप्त साहित्य ग्रभी ग्रप्रकाशित पडा है ग्राज उस साहित्य की उपादेयता भाषा के ग्रध्ययन की दृष्टि से निश्चय ही बहुत महत्व की हो सकती है, बशर्ते कि उसे हिन्दी ससार के सम्मुख लाया जाय

नवरत्न जी ग्राज से 25 वप पूव 1 जुलाई, 1961 को गोलोकवासी हुए थ कि तु 25 वर्षों मे कितनी बार हमने सावजनिक रूप से उनका स्मरण किया? क्या यह उदासीनता हमारी घोर कृतघ्नता की परिचायक नही ?

सी-118, मगल माग
बापूनगर, जयपुर

रामचरण 'महेन्द्र'

पण्डित गिरिधर शर्मा की अमूल्य कृति 'कठिनाई मे विद्याभ्यास'

साहित्यकार पडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के लेखन का उद्देश्य उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक और सुरुचिपूर्ण साहित्य का सृजन था उन दिनो हिन्दी साहित्य म अनेक विषयो पर पुस्तकें उपलब्ध नही थी कुछ क्षेत्र तो बिल्कुल खाली पडे हुए थे वे चाहते थे कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो अत उन्होने अनेक नवीन ज्ञानवर्द्धक विषयो पर अपनी लेखनी चलाई उपयोगी ग्रथो का अनुवाद किया वे उस साहित्य को महत्व देते थे जो व्यक्ति, समाज और देश को आगे बढाने, जन-साधारण की ज्ञानवृद्धि करने, युवको का स्वर्णिम भविष्य निर्माण करने म सहायक हो वे यह मानते थे कि कहानी उपन्यास कविता आदि से भी अधिक महत्वपूर्ण साहित्य निबन्ध साहित्य है, जिसकी परिधि मे सब कुछ उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक साहित्य आ जाता है मनुष्य को सही दिशाओ म विकसित करने की दृष्टि से उन्होने उपयोगी साहित्य का निर्माण किया था जहा उन्होने अनेक उपयोगी मौलिक पुस्तकें लिखीं, वही दूसरी भाषाओ से भी नए विषयो पर ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को हिन्दी मे अनूदित भी किया था ऐसी ही एक उपयोगी पुस्तक है उनकी 'कठिनाई मे विद्याभ्यास * यह पुस्तक हिन्दी के भण्डार म एक अमूल्य रत्न है अध्ययन के लिए नई-नई प्रेरणा

*प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई लार्ड ब्रूम महाशय की अग्रेजी पुस्तक 'Pursuit of knowledge under difficulties' प्रथम सस्करण 1914 म प्रकाशित

देकर स्वाध्याय की ओर बढाने वाली विद्यार्थियो के लिए सर्वाधिक प्रेरक और उत्साह-वर्द्धक पुस्तक है यह लेखक के उद्देश्य की सदाशयता, नतिकता और विशालता की प्रतिबिम्ब है

'कठिनाई म विद्याभ्यास' का प्रथम सस्करण सन् 1914 मे पहली बार प्रकाशित हुआ था चौदह वष उपरान्त द्वितीय सस्करण प्रकाशित हुआ स्वस्थ, सुरुचिपूर्ण और गम्भीर साहित्य कम बिकता है यही कारण है कि पुस्तक का प्रचार देरी से हुआ था

पुस्तक के लेखन का उद्देश्य क्या था ? लेखक ने स्वय पुस्तक के प्रथम सस्करण म स्पष्ट किया है, "अग्रेजी भाषा म लार्ड ब्रू महाशय की लिखी हुई एक पुस्तक है–'Pursuit of knowledge under defficulties' इस पुस्तक म ऐसे विद्यानुरागी सज्जनो के वृतान्त दिय गये हैं, जिन्होने अत्यन्त प्रतिकूल सयोगो मे भी विद्याभ्यास किया है यह पुस्तक विद्यार्थियो का उत्साह बढान के लिए सिद्ध मत्र का काम देनेवाली है इसी का सक्षिप्त सस्करण मद्रास की क्रिश्चयन लिट्रेरी सोसाइटी ने प्रकाशित किया है इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी भिक्षुक अखण्डानन्दजी के सस्तु साहित्यवद्धक कार्यालय ने प्रकाशित किया है हिन्दी भाषा जानने वाल सज्जन भी इस पुस्तक स लाभ उठावें इस विचार से हमने यह अनुवाद हिन्दी म किया है" लेखक न अनुवाद म भाव स्पष्ट करने का विशेष ध्यान रखा है शब्दो का चयन इस तरह किया है कि पाठक मूल ग्रन्थकार के अभिप्राय को सहज ही ग्रहण कर ल जनहित और ज्ञान भण्डार मे वृद्धि करना ही लेखक का उच्च आदश रहा है

पुस्तक के नामकरण के विषय म वे लिखते है, "इस पुस्तक का नाम हमन 'कठिनाई म विद्याभ्यास' इसलिय किया है कि Difficulty का भाव 'दुख' शब्द की अपेक्षा कठिनाई शब्द से विशेष व्यक्त होता है, शब्दो के गूढ अर्थों पर सदव उनकी दृष्टि रही थी इस पुस्तक मे बहुत से पाश्चात्य विद्वानो की योग्यता प्राप्त करने, स्वाध्याय द्वारा उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के अनेक उदाहरण दिये गये हैं, लेकिन लेखक की इच्छा थी कि वे भारतीय विद्वानो का भी उल्लख करते, जिन्होने अत्यन्त कठिनाई मे विद्याभ्यास किया है, जसे श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, भट्ट बलदेव प्रसाद, दीवान बहादुर प परमानन्द चतुर्वेदी, सर गुरुदास बनर्जी सर रामकृष्ण गोपाल भडारकर सर भवानीसिंह जी, डा सरयू प्रसाद, प महावीर प्रसाद द्विवेदी, प गौरीशकर हीराचन्द्र ओझा इत्यादि, परन्तु इन सत्पुरुषो का वृतात अलग ही एक पुस्तक मे लिखने का निश्चय कर इसे केवल अनुवाद रखना ही ठीक समझा" खेद है प गिरिधर

शर्मा जी की वह उच्च आकांक्षापूर्ण न हो सकी अन्यथा गरीब भारतीय विद्वानो के सम्बन्ध मे एक उपयोगी ग्रन्थ हमारे पास होता

'कठिनाई में विद्याभ्यास' पुस्तक मे पण्डित गिरिधर शर्मा ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य की उन्नति मे गरीबी विघ्न नहीं है उलटे गरीबी मिटाने का साधन ज्ञान और बुद्धि का विकास है यदि आदमी पढा लिखा है तो देर सबेर वह अवश्य उन्नति करेगा इसके अतिरिक्त उनकी दृष्टि मे ज्ञानवृद्धि मे स्वय एक देवी उच्चस्तरीय आनन्द है जिसे विद्वान् ही जान सकते हैं वे लिखते हैं —

"इन्द्रियो को तृप्त करने से जो आनन्द उत्पन्न होता है, वह क्षणिक है इन्द्रिया अपने विषयो से तृप्त नही होती, परन्तु वे हमे अधिकाधिक भोग भोगने मे प्रवृत्त करती हैं और परिणाम मे हमारी हानि करती हैं, किन्तु विद्याविनोद बडी अच्छी चीज है यह ज्ञान को बढाती है और इसका परिणाम सुखदायक है "[1]

जनता म सुरुचि और सदिच्छा विकसित करना उनका उद्देश्य था जिसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीको से उन्होने प्रस्तुत किया है एक स्थान पर लिखते हैं, "यथार्थ ज्ञान हमे इस बात का पात्र बनाता है कि हम उपयोगी हो, हम महान् बनें" आगे चलकर वे कहते हैं, "अपना सुख बढाने का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि हम दूसरा के सुख की वृद्धि करें" इस प्रकार उदात्त तत्व की वृद्धि के लिए उन्होन प्रयत्न जारी रखा या पूरी पुस्तक म तरह-तरह के उदाहरण देकर उन्होने दिखाया है कि गरीबी विद्याभ्यास मे बाधक नहीं है ज्ञान की वृद्धि रुपया कमाने के लिए नही वरन् आत्मानन्द की दृष्टि से करना चाहिए वे आगे कहते हैं, "ज्ञान का लाभ करन के लिए बहुत दीर्घ समय तक बलपूर्वक मनोनिग्रह कर एक ही काम मे दृढ उत्साह के साथ लगे रहने की आवश्यकता है ऐसा होने से ही श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है ये दृष्टान्त उन गरीबो को उपयोगी और उत्साह देने वाले हैं जो इस प्रकार ज्ञानाभ्यास करना चाहते हैं विद्या चाहे जसे प्रबल क्यो न हो, उनसे निराश होने का कोई कारण नही '[2]

इस पुस्तक मे अन्य विषय इस प्रकार हैं – 1– अपने परिश्रम से सुशिक्षित हुए विद्वान् 2– सत्साहित्य प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता 3– साहित्यप्रेमी व्यापारी 4– विज्ञान के विद्वान् 5– जहाजी और प्रवासी 6– विद्वान् मोची 7– जेल मे साहित्यसेवा 8– विद्यानुरागी राजा महाराजा 9– सुप्रसिद्ध अन्धे मनुष्य 10– शक्ति से अधिक अभ्यास करने के बुरे परिणाम —इन सभी प्रकरणो मे लेखक ने उदाहरण दे देकर

---

[1]देखिए कठिनाई मे विद्याभ्यास' पृष्ठ २, वही पृष्ठ 9

स्पष्ट किया है कि मनुष्य को सदा हर प्रतिकूल परिस्थित मे भी अपनी योग्यता और बुद्धि बढाते रहना चाहिए यह गम्भीर, उपयोगी और ज्ञानवद्ध क तत्त्वो से भरपूर ग्रथ है हिन्दी म स्वेट माडन की शैली मे आत्म सुधार विषयो की पुस्तको की कमी देखकर ही शर्मा जी ने विवेक और सद्भावनाओ की वृद्धि करने वाले इस ग्रथ को तयार किया था इस ग्रथ मे सदाचार का व्यवहारिक स्वरूप चित्रित किया गया है इस ग्रथ की सामग्री अपने आसपास की गरीब नि सहाय साधनहीन जिन्दगी से बटोरी गई है और लेखक ने उन्ह ईमानदारी के साथ पेश किया है रोजमर्रा के जीवन को उन्होने सवारने का जो प्रयास किया है, उसमे भले ही साहित्य की शली-सौन्दय या कलात्मक दृष्टि से कच्चापन हो, पर तु इस कच्चेपन म जीवन को सवारने और विकसित करने का अपना वीद आनन्द है

पण्डित गिरिधर शर्मा अपनी पाढी क सामयध्वान लेखक थे वे कल्पना के नही, यथाथ के साधक थे और उन्होने मानव-जीवन को सभी रूपो म स्वीकार किया था इसी से उनकी लेखन-कला महज कला के लिए नही, जीवन के लिए थी-जीवन के विविध रूपो के लिए थी उनके विषय मे ये पक्तिया सही उतरती हैं:—

कला कोशल वह सब अपदय, सृजन साहित्य सभी वह व्यथ,
रहे जो जन-जीवन मे व्यथ, न आए जो जीवन के अथ !

उन्होने जो भी लिखा कहा, तप कर लिखा है, कल्पना के गुब्बारे नहीं उडाये हैं उन्होने कुछ सघपमय जीवन व्यतीत किया था, पर वे आस्थावान व्यक्ति थे उनके साहित्य मे जीवन के व्यापक तत्त्व भरे पडे हैं

नयापुरा, कोटा (राजस्थान)

शकुन्तला रेणु से पूरन सरमा की बातचीत

राजस्थान की धरती जहां वीरता व बहादुरी की असख्य गौरव गाथाओ को अपने इतिहास के पृष्ठो पर समेटे हुये है—वही कला, साहित्य एव सस्कृति के क्षेत्र म भी यहा एक से बढ़कर एक महा मनीषियो ने जन्म लिया है देश की कोई भी धारा हो–राजस्थान हर काल मे—पूण सजगता और चेतना से उस धारा से सघनता से जुडा रहा है विद्यावाचस्पति प गिरधर शर्मा 'नवरत्न' भी एक ऐसा ही नाम है जो हिन्दी साहित्य के प्रारभिक काल म झालरापाटन मे 6 जून 1881 को जन्मे और साहित्य की प्रमुख धारा से अपने, स्वर्गवास 1 जुलाई 1961 तक जुडे रहे यह वह काल था जब हिंदी अपने खडे होने के लिए जमीन तलाश कर स्थापना व मा यताओ के लिए प्रभावी रूप से सघपरत थी आचाय रामच द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिह उपाध्याय 'हरिऔध,' अमरनाथ झा, माखनलाल चतुर्वेदी, मथिलीशरण गुप्त, स्नेहीजी ,हितषीजी, कवि मिथिला कोकिल एव प श्यामनारायण पाण्डेय हि दी मे रचना कमकर, इसे विश्व एव प्रादेशिक भाषा साहित्य से जोडकर जन जन तक पहुचा रहे थे प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' भी इसी आदोलन मे पूरी निष्ठा से सक्रिय थे इनके सपूर्ण साहित्य मे राष्ट्रीयता की प्रखर गध है एव तत्कालीन राजनतिक चेतना म इन्होने अपनें साहित्य द्वारा महति भूमिका निभाई है हि दी साहित्य के इतिहास मे प रामचद्र शुक्ल ने 'हरिऔध' के 'प्रिय प्रवास को हि दी का प्रथम अतुकात प्रब ध-काव्य माना है—जबकि वस्तुस्थिति यह है कि प गिरधर शर्मा की 'सती सावित्री, कृति गुजरात से 1907 मे ही 'प्रिय प्रवास' से पूव अतुकात प्रब ध-काव्य शली मे प्रकाशित हो चुकी

थी यह विडम्बना ही है कि 'सती सावित्री' के स्थान पर यह श्रेय आज भी 'प्रिय-प्रवास' को ही मिला हुआ है पण्डितजी ने हिंदी गुजराती एवं संस्कृत म असीम साहित्य की रचनाकर—गुजराती पाठको की हिंदी की मुख्यधारा से जोडने का भरसक प्रयास किया है विश्व की अन्य भाषाओं से भी उन्होने अनुवाद कर हिंदी-संस्कृत व गुजराती भाषाओं को एक निधी रूप मे सौपे हैं

पण्डितजी ने अपने जीवन-काल म लगभग सत्तर पुस्तको की रचना की है—जिनमे से 40 पुस्तके प्रकाशित हुई हैं तथा शेष अभी अप्रकाशित हैं इन्होने फारसी के 'करीमा' का हिंदी, संस्कृत एवं गुजराती म अनुवाद किया—जो सटीक और सशक्त है उमर खय्याम की पचहत्तर रुबाइया भी इन्होंने इन्ही तीनो भाषाओं मे अनुवादित की फारसी की 'शेख सादी' की रचनाओं का भी हिंदी व गुजराती मे अनुवाद किया है विश्व साहित्य की ये तीनो प्रतिनिधि रचनाओं का पद्यानुवाद जहा पण्डित गिरिधर शर्मा नवरत्न की गहन अध्ययनशीलता, दार्शनिकता एवं चिंतन का द्योतक है—वही विविध विषयो की गंभीरता उनके सम्पूर्ण साहित्य पर अमिट छाप डालती है पण्डितजी अपने अंतिम दिनो मे आखो की ज्योति क्षीण होने से देखने मे असमर्थ थे तब वे अपनी पुत्री कुमारी शकुंतला 'रेणु' को डिक्टेशन दिया करते थे शकुन्तला जी उसे लिखती और साहित्य साधना का यह अनवरत क्रम आजीवन चलता रहा

शकुंतला जी की उम्र इस समय 62 वर्ष है आपने शादी नही की है मार्च के एक रविवार को सुबह जब मै उनका पता पूछता-पूछता जयपुर के पारम्परिक प्राचीन क्षेत्र ब्रह्मपुरी मे पहाडी की तलहटी मे ठीक गढगणेश के नीचे स्थित उनके निवास पर पहुचा तो, उस बाडे मे बने एक मात्र कमरे मे एक वृद्ध महिला कोई पुस्तक पढ रही थी मैंने धीरे से पूछा-'यहा शकुन्तला जी रहती है न ?'

'आइये, मैं ही शकुन्तला हू' पुस्तक को पास के बक्से पर रखकर वे खडी हो गई मैंने विनम्रता स अपना स्थान लिया और अपने परिचय के बाद उनके पिता के बारे म संक्षिप्त जानकारी देने के बारे मे कहा पिता का स्मरण आते ही शकुन्तला जी एक बारगी अतीत के सागर म खो गई चेहरे पर गम्भीरता एक पल को कुछ गहरायी तत्पश्चात् चश्मे मे स झाकती आंखो मे चमक लौटी और वे स्मित हास्य के साथ बोलीं—बापू जी के साथ जो समय गुजरा है—कुछ पता ही नही चला—सब कुछ ऐसे बीत गया जैसे कोई एक पल हो बहुत बडा सुख था उस समय साहित्यकारो का आना जाना कविता–साहित्य की ही दिनारंभ से बातें होतीं, जो देर रात तक चलती

मैंने कहा—मैं मुख्य रूप से यह जानना चाहूगा कि बापू जी का 'सती-सावित्री'

प्रबंध काव्य 'हरिग्रौधजी' के 'प्रिय-प्रवास' के पूर्व प्रकाशित है-फिर भी उसे 'प्रिय-प्रवास' की जसी मान्यता नही मिलो है मेरा मतलब हिन्दी का पहला अतुकात प्रबंध काव्य 'सती सावित्री' होना चाहिए '

'होना तो चाहिये क्योंकि 'सती-सावित्री' का प्रकाशन 1907 मे हो चुका था— जबकि 'प्रिय-प्रवास' इसके बाद की रचना है लेकिन ऐसी गलतिया एक नही अनेक हैं बापूजी इस मामले मे सदैव बेपरवाह रहे लिखना उनके लिए कोई प्रचार प्रसार व यशलाभ का कारण नही था लेखन एक लक्ष था—जिसका अर्थ वे जन सामान्य के व्यापक कल्याण एव साहित्य की श्रीवृद्धि से लेते थे मैंने एक बार बापूजी को उनकी जीवनी लिखने के बारे मे प्रेरित करना चाहा तो उनका जवाब था— विटिया हमारे जस पता नही कितने ही हो गये और पता नही कितने हो जायेंगे ' फिर इसके बाद मैं कभी उनसे जीवनी लिखने के बारे मे कहने का साहस नही जुटा पाई सामयिक जन-चेतना से जुडकर सदव राष्ट्रीयता का शखनाद करते रहे ' वे बोली

मैंने पूछा—'क्या कभी उनकी रचनाम्रो मे जो राष्ट्रीय भाव का आधिक्य था— वह बाधक रहा यानि ब्रिटिश सरकार ने उनके लेखन को आपत्तिजनक माना ?'

'हा—ब्रिटिश सरकार की उन पर नजर जरूर थी—लेकिन झालावाड नरेश महाराजा भवानी सिंह का उन्हे असीम सरक्षण प्राप्त था अत कभी अग्रेजो की ओर से बापूजी को कोई ऐसी उल्लेखनीय बाधा नही आई स्वय महाराणा भवानीसिंह प्रकाण्ड विद्वान, गुणीजनो का सम्मान करने वाले एव साहित्य प्रेमी सदाशय व्यक्ति थे बापूजी ने लेकिन राजा महाराजाओ को भी नही बख्शा उनकी शराबखोरी व भोग-विलास की लत को भी उन्होने ललकारा और इसके दुष्परिणामो से आगाह किया लेकिन भवानीसिंह जी ने सदव बापूजी के गुणो की कद्र की यह उस समय झालावाड व राजस्थान के लिए बहुत बडे गौरव की बात थी कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा सबसे प्रथम जिन पाच व्यक्तियो को विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि से अलकृत किया—उनमे बापूजी राजस्थान से अकेले थे उन्ही दिनो बापूजी पडित मदन मोहनजी मालवीय के सम्पर्क मे आये और हिन्दू यूनिवर्सिटी के लिए बम्बई व अन्य कई शहरो की इनके चन्दे के लिए यात्राएँ की मालवीयजी से भी बापूजी कभी-कभी कडवी बात कह देते थे—लेकिन वे कभी अन्यथा भाव से नही लेते थे बाद मे मालवीय जी उन्हे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे प्राच्य विद्या विभाग का अध्यक्ष बनाकर ले जाना चाहते थे—लेकिन झालावाड नरेश ने विनम्रता से मना कर दिया कि आपको तो और विद्वत्जन मिल जायेंगे—लेकिन हम तो ऐसे महापुरुष कहा मिलेंगे ?'

मैंने अगला प्रश्न किया—'तो क्या पण्डितजी झालावाड के राजकवि थे ?'

'नहीं, लेकिन दर्जा कहीं कम न था महाराजा का पूरा स्नेह व कृपा थी राजकवि बनाने की तो डॉ हरिवंशराय बच्चन से विनय की गई थी लेकिन उन्होने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया एक बार बापूजी और महाराज भवानीसिंह जी इलाहाबाद गये थे उन दिनो बच्चन की मधुशाला की धूम थी और बच्चन जी इससे देशव्यापी ख्याति अर्जित कर चुके थे उन दिनो बच्चनजी पर केवल कविता का नशा था और वे विपन्नता से जूझ रहे थे लेकिन इसकी तनिक छाप भी बच्चनजी के व्यक्तित्व पर किसी रूप मे अकित नही थी बापूजी व महाराज उस गली मे गये जहा वे एक कमरे मे रहा करते थे उनका कमरा अत्यत गन्दी गली मे था जब बापूजी व महाराजा कमरे पर पहुचे तो बच्चनजी कमरे पर नही थे और ताला टगा था बापूजी कविता मे कमरे के किवाडो पर ऐसा कुछ लिखकर आये जिसका आशय यह था कि हम आये और आप नही मिले, हम अमुक होटल मे ठहरे हुए हैं—शाम को बच्चनजी जा धमके वही मस्त मौला फकीरपन देर रात उस दिन महाराजा के साथ बच्चनजी कविता पढते रहे महाराजा ने राजकवि बनने का प्रस्ताव रक्खा, वह बच्चनजी ने अस्वीकार कर कहा कि हम तो जसे हैं, वही ठीक हैं बच्चनजी झालावाड नरेश की इस महानता से बडे प्रभावित हुए थे क्योकि वैसे भी महाराजा आमतौर पर रियासत म कवि-सम्मेलन करवाते रहते थे जिसमे तत्कालीन सुप्रसिद्ध कवियो को आमत्रित किया जाता था उनमे स्नेहीजी, हितषीजी, श्यामनारायण जी पाण्डय, गुप्तजी व झा साहब मुख्य हैं' शकुतला जी लगातार बोल रही थी

तभी मैंने उनसे बीच मे ही पूछा—'पण्डितजी महात्मागाधी के सम्पक मे कब आये ?'

'गांधीजी ने स्वतन्त्रता के लिए शखनाद किया हुआ था हर राष्ट्रीय कवि उनसे किसी न किसी प्रकार उस समय जुड ही गया था काग्रस के पन्द्रहवें सम्मेलन के लिए बापूजी ने उस समय राष्ट्रीय गीत लिखा था वही से गाधी जी इस बात के लिए भी प्रेरित हुए कि काग्रेस का समस्त कामकाज अग्रेजी की एवज हिन्दी मे ही होना चाहिए राष्ट्रभाषा को सम्मान दिलवाने मे बापूजी ने सदव अगुवाई की बाद मे एक बार बापूजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के आठवें अधिवेशन का गांधी जी को सभापति भी बनाया इसके बाद बापूजी की राष्ट्रपिता से घनिष्टता बढती रही एक बार झालरापाटन स्वय विनोबाजी भी 1960 मे राजस्थान यात्रा के समय बापूजी से मिलने आय थे घण्टे-दो घण्टे तक खूब जमकर बात हुई '

'क्या आप उस राष्ट्रीय गीत की कुछ पंक्तियां सुना पायेंगी ?' मैंने अनुरोध किया

'हां मुझे पूरा याद नहीं है कुछ छंद याद हैं उस समय 'जनगणमन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' का जन्म नहीं हो पाया था, यह बाद मे आया बापूजी का जो राष्ट्रीय गीत कांग्रेस सम्मेलन मे पढ़ा गया, वह इस प्रकार है —

जय जय प्यारे देश
रम्य हमारे देश
जय जय भारत देश ।

दृग के तारे-जग उजियारे
हिम के प्यारे देश
जय जय भारत देश ।

यदोद्गाता-भाग्य विधाता
सब सुखदाता देश
जय जय भारत देश ।

हिमगिरि ऊंचे मस्तक वाला
है तेरा दृढ़ पहरे वाला
जलनिधि गर्जन करे निराला
रिपुओं का मद हरने वाला
तू प्राकृत दुर्गेश
जय जय भारत देश

शोभा सिंधु नदी की भारी
ब्रह्मपुत्र नद की छवि न्यारी
गंगा-जमना की बलिहारी
जिसने तेरी भूमि सुधारी
तारे लोक विशेष
जय जय भारत देश ।'

'कोई ऐसा संस्मरण याद है—जिसमें आपके बापूजी की गहरी संवेदना मिलती हो ?'

'एक नहीं—सैकड़ों घटनाएं हैं लेकिन नारी शिक्षा के राजस्थान मे किये गये

उनके प्रयास भी अविस्मरणीय है महाराजा भवानीसिंह जी भी बापूजी की इस बात से महमत हुए और गढ मे नारी शिक्षा की प्रथम पाठशाला का श्रीगणेश किया लेकिन उस समय महिला शिक्षिका के लिये भी किसी को तयार करना सहज नही था इसलिए पिताजी ने अपनी बूआजी श्रीमती गोपी बाई एव श्रीमती गगा बाई को इस काय के लिये नियुक्त किया और यहा स महिलाओ मे शिक्षा मे जागरण का मत्र फूका गया यह बापूजी की दूरदृष्टि और गहन वचारिक परिपक्वता का ही द्योतक है कि उन्होने उस जमाने मे नारी शिक्षा की ओर सक्षमता से ध्यान दिया' शकुतला जी न बडी दृढता से यह बात कही

मैंने पूछा—'पण्डित जी के अप्रकाशित साहित्य के प्रकाशन की दिशा मे भी कभी कोई प्रयत्न हुये हैं ?'

'नही, कोई ध्यान ही नही देता सारा साहित्य व उनकी पाण्डुलिपिया कुछ मेरे पास व अधिकाश राजपूत सभा के कार्यालय म गद से ढकी खराब हो रही हैं हालाकि जो छपा है—वह पुस्तकालया म सुलभ है-लेकिन शन शन वह भी दुलभ होता जा रहा है राज्य सरकार ने भी कभी कोई ध्यान नही दिया न ही किसी साहित्यिक सस्था ने इसम आगे आकर पहल की शोधार्थी आते हैं तो मैं उ ह वह सामग्री उनके काम के लिये देने के बाद पुन प्राप्त कर लेती हू वरना यह साहित्य भी समाप्त प्राय हो जाता बापूजी ने इतना जन साहित्य लिखा है कि वह मानव-समाज व साहित्य के लिए अत्यत उपयोगी हो सकता है उन्होने स्वय भरतपुर मे हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की थी ताकि नये लेखक प्रकाश मे आ सके' शकुतला जी की इस बात पर मैंने प्रश्न किया—'ऐसा है आपने तो वह युग भी देखा है—जब साहित्यकार साहित्य को पूरी तरह सेवा भाव से समर्पित था और आज का लेखक भी देख रही हैं—आज इसमे कहा कोई साम्य या भेद पाती हैं आप ?'

'लेखक तो खर अब भी हैं लेकिन आज के लेखक म धैर्य नहीं है पहले लेखक का अपने विषय मे गहन सागोपाग बडा विस्तरित अध्ययन होता था अब तो जो कुछ लिखा-वही लेखक बन गया अब लेखक जनोपयोगी व रचनात्मक कृतिया नही लिख पा रहा उसका कारण यह है कि वह विषय के सागर म नही उतरना चाहता' शकुतला जी बोली

मैंने कहा—'... बात आपके सबध मे सुना है आपका भी साहित्य से गहरा लगाव रहा है, जरा उस ... भी सक्षिप्त म बताईएगा'

हसकर बोली 'मेरा क्या लिखना-पढना मैंने एक तो 'दीवाने–हाफिज' का हिन्दी म अनुवाद किया है इसके अलावा भी कीट्स व बायरन की अंग्रेजी कविताओ को हिन्दी म रचा है 'सती-सीता' लघुकाव्य-सकलन का प्रकाशन जिसमे नारी वेदना का गहन दार्शनिक विवेचन का प्रयास मैंने किया है एक कविता-सकलन प्रकाशनाधीन है छपने का कभी शौक नही रहा आत्म सुख के लिए लिखती और पढ़ती हू और कोई विशेष बात मुझमे नही है'

इस बीच मे ही वे स्वय चाय बना लाई और नमकीन भी खाने के लिए ले आई मेरी मनाही के बाद भी उनका आग्रह ऐसा था कि मैं कुछ नहीं कह पाया घर मे नजर डाली तो कमरे मे सब कुछ अत्यत साधारण–कोई दिखावा नही घरेलू वातावरण जब उनस प्रणाम कर मैं निकला तो मन म बीसियो बातें उमड रहीं थी—बाहर कोलाहल था—वाहनो से भरी सड़कें थी और असीम शोर था

सिकन्दरा 303326
(जयपुर-राजस्थान)

आनन्द लक्ष्मण खाडेकर

नवरत्न जी का प्रकाशित-अप्रकाशित लेखन

– मूल निवासी पूवज – ग्राम पच्छे – भावनगर – गुजरात –

एक बार भरतपुर के महाराजा जयसिंह जी ने अपने दरबार मे यज्ञ और वेदो से सम्बन्धित विद्वानो को कामा मे आमन्त्रित किया—पूव पुरुष और उनके पुत्र तो कामा मे ही रहे—परन्तु पडित बलराम जी भट्ट आत्मज पडित राधावल्लभ जी भट्ट बाद मे कामा से जयपुर आ गये

बलराम जी भट्ट को गोविन्द देव जी के मन्दिर मे भागवत गद्दी के अधिकारी के रूप मे प्रतिष्ठित किया गया मन्दिर के भागवत गद्दी का जो रिकाड है उसमे ई सन् 1825 मे उनका नाम अकित है

जयपुर से उदयपुर के महाराणा ने उन्हे अपने यहा आमन्त्रित किया कुछ वर्ष उदयपुर मे रहने के बाद झाला जालिमसिंह के निमत्रण पर बलराम जी कोटा आ गये

झाला जालिमसिंह ने अपने पुत्र माधोसिंह के शिक्षक के रूप मे उन्हे रखा

डित बलराम के पुत्र गणेशराम हुए—उन्होने माधोसिंह के पुत्र मदनसिंह के शिक्षा- द के रूप मे काय किया

मदनसिंह झालावाड के प्रथम शासक बनने पर वे उन्हे झालावाड ले आये और जगुरु के रूप मे सम्मानित किया—तब से यह परिवार राजगुरु के रूप मे चला 1 रहा है

प गणेशराम के पुत्र बृजेश्वर भट्ट हुए और उनके पुत्र गिरिधर शर्मा हुए

पडित गिरिधर शर्मा का जन्म झालावाड मे ही ज्येष्ठ शुक्ला 8 विक्रम सम्वत् 1938 (6 जून 1881) को हुआ—

प्रारम्भिक शिक्षा झालावाड मे हुई उसके बाद जयपुर मे पडित कृष्णवर कान्ह जी शास्त्री तथा द्रविड धीरेश्वर जी शास्त्री (वतमान म नाहरगढ माग,जयपुर मे धीरेश्वर पुस्तकालय कार्यरत है वह सग्रह इन्ही का है) से शिक्षा ग्रहण की इसके बाद काशी गए वहा पर गगाधर जी शास्त्री के शिष्यत्व मे महामहोपाध्याय की उपाधि प्राप्त की पण्डित जी गगाधर जी शास्त्री उस काल के महान पडितो मे से एक थे ब्रिटिश सरकार ने भी उन्हे C I A से सम्मानित कर रखा था

काशी से लौटने पर राजगुरु के रूप मे सम्मानित रहे

पडित जी अपने पिता की चौथी सतान थी इनके बाद एक और भाई हुआ परन्तु पडित जी लम्बा जीवन प्राप्त कर सके इनके एक भाई 7 वप की आयु म स्वगवासी हुए एक की 19 वप और एक 32 वप की आयु मे देववासी बने एक बहिन 1½ की ही आयु प्राप्त कर सकी

पडित जी के दो विवाह हुई प्रथम पत्नी 15 वप की आयु म प्रसूती हुई प्रसव-काल मे ही बालक और माता का स्वगवास हो गया इनकी प्रथम पत्नी का नाम नौरतीदेवी था दूसरा विवाह रत्न ज्योत्स्नादेवी से हुआ दोनो पत्निया जयपुर की थी पडित जी का स्वगवास 1 जुलाई 1961 को तथा इनकी पत्नी का स्वगवास 2 फरवरी 1960 को हुआ

पडित जी के सात सताने हुई इनके प्रथम पुत्र ईश्वरलाल शर्मा भी कवि, दार्शनिक और साधक हुए 44 वप की आयु मे स्वगवासी हुए द्वितीय पुत्र परमानन्द

$2\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु प्राप्त कर सका तीसरे पुत्र श्री परमेश्वर अभी जीवित हैं वे 58 वर्ष के हैं तथा ट्रेनिंग स्कूल से सीनियर टीचर के पद से सेवानिवृत्त हुए

इनके चार पुत्रियो में से एक की मृत्यु $1\frac{1}{2}$ वष की आयु में ही हो गई थी श्रीमती शातिदेवी पड्या जयपुर रहती हैं कुमारी रेणु शर्मा का जन्म सन् 1921 मे हुआ तथा अविवाहित ही रही इन्होने भी अपना जीवन साहित्य को समर्पित कर दिया सैकण्डरी स्कूल से प्रधानाध्यापिका पद से सेवा निवृत्त हुई

आपके पिता बहुत ही स्वाभीमानी थे महाराजा ने उन्हे एक हवेली बख्शीस करना चाहा तो उन्होने स्वीकार नही किया वतमान मकान उनके पिता का ही खरीदा हुआ है

भवानी परमानन्द पुस्तकालय – झालावाड के आप साहित्य विभाग के अध्यक्ष थे. महाराजा भवानीसिंह जी की इच्छा थी कि इस पुस्तकालय मे विभिन्न विषय की पुस्तकें रहे तथा आधुनिकतम प्रकाशन हो

—महाराजा राजेन्द्र सिंह सुधाकर के आप काव्य गुरु थे

—सन् 1937 म ही आपकी आखो की रोशनी चली गई थी, इसके बावजूद आपकी रचनाए निरन्तर होती रही

—सन् 1935 मे भारतेन्दु समिति कोटा के वार्षिक उत्सव की आपने अध्यक्षता की

प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाए

प्रकाशित

सस्कृत

1 अमर सूक्ति सुधाकर
2 सद्वृत्त पुष्प गुच्छ
3 कारक रत्नम्
4 जापान विजयनम्
5 न्याय वाक्य सुधा
6 सौर मण्डलम्
7 अभेद रसः

8 ईश्वर प्रार्थना
9 योगी
10 नवरत्न नीति
11 प्रेम पयोधि
12 गिरधर सप्तशता

हिन्दी

1 राई का पर्वत (नाटक), 2 उषा (भावगद्य), 3 जया जयन्त (नाटक); 4 युग पलटा, 5 महामुदर्शन, 6 सरस्वती चन्द्र भाग 1 (उपन्यास), 7 हिन्दी माघ (पद्यमय), 8 अमर वचन सुधा (काव्य), 9 प्रेम कुञ्ज (नाटक), 10 बागवान, 11 चित्रांगदा (नाटक), 12 फलसंचय, (काव्य), 13 गीताञ्जली (काव्यमय भाषान्तर), 14 आरोग्य दिग्दर्शन (स्वास्थ्य ग्रंथ), 15 सुश्रुषा (परिचर्या), 16 अर्थ शास्त्र, 17 व्यापार शिक्षा, 18 कठिनाई में विद्याभ्यास, 19 पद्य रत्न प्रभा (अन्योक्ति), 20 ऋतु विनोद, 21 भीष्म प्रतिज्ञा, 22 कविता कुसुम भाग 1, 23 कविता कुसुम भाग 2, 24 ईश्वर प्रार्थना, 25 पञ्चस्तुति, 26 सावित्रि (अतुकांत खण्ड काव्य), 27 सुकन्या (पद्यमय जीवन रेखा), 28 संसार में सुख कहां है? (गद्य), 29. सच्चे सुख की कुंजिया (गद्य), 30 नवरत्न वर्णमाला, 31 सर्वोदय अक्षर बोध

× × ×

जन साहित्य।

प्रकाशित

1 भक्तामर (हिन्दी पद्य), 2 कल्याण मंदिर (हिन्दी पद्य), 3 रत्नकरण्ड श्रावकाचार, 4 बारह भावना, 5 जन स्तवरत्नमाला, 6 एकीभाव, 7 विषापहार, 8 भूपाल चौबीसा

अप्रकाशित

1 श्री भक्तामर समस्या पूर्ति (संस्कृत), 2 सूक्ति मुक्तावली (हिन्दी काव्य), 3 श्री कल्याण मंदिर (समस्या पूर्ति संस्कृत), 4 समारजन स्तोत्र, 5 सामायिक, सर्वतीर्थकरस्तवन

× × ×

मदन विलास	—	सम्पादित
विद्याभास्कर	—	मासिक पत्र

× × ×

—पंडित गिरिधर शर्मा

अप्रकाशित साहित्य

संस्कृत

1 करुणप्रशस्ति, 2 करुणानिधि, 3 नागरतन्त्रम्, 4 चाणक्य सूत्रकारिका 5 श्रम चतुर्विंशति 6 नक्षत्र माला 7 नवरत्नोपदेश, 8 आत्मनिवेदनम्, 9 प्रश्नोत्तर रत्नमाला, 10 नीति सौन्दर्योद्यानम्, 11 गीताञ्जली, 12 उपदेशावलि, 13 श्री वीरेश्वरशास्त्रि महाभागा, 14 श्री बालकृष्णाष्टकम्–श्री गणाष्टकम्–श्री रत्न ज्योत्स्नाष्टकम्–अभिनव कारकरत्नम्, 15 अभिनव सद्वृत्तपुष्पगुच्छ, 16 षोडशी, 17 अन्यस्फुट, 18 उमरखयाम (मूल फारसी से संस्कृत में अनुवाद)

हिन्दी

1 श्रीमद्भागवत (हिन्दी पद्य) 2 पंचगीत (हिन्दी पद्य) 3 आनन्द लहरी, 4 महिम्नस्तोत्र, 5 शेखनीति, 6 उमरखैयाम (फारसी से), 7 न्याय दोहावली, 8 सांख्य दोहावली, 9 वेदान्त दोहावली, 10 शुद्धाद्वैत मार्तण्ड दोहावली 11 तत्त्वदीप दोहावली, 12 भर्तृहरि शतक, 13 विष्णुस्तवन, बाबा ताहिर की रुबाइया, 15 चाणक्य दोहावली तथा अन्य स्फुट

गुजराती

1 नीतिशतक, 2 बालचन्द्र, 3 नवरत्न वर्णमाला, 4 आनन्द लहरी आदि

× × ×

परिशिष्ट

सस्कृत

अनन्तरसपुस्तक तरुतले स्थितिर्निजने
सुधाभरितपात्रक चणकमिश्ररोटी यवी।
वने निकटमालय त्वमपि गानमात वती
भवेद् यदि समस्तमटवी मम स्वर्हि तत् ॥
('अमरसूक्ति सुधाकर')

अक्षय रस से भरी पुस्तक हो, एका त मे वृक्ष की छाया मे बठे हो, सुरा से भरा पात्र हो, जौ-चने की मिस्सी रोटी हो, वन म पास बैठी तुम गा रही होओ अगर यह सब हो तो वह निर्जन भी मुझे स्वग हो जायेगा

दीनोऽस्मि दीनोऽस्म्ययि दीनब धो!
किन्त्वस्ति तेऽस्तित्वमिद न कि मत्।
अस्त्यो-महत्त्व तव किन्तु कि तन्-
न विद्यते मत्परमाणुरूपात्।
('अभेदरस' से)

हे दीनब धु! मैं अत्यन्त दीन हू, पर क्या आपका यह दीनब धुत्व मुझ दीन के कारण नही है माना कि आप बहुत बडे हैं, पर आपका यह बडप्पन क्या मेरे परम लघुत्व की देन नहीं है

देशो मे सकलप्रियो विजयते देश नमाम्यादराद्,
दशेनन्छ्विरस्ति मेऽप्यनुपमा देशाय स्वस्त्यस्तु मे ।
देशात् कोऽपि मम प्रियो न भुवने दशस्य भक्तोऽस्म्यह,
देशे मेऽस्तु रति सदव विमला ह् देश ! तुभ्य नम ॥
('नवरत्नसुभाषितानी' से)

सबका प्रिय मरा देश सर्वोत्तम है इसे आदर से नमन करता हू इस देश के कारण ही मेरी शोभा है मेरे इस देश का कल्याण हो मुझे ससार मे देश से अधिक प्रिय कुछ भी नही है मैं देश का भक्त हू मरा देश पर निमल प्रेम हो हे देश ! तुम्हें प्रणाम ।

कि रक्ष्य स्वातन्त्र्य, कि भक्ष्य स्वश्रमार्जित भोज्यम् ।
कि त्याज्य दुवृत्त, कि ग्राह्य निमलात्मना वृत्तम् ॥
('प्रश्नोत्तर रत्नमाला' से)

किसकी रक्षा करे ? स्वतन्त्रता की क्या खाना चाहिये ? अपने श्रम से अर्जित भोजन क्या छोडा जाय ? दुराचरण क्या अपनाया जाय ? निमल हृदय वाले व्यक्तियो का चरित्र

प्रशसाह सदा लोके य श्रमी दिव्यदशन ।
निरतो विश्वसेवाया काल यापयति श्रमात् ॥
(श्रमचतुर्विंशति ' से)

दिव्य दृष्टि से सम्पन्न श्रमी (मेहनतकश) सदव प्रशसनीय है जो सबकी सेवा मे तत्पर हो परिश्रम करते हुए समय बिताता है

न सा शिक्षा शिक्षा विकसति न यस्यास्तनुभृता ,
प्रभा नीति स्फूर्ति प्रबलतरसत्ता श्रमरति ।
सुविधा धीशक्ति कृतिकुशलता कायपरता,
जगत्सेवाभाव शुचिरसिकता वाक्यपटुता ॥
('नवरत्नसुभाषितानि' से)

( )

वह शिक्षा शिक्षा नहीं है जिससे व्यक्तियो मे तेज, नीति, स्फूर्ति, प्रबल अस्मिता, श्रम के प्रति प्रेम, विद्या बौद्धिक शक्ति, कार्यदक्षता, कमण्यता, विश्वसेवा की भावना, निमल सहृदयता तथा वचनपटुता का विकास न हो

मातापित्रोर्महिमा कथं स्वभावे भवेत्सुताना वै ।
पीत कृत्रिमदुग्ध शिक्षा प्राप्ता विदेशीया ।।

('नवरत्नसुभाषितानि' से)

उस सन्तति के स्वभाव मे माता पिता का सम्मान कैसे पैदा हो सकता है जिसने दूध नकली पीया हो और शिक्षा विदेशी प्राप्त की हो

क खलु दूरीकुर्यात् प्रजाजनाना पर मनस्तापम्।
यत्र शासनारूढा लोका लोचननिमीलितक्रीडा ।।

('नवरत्नसुभाषितानि' से)

वहा प्रजा के मन की गहरी पीडा को कौन दूर करेगा जहा शासन म आरूढ लोग आंखमिचौनी खेल रहे हो

न हिन्दव सम्प्रति सर्वतन्त्र–
स्वातन्त्र्यपूर्णा न च हिन्दलोका ।
दास्यस्स्त्रियो ये प्रवदन्ति तेषा
जाति कथ स्यान्न चिराय दासी ।।

('नवरत्नसुभाषितानि' से)

इस समय न हिन्दू पूर्णतया स्वतन्त्र हैं और न हिन्द के निवासी हो जो अपनी स्त्रिया को दासी बतलाते हैं उनकी जाति चिरकाल तक दासी क्यो न रहगी

जातौ जातौ वादो राष्ट्रे राष्ट्रे विवादसृष्टि ।
परमात्मनोऽखिला भू परमात्मनो एव मानवास्सर्वे ।।

('गिरिधरसप्तशती से)

हर जाति मे, हर राष्ट्र म झगडे पदा हो रहे हैं समस्त भूमि ईश्वर की है तथा सब मनुष्य भी ईश्वर के ही हैं

हर्म्या वा प्रासादा दृश्यन्ते ये सुसज्जिता रम्या ।
ते निर्मिता बुभुक्षितमनुजानामस्थिमांसरक्तेभ्य ।।

('गिरिधरसप्तशती' से)

सुसज्जित और सुन्दर लगने वाले महल और भवन भूखे लोगों की हड्डी, मांस और रक्त से बने हैं

साहसपूर्णां यात्रा कुर्वन् पुरुषो विशालदृष्टि स्यात् ।
गृह एव सदा निवसन् भवति न क कूपमण्डूक ।।
('गिरिधरसप्तशती' से)

साहसपूर्ण यात्राए करते हुए मनुष्य को अपनी दृष्टि विशाल बनानी चाहिए सदैव घर मे ही रहते हुए कौन कूपमण्डूक नही हो जाता ?

नीति परा प्रिया मेऽसौ जीवनसहचरी सदा नीति ।
नीति विना न जीवितुमिच्छामि क्वाप्यह विपलम् ।।
(गिरिधरसप्तशती' से)

नीति मेरी परम प्रेयसी है, वह सदव मेरी जीवनसगिनी रही है मैं नीति के बिना एक पल भी कही जीना नही चाहता

(अप्रेल 1924 मे 'चित्राङ्गदा' का दूसरा सस्करण प्रकाशित हुआ इसके प्रकाशक थे— जीतमल लूणिया, सचालक, हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस सिटी, मूल्य छह आना, पृष्ठ सख्या–48, मूल लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु गिरिधर शर्मा 'नवरत्न')

(अनुवाद अश पृष्ट 43)

चित्राङ्गदा हे कौन्तेय ! यदि मैं इस लालित्य की इस कोमल भीरूपन की ओर स्पर्श से भी कुम्हलाने वाले शिरीष पुष्प से भी सुकुमार इस रूप को पराये वस्त्रो के समान छिन्न-भिन्न कर घृणा के साथ परो म फेंक दू तो क्या आप इस हानि को सहन कर सकोगे ? कामिनी की कपट कला और जादूभरे मायाजाल को दूर कर यदि लचीली लता की तरह सकोच से न लच जाऊ और पवत के तेजस्वी तरुण तरु के समान आनन्द वायु से लहराती हुई सीधी और समुन्नत खडी हो जाऊ तो क्या पुरुष की निगाह मे अच्छी जचू गी ? रहने भी दो, उसकी अपेक्षा यही अच्छा है ! यह यौवन मेरा कीमती धन है इसे सजा कर मैं बडी सावधानी से रखू गी आपके आने की बाट देखती रहूगी समय पर जब आप आवेंगे तब लबालब भरे हुए देहपात्र से आपको सुधापान कराऊगी सुखस्वाद करते करते आपको थकावट जान पडे तब आनन्द से काम करने को चले जाना जब मैं पुरानी हो जाऊ तब मैं आप कहग वही पर कही न-कही पास ही पडी रहूगी पार्थ ! रात की सहचरी यदि दिन की कर्म सहचरी बने, और दहने हाथ जसे बाये हाथ का साथ देता है वसे ही पुरुष का साथ स्त्री दे तो क्या वह वीर के प्राणो को सुखदायी जान पडेगी ?

अर्जुन—मैं तेरे रहस्य को कुछ भी नही समझ पाता हू इतने दिन से साथ हू

तो भी कुछ पता नही चलता ऐसा भान होता है कि सदा साथ रह कर तू मुझे घोखे मे रख रही है देवता के समान प्रतिमा के भीतर रह कर तू मुझे अनमोल चुम्बन-रत्न और आलिगन सुधा दान कर रही है तू स्वय कुछ लेती नही है लेना छोड कर कुछ चाहती तक नही है यह अगहीन और भाषाहीन प्रेम अत करण मे परिताप पैदा किये देता है तेजस्विनी ! बात बात के बीच मे तेरा परिचय मिल रहा है उसके सामने यह सौदय राशि मुझे केवल मिट्टी की मूर्ति जान पडती है निपुण कारीगर की बनाई एक यवनिका मालूम होती है बीच बीच मे और एक खयाल उठता है कि रूप तुझे धारण करने म असमथ है वह ढलमल करता हुआ काप रहा है नित्य प्रकट होने वाली हसी मे जान पडता है आसू भरे हुए हैं और वे बीच-बीच म छलछल करते उमड पडते है कि मुहूत भर मे परदा फट पडेगा साधक के सामन भ्रान्ति पहले मनोहर माया की काया धर आती है इसके बाद वेश भूषा से रहित सीधा सादा सत्य भीतर और बाहर प्रकाश फलाता हुआ देख पडता है

तेरा यही सत्य स्वरूप कहा है ? मुझे उसका दान कर और मेरा जो कुछ सत्य स्वरूप हो उसे ग्रहण कर बस ऐसा मिलन ही सदा सवदा का मिलन है उसम किसी तरह का उपराम नही होता—किसी प्रकार की थकावट नही होती ये आसू क्यो ? बाहु मे मु ह को छुपाकर यह व्याकुलता कसी ? क्या मैंने कुछ चोट पहुचाई प्रिय ? अच्छा इस बात को ही जाने दो यह मनोहर रूप ही मेरे पुण्यो का फल है यही मेरा सौभाग्य है कि यौवन यमुना की परली पार स वसत समीर क साथ आता हुआ सगीत बीच-बीच म सुनाई पडता है यह वेदना मेरे सुख का अधिक सुख और आशा की अधिक आशा है यह वेदना हृदय से भी बहुत बडी है इसी से जान पडता है कि यह हृदय की व्यथा है

(सवत 1985 मे गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के नवरत्न सरस्वती भवन भालरापाटन से कवि न्हानालाल दलपतराम कृत प्रेमकुन्ज का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ इसके पूव वे जयाजयन्त, उषा, युग पलटा और महासुदशन का अनुवाद कर चुके थे यहा 'प्रेमकु ज' का एक अश प्रस्तुत करने के पूव न्हानालाल की प्रस्तावना से कुछ पक्तिया उद्धृत हैं —

'आज का जगत प्रेम की पुन स्थापना की कविता माग रहा है आजकल अप्रेम को प्रेम समझ प्रेम के नाम पर बहुत सी भूलें और पाप हुए हैं और होते हैं इस युग मे प्रेमपदाथ के स्थान पर प्रेम प्रतिबिम्ब का पूजन चल पडा है भूलो हुओ को माग दिखाने के लिए भी ससार सम्राट प्रेमदेव की सच्ची रस कथा इस समय आवश्यक है

इसी प्रेमराजा की यह पुण्यकथा है, सब काल और सब देश के प्रेमसन्तानो के लिए, इसके परिमल सच्चे होगे तो ससार भर मे सत्कार पायेंगे ही)

अनुवाद अश पृष्ठ 102, अक 3 प्र 2

वीरेन्द्र — प्रेम मदिर के प्रेमपुजारिओ !
प्रेम सरोवर के जल पीने वाले पुण्यवानो !
प्रेमकुज के परम रसिक जनो !
प्रेमोत्सव के आशा भरे उत्सविओ !
प्यास जगत् माँगता है आज
प्रोत्साहन के रस पिलाने वाले योगीन्द्र को
प्रेरणा के अमृत पिलाने वाले पैगम्बर को
वृद्ध प्राचीन जगत् को
थाक चढी है जीवन की
उतार हुए हैं आयुष्य के
खिर पडे हैं मनुष्य जाति की
उडने की पाखो के पीछे
कान बहरा गये हैं
सुनते नही हैं जीवन मत्र
आखें अधिया गई हैं
उकेलती नही हैं देव सहिता
नही झेले जाते और नही पढे जाते
ससार के लोगों मे गजते हुए महाशब्द
श्रमित है चिरयात्रा के श्रम से
मनुवश की दसो इन्द्रियाँ
इस थकावट को दूर कर प्रोत्साहन भरे
परो मे उमग की उडान प्रेरे-पोसे,
हिये मे ज्वलन्त ज्योति का उल्लास जगावे
आत्मा के पाखें प्रकटावे
ऐसा चाहिए जगत के लिये योगीन्द्र
मानव जाति के महासागर मे
आनन्द भरती को उभार देने वाला देवचन्द्र
उर-उर मे प्रेम सरोवर रचे

घर-घर मे प्रेम कुज सरजे
और कुज-कुज मे प्रेमोत्सव मनवावे
पुतली-पुतली मे प्रदीप्त करे रसज्योति
जकडे हुए खोल दे अन्तर के मडार
और जगत को झुलावे रसहिंडोले पर
ऐसे प्रेममदिर के पुजारियो के
अवनिवासियो को है अब अभिलाष
पुण्योज्वल, सुधासोहन, जगजन्त
रसऋचायें स्वाते महानुभाव रसर्षि
इस युग का अवनी का अवनीन्द्र

•

ईश्वरलाल 'रत्नाकर'

[ईश्वरलाल रत्नाकर प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के कवि पुत्र थे उनका जन्म सन् 1912 मे हुआ और मृत्यु 1956 मे ईश्वर दादा दार्शनिक रुचि के थे उन्होने हिन्दी मे ही कवितायें लिखी अपने यशस्वी पिता के कारण उनका यश दब कर रह गया अन्यथा उनकी प्रतिभा और रचना-क्षमता शिखर कवियो की सी थी

1948 मे जब सर्वश्री मनमोहन ठाकोर, रामनाथ 'कमलाकर', शातिलाल भारद्वाज, जगदीश चतुर्वेदी, नन्द चतुर्वेदी ने मिलकर हाडोती प्रगतिशील लेखक सघ बनाया था तब ईश्वर दादा ने उसकी सदस्यता स्वीकार की थी उस अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी मे उन्होने अपने महाकाव्य 'कुरुक्षेत्र' से कुछ अश सुनाये थे सिर्फ चवालीस वर्ष की आयु मे ही उनकी मृत्यु हो गयी इसलिए यह ग्रथ अधूरा रह गया, फिर भी यह कहने मे कोई सकोच नही होता है कि ईश्वरदादा यदि इस काव्य-कृति को पूरी कर पाते तो उनकी कीर्ति अमन्द नहीं रहती

उस दिन की प्रतीक्षा ही की जा सकती है जब कोई बहुत बडा सयोग हो और उनकी पूरी, अधूरी रचना-पुस्तकें छपें और पढने को मिलें]

यह जग है शतरज रात्रि दिन जिसके हैं खाने अभिराम
ससृति के कर का मोहरा बनता है यहा मनुज मतिधाम
इधर-उधर चालें चलते पिटते-कुटते अन्तिम क्षण मे
पेटी मे हो बन्द, खेल का कर देते हैं वही विराम

कन्दुक कभी न करती हा – ना के प्रश्नावलि पूर्ण प्रलाप
किन्तु खिलाडी जिधर फेंकता उधर चली जाती चुपचाप
जिसने मुझको इस भू पर फेंका है इसका सारा भेद
वही जानता है, हा, केवल वही जानता अपने आप

लिख देती है लिख कर आगे बढ जाती वह अगुली चचल
तेरे ये जीवन के सब आचार विचार परम निमल
उसकी अद्ध पक्ति को भी ये बढा सकेंगे नही कभी
एक वर्ण को भी धोने मे होगे तेरे अश्रु विफल

वह प्याला अनुमान मात्र है कहते हैं हम जिसे गगन
चौरासी मे चक्कर खाते जिसके नीचे हम धर तन
है सवथा व्यर्थ ही इसके आगे फलाना निज हाथ
हम अधीन, उस ससृति के फेरे मे इसका भी जीवन

निर्मित हुआ प्रथम महि की रज से यह अतिम नर ककाल
प्रथम बीज से ही विकरित है यह अतिम खलिहान विशाल
लिखे गये थे प्रथम उषा मे ही ये सब करुणामय अक
जिन्हें प्रकट कर रहे अरे हा ! यह अस्तगत सध्याकाल

उन स्वर्णिक तुरगो के कधो पर चढ कर जब किया पयान
मैं कहता हू छोड दिया जब हमने अपना लक्ष्य स्थान
पार्थिव और अपार्थिव दोनो पहले से निश्चित स्थल मे
सत्वर वहा जमाये उनमे वे ग्रहचक्र प्रबल बलवान

रक्तिम मधु से रहे छलकता यदि प्रतिपल मेरा जीवन
तो चिन्ता ना कुछ भी कहत रहे मुझे सूफी सज्जन
बनें अरे मेरे लोहे से ऐसी एक कुजि अनमोल
जिससे बन्द सुरालय वह बन जावे बस उन्मुक्त भवन

मधुर सत्य ज्वाला जीवन मे मेरे कर दे प्रेम प्रसार
तथा जला दे क्रोध वह्नि है मुझ को केवल यही विचार
यदि पानालय मे भी इसकी एक झलक हम पा जावें
अधिक श्रेष्ठ यह उस मन्दिर से जहा अरे होती यह छार

तूने ही तो मेरे मग मे खोदे गह्वर गर्त विशाल
और माग से च्युत करने को मुझ को अमित बिछाये जाल
ससृति की कडियो से मुझ को क्या न बाधता है तू ही
क्या तू मुझ पर नही सदय है मत्थे मेरा पतन कराल

अोरे, तूने किया विनिर्मित अतिशय तुच्छ धूलि से नर
और अदम के साथ नियोजित किया भुजग महाविषधर
उन पापो के लिए कि जिससे मानवता लज्जित होती
मनुजवश से क्षमा माग औ उसको भी वह प्रदान कर